ОТКРОВЕНІЕ ДАНІИЛУ

О СЕМИДЕСЯТИ СЕДЬМИНАХЪ.

ОПЫТЪ ТОЛКОВАНІЯ

24—27 стиховъ 9-й главы

КНИГИ ПРОРОКА ДАНІИЛА.

И. д. доцента С.-Петербургской Духовной Академіи

Александра Рождественскаго.

С.-ПЕТЕРБУРГЪ.

1896.

ОТКРОВЕНІЕ ДАНІИЛУ

О СЕМИДЕСЯТИ СЕДЬМИНАХЪ.

ОПЫТЪ ТОЛКОВАНІЯ

24—27 стиховъ 9-й главы

КНИГИ ПРОРОКА ДАНІИЛА.

И. д. доцента С.-Петербургской Духовной Академіи

Александра Рождественскаго.

С.-ПЕТЕРБУРГЪ.
СУНОДАЛЬНАЯ ТИПОГРАФІЯ.
1896.

Печатано по опредѣленію Совѣта С.-Петербургской Духовной Академіи.

Ректоръ Академіи *Іоаннъ*, Епископъ Нарвскій.

30 Апрѣля
1896 г.

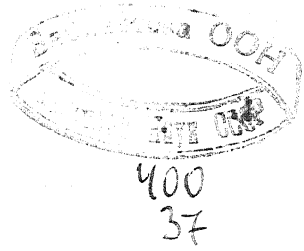
400
37

ТЕКСТЪ ОТКРОВЕНІЯ О СЕДЬМИНАХЪ.

Дан. 9 глава 24—27 стихи.

Славянскій переводъ.

24. Сéдмьдесмтъ седмúнъ сократúшасѧ ѿ лю́дехъ твои́хъ, и ѿ гра́дъ твоéмъ сты́мъ, [1] ꙗ̀кѡ да ѿветша́етъ согрѣше́нїе, и скончáется грѣ́хъ, и [2] запечáтаются грѣсѝ, и [3] загла́дятся непра́вды, [4] и ѡ҃чúстятся беззакѡ́нїѧ [4], и приведе́тся пра́вда вѣ́чнаѧ: и [5] запечáтается видѣ́нїе [6] и проро́къ, и помáжется Сты́й сты́хъ. 25. И ѹ҃вѣ́си и ѹ҃разѹмѣ́еши: ѿ и҃схо́да словесѐ, [7] е҃́же ѿвѣщáти, и [7] е҃́же согради́ти Іерѹсали́мъ, да́же до Хр҃та Старѣ́йшины седми́нъ сéдмь, и седми́нъ шестьдесмтъ двѣ́: и возврати́тся, и согради́тся [8] сто́гна, и забрáла, и и҃стощáтся лѣ́та. 26. И по седми́нахъ шести́десмти двѹ́хъ потреби́тся помáзанїе [Є҃вр. Мессíа], и сѹ́дъ [9] не бѹ́детъ въ не́мъ [9]: гра́дъ же и сто́е разсы́плется со Старѣ́йшиною грдѹ́щимъ, и потребмтся ꙗ̑ки въ пото́пѣ, и до конца́ ра́ти сокращéнным [10] чи́номъ погúбельми [10]. 27. И [11] ѹ҃тверди́тъ завѣ́тъ мнѡ́зѣмъ седми́на е҆ди́на: [12] въ по́лъ же седми́ны [13] ѿ́имется [14] же́ртва и возлїа́нїе, [15] и во сти́лищи ме́рзость запѹстѣ́нїѧ бѹ́детъ, и да́же [15] до скончáнїѧ [16] вре́мене скончáнїе да́стся на ѿпѹстѣ́нїе.

Разночтенія изъ „Толковыхъ Пророчествъ“: [1] дондеже.

[2] знаменаются.

[3] оцѣстатся.

[4—4] нѣтъ.

[5] знаменается.

[6] и опущено.

[7] яко.

[8] широцѣ.

[9—9] нѣтъ.

[10—10] вѣтъ.

[11] разблажитъ.

[12] бя нѣтъ.

[13] +вставка: ставитъ требники и требоу и крилоу отъ потребленія и до скончанія и потщанія вчинитъ на погыбель: и разблажитъ завѣтъ мнозѣмъ седмина единъ. въ полъ же седмины.

[14] требъ.

[15—15] на святыи храмъ омрьзѣнїе и опоустѣнїе. и.

[16] годоу.

Евр.-масоретскій текстъ.

24 שָׁבֻעִים שִׁבְעִים נֶחֱתַךְ עַל־עַמְּךָ וְ
וְעַל־עִיר קָדְשְׁךָ לְכַלֵּא הַפֶּשַׁע
[1] וּלְהָתֵם [2] חַטָּאוֹת וּלְכַפֵּר עָוֹן
וּלְהָבִיא צֶדֶק עֹלָמִים וְלַחְתֹּם חָזוֹן
נָבִיא וְלִמְשֹׁחַ קֹדֶשׁ קָדָשִׁים:
25 וְתֵדַע וְתַשְׂכֵּל מִן־מֹצָא דָבָר
לְהָשִׁיב וְלִבְנוֹת יְרוּשָׁלַ͏ִם עַד־מָשִׁיחַ
נָגִיד שָׁבֻעִים שִׁבְעָה וְשִׁבְעִים שִׁשִּׁים
וּשְׁנַיִם תָּשׁוּב וְנִבְנְתָה רְחוֹב וְחָרוּץ
וּבְצוֹק הָעִתִּים:

Сирскій переводъ Пешито.

24 שַׁבְּעִין שַׁבּוּעִין נֶתְחַנִּיחוּן עַל
עַמָּךְ וְעַל קִרְיָתָא דְקוּדְשָׁךְ. לְמֶשְׁלַם
חַוְבָּא. וְלְמֶגְמַר חֲטָהֵא. לְשׁוּבָקָן
עַוְלָא. וְלַמֵּיתֵי זְדָקָא דְמִן עָלַם.
וְלְמֶשְׁלַם חֶזְוָא וְנַבְּיָא. וְלְמִשְׁחָא
קְרוֹשׁ קוּדְשִׁין. 25 וְתֵדַע וְתִסְתַּכַל:
מִן מַפְקָנָה דְמִלְתָא. לְמֶהְדַּר.
וְלְמִבְנֵי לְאוּרְשְׁלֶם. וְלְמֵאתָא
מְשִׁיחָא מַלְכָא: שַׁבּוּעָא שַׁבְּעָא.
וְשַׁבּוּעָא שְׁתִּין וְתַרֵּין. נֶהְפּוּךְ
וְנֶבְנֵא לְאוּרְשְׁלֶם שׁוּקֶיהָ וְכָלַטֵּיהָ.
לְשׁוּלָם זַבְנָא.

Латинскій переводъ Вульгата.

24. Septuaginta hebdomades abbreviatae sunt super populum tuum et super urbem sanctam tuam, ut consummetur praevaricatio, et finem accipiat peccatum, et deleatur iniquitas, et adducatur justitia sempiterna, et impleatur visio, et [3] prophetia, et ungatur Sanctus sanctorum. 25. Scito ergo, et animadverte: ab exitu sermonis, ut iterum aedificetur Jerusalem, usque ad Christum ducem, hebdomades septem, et hebdomades sexaginta duae erunt: et rursum aedificabitur platea, et muri in angustia temporum.

Русскій переводъ.

24. Семьдесятъ седминъ опредѣлены для народа твоего и святаго города твоего, чтобы покрыто было преступленіе, запечатаны были грѣхи, и заглажены беззаконія, и чтобы приведена была правда вѣчная, и запечатаны были видѣніе и пророкъ, и помазанъ былъ Святый святыхъ. 25. Итакъ знай и разумѣй: съ того времени, какъ выйдетъ повелѣніе о возстановленіи Іерусалима, до Христа Владыки семь седминъ и шестьдесятъ двѣ седмины; и возвратится *народъ* и обстроятся улицы и стѣны, но въ трудныя времена.

[1] ולהתם קרי.

[2] חטאת קרי.

[3] Cod. Toletanus: prophetes, alii: propheta.

Переводъ LXX-ти.

24. ἑβδομήκοντα ἑβδομάδες ἐκρίθησαν ἐπὶ τὸν λαόν σου καὶ ἐπὶ τὴν πόλιν σιὼν. συντελεσθῆναι τὴν ἁμαρτίαν καὶ [1] τὰς ἀδικίας σπανίσαι. καὶ ἀπαλεῖψαι τὰς ἀδικίας. καὶ διανοηθῆναι τὸ ὅραμα. [2] καὶ δοθῆναι δικαιοσύνην αἰώνιον. [2] καὶ συντελεσθῆναι [3] τὰ ὁράματα. [4] καὶ προφήτην. καὶ εὐφρᾶναι [5] ἅγιον ἁγίων· 25. καὶ γνώσῃ καὶ διανοηθήσῃ. καὶ εὐφρανθήσῃ κσὶ εὑρήσεις προστάγματα ἀποκριθῆναι· καὶ οἰκοδομήσεις ἱερουσαλὴμ πόλιν κυρίῳ.

Переводъ Θеодотіона.

24. ἑβδομήκοντα ἑβδομάδες συνετμήθησαν ἐπὶ τὸν λαόν σου καὶ ἐπὶ τὴν πόλιν τὴν ἁγίαν [6], τοῦ συντελεσθῆναι ἁμαρτίαν, καὶ τοῦ σφραγίσαι ἁμαρτίας, καὶ ἀπαλεῖψαι τὰς [7] ἀδικίας, καὶ τοῦ ἐξιλάσασθαι ἀδικίας, καὶ τοῦ ἀγαγεῖν δικαιοσύνην αἰώνιον, καὶ τοῦ σφραγίσαι ὅρασιν καὶ προφήτην, καὶ τοῦ χρίσαι ἅγιον ἁγίων. 25. καὶ γνώσῃ καὶ συνήσεις ἀπὸ ἐξόδου [8] λόγου τοῦ ἀποκριθῆναι, καὶ τοῦ οἰκοδομῆσαι Ἱερουσαλὴμ, ἕως χριστοῦ ἡγουμένου ἑβδομάδες ἑπτὰ καὶ ἑβδομάδες ἑξηκονταδύο· καὶ ἐπιστρέψει, καὶ οἰκοδομηθήσεται πλατεία καὶ [9] τεῖχος, καὶ ἐκκενωθήσονται οἱ καιροί.

[1] Syro-hexaplaris: τὴν ἀδικίαν.
[2—2] Syr. подъ овеломъ.
[3] Syr. τὸ ὅραμα.
[4] Въ обоихъ кодд. астерискъ.
[5] Syr. метовелъ.

[6] [Текстъ приводится по Ватиканскому кодексу]+σου кодд. [по HP]: III. 22. 36. 51. 231. Евс. Θеодр. Терт.+ἕως τοῦ παλαιωθῆναι τὸ παράπτωμα: 22. 34. 36. 48. 51. 231. Θеодр. Зл. Терт.
[7] ἀνομίας: III. XII. 22. 33. 34. 35. 36. 42. 48. 49. 51. 90. 91. 106. 148. 228. 230. 231. 232. 233. Com. Ald. Евс. Θдр.
[8] λόγων: 22. 34. 36. 48. 51. 62. 147. 231. Кир. Алекс. Θдр. Ипп.
[9] περίτειχος: III. 22. 33. 35. 36. 48. 51. 106. 228. 231. Ald. Зл. Θдр.

Евр.-масоретскій текстъ.

26 וְאַחֲרֵי הַשָּׁבֻעִים שִׁשִּׁים וּשְׁנַיִם יִכָּרֵת מָשִׁיחַ וְאֵין לוֹ וְהָעִיר וְהַקֹּדֶשׁ יַשְׁחִית עַם נָגִיד הַבָּא וְקִצּוֹ בַּשֶּׁטֶף וְעַד קֵץ מִלְחָמָה נֶחֱרֶצֶת שֹׁמֵמוֹת: 27 וְהִגְבִּיר בְּרִית לָרַבִּים שָׁבוּעַ אֶחָד וַחֲצִי הַשָּׁבוּעַ יַשְׁבִּית זֶבַח וּמִנְחָה וְעַל כְּנַף שִׁקּוּצִים מְשֹׁמֵם וְעַד־כָּלָה וְנֶחֱרָצָה תֻּתַּךְ עַל־שֹׁמֵם:

Сирскій переводъ Пешито.

26 ובָתַר שַׁבּוּעָא שִׁתִּין וְתַרֵּין: נֶתקְטֶל משִׁיחָא. ולָא אִיהִ לָה. וַקרִיתָא דקוּדשָׁא תֶּחתַבַּל עַכ מַלכָא דָאתֵא. וחַרתָה בַּגרוּפיָא. וַעדַמָא לחַרתָא דַקרָבָא דפָסִיקתָא דַחבָלָא. 27 ונַעשֶׂן דַיתִיקי לסַגִּיאָא. שַׁבּוּעָא חַד ופֶלגוּת שַׁבּוּעָא: ונבַטֶל דֶבחתָא וקוּרבָנָא. ועַל כְּנֵפֵיה דטַנפוּתָא חבָלָא. עַדמָא לַגמִרָא תֶּתנִיח דפָסִיקתָא עַל חבָלָא.

Латинскій переводъ Вульгата.

26. Et post hebdomades sexaginta duas occidetur Christus: et non erit ejus [1] [populus, qui eum negaturus est]: et civitatem et sanctuarium dissipabit populus cum duce venturo: et finis ejus vastitas, et post finem belli statuta desolatio. 27. Confirmabit autem pactum multis hebdomada una: et in dimidio hebdomadis deficiet hostia et sacrificium: et in templo erit abominatio desolationis: et usque ad consummationem et finem perseverabit desolatio.

Русскій переводъ.

26. И по истеченіи шестидесяти двухъ седминъ преданъ будетъ смерти Христосъ, и не будетъ; а городъ и святилище разрушены будутъ народомъ вождя, который прійдетъ, и конецъ его будетъ какъ отъ наводненія, и до конца войны будутъ опустошенія. 27. И утвердитъ завѣтъ для многихъ одна седмина, а въ половинѣ седмины прекратится жертва и приношеніе, и на крилѣ *святилища* будетъ мерзость запустѣнія, и окончательная предопредѣленная гибель постигнетъ опустошителя.

[1] Не имѣется въ Толедскомъ и др. кодд.

Переводъ LXX-ти.	*Переводъ Θеодотіона.*
26. καὶ μετὰ ἑπτὰ καὶ ἑβδομήκοντα. καὶ ἑξηκονταδύο. ἀποσταθήσεται χρίσμα καὶ οὐκ ἔσται· καὶ βασιλεία ἐθνῶν. φθερεῖ τὴν πόλιν καὶ τὸ ἅγιον μετὰ [1] τοῦ χριστοῦ. [1] καὶ ἥξει ἡ συντέλεια αὐτοῦ μετ᾽ ὀργῆς. καὶ καιροῦ συντελείας. ἀπὸ πολέμου πολεμηθήσεται. 27. καὶ δυναστεύσει ἡ διαθήκη εἰς πολλούς. καὶ πάλιν ἐπιστρέψει· καὶ ἀνοικοδομηθήσεται εἰς πλάτος καὶ μῆκος. καὶ κατὰ συντέλειαν καιρῶν. καὶ μετὰ ἑπτὰ καὶ ἑβδομήκοντα καιρούς. καὶ ἑξηκονταδύο [2] ἐτῶν ἕως καιροῦ συντελείας πολέμου· καὶ ἀφαιρεθήσεται ἡ ἐρήμωσις ἐν τῷ κατισχύσαι τὴν διαθήκην ἐπὶ πολλὰς ἑβδομάδας· καὶ ἐν τῷ τέλει τῆς ἑβδομάδος. ἀρθήσεται ἡ θυσία καὶ ἡ σπονδή. καὶ ἐπὶ τὸ ἱερὸν [3] βδέλυγμα τῶν ἐρημώσεων ἔσται. ἕως συντελείας· καὶ συντέλεια δοθήσεται [4] ἐπὶ τὴν ἐρήμωσιν [5].	26. καὶ μετὰ τὰς ἑβδομάδας τὰς ἑξηκονταδύο ἐξολοθρευθήσεται χρίσμα, καὶ κρίμα οὐκ [6] ἔστιν ἐν αὐτῷ. [7] καὶ τὴν πόλιν καὶ τὸ ἅγιον διαφθερεῖ σὺν τῷ ἡγουμένῳ τῷ ἐρχομένῳ, [8] ἐκκοπήσονται [9] ἐν κατακλυσμῷ, καὶ ἕως τέλους πολέμου συντετμημένου [10] τάξει ἀφανισμοῖς. 27. καὶ δυναμώσει διαθήκην πολλοῖς ἑβδομὰς μία. καὶ ἐν τῷ ἡμίσει τῆς ἑβδομάδος [11] [καταπαύσει [12] θυσιαστήρια, καὶ θυσίας [13], καὶ [14] ἕως πτερυγίου ἀπὸ ἀφανισμοῦ, καὶ ἕως συντελείας καὶ σπουδῆς τάξει ἐπὶ ἀφανισμῷ. καὶ δυναμώσει διαθήκην πολλοῖς ἑβδομὰς μία, καὶ ἐν τῷ ἡμίσει τῆς ἑβδομάδος] ἀρθήσεταί [15] μου θυσία καὶ σπονδή, καὶ [16] ἐπὶ τὸ ἱερὸν βδέλυγμα [17] τῶν ἐρημώσεων [18], καὶ ἕως τῆς συντελείας καιροῦ συντελεία δοθήσεται ἐπὶ τὴν ἐρήμωσιν.

[1]—[1] Syr. подъ астерискомъ. [2] Syr. ἔτη. [3] Syr. овенъ. [4] Chis. овенъ. [5] Меговелъ въ об. кодд.

[6] ἔσται: 33. 42. 49. 90. 91. 148. 228. Кл. Ал. Зл. Терт. Проси.

[7] τὴν δὲ: 33. 34. 49. 90. 91. 148. 228. 230. 232. 233. Com. Ald. Зл.

[8] +καὶ: III. XII. 22. 23. 33. 34. 35. 36. 42. 48. 49. 51. 62. 91. 106. 147. 148. 228. 230. 231. 232. 233. Com. Ald. Кл. Ал. Евс. Зл. Терт.

[9] +ὡς: 22. 34. 42. 51. 231. Com. Зл. Трт. Θдр.

[10] τάξει опускаютъ: 22. 23. 26. 48. 62. 147. 231. Кл. Ал. Зл. Евс. Θдр.

[11] Вставка на полѣ въ Ват. код. и въ текстѣ въ др. кодд., кромѣ: 37. 42. 130. 229. 230. 231. 232.

[12] Θυσιαστήριον: III, 35. 36. Ald. Θυσίασμα: 23. 62. 147. Θυμίαμα: 22. 34. 48. 51.

[13] +καὶ σπονδήν: 22. 34. 48. 51.

[14] ἕως опускаютъ: XII, 33. 49. 91. 148. 228. ἐπὶ πτερύγιον: 22. 34. 48. 51.

[15] μου опускаютъ: XII, 22. 34. 36. 42. 48. 51. 106. 230. 231. Com. Евс. Зл. Ирин. Θдр.

[16] +ἐπὶ τούτοις: 22. 34. 36. 48. 51. 231. Зл.

[17] τῆς ἐρημώσεως: 36. 48. 51. 231. Θдр. Ирин. Зл.

[18] +ἔσται: III. 23. 26. 33. 34. 35. 42. 49. 51. 87. 90. 106. 130. 228. 230. 233. Com. Ald. Евс. Iер.

ВВЕДЕНІЕ.

Среди доказательствъ истинности христіанской религіи одно изъ первыхъ мѣстъ занимаетъ, безспорно, откровеніе Даніилу о семидесяти седьминахъ. Если оно не съ такою опредѣленностію и подробностью, какъ другія пророчества, говоритъ объ обстоятельствахъ пришествія Мессіи и Его смерти, зато оно, во-первыхъ, точно опредѣляетъ время этихъ событій и, во-вторыхъ, указываетъ дальнѣйшую судьбу еврейскаго народа, послѣ отверженія имъ своего Мессіи. А эти два качества откровенія о седьминахъ яснѣе, нагляднѣе всего говорятъ объ истинности богооткровенной религіи. За нѣсколько столѣтій вѣрующимъ не только предвозвѣщается будущее событіе, но и точно опредѣляется, чрезъ сколько времени оно случится. Можно ли тогда сомнѣваться въ истинности христіанства, если начало его, пришествіе и смерть его Основателя, какъ разъ совпадаетъ съ указаннымъ въ откровеніи временемъ? если тѣ событія, которыя представляются въ немъ имѣющими совершиться сряду послѣ періода семидесяти седьминъ, давно уже совершились и совершились дѣйствительно вскорѣ послѣ смерти Іисуса Христа? Остается только или признать истинность и богооткровенность христіанской религіи, или извратить текстъ и смыслъ откровенія, чтобы отнять у него силу доказательства. Послѣднимъ путемъ и идутъ еврейскіе ученые, толковавшіе откровеніе о седьминахъ, и новѣйшіе раціоналисты, оспаривающіе божественное происхожденіе христіанской религіи. Но люди, ставящіе истину выше всего, не смущающіеся сверхъестественнымъ въ религіи и признающіе промыслъ Божій въ судьбахъ міра и человѣка, видятъ въ откровеніи о седьминахъ одно изъ наиболѣе убѣдительныхъ доказательствъ богооткровенности

христіанства. Поэтому данное откровеніе пророка Даніила занимаетъ видное мѣсто въ системахъ основного богословія (напримѣръ, у нашего отечественнаго богослова митрополита Макарія) и въ сочиненіяхъ, направленныхъ противъ евреевъ (напримѣръ, въ трудахъ Тертулліана, св. Іоанна Златоустаго, Василія Селевкійскаго; въ средневѣковыхъ сочиненіяхъ Юліана Толедскаго, Евѳимія Зигабена, Петра Мавриція и др. [1]. Этимъ же свойствомъ откровенія о седьминахъ объясняется и то, что евреи, обращающіеся въ христіанство, именно этому откровенію удѣляютъ часто особенно много вниманія и видятъ въ немъ сильное оружіе противъ своихъ бывшихъ единовѣрцевъ. Такъ, извѣстны сочиненія рабби Самуила Марокканскаго (De adventu Messiae, quem Judaei temere exspectant, liber) и Петра Альфонса [2], въ которыхъ эти обратившіеся ко Христу іудеи съ особенною настойчивостью говорятъ о томъ, что пророчество Даніила о седьминахъ уже исполнилось, и приводятъ на это вѣскія доказательства какъ изъ самого пророчества, такъ и изъ исторіи. Самуилъ Марокканскій, можетъ быть, и своимъ обращеніемъ въ христіанство въ значительной мѣрѣ обязанъ откровенію о седьминахъ: вышеуказанное сочиненіе его вышло въ свѣтъ ранѣе его обращенія, или, вѣрнѣе, было первымъ шагомъ его обращенія ко Христу [3]. Такою важностью откровенія о седьминахъ объясняется и обиліе литературы, относящейся къ нему. Оно не только занимаетъ значительное мѣсто въ многочисленныхъ комментаріяхъ на книгу пророка Даніила, но вызвало много и особыхъ монографій, исключительно посвященныхъ его истолкованію.

Далѣе мы укажемъ тѣ источники и пособія, на основаніи и при помощи которыхъ построено предлагаемое посильное толкованіе откровенія Даніилу о семидесяти седьминахъ.

Первымъ источникомъ для толкованія откровенія о седьминахъ служитъ, конечно, само Св. Писаніе во всемъ его объемѣ,

---

[1] Fr. Fraidl. Die Exegese der siebzig Wochen Daniels, Ss. 100, 111—112, 115—116.

[2] Ibidem, Ss. 109, 112.

[3] Ibidem, S. 109, Anm. 5.

насколько оно представляетъ стройное цѣлое, въ которомъ каждая отдѣльная часть тѣсно связана съ другими частями и не можетъ быть понята и вѣрно истолкована безъ сопоставленія съ ними. Такъ и пророчество Даніила о седьминахъ слѣдуетъ разсматривать въ связи съ другими ветхозавѣтными пророчествами и вообще со всѣмъ Св. Писаніемъ; тогда только мы поймемъ мѣсто его среди другихъ пророчествъ и истинный смыслъ его.

Въ частности, при истолкованіи откровенія о седьминахъ особенное вниманіе должно обращать на книгу пророка Даніила, въ которой оно находится. Необходимость этого понятна: откровеніе о седьминахъ тѣсно связано съ другими пророчествами, находящимися въ этой книгѣ, нѣкоторыя его выраженія встрѣчаются и въ этихъ пророчествахъ; очевидно, что ни общій смыслъ даннаго откровенія, ни его отдѣльныя выраженія не могутъ быть вѣрно поняты безъ сопоставленія со смысломъ и языкомъ всей книги.

Наконецъ, самый текстъ откровенія о седьминахъ долженъ служить центромъ, вокругъ котораго должно вращаться все толкованіе, и къ которому параллельныя мѣста должны относиться, какъ точки, лежащія въ различныхъ отъ него разстояніяхъ. Такъ какъ книга пророка Даніила дошла до насъ въ нѣсколькихъ видахъ: въ еврейскомъ текстѣ и въ различныхъ болѣе или менѣе древнихъ переводахъ,—то первою задачею толкователя является разсмотрѣніе всѣхъ этихъ текстовъ, указаніе того изъ нихъ, который наиболѣе близокъ къ подлинному, первоначальному тексту этой книги, и опредѣленіе этого подлиннаго текста откровенія о седьминахъ.

Взоры всякаго, кто желаетъ толковать ту или другую св. книгу, останавливаются прежде всего на еврейскомъ ея текстѣ. Еврейскій языкъ—родной языкъ священныхъ ветхозавѣтныхъ писателей; на этомъ языкѣ сообщались имъ божественныя откровенія, на немъ они говорили, на немъ и писали свои боговдохновенныя книги. Естественно поэтому въ еврейскомъ библейскомъ текстѣ видѣть текстъ, наиболѣе близкій къ подлинному тексту св. писателей, къ тому, который былъ данъ въ ихъ автографахъ.

Но если ближе познакомиться съ исторіей происхожденія и современнымъ состояніемъ еврейскаго библейскаго текста, то придется значительно уменьшить надежду найти въ немъ подлинный текстъ Св. Писаній. Мы узнаёмъ, что списки, въ которыхъ сохранился до насъ этотъ текстъ, весьма недавняго происхожденія[4], значительно моложе рукописей греческаго перевода LXX-ти; что Св. книги были написаны первоначально не тѣмъ шрифтомъ, такъ называемымъ квадратнымъ, которымъ написаны эти списки, а другимъ, такъ называемымъ древне-еврейскимъ шрифтомъ, совершенно отличнымъ отъ квадратнаго, и что послѣдній введенъ незадолго до Р. Х.; что еврейскій текстъ, писанный однѣми согласными буквами, снабженъ гласными знаками не ранѣе 6-го вѣка по Р. Х., благодаря трудамъ масоретовъ, простиравшимся иногда далѣе простой пунктуаціи текста; что въ новое время существуетъ авторитетная гипотеза, построенная на весьма прочныхъ основаніяхъ, которая производитъ всѣ нынѣшніе кодексы еврейскаго текста отъ одного только списка, весьма несовершеннаго и незначительной древности: отъ 1—2 вѣка по Р. Х.[5]. Такая исторія еврейскаго текста Библіи далеко не говоритъ въ пользу его неповрежденности. Напротивъ, невозможно предположить, чтобы при такихъ превратностяхъ судьбы онъ уцѣлѣлъ отъ всевозможныхъ невольныхъ и вольныхъ искаженій. Такія искаженія можно замѣтить во многихъ мѣстахъ Библіи; для примѣра укажемъ на хронологію патріарховъ, на вокализацію четырехбуквеннаго Имени Божія, на безчисленныя Кэри (поправки) масоретовъ. Отсюда понятно, съ какою осторожностью слѣдуетъ относиться къ еврейскому тексту при установкѣ подлиннаго чтенія того или другого мѣста Библіи. Но эта осторожность не должна заходить слишкомъ далеко. Не должно наказывать безъ суда; иногда при самыхъ тяжкихъ уликахъ можетъ открыться полная

---

[4] Самый древній изъ этихъ списковъ, «Кодексъ Пророковъ», хранящійся въ С.-Петербургской Публичной Библіотекѣ, относится къ 916-му году по Р. Х. См. E. König, Einleitung in das A. T., Bonn, 1893, S. 24.

[5] P. de Lagarde, Anmerkungen zur griechischen übersetzung der proverbien. Leipzig. 1863, s. 1—2 etc.

невинность подозрѣваемаго. Если позволительно приложить это сравненіе къ библейско-экзегетической области, то оно будетъ удерживать насъ отъ односторонняго увлеченія тѣмъ или другимъ видомъ библейскаго текста, такого увлеченія, при которомъ вычеркиваются остальные тексты. Не смотря на всѣ улики противъ неповрежденности еврейскаго текста, не слѣдуетъ прямо отказываться отъ него, оставлять его совсѣмъ безъ вниманія. «Справедливость, польза и необходимость требуютъ,» говоримъ словами преосвященнаго Филарета, митрополита Московскаго [6]: «чтобы и еврейскій текстъ также въ догматическомъ достоинствѣ принимаемъ былъ въ соображеніе при истолкованіи Священнаго Писанія». Далѣе этотъ знаменитѣйшій святитель Церкви Русской, извѣстный своею благоразумною осторожностью во всемъ, что касалось православной вѣры, приводитъ множество доказательствъ въ подтвержденіе указанной мысли. Въ числѣ этихъ доказательствъ есть и указаніе на книгу пророка Даніила, которая издавна, какъ увидимъ, читается Церковью не по переводу LXX, а по переводу Ѳеодотіонову, весьма близкому къ еврейскому тексту [7]. Что же касается въ частности откровенія пророку Даніилу о семидесяти седьминахъ, то еврейскій текстъ этого откровенія носитъ въ себѣ явные признаки подлинности и неповрежденности, тогда какъ текстъ LXX-ти въ данномъ мѣстѣ значительно испорченъ. Наконецъ, въ защиту еврейскаго текста отъ сыплющихся на него въ послѣднее время нападокъ слѣдуетъ указать еще на одно обстоятельство. Никто, конечно, не станетъ отрицать, что св. книги Ветхаго Завѣта написаны на еврейскомъ языкѣ, и что еврейскій текстъ, какъ бы онъ ни былъ испорченъ, даетъ ихъ намъ на подлинномъ языкѣ; переводъ же LXX-ти, хотя и весьма древній и авторитетный, есть все-таки только переводъ. А переводъ самый совершенный, самый близкій къ подлиннику, никогда не можетъ передавать послѣдняго съ такою точностью

---

[6] «О догматическомъ достоинствѣ и охранительномъ употребленіи греческаго семидесяти толковниковъ и славенскаго переводовъ Священнаго Писанія» Приб. къ Тв. Свв. Оо. 1858, 455.

[7] Тамъ же, стр. 462—463.

и вѣрностію, которая бы давала возможность довольствоваться только переводомъ и дѣлала подлинникъ совершенно излишнимъ; таково свойство человѣческихъ языковъ, что немногія слова и выраженія (если нельзя сказать: ни одно изъ нихъ) одного языка могутъ совершенно совпадать съ подобными же словами и выраженіями другого, даже родственнаго языка,—а здѣсь мы имѣемъ дѣло съ языками далекихъ другъ отъ друга вѣтвей человѣческаго рода: арійской и семитской. Поэтому, вполнѣ сознавая всѣ недостатки еврейскаго текста въ современномъ его видѣ, слѣдуетъ все-таки отдавать ему должное и, оказывая предпочтеніе переводу LXX-ти въ смыслѣ его исправности, провѣряя этимъ переводомъ еврейскій текстъ, не слѣдуетъ отнимать у послѣдняго преимущества подлинника, — особенно въ тѣхъ мѣстахъ, гдѣ текстъ LXX-ти представляетъ явные слѣды поврежденія. Еврейскій текстъ книги пророка Даніила мы имѣли въ изданіи S. Baer'a: Libri Danielis, Ezrae et Nehemiae. Textum Masoreticum accuratissime expressit, e fontibus Masorae codicumque varie illustravit, adumbrationem Chaldaismi Biblici adjecit S. Baer. Cum Praefatione Franc. Delitzsch et Glossis Babylonicis Frid. Delitzsch. Lipsiae, 1882. Нѣкоторыя разночтенія, встрѣчающіяся въ различныхъ рукописяхъ и изданіяхъ еврейскаго текста, указаны въ трудѣ Kennicott'a: Vetus Testamentum hebraicum, cum variis lectionibus. Edidit Benjaminus Kennicott. Oxonii, 1776. T. II pp. 599—600 [8]. Но эти разночтенія почти всѣ касаются только способа написанія словъ (scriptio plena vel defectiva), нѣкоторыя представляютъ, очевидно, простыя описки, и только одно (именно, разночтеніе 313-го кодекса Kennicott'a въ 27-мъ стихѣ) представляетъ нѣкоторый интересъ; но объ этомъ рѣчь послѣ.

Изъ переводовъ Св. Писанія на другіе языки самый древній есть греческій Александрійскій переводъ LXX-ти толковниковъ. Далеко превосходя своею древностью ту форму еврейскаго текста, какую

[8] Мы не имѣли подъ руками подобнаго же изданія de Rossi; приведенныя въ немъ разночтенія еврейскаго текста указываемъ по книгамъ: R. Wolf, Die siebzig Wochen Daniels. Leipzig, 1889, и v. Lennep, De zeventig jaarweken van Daniel, Utrecht 1888.

онъ получилъ отъ масоретовъ, переводъ этотъ имѣетъ весьма важное значеніе при опредѣленіи первоначальнаго чтенія библейскаго текста. Иногда ему прямо приходится отдать предпочтеніе предъ еврейскимъ текстомъ, особенно въ тѣхъ мѣстахъ, гдѣ послѣдній, повидимому, намѣренно испорченъ масоретами (напр., въ хронологіи патріарховъ). Но въ книгѣ пророка Даніила переводъ LXX-ти не можетъ имѣть такого значенія: онъ настолько неисправенъ, что уже Церковь первыхъ вѣковъ христіанства отвергла его и вмѣсто него приняла во всеобщее употребленіе переводъ Ѳеодотіона. Таково свидѣтельство блаж. Іеронима, повторенное имъ неоднократно и съ большою настойчивостью. Въ своемъ предисловіи къ переводу книги пророка Даніила онъ говоритъ: «Церкви Господа Спасителя не читаютъ книгу пророка Даніила по переводу LXX толковниковъ, пользуясь изданіемъ Ѳеодотіона; и почему это случилось, я не знаю». Изложивъ далѣе нѣсколько своихъ предположеній о причинѣ отверженія перевода LXX-ти, знаменитый учитель Церкви заключаетъ: «одно я могу утверждать, что [переводъ LXX-ти] сильно расходится съ истиною (подъ которою блаж. Іеронимъ разумѣетъ еврейскій текстъ), и что онъ отвергнутъ по справедливости» [9]. То же самое блаж. Іеронимъ повторяетъ и въ предисловіи къ своему комментарію на книгу пророка Даніила [10], а въ самомъ комментаріи, при толкованіи 5-го ст. 4-ой главы этой книги, онъ говоритъ: «по суду учителей Церкви изданіе ихъ (т. е. переводъ LXX) въ этой книгѣ отвергнуто, и обыкновенно читается [изданіе] Ѳеодотіона, которое согласно и съ еврейскимъ [текстомъ], и съ остальными переводами. Поэтому и Оригенъ въ IX томѣ Строматовъ утверждаетъ, что онъ ведетъ свое разсужденіе, начиная съ этого мѣста въ [книгѣ] пророка Даніила, не по [переводу] LXX толковниковъ, которые сильно расходятся съ еврейскою истиною, но по изданію Ѳеодотіона» [11]. И дѣйствительно: всѣ святотеческія толкованія книги пророка Даніила ведутся по пере-

---

[9] Migne, s. lat. XXVIII, 1291.
[10] Migne, s. lat. XXV, 493.
[11] Ibid. 514.

воду Ѳеодотіона, а не LXX. Предъ нами поразительный фактъ: вся христіанская Церковь, вмѣстѣ съ великимъ ученымъ и знатокомъ Св. Писанія Оригеномъ, единодушно и единогласно отвергаетъ переводъ LXX на книгу пророка Даніила и принимаетъ во всеобщее употребленіе переводъ Ѳеодотіона, сдѣланный съ еврейскаго текста. Причины такого явленія неизвѣстны; но несомнѣнна та общая причина, что переводъ LXX въ книгѣ Даніила былъ признанъ испорченнымъ, несогласнымъ съ подлиннымъ текстомъ этой книги, и что переводъ Ѳеодотіона, а слѣдовательно и его подлинникъ—современный еврейскій текстъ, былъ признанъ наиболѣе близкимъ къ подлинному писанію пророка. Отверженіе древнею Церковію перевода LXX въ книгѣ Даніила повело къ тому, что текстъ этого перевода совершенно вышелъ изъ употребленія въ христіанской Церкви послѣдующаго времени и едва не затерялся окончательно. Только въ концѣ прошлаго столѣтія въ одной изъ древнихъ рукописей библіотеки Chigi былъ найденъ списокъ книги Даніила по переводу LXX и изданъ въ Римѣ Симономъ de Magistris въ 1772 году. Этотъ codex Chisianus, обычно относимый къ IX вѣку, [12]—единственный изъ всѣхъ библейскихъ списковъ, сохранившій переводъ LXX въ книгѣ Даніила; во всѣхъ остальныхъ греческихъ спискахъ содержится переводъ Ѳеодотіона; всѣ переводы текста LXX на другіе языки: древне-латинскій, коптскіе, арабскій, славянскій и др., передаютъ книгу Даніила по переводу Ѳеодотіона. Имѣется только одинъ переводъ, передающій текстъ книги Даніила по LXX-ти,—это сирскій переводъ гексапларнаго текста LXX-ти, сдѣланный въ 617 г. монофизитскимъ епископомъ Павломъ Телльскимъ и сохранившійся въ рукописи, которая немногимъ моложе своего оригинала [13] (такъ называемый codex syro-hexaplaris Ambrosianus). Эта рукопись издана Ceriani фотолитографически въ 1874 году. По сирскому переводу Павла Телльскаго можно вполнѣ возстановить его греческій подлинникъ: этотъ переводъ настолько бу-

[12] C. H. Cornill, Das Buch des Propheten Ezechiel. Leipzig, 1886. S. 16. H. B. Swete, The Old Testament in greek, III, p. XII.

[13] Cornill l. c. S. 48.

кваленъ, что каждую греческую частицу передаетъ соотвѣтствующимъ ей спрскимъ словомъ. Переводъ LXX мы имѣли въ изданіяхъ: Daniel secundum Septuaginta ex tetraplis Origenis Romae anno 1772 ex Chisiano codice primum editus, Göttingae 1774; R. Holmes—J. Parsons, Vetus Testamentum graecum cum variis lectionibus. T. IV, Oxonii 1827; H. A. Hahn, Δανιὴλ κατὰ τοὺς Ἑβδομήκοντα. Lipsiae 1845; H. B. Swete, The Old Testament in greek, according to the Septuagint. Vol. III, Cambridge 1894.

Весьма возможно, что при обсужденіи и рѣшеніи древними церковными авторитетами вопроса о достоинствѣ текстовъ книги Даніила имѣли то или другое значеніе и четыре послѣдніе стиха 9 главы, содержащіе откровеніе о седьминахъ. Если прочитать эти стихи только по переводу LXX, не сравнивая его съ еврейскимъ текстомъ, и тогда бросается въ глаза нестройность перевода и неясность его смысла. Но если сравнить текстъ откровенія о седьминахъ въ еврейской библіи и въ переводѣ LXX, то нестройность послѣдняго и его испорченность становится очевидною. Въ переводѣ LXX текстъ откровенія гораздо обширнѣе, чѣмъ въ евр. текстѣ, и что особенно замѣчательно,—лишнія сравнительно съ еврейскимъ текстомъ слова перевода являются не случайной или объяснительной вставкой, а представляютъ только вторичную передачу раньше уже переведенныхъ словъ евр. текста, такъ что весь переводъ откровенія о седьминахъ состоитъ какъ бы изъ лоскутковъ, сшитыхъ бѣлыми нитками. Такъ, послѣ 24 стиха, переданнаго близко къ подлиннику (только לְמַשֵּׁחַ читается какъ לְשַׂמֵּחַ καὶ εὐφράναι), свободно переводится половина стиха 25-го: καὶ γνώσῃ, καὶ διανοηθήσῃ, καὶ εὐφρανθήσῃ (снова производство отъ שָׂמַח «радоваться» или ошибочное чтеніе вмѣсто φρονήσῃ), καὶ εὑρήσεις (מן־מצא отъ מָצָא «находить») προστάγματα (דָּבָר) ἀποκριθῆναι (לְהָשִׁיב), καὶ οἰκοδομήσεις Ἱερουσαλὴμ πόλιν (עִיר вмѣсто עַד) Κυρίῳ (מָשִׁיחַ נָגִיד). Затѣмъ стоящія далѣе числа: «седьминъ семь и седьминъ 62» даютъ поводъ автору перевода перейти прямо къ 26 стиху, начинающемуся подобными же словами съ предлогомъ «послѣ»; этотъ стихъ переводится почти весь, кромѣ послѣднихъ словъ

בַּחֲרָצָה שִׁבְעִים, съ незначительными отступленіями. Далѣе слѣдуетъ начало 27 стиха: καὶ δυναστεύσει ἡ διαθήκη «εἰς πολλοὺς», переводятся послѣднія слова стиха 25-го (הָעִתִּים - - הָשִׁיב: καὶ πάλιν ἐπιστρέψει и т. д.), снова приводятся тѣ же числа, что и въ 26 стихѣ, и дается переводъ послѣднихъ словъ 26 стиха: καὶ μετὰ ζ′ καὶ ο′ «καιροὺς» καὶ ξβ′ «ἐτῶν» ἕως καιροῦ συντελείας πολέμου, καὶ ἀφαιρεθήσεται ἡ ἐρήμωσις. Затѣмъ опять начинается 27 стихъ: ἐν τῷ κατισχῦσαι τὴν διαθήκην ἐπὶ «πολλὰς» ἑβδομάδας (שָׁבוּעַ אֶחָד), καὶ ἐν τῷ «τέλει» (וַחֲצִי) τῆς ἑβδομάδος—и т. д. до конца стиха. Такое свойство перевода LXX прямо свидѣтельствуетъ о подлинности еврейскаго текста: невозможно допустить, чтобы подлиннымъ былъ текстъ, предполагаемый переводомъ, а настоящій евр. текстъ былъ только сокращеніемъ подлинника,—невозможно допустить потому, что подлинникъ носилъ бы въ такомъ случаѣ какую-то странную форму, состоялъ бы изъ повторенія однихъ и тѣхъ же словъ и выраженій въ различныхъ сочетаніяхъ; стройность формы рѣшительно на сторонѣ евр. текста. Съ другой стороны, есть и внутренніе признаки неподлинности перевода LXX въ послѣднихъ стихахъ 9 главы. Напр., 25 стихъ читается у LXX такъ: «и узнаешь, и уразумѣешь, и возрадуешься, и получишь приказаніе отвѣчать (или: и найдешь, что приказанія отвѣчены, т. е. исполнены?), и построишь Іерусалимъ, городъ Господу». Такъ какъ передается рѣчь ангела пророку, то подлежащимъ при всѣхъ этихъ глаголахъ является, очевидно, пророкъ Даніилъ, подобно тому, какъ онъ же разумѣется и въ первыхъ словахъ 25 стиха по евр. тексту: «и увѣси и уразумѣеши». Но по LXX выходитъ, что самъ пророкъ построитъ Іерусалимъ! Нельзя, конечно, понимать этого въ томъ смыслѣ, что «Даніилъ будетъ участвовать въ постройкѣ своею дѣятельностью при персидскомъ дворѣ» [14]: слова здѣсь столь ясныя, что понимать ихъ можно только буквально и объяснять ошибочнымъ предположеніемъ переводчиковъ, будто Даніилъ самъ строилъ Іерусалимъ. Далѣе, въ стихахъ 26 и 27 есть много указаній на то, что пере-

[14] Fraidl, Die Exegese der 70 Wochen, S. 10. Anm. 3.

водчики относили это откровеніе ко временамъ Антіоха Епифана. «И послѣ 7 и 70 и 62 устранится помазаніе и не будетъ, и царство языковъ погубитъ городъ и святилище съ помазанникомъ, и придетъ скончаніе его съ гнѣвомъ, и до времени скончанія онъ будетъ опустошаемъ (буквально: воюемъ) войною». Приведенныя числа, добытыя переводчикомъ посредствомъ искаженія евр. текста (שָׁבְעִים прочитано какъ שְׁבֻעִים), даютъ въ суммѣ 139,—число, указывающее приблизительно начало царствованія Антіоха по селевкидовой эрѣ: онъ вступилъ на престолъ въ 137 году этой эры (1 Мак. 1, 10). Его царствованіе было временемъ несчастій для іудеевъ: онъ разорилъ ихъ городъ и храмъ и подвергъ всю землю опустошительной войнѣ; при немъ былъ убитъ и «помазанникъ» Онія III, послѣ котораго прекратилось законное первосвященство (2 Мак. 4, 7 сл. 33 сл.). На эти событія и указываютъ, по всей вѣроятности, приведенныя слова перевода LXX, хотя частности здѣсь могутъ быть понимаемы различно [15]. Въ дальнѣйшихъ словахъ перевода LXX содержится уже разсказъ о постепенномъ освобожденіи евреевъ изъ-подъ языческаго гнета. «И усилится завѣтъ на многихъ (разумѣются приверженцы Маккавеевъ 1 Мак. 2, 27 сл.), и снова возвратится, и возстановится (городъ) въ ширину и длину (ср. 1 Мак. 4, 60) при концѣ временъ. И послѣ 7 и 70 временъ и 62 лѣтъ до конца (т. е. предъ концомъ) времени войны,—и отнимется опустошеніе (т. е. окончится опустошеніе храма, 1 Мак. 4, 34 сл. 43 сл.) въ то время, какъ завѣтъ окрѣпнетъ на многія седьмины». Здѣсь разумѣются освободительныя войны Маккавеевъ, обезпечившія евреямъ сравнительно незавнсимое существованіе на многіе годы. Послѣднія слова LXX снова говорятъ объ оскверненіи и опустошеніи храма: «и въ концѣ седьмины (какая седьмина здѣсь разумѣется, опредѣлить невозможно) будетъ отнята жертва и возліяніе, и на храмъ будетъ мерзость запустѣній

[15] Напр., χρῖσμα у LXX-ти одни толкуютъ какъ «елей для помазанія» (Wieseler, Die 70 Wochen, 202 Anm. f; v. Lennep, De 70 jaarweken, 41), другіе—какъ все богослуженіе или законное преемство первосвященниковъ (Fraidl o. c. 8), какъ храмъ или святое святыхъ (Hävernick, Commentar, 387 Anm. 1) и др.

(1 Мак. 1, 45. 54) до конца, и конецъ будетъ данъ на опустошеніе» (т. е. оно окончится). [16]

Итакъ переводъ LXX въ 24—27 стихахъ 9-ой главы книги пророка Даніила искаженъ при составленіи или передѣланъ уже послѣ составленія [17] съ предвзятою цѣлью, и объ очищеніи его въ настоящее время не можетъ быть и рѣчи, по недостатку для этого научныхъ средствъ: современный масоретскій текстъ, какъ позднѣйшій, служитъ для этого не можетъ. Но для толкованія если не всего откровенія о седьминахъ, то отдѣльныхъ его выраженій переводъ LXX иногда весьма важенъ, какъ свидѣтель пониманія ихъ самими древними евреями [18].

Слѣдующій по времени переводъ Библіи съ еврейскаго текста есть сирскій переводъ Пешито, относящійся ко II вѣку по Р. Х. Въ послѣднихъ стихахъ 9 гл. книги Даніила онъ очень близокъ къ еврейскому тексту, отступая отъ него только въ незначительныхъ частностяхъ. Изъ такихъ отступленій отмѣтимъ переводъ слова נֶחְתָּכָה: נְתִתְנַיְחוּן «успокоятся» вмѣсто «опредѣлены», и послѣдняго предложенія 24 стиха: וְלִמְשֹׁחַ קֹדֶשׁ קָדָשִׁין «и до Мессіи Святаго

---

[16] Конецъ 27 стиха (ἀρθήσεται κτλ.) по переводу LXX буквально сходенъ съ тѣмъ же мѣстомъ по переводу Θеодотіона (за исключеніемъ слова καιροῦ послѣ συντελείας, котораго первый не имѣетъ); онъ совсѣмъ не вяжется съ предшествующимъ, такъ какъ составляетъ повтореніе того, что сказано уже раньше, и безъ него переводъ LXX былъ бы нѣсколько стройнѣе и болѣе соотвѣтствовалъ бы цѣлямъ его составителя; наконецъ, въ сирскомъ гексапларномъ переводѣ весь конецъ стиха, начиная словами βδέλυγμα τῶν ἐρημώσεων, стоитъ подъ обеломъ, а въ кодексѣ библіотеки Chigi обелъ поставленъ ближе къ концу, передъ словами ἐπὶ τὴν ἐρήμωσιν. Не представляютъ ли всѣ эти слова, начиная съ ἀρθήσεται, прибавку, внесенную Оригеномъ въ свой гексапларный текстъ LXX изъ перевода Θеодотіонова, и не была ли эта прибавка отмѣчена астерискомъ, который позже, по ошибкѣ писца, былъ замѣненъ обеломъ и отнесенъ не на свое мѣсто?

[17] Невозможно согласиться съ мнѣніемъ Вольфа (Wolf, Die 70 Wochen Dan., 28), что переводъ LXX «испорченъ христіанами, чтобы убѣдить іудеевъ въ томъ, что Іисусъ есть Мессія». Эта истина можетъ быть доказана изъ евр. текста гораздо легче, чѣмъ изъ перевода LXX въ его нынѣшнемъ состояніи.

[18] Разборъ и толкованіе перевода LXX даны въ изданіи Hahn'a, въ названныхъ сочиненіяхъ: Hävernick 386 f., Wieseler 197 ff., Fraidl 4 ff., Wolf 17—25, van Lennep 23—24, 31 vgg. и въ трудѣ A. Bludau, De Alexandrinae interpretationis libri Danielis indole critica et hermeneutica. Monasterii Guestf. 1891, p. 59 sqq.; ср. M. Löhr, Textkritische Vorarbeiten zu einer Erklärung des Buches Daniel, Zeitschrift für die alttestamentliche Wissenschaft 1895, I, S. 75, II, S. 1 ff.

Святыхъ». Но эти отступленія не свидѣтельствуютъ о томъ, что еврейскій текстъ, послужившій оригиналомъ для Пешито, имѣлъ здѣсь чтенія, отличающіяся отъ нынѣшнихъ: эти чтенія Пешито есть только свободный переводъ того же еврейскаго текста. Мы приводимъ текстъ Пешито по изданію Valtoni, Biblia Polyglotta, T. III p. 216, и по названному уже сочиненію Fraidl'я (стр. 23).

Назовемъ здѣсь же латинскій переводъ блаж. Іеронима (Вульгата), хотя онъ и значительно моложе Пешито. Этотъ переводъ, по своему обыкновенію, очень близокъ къ еврейскому тексту; но въ передачѣ откровенія о седьминахъ вноситъ и нѣкоторый элементъ толкованія текста. Укажемъ для примѣра на переводъ словъ וְאֵין לוֹ: et non erit ejus «populus, qui eum negaturus est» (хотя едва ли можно сомнѣваться въ томъ, что послѣднія слова, отмѣченныя кавычками, не принадлежатъ самому блаж. Іерониму); далѣе, עַם «народъ» читается какъ עִם: cum duce venturo, וְעַל כְּנַף: et in templo. Текстъ Вульгаты приводится нами по изданію J. P. Migne, Patrologiae Cursus completus, гдѣ въ числѣ прочихъ твореній блаж. Іеронима дается и его Divina Bibliotheca (s. lat. XXVIII).

По времени составленія близко къ сирскому переводу стоятъ греческіе переводы Акилы, Симмаха и Ѳеодотіона. Переводы первыхъ двухъ дошли до насъ только въ отрывкахъ; эти отрывки, относящіеся къ откровенію о седьминахъ, приводятся по труду Фильда: Origenis hexaplorum quae supersunt. Ѳеодотіоновъ же переводъ книги Даніила пріобрѣлъ весьма широкую извѣстность въ христіанской Церкви и замѣнилъ собою переводъ LXX, такъ что во всѣхъ почти библейскихъ спискахъ и изданіяхъ книга Даніила приводится въ Ѳеодотіоновомъ переводѣ. Поэтому онъ вполнѣ раздѣлилъ судьбу общепринятаго перевода: вмѣстѣ съ переводомъ LXX въ остальныхъ Св. Книгахъ, онъ былъ неоднократно редактированъ учеными мужами древне-христіанской Церкви, вмѣстѣ съ нимъ былъ переведенъ на латинскій, коптскій, эѳіопскій, арабскій, славянскій, армянскій и др. языки, вмѣстѣ съ нимъ распространился во множествѣ списковъ, изъ которыхъ многіе сохранились и доселѣ, иные значительной древности. Единственнымъ изданіемъ, въ которомъ приведены варіанты множества списковъ Ѳеодотіонова пере-

вода, остается доселѣ: Vetus Testamentum graecum cum variis lectionibus. Editionem a R. Holmes inchoatam continuavit J. Parsons. T. IV, Oxonii 1827. Новѣйшее англійское изданіе: The Old Testament in greek, according to the Septuagint. By H. B. Swete. Vol. III, Cambridge 1894—даетъ варіанты только унціальныхъ кодексовъ: знаменитыхъ Ватиканскаго, Александрійскаго и гексапларнаго Маршаліанскаго. Первые два кодекса кромѣ того мы имѣли въ изданіяхъ: Bibliorum sacrorum graecus codex Vaticanus auspice Pio IX P. M. collatis studiis C. Vercellone et J. Cozza editus. T. IV, Romae 1822, p. 335 (codicis p. 1227); и: Facsimile of the codex Alexandrinus. Published by Order of the Trustees and sold at the British Museum. Vol. II, p. 413—414. Три извѣстныя редакціи перевода LXX: антіохійско-константинопольская редакція Лукіана, египетская Исихія и палестинская Евсевія и Памфила, простирались, несомнѣнно, и на Ѳеодотіоновъ переводъ книги Даніила. По крайней мѣрѣ, даже въ тѣхъ четырехъ стихахъ 9-ой главы, гдѣ содержится откровеніе о седьминахъ, можно прослѣдить редакцію Лукіана [19]. Возстановленіе этихъ редакцій Ѳеодотіонова перевода книги Даніила ждетъ еще своихъ работниковъ.

---

[19] Пользуясь древне-славянскимъ переводомъ (изъ Толковыхъ Пророчествъ) для провѣрки при установкѣ Лукіановой редакціи, можно найти въ Дан. 9, 24—27 слѣдующія особенности этой редакціи: 1) καὶ ἐπὶ τὴν πόλιν τὴν ἁγίαν σου, *и о градѣ твоемъ святѣмъ*,—прибавлено σου. 2) ἕως τοῦ παλαιωθῆναι τὸ παράπτωμα, *дондеже обетшаетъ съгрѣшеніе*,—это предложеніе вставлено передъ словами τοῦ συντελεσθῆναι ἁμαρτίαν. 3) καὶ ἐκκοπήσονται ὡς ἐν κατακλυσμῷ, *и потрѣбятся аки въ потопѣ*: прибавлены καὶ (какъ и въ большинствѣ греческихъ кодексовъ) и ὡς. 4) Большая вставка въ 27 стихѣ въ большинствѣ кодексовъ и въ старо-славянскомъ переводѣ. 5) ἀρθήσεται θυσία, *отънѣмется трьба*,—опущено μου. Насколько можно судить по этимъ немногимъ особенностямъ и по указаніямъ Корнилля, Das Buch des Pr. Ezechiels, S. 65—66, и И. Е. Евсѣева, Хр. Чтеніе 1894, III, 486, представителями Лукіановой редакціи книги Дан. служатъ кодексы, означенные въ изданіи Парсонза цифрами: 22, 36, 48, 51 и 231. Эти кодексы опредѣляютъ и дальнѣйшія особенности этой редакціи, не находимыя въ слав. переводѣ: 6) καὶ τοῦ ἀπαλεῖψαι τὰς ἀνομίας, вмѣсто ἀδικίας. 7) ἀπὸ ἐξόδου λόγων,—вм. *λόγου: отъ исхода словесе:* 8) καὶ περίτειχος вм. τεῖχος. 9) συντετμημένου ἀφανισμοῖς, нѣтъ слова τάξει; въ слав. нѣтъ двухъ послѣднихъ словъ. 10) καὶ ἐπὶ τούτοις ἐπὶ τὸ ἱερόν,—прибавлено ἐπὶ τούτοις, слав.: *на святый храмъ*. 11) βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως вм. τῶν ἐρημώσεων: *омрьзьніе и опоустѣніе*. Во всѣхъ этихъ случаяхъ показанія названныхъ пяти кодексовъ замѣчательно согласны: три изъ нихъ (22, 51, 231) уклоняются отъ указанныхъ чтеній только по одному разу, и два (36, 48)

Переводъ Θеодотіона въ общемъ довольно точно передаетъ тотъ еврейскій текстъ, какой существуетъ въ настоящее время. Отступленія незначительны и легко могутъ быть объяснены изъ того же текста. Въ 24 стихѣ въ Θеодотіоновомъ переводѣ имѣется семь предложеній, описывающихъ блага, которыя принесетъ съ собою періодъ седьминъ, а не шесть, какъ въ евр. текстѣ; но это потому, что третье еврейское предложеніе переведено дважды: וּלְכַפֵּר עָוֹן καὶ ἀπαλεῖψαι τὰς ἀνομίας καὶ τοῦ ἐξιλάσασθαι ἀδικίας,—сначала буквально, а потомъ болѣе свободно. Самому ли Θеодотіону принадлежитъ эта прибавка, или она явилась впослѣдствіи, при употребленіи его перевода въ христіанской Церкви,—опредѣлить невозможно. Замѣтимъ только, что Тертулліанъ читаетъ здѣсь одно предложеніе: et exorentur [in]justitiae, древнеславянскій переводъ также: и оцѣстятся неправды. Нѣсколько кодексовъ Θеодотіонова перевода (Лукіановская группа) имѣетъ даже 8 предложеній, такъ какъ на первомъ мѣстѣ ставитъ слова: ἕως τοῦ παλαιωθῆναι τὸ παράπτωμα,—вторичный, хотя и неточный переводъ перваго еврейскаго предложенія. Болѣе важная прибавка имѣется въ 27 стихѣ. Здѣсь большинство кодексовъ Θеодотіонова перевода послѣ словъ: καὶ ἐν τῷ ἡμίσει τῆς ἑβδομάδος имѣетъ значительный излишекъ противъ масоретскаго текста: καταπαύσει θυσίασμα καὶ θυσίας, καὶ ἕως πτερυγίου ἀπὸ ἀφανισμοῦ, καὶ ἕως συντελείας καὶ σπουδῆς τάξει ἐπὶ ἀφανισμῷ· καὶ δυναμώσει διαθήκην πολλοῖς ἑβδομὰς μία, καὶ ἐν τῷ ἡμίσει τῆς ἑβδομάδος—и далѣе согласно съ евр. текстомъ. Всматриваясь въ эту прибавку, находимъ, что и она не представляетъ ничего новаго, а передаетъ тотъ же евр. текстъ, только сокращенно. Именно, это неточный переводъ конца 27 стиха: וְעַל прочитано какъ וְעַד, שִׁקּוּצִים опущено, מְשֹׁמֵם

по два раза; остальные кодексы далеко не такъ согласны. Замѣчательно, что еще преосв. Филаретъ Московскій намѣчалъ для православныхъ экзегетовъ задачу—установить текстъ LXX (или для книги Дан.—Θеодотіона), что, конечно, невозможно безъ предварительнаго возстановленія его редакцій. «Сожалѣнія достойно,» говорилъ онъ, «что текстъ св. Лукіана не сохранился въ ясной отдѣльности, но скрылся въ смѣшеніи съ другими разнопереводными текстами. Такимъ образомъ, онъ оставилъ намъ не только примѣръ, но и потребность возобновить работу, имъ произведенную и послѣ него утраченную». Приб. къ Твор. Св. Отцевъ XVII, 1858, стр. 461.

переведено «отъ потребленія», וְנִחֻרְצָה «и потщанія» и т. д. Происхожденіе этой прибавки опредѣлить едва ли возможно. Нужно только думать, что переводъ LXX, во время своего совмѣстнаго существованія съ θеодотіоновымъ въ христіанской Церкви, оказывалъ вліяніе на послѣдній. Но тотъ фактъ, что указанная прибавка не имѣлась въ первоначальномъ θеодотіоновомъ текстѣ, не подлежитъ сомнѣнію. Прибавки этой нѣтъ въ семи кодексахъ Парсонза (въ 37, 42, 130, 229, 230, 231 и 232), въ Ватиканскомъ кодексѣ она стоитъ еще на полѣ; наконецъ, что особенно важно, ея не имѣется въ древнемъ латинскомъ переводѣ. Правда, здѣсь въ данномъ мѣстѣ есть небольшое отступленіе отъ евр. текста: et in dimidia hebdomade tolletur sacrificium meum, et supplicatio desolationum interitus, et ad sacrificium abominatio, et usque ad finem—и т. д. Но слова: et supplicatio desolationum interitus не имѣютъ ничего общаго съ приведенною греческой вставкой; по справедливому объясненію изслѣдователя этого перевода Ранке[20], supplicatio написано по ошибкѣ вмѣсто libatio и относится къ предшествующему предложенію, а desolationum interitus поставлено не на мѣстѣ: первое должно стоять послѣ abominatio. Отсюда видно, что указанной вставки не было въ древнемъ переводѣ θеодотіона, затѣмъ она стала писаться на поляхъ, а наконецъ попала и въ текстъ. Остальныя уклоненія θеодотіонова перевода отъ своего оригинала, касающіяся только перевода отдѣльныхъ словъ евр. текста, будутъ указаны при объясненіи этихъ словъ.

Для опредѣленія первоначальнаго текста θеодотіонова перевода имѣютъ важное значеніе цитаты древнихъ отцовъ и учителей Церкви. Изъ нихъ θеодотіоновымъ переводомъ книги Даніила пользовались Климентъ Александрійскій, Тертулліанъ, Св. Ипполитъ, Юлій Африканъ, Оригенъ и всѣ позднѣйшіе. Но ихъ цитаты важны не для повѣрки текста, а для возстановленія его редакцій: цитаты эти часто дѣлаются по памяти и далеко неточно.

[20] E. Ranke, Fragmenta versionis sacrarum Scripturarum Latinae Antehieronymianae. Vindobonae 1868, p. LXIV.

Гораздо болѣе важное значеніе для опредѣленія первоначальнаго вида θеодотіонова перевода имѣютъ переводы его на другіе языки. Изъ такихъ вторичныхъ переводовъ важнѣйшее значеніе имѣетъ древне-латинскій, до-іеронимовскій переводъ Св. Писанія съ греческаго языка, называемый обыкновенно Vetus Latina (Itala) и сохранившійся до нашего времени только въ отрывкахъ. Между прочимъ, сохранилась въ этомъ переводѣ и значительная часть откровенія о седьминахъ, отъ словъ: hebdomades septem въ началѣ 25 стиха и до конца главы. Древне-латинскій переводъ довольно точно передаетъ текстъ θеодотіоновъ; нѣкоторыя отступленія его отъ подлинника объясняются, по всей вѣроятности, ошибками переводчиковъ или переписчиковъ, или же—неисправнымъ состояніемъ его въ настоящее время. Въ началѣ 25 и 26 стиховъ въ этомъ переводѣ вмѣсто sexaginta стоитъ septuaginta: hebdomades septem et hebdomades septuaginta duas; et post h. septuaginta duas. Въ 26 стихѣ такое чтеніе дается и въ Коптскомъ переводѣ; очень возможно, что оно явилось подъ вліяніемъ перевода LXX, гдѣ эти числа переданы весьма неисправно. Цитата Св. Іоанна Златоуста изъ 26 стиха, гдѣ также читается ἑβδομήκοντα, [21] не даетъ права заключать, что древне-латинскій переводъ представляетъ первоначальное чтеніе θеодотіона: Св. Отецъ, очевидно, приводилъ слова откровенія не буквально; по смыслу же 26 стиха, какъ увидимъ, вмѣсто «послѣ 62 седьминъ» можно сказать «послѣ 69 седьминъ» или, говоря приблизительно, послѣ 70 седьминъ. Въ 27 стихѣ древне-латинскій переводъ даетъ такое чтеніе: et in dimidia hebdomade tolletur sacrificium meum et supplicatio desolationum interitus, et ad sacrificium abominatio. Какъ уже сказано, такая разстановка словъ объясняется, вѣроятно, ошибкою переписчиковъ. Замѣтимъ только, что такое чтеніе имѣется и у Исихія, въ его перепискѣ съ блажен. Августиномъ [22].

Коптскіе переводы: конто-сагидскій и конто-мемфисскій, буквально передаютъ свой греческій подлинникъ—переводъ θеодо-

[21] Migne gr. XLVII, 898.
[22] Migne lat XXXIII, 904.

тіона.[23] Изъ особенностей и уклоненій этихъ переводовъ отъ существующаго вида Θеодотіонова перевода обращаютъ на себя вниманіе слѣдующія. Въ переводѣ копто-сагидскомъ: слово συνετμήθησαν въ началѣ 24-го стиха переведено: «опредѣлены», а не «сокращены»; далѣе, выраженіе: καὶ κρίμα οὐκ ἔστιν ἐν αὐτῷ передается: «и судъ не будетъ ему напрасный» [въ изданіи Holmes-Parsons'a: judicium erit illi vanum]; конецъ 26-го и начало 27-го стиха переводится такъ: «городъ же и святое погибнетъ, и вождь грядущій потребитъ ихъ въ потопѣ, оставитъ ихъ (или: «оставитъ воду») [HP: permanente] до конца войны; опредѣлена на погибели [HP: statutum in devastationibus] седьмина одна и половина седьмины» и т. д. Во вставкѣ, которую имѣютъ въ 27 стихѣ оба коптскіе перевода, копто-сагидскій послѣ словъ ἀπὸ ἀφανισμοῦ снова прибавляетъ: «оставитъ ихъ (или: «дастъ воду») [HP: quae praemanebit] до скончанія безпорядка на погибель»,—въ переводѣ Θ. послѣднимъ словамъ соотвѣтствуютъ: καὶ ἕως συντελείας καὶ σπουδῆς τάξει ἐπὶ ἀφανισμῷ. Въ дальнѣйшихъ словахъ вмѣсто δυναμώσει к.-с. имѣетъ: «и дастъ»=καὶ δώσει [HP: et praevalebit]; вмѣсто ἀρθήσεται—«возьмутъ»; слова: καὶ ἐπὶ τὸ ἱερὸν βδ. τῶν ἐρημώσεων к.-с. переводитъ: «мерзость запустѣнія будетъ на храмѣ»; συντέλεια δοθήσεται εἰς τὴν ἐρήμωσιν к.-с.: «дадутъ мерзость пустоты». Копто-мемфисскій переводъ въ словахъ: καὶ τοῦ ἀγαγεῖν δικ. αἰώνιον читалъ вмѣсто δικαιοσύνην—διαθήκην; вмѣсто ἑξήκοντα δύο въ 25 стихѣ читалъ ἑξήκοντα, а въ 26-мъ: ἑβδομήκοντα; въ началѣ 26-го стиха к.-м. вставляетъ слова: «и будетъ»; въ срединѣ того же стиха вмѣсто διαφθερεῖ имѣетъ: «погибнетъ», въ концѣ его слова τάξει ἀφανισμοῖς переводитъ: «онъ утвердитъ погибели» (вин. падежъ безъ члена). Во вставкѣ 27-го ст. к.-м. имѣетъ: «прекратятся жертвенники и жертвы и возліяніе отъ опустошенія» (опускаетъ: καὶ ἕως πτερυγίου); далѣе вмѣсто βδέλυγμα τῶν ἐρημώσεων

---

[23] Коптскіе переводы 24—27 стиховъ 9-ой главы книги пр. Даніила, равно какъ и переводъ армянскій, прочитаны для насъ глубокоуважаемымъ профессоромъ В. В. Болотовымъ; первые по изданію: Daniel copto-memphitice edidit Ioseph Bardelli, Pisis 1849; здѣсь же приводится и versio copto-sahidica visionis decimae (cap. IX).

к.-м. имѣетъ βδ. ἐρημώσεως, конецъ стиха переводитъ: «онъ дастъ конецъ опустошенія». Переводы коптскіе по справедливости признаются главными свидѣтелями при установленіи египетской, Исихіевской редакціи перевода LXX, или перевода Ѳеодотіонова въ книгѣ пророка Даніила. Но указать какіе-либо твердые признаки этой редакціи на столь незначительномъ пространствѣ, какъ четыре послѣднихъ стиха 9-ой главы, не представляется возможнымъ.

Армянскій переводъ книги пророка Даніила [24] есть также вторичная передача Ѳеодотіонова перевода. Вотъ нѣкоторыя особенности армянскаго перевода. Слово συνετμήθησαν передается: «сократились»; ἅγιον ἁγίων въ концѣ 24 стиха принимается за средній родъ: «и помазать святыню святынь»; ἕως χριστοῦ ἡγουμένου переводится: «до помазаннаго начальника», конецъ 25-го стиха читается: «и возвратятся, и построятся площади и стѣны, и обновятся [ἐκκαινωθήσονται вмѣсто ἐκκενωθήσονται; такъ же читаютъ одинъ (42) кодексъ HP, Тертулліанъ, блажен. Ѳеодоритъ] времена». Въ 26-мъ стихѣ ἐξολοθρευθήσεται χρίσμα переводится: «и вознесется (т. е. отнимется) помазаніе»; конецъ этого стиха: «и городъ и святыня разорятся съ начальникомъ грядущимъ, и уничтожатся наводненіемъ, и до конца войны сокращенной онъ опредѣлитъ (τάξει) уничтоженіе (τὸν ἀφανισμὸν) [HP: jubebit interimi]. Въ 27-мъ стихѣ и армянскій переводъ имѣетъ общую большинству греческихъ кодексовъ вставку; въ ней слова: καὶ ἕως πτερυγίου ἀπὸ ἀφανισμοῦ переводятся: «и до краевъ угла опустошеніе» [HP: usque ad extremum dilabetur interitus]; далѣе здѣсь же читается: «и укрѣпитъ завѣтъ многимъ седьмина одна и половина седьмины [ἥμισυ имѣетъ Александрійскій кодексъ и Климентъ Ал.], поднимутся (вм. ἀρθήσεται) жертвы и приношенія, и на храмъ оскверненіе разрушенія (βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως) будетъ». Указанныя особенности армянскаго перевода не даютъ права на основаніи ихъ заключать о близости его къ той или иной изъ извѣстныхъ редакцій его оригинала.

[24] Прочитанъ В. В. Болотовымъ по изданію Іоанна Зохраньяна въ Венеціи 1805 г.

Арабскій переводъ откровенія о седьминахъ еще точнѣе, чѣмъ коптскіе и армянскій, слѣдуетъ переводу Ѳеодотіона; отступленія его отъ своего подлинника весьма незначительны. Болѣе важныя изъ особенностей арабскаго перевода слѣдующія: четвертое (изъ семи) предложеніе 24-го стиха по переводу Ѳеодотіонову: καὶ τοῦ ἐξιλάσασθαι ἀδικίας онъ передаетъ: «и чтобы испрошено было прощеніе (10-я форма отъ глагола *ghaphara* texit) въ неправдѣ»; въ шестомъ предложеніи читается: «и чтобы запечаталось видѣніе и пророчество», вмѣсто: προφήτην. 26-й стихъ начинается: «и послѣ семи седьминъ и шестидесяти двухъ седьминъ», т. е. повторяются оба періода седьминъ вмѣсто одного послѣдняго. Въ 27-мъ стихѣ имѣется та же вставка, что и въ большинствѣ греческихъ кодексовъ; въ концѣ стиха слова: ἀρθήσεταί μου θυσία καὶ σπονδή передаются: «отнимется жертвоприношеніе мое и возліяніе мое». Текстъ арабскаго перевода читался нами въ Полиглоттѣ Вальтона (t. III, p. 217).

Нашъ славянскій переводъ имѣетъ немаловажное значеніе для опредѣленія Лукіановской редакціи Ѳеодотіонова перевода книги Даніила, такъ какъ онъ отражаетъ въ себѣ тотъ греческій текстъ, который употреблялся въ IX вѣкѣ въ Константинопольской Церкви. Древнѣйшій видъ славянскаго перевода находится въ такъ называемыхъ Толковыхъ Пророчествахъ, рукописи которыхъ довольно распространены. У насъ подъ руками были три рукописи XIV—XV вѣка: Кирилло-Бѣлозерской Библіотеки № $^{9}/_{134}$, Императорской Публичной Библіотеки F I №№ 3 и 460. Эти рукописи, какъ и всѣ другія, представляютъ копіи одного списка пророческихъ книгъ, сдѣланнаго «попомъ Упиремъ» для Новгородскаго князя Владимира Ярославича въ 1047 году,—такъ гласитъ послѣсловіе, имѣющееся въ этихъ рукописяхъ. Текстъ Упирева списка передается вездѣ съ большою точностью, разности касаются почти только правописанія; это замѣчаніе относится и къ спискамъ Московской Синодальной Библіотеки (№№ 1, 2, 3, 18, 19), какъ можно судить по «Описанію славянскихъ рукописей» А. Горскаго и К. Невоструева, Москва 1855. Здѣсь даже приводится (стр. 110) текстъ вставки въ 27 стихѣ, имѣющейся и въ древне-слав. пе-

реводѣ, и изъ этого текста видно, съ какою точностію Упиревъ списокъ передается во всѣхъ рукописяхъ. Тотъ же текстъ откровенія о седьминахъ, какой дается въ Толковыхъ Пророчествахъ, напечатанъ и въ Острожской библіи (изд. 1581 г.), безъ всякихъ отступленій и исправленій. Древне-славянскій переводъ довольно точно передаетъ лежащую въ его основѣ Лукіановскую форму Ѳеодотіонова перевода. Но имѣются и нѣкоторыя отступленія, не оправдываемыя греческими кодексами и явившіяся, вѣроятно, слѣдствіемъ ошибки переводчиковъ или переписчиковъ. Такъ, въ 24 ст. слова: «*и знаменается видѣніе пророкъ*» явились вмѣсто «*и знаменается видѣніе и пророкъ*»: ни въ одномъ греческомъ кодексѣ не читается: «видѣніе пророковъ». Въ 26 ст. «*потрѣбится помазаніе и судъ*», вмѣсто: «и судъ не будетъ въ немъ». Послѣднія слова этого стиха τάξει ἀφανισμοῖς не переданы въ слав. переводѣ. Въ 27 ст. βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως (или: τῶν ἐρημώσεων) переданы *омрѣзѣніе и опустѣніе*. Нынѣшнія изданія славянской библіи повторяютъ съ нѣкоторыми измѣненіями текстъ такъ называемой Елизаветинской библіи, въ которой дается славянскій переводъ, сличенный съ греческимъ текстомъ и по нему значительно исправленный; трудъ этотъ начатъ былъ по указу Петра Великаго, но новое изданіе библіи появилось только въ 1751 году при Елизаветѣ Петровнѣ. Текстъ откровенія о седьминахъ носитъ явные слѣды такого исправленія. Всѣ слова малоупотребительныя и неясныя замѣнены другими, болѣе ясными; въ 24 стихѣ прибавлено восьмое предложеніе, согласно съ нѣкоторыми греческими кодексами (Лукіановой редакціи); въ 26 ст. читаются слова: «*и судъ не будетъ въ немъ*», и далѣе: «*и до конца рати сокращенныя чиномъ погибельми*»,—здѣсь прибавлены слова, недостающія въ древне-слав. переводѣ противъ греч. текста; въ 27 ст. опущена большая прибавка, имѣющаяся въ древне-слав. переводѣ согласно съ большинствомъ греч. кодексовъ, и вмѣсто «*омрѣзѣніе и опустѣніе*» читается «*мерзость запустѣнія*».

Позднѣйшіе переводы откровенія о седьминахъ на новые языки, въ родѣ, напр., нѣмецкаго Лютерова перевода, англійскаго, французскаго и др., почти не приводятся въ нашемъ толкованіи, такъ

какъ они могутъ имѣть только относительное значеніе, показывая, какое пониманіе текста наиболѣе распространено у того или другого изъ современныхъ народовъ. Изъ этихъ позднѣйшихъ переводовъ болѣе важное значеніе для насъ имѣютъ только русскіе переводы; намъ извѣстны слѣдующіе: 1) синодальный переводъ (по изданію 1875-го года), сдѣланный съ еврейскаго текста. 2) Переводъ Г. П. Павскаго, сдѣланный имъ еще прежде дозволенія переводить Св. Писаніе на русскій языкъ и литографированный студентами С.-Петербургской Духовной Академіи [25]. Переводъ этотъ представляетъ скорѣе перифразъ, чѣмъ переводъ въ собственномъ смыслѣ, и притомъ перифразъ тенденціозный, старающійся приноровить откровеніе о седьминахъ ко временамъ Антіоха Епифана, чему помогаютъ особенно примѣчанія автора. 3) Переводъ, изданный при Трудахъ Кіевской Дух. Академіи въ 1873 году, болѣе близокъ къ еврейскому тексту, чѣмъ предыдущій, но все-таки допускаетъ нѣкоторыя, болѣе или менѣе значительныя, отступленія отъ него. Наконецъ, 4) переводъ Архим. Макарія, изданный при Православномъ Обозрѣніи (1859 года), можно назвать лучшимъ изъ русскихъ переводовъ откровенія о седьминахъ, такъ какъ онъ наиболѣе приближается къ еврейскому тексту.

Пособіями въ собственномъ смыслѣ для насъ будутъ служить, прежде всего, различныя толкованія откровенія о седьминахъ. Изъ такихъ толкованій особенно важны для насъ толкованія святоотеческія, такъ какъ въ нихъ мы можемъ видѣть голосъ древней христіанской Церкви относительно даннаго пророчества, и этому голосу мы должны внимать, какъ Священному Преданію. Но такую важность святоотеческія толкованія имѣютъ не въ своихъ частностяхъ, не въ опредѣленіи, напр., смысла отдѣльныхъ словъ откровенія и т. п., а въ общей идеѣ, лежащей во всѣхъ ихъ. И замѣчательно: какъ ни расходятся эти толкованія въ частностяхъ, особенно—въ счисленіи седьминъ, какъ ни противорѣчатъ иной

---

[25] Литографированъ этотъ переводъ очень неисправно; переводъ послѣднихъ стиховъ 9-ой гл. Дан. мы свѣряли съ текстомъ, напечатаннымъ съ подлинной рукописи Г. П-ча въ статьѣ Чистовича: Исторія перевода Св. Писанія на русскій языкъ. Хр. Чтеніе 1872 г., II, 126—136.

разъ одно другому, но всѣ они относятъ откровеніе о седьминахъ къ Іисусу Христу (исключенія, какъ увидимъ, весьма рѣдки). Этотъ фактъ мы обязаны принять во вниманіе и видѣть въ немъ вѣрованіе всей древней Церкви. Само собою понятно, что это обстоятельство вовсе не мѣшаетъ свободному изслѣдованію откровенія: во-первыхъ, вѣра каждаго христіанина должна быть осмысленна и основана на глубокомъ убѣжденіи, могущемъ возникнуть только послѣ долгаго изслѣдованія и углубленія въ предметъ вѣры; а во-вторыхъ, повинуясь авторитету Церкви и вѣруя, что откровеніе о семидесяти седьминахъ относится ко Христу, мы вполнѣ свободны въ рѣшеніи вопроса: *какъ*, какими своими чертами это окровеніе говоритъ о Христѣ? И эта свобода настолько велика, что позволяетъ нѣкоторымъ новѣйшимъ экзегетамъ, не отрицая мессіанскаго значенія пророчества, стоять вмѣстѣ съ тѣмъ за прямое его отношеніе ко времени Антіоха Епифана и Маккавеевъ: они разсматриваютъ это время, какъ прообразъ времени мессіанскаго.

Толкованія откровенія о седьминахъ, находимыя у древнихъ отцовъ и учителей Церкви, настолько содержательны, настолько превосходятъ многія изъ современныхъ толкованій, что мы сочли полезнымъ приводить въ подлинникѣ значительные отрывки этихъ толкованій. Изданія, изъ которыхъ эти отрывки почерпнуты, будутъ своевременно указаны при цитатахъ изъ древнихъ писателей.

Знакомство съ святоотеческой литературой откровенія о седьминахъ значительно облегчается для насъ уже названнымъ выше капитальнымъ трудомъ австрійскаго ученаго, профессора университета въ Грацѣ, Dr'a Франца Fraidl'я: Die Exegese der siebzig Wochen Daniels in der alten und mittleren Zeit. Graz, 1883. Этотъ трудъ обнимаетъ время отъ пророка Даніила до реформаціи, до конца 15-го столѣтія. Онъ дѣлится на шесть отдѣловъ. Первый (S. 4—25) представляетъ исторію толкованія откровенія у самихъ іудеевъ—а) до-христіанскаго времени и б) первыхъ двухъ вѣковъ послѣ Рождества Христова. Въ этомъ отдѣлѣ Fraidl разбираетъ древніе переводы откровенія о седьминахъ, справедливо разсма-

тривая ихъ, какъ выраженіе того или другого пониманія откровенія и, слѣдовательно, его толкованія; затѣмъ—апокрифы, относящіеся къ тому времени и имѣющіе нѣкоторые (хотя и весьма слабые) слѣды знакомства съ пророчествомъ Даніила; далѣе разсматриваетъ вопросъ учениковъ Христовыхъ о разрушеніи храма (Матѳ. 24, Марк. 13, ср. Лук. 21), какъ выражающій ходячее въ то время среди евреевъ пониманіе откровенія о седьминахъ; и, наконецъ,—мѣста у Іосифа Флавія, гдѣ послѣдній, несомнѣнно, имѣетъ въ виду это откровеніе. Второй отдѣлъ сочиненія Fraidl'я (S. 25—30) начинается разборомъ словъ Спасителя о мерзости запустѣнія предъ разрушеніемъ Іерусалима (Матѳ. 24, 15. 16. Марк. 13, 14) и представляетъ исторію толкованія откровенія о седьминахъ у христіанъ первыхъ двухъ вѣковъ,—главнымъ образомъ въ принадлежащихъ имъ апокрифахъ. Третій отдѣлъ (S. 30—98) представляетъ собою самую обширную и самую важную для насъ часть разсматриваемаго сочиненія, такъ какъ излагаетъ исторію толкованія откровенія о седьминахъ въ святоотеческій періодъ, начиная съ послѣдняго десятилѣтія II-го вѣка и кончая послѣднимъ десятилѣтіемъ V-го. Въ этотъ періодъ процвѣтанія христіанской науки значительная доля вниманія оказывалась и толкованію откровенія о седьминахъ; отъ этого времени осталось нѣсколько замѣчательныхъ комментаріевъ откровенія, каковы, напр., комментаріи Евсевія Кесарійскаго, Іоанна Златоустаго, Іеронима, Полихронія, Ѳеодорита и др. Fraidl очень подробно разбираетъ всѣ эти комментаріи, указываетъ ихъ взаимоотношеніе и т. п., при чемъ большею частію приводитъ подлинныя слова авторовъ, снабжая ихъ только поясненіями. Изъ трехъ слѣдующихъ отдѣловъ труда Fraidl'я два говорятъ о толкованіяхъ откровенія о седьминахъ въ христіанской Церкви: четвертый (S. 99—121) отъ конца V-го до половины XIII-го вѣка и шестой (S. 134—153) отъ половины XIII-го вѣка до реформаціи. Оба эти періода имѣютъ для насъ очень мало значенія, такъ какъ труды, появившіеся въ то время, незначительны по содержанію и, главное, являются подражаніемъ трудамъ святоотеческимъ или даже—сочиненіямъ еврейскихъ ученыхъ. О по-

слѣднихъ сочиненіяхъ и трактуетъ пятый отдѣлъ книги Fraidl'я (S. 121—134). Здѣсь говорится о толкованіи Даніилова пророчества евреями во времена блаж. Іеронима, о счисленіи седьминъ въ Седеръ-Олямъ и, наконецъ, о толкованіяхъ четырехъ знаменитѣйшихъ раввиновъ X—XV вѣковъ: Саадіи Гаона, Раши, Ибнъ-Езры и Абарбанеля. И здѣсь трудъ Fraidl'я такъ же обстоятеленъ, какъ и въ изложеніи святоотеческой литературы даннаго предмета.

Въ заключеніи къ своему труду Fraidl говоритъ, что «должно признать традиціонное толкованіе пророчества о седьминахъ (въ главныхъ его частяхъ), но нельзя говорить о традиціонномъ счисленіи седьминъ» [26], т. е., что толкованіе пророчества достаточно уже установилось въ періодъ, подлежавшій изслѣдованію Fraidl'я, но счисленіе седьминъ было еще весьма неустойчиво: почти каждый толкователь считалъ седьмины по-своему и даже не находилъ иногда возможнымъ остановиться на одномъ какомъ-нибудь способѣ счисленія, а давалъ ихъ нѣсколько (таковы, напр., Африканъ, Евсевій Кесарійскій, авторъ Пасхальной хроники и мн. др.). Это и понятно: счисленіе седьминъ весьма много зависитъ отъ общей хронологіи и исторіи, и при томъ состояніи этихъ наукъ, какое было въ святоотеческій періодъ, счисленіе седьминъ не могло имѣть даже относительной устойчивости. Времена возрожденія и реформаціи оживили какъ богословскую, такъ и всѣ другія науки. Съ этого времени толкованіе откровенія о седьминахъ также быстро двинулось впередъ. Если толкованіе самаго текста пріобрѣло теперь только бо́льшую опредѣленность, благодаря успѣхамъ филологіи, то счисленіе седьминъ только съ этого времени и стало возможнымъ, такъ какъ общая исторія и хронологія, на которыхъ оно основывается, теперь только получили болѣе устойчивый и опредѣленный видъ.

Со времени реформаціи возникаетъ великое множество толкованій откровенія о седьминахъ. Уже вожди реформаціи, Лютеръ, Эколампадій, Меланхтонъ, Кальвинъ, занимались изъясненіемъ этого откровенія. Ихъ примѣру послѣдовали весьма многіе уче-

[26] Fraidl, S. 154.

ные, и литература даннаго предмета чрезвычайно обогатилась. Но особенно оживилось изслѣдованіе откровенія съ тѣхъ поръ, какъ стали появляться попытки толковать его въ смыслѣ vaticinii ex eventu, относящагося ко времени Антіоха Епифана. Это отрицательное направленіе, имѣвшее отчасти своего предшественника въ періодъ святоотеческій (Юлій Иларіанъ), нашло себѣ послѣдователей и въ средніе вѣка (въ лицѣ, напр., Marsham'a, іезуита Harduin'a, Collins'a и др. [27]), но особенно подняло голову въ половинѣ прошлаго столѣтія. Направленіе это принесло ту—конечно, отрицательную—пользу, что вызвало появленіе весьма многихъ капитальныхъ трудовъ по данному предмету, неопровержимо доказавшихъ всю невозможность относить откровеніе о седьминахъ ко времени Антіоха Епифана и считать его vaticinium ex eventu.

Нѣтъ нужды перечислять всѣхъ сочиненій, относящихся къ откровенію о седьминахъ и вышедшихъ въ свѣтъ со времени реформаціи до сихъ поръ: одно перечисленіе ихъ заняло бы нѣсколько страницъ, да оно уже и сдѣлано во многихъ комментаріяхъ [28]. Укажемъ только тѣ сочиненія, которыя были у насъ подъ рукою.

Таковы изъ сочиненій, относящихся къ прошлому столѣтію:

A. *Sostmannus*. חזון למועד seu Commentarius chronologicus, philologicus et exegeticus Oraculi Dan. IX, 24—27. Lugduni Batavorum, 1710. Этотъ комментарій, очень хорошій самъ по себѣ, важенъ особенно тѣмъ, что его авторъ былъ ученикомъ знаменитаго Vitring'и, труды котораго по толкованію Св. Писанія и до сихъ поръ не потеряли своего значенія. Къ сожалѣнію, мы не могли достать 2-го тома «Observationes sacrae» самого Витрингп, гдѣ помѣщено его изслѣдованіе: De LXX hebdomadibus Danielis adversus Marshamum.

Ch. B. *Michaelis*. Uberiores adnotationes in Danielem, въ III томѣ его Uberiorum adnotationum philologico-exegeticarum in Hagiographos Vet. Testamenti libros. Halae, 1720.

---

[27] См. объ нихъ у Zöckler'a, Der Prophet Daniel, S. 190.

[28] Напр., у Rosenmüller'a, p. 42—51, Hävernick'a, S. 394 и дал., Zöckler'a, S. 188 и дал. Fabre d' Envieu, t. I, 2, p. 900—903.

Изъ болѣе новыхъ сочиненій у насъ имѣлись: 1) сочиненія отрицательно-раціоналистическаго направленія:

E. F. C. *Rosenmülleri* Scholia in Vetus Testamentum. Pars X-ma, Danielem continens. Lipsiae, 1832.

C. *von-Lengerke.* Das Buch Daniel. Königsberg, 1835.

C. *Wieseler.* Die 70 Wochen und die 63 Jahrwochen des Propheten Daniel. Göttingen, 1839. Впослѣдствіи самъ авторъ отказался отъ нѣкоторыхъ своихъ мыслей, высказанныхъ въ этомъ сочиненіи (въ Göttingen. gelert.-Anzeigen, 1846).

F. *Hitzig.* Das Buch Daniel. «Kurzgefasstes exegetisches Handbuch zum Alten Testament», 10-te Lieferung. Leipzig 1850.

H. *Ewald.* Die Propheten des Alten Bundes. 2-te Ausgabe, 3-ter Band. Göttingen 1868.

C. H. *Cornill.* Die siebzig Jahrwochen Daniels. Königsberg 1889.

A. A. *Bevan.* A short Commentary on the Book of Daniel for the use of students. Cambridge 1892.

G. *Behrmann.* Das Buch Daniel übersetzt und erklärt. «Handkommentar zum Alten Testament», herausgegeben von D. W. Nowack. III Abtheilung 3 Band 2 Theil. Göttingen 1894.

2) Толкованія, хотя и относящія откровеніе о седьминахъ ко времени Антіоха Епифана, но представляющія это время, какъ прообразъ мессіанскаго времени (типически—мессіанскія):

Franz *Delitzsch* въ «Real-Encyklopädie für protestantische Theologie und Kirche» Herzog'a, t. III: Daniel (S. 469—479).

O. *Zöckler.* Der Prophet Daniel. Bielefeld und Leipzig, 1870, «Theologisch-homiletisches Bibelwerk» von I. P. Lange. Des Alten Testaments 17-tes Theil.

I. Chr. K. *Hofmann.* Weissagung und Erfüllung im alten und im neuen Testamente. Nördlingen, 1841, гдѣ въ 1-ой части (S. 297 и дал.) разбирается и откровеніе о седьминахъ. Въ послѣдующемъ своемъ трудѣ: Der Schriftbeweis. II-te Hälfte, 2-te Abth., Nördlingen, 1860 (S. 583 и дал.)—Hofmann нѣсколько измѣняетъ свой взглядъ относительно частностей откровенія.

Къ этому же разряду примыкаетъ и обстоятельный трудъ I. W. *van Lennep*, De zeventig jaarweken van Daniel. Utrecht, 1888. Ав-

торъ склоняется къ исторически-символическому пониманію откровенія: оно говоритъ о времени Маккавеевъ, но седьмины имѣютъ не точно-хронологическое, а символическое значеніе.

3) Толкованія, относящія откровеніе о седьминахъ къ концу міра и пришествію антихриста (эсхатологическія):

C. F. *Keil*, Biblischer Commentar über den Propheten Daniel. Leipzig, 1869. Этотъ трудъ составляетъ 5-й томъ 3-ей части Библейскаго Комментарія на весь Ветхій Завѣтъ, изданнаго Keil'емъ и Delitzsch'емъ.

R. *Wolf*, Die siebzig Wochen Daniels. Eine kritisch-exegetische Studie. Leipzig, 1889. Авторъ старается, хотя съ сомнительнымъ успѣхомъ, примирить всѣ три направленія въ толкованіи откровенія о седьминахъ: типическое, мессіанское и эсхатологическое.

4) Наконецъ, комментаріи, относящіе откровеніе о седьминахъ прямо ко Христу (мессіанскаго направленія):

E. W. *Hengstenberg*. Christologie des Alten Testaments und Commentar über die Messianischen Weissagungen der Propheten. II-ten Theils 1-ste und 2-te Abtheilung. Berlin, 1832. Ss. 401—581: Die siebenzig Wochen Daniels.

H. A. Ch. *Hävernick*. Commentar über das Buch Daniel. Hamburg, 1832.

C. A. *Auberlen*. Der Prophet Daniel und die Offenbarung Iohannis. Basel, 1854, въ 1882-мъ году переведенное со 2-го изданія (1857-го года) и на русскій языкъ протоіереемъ А. Романовымъ въ Тулѣ.

A. *Rohling*. Das Buch des Propheten Daniel. Mainz, 1876,— сочиненіе, принадлежащее перу католика, равно какъ и слѣдующія:

I. *Knabenbauer*. Commentarius in Danielem Prophetam (Lamentationes et Baruch). Parisiis, 1891—въ «Cursus Scripturae sacrae auctoribus R. Cornely, I. Knabenbauer, Fr. de Hummelauer aliisque Soc. Iesu presbyteris».

J. *Fabre d' Envieu*. Le livre du Prophète Daniel, traduit d' aprés le texte hébreu, araméen et grec. Paris 1888, 1891. По тѣмъ частямъ этого обширнѣйшаго комментарія, которыя вышли до сихъ поръ, мы можемъ судить только о нѣкоторыхъ взглядахъ

автора относительно толкованія и, главнымъ образомъ, счисленія седьминъ: въ вышедшихъ двухъ частяхъ I-го и первой части II-го тома содержится только введеніе въ книгу пророка Даніила и толкованіе 1—7 главъ.

Русская литература нашего предмета не столь обильна и не столь содержательна, какъ литература западная. Здѣсь встрѣчаются только болѣе или менѣе удачныя подражанія или святоотеческимъ толкованіямъ откровенія о седьминахъ, или—толкованіямъ западныхъ ученыхъ. Болѣе или менѣе древнихъ сочиненій на русскомъ или славянскомъ языкѣ, посвященныхъ откровенію о седьминахъ, мы не знаемъ. Можно предположить, что ихъ и не было: наши предки могли удовлетворять свою любознательность относительно этого откровенія по тѣмъ твореніямъ святыхъ отцовъ, которыя были имъ извѣстны въ славянскомъ переводѣ. Честь (хотя и сомнительная) перваго самостоятельнаго почина въ толкованіи откровенія о седьминахъ принадлежитъ русскимъ раскольникамъ безпоповцамъ. Они, желая объяснить свое бѣдственное церковное положеніе (безъ іерархіи и таинствъ), ссылаются на то, что теперь на землѣ царствуетъ антихристъ, прекратившій жертву, по пророчеству Даніила; подъ этой жертвой они и разумѣютъ Евхаристію, не совершающуюся въ ихъ обществѣ. А такъ какъ она не совершается у нихъ уже весьма давно, гораздо болѣе полу-седьмины, или трехъ съ половиною лѣтъ, то раскольники понимаютъ послѣднюю седьмину не какъ семь обыкновенныхъ лѣтъ (подобно остальнымъ 69-ти седьминамъ, которыя и по ихъ толкованію суть простыя семилѣтія), а какъ періодъ неопредѣленной продолжительности: онъ обнимаетъ время отъ пришествія Христа до отпаденія отъ православія римской Церкви (первыя полъ-седьмины) и затѣмъ—время царствованія антихриста (послѣднія полъ-седьмины). Этотъ взглядъ часто и давно уже развивался раскольниками и вызвалъ опроверженія со стороны православныхъ, которые указывали, съ одной стороны, истинное значеніе пророчества Даніила о седьминахъ, а, съ другой,—болѣе согласное съ ученіемъ православной Церкви представленіе о времени антихриста. Такія опроверженія находятся

напр., въ сочиненіи И. Ѳ. Нильскаго: «Объ антихристѣ противъ раскольниковъ». С.-Петербургъ, 1859 г., стр. 148—151, въ статьѣ архимандрита Павла (Прусскаго): «О седьминахъ Даніиловыхъ», помѣщенной въ Душеполезномъ Чтеніи 1869 г. III, декабрь, стр. 359—377, и др.

Въ собственномъ смыслѣ толкованія седьминъ появляются только уже въ нынѣшнемъ столѣтіи. Въ 1816-мъ году въ Москвѣ вышло «Толкованіе на пророка Даніила», въ которомъ сначала помѣщенъ переводъ толкованія блаж. Ѳеодорита Кирскаго, а затѣмъ: «Прибавленіе къ книгѣ пророка Даніила, собранное изъ новѣйшихъ толковниковъ и пространнѣе объясненное», принадлежащее *Иринею,* архіепископу Псковскому. Толкованіе это, довольно обширное, далеко отъ совершенства въ отношеніи собственно откровенія о седьминахъ: оно ограничивается только изложеніемъ обычнаго взгляда на это откровеніе, съ указаніемъ въ нѣкоторыхъ мѣстахъ смысла его по еврейскому тексту, и не вдается ни въ счисленіе седьминъ, ни въ доказательства истинности принятаго толкованія. Приводя мнѣнія, противоположныя принятому, авторъ не опровергаетъ ихъ, а только отвергаетъ, говоря: «сія есть хула на Бога, не токмо нечестивая, но и всякаго проклятія достойная» [29] и т. п.

Къ тому же приблизительно времени слѣдуетъ отнести и литографированный переводъ книги Даніила (въ числѣ другихъ книгъ Св. Писанія) Г. П. *Павскаго,* состоявшаго съ 1814-го по 1835-й годъ профессоромъ еврейскаго языка въ С.-Петербургской Духовной Академіи. Мы уже говорили объ этомъ переводѣ, здѣсь же упоминаемъ о немъ потому, что онъ могъ имѣть большое вліяніе на пониманіе откровенія русскими образованными людьми, распространяясь и чрезъ слушателей лекцій Г. П. Павскаго, и черезъ литографированные экземпляры перевода, хотя послѣдніе и были вскорѣ отобраны. Исторія всего дѣла, возникшаго по поводу этого перевода, вмѣстѣ съ отвѣтами Г. П. Павскаго на запросы слѣдственной коммиссіи, изложена въ статьѣ Чистовича:

[29] Листъ 160 на обор.

«Исторія перевода Св. Писанія на русскій языкъ». Хр. Чтеніе 1872, II, стр. 126 и дал. Замѣчательно, что Г. П. Павскій, отказываясь въ своихъ отвѣтахъ слѣдственной коммиссіи отъ всѣхъ своихъ прежнихъ мнѣній, горячо отстаиваетъ свое толкованіе откровенія о седьминахъ: онъ относитъ его ко времени Антіоха Епифана, какъ прообразу мессіанскаго времени.

Съ 1838-го года печатается рядъ статей, относящихся къ откровенію о седьминахъ, въ Христіанскомъ Чтеніи; именно: «Въ которомъ году родился Христосъ?» 1838, IV, стр. 312. «Событіе пророчествъ о Іисусѣ Христѣ», 1843, II, стр. 456. «Толкованіе на главнѣйшія мѣста книги пророка Даніила, составленное по руководству св. Златоуста, св. Ефрема Сирина и блаж. Θеодорита», 1845, I, стр. 155. «Седьмины Даніиловы», 1845, I, стр. 481. Статьи эти принадлежатъ, по всей вѣроятности, Макарію, впослѣдствіи митрополиту Московскому, бывшему въ то время профессоромъ, а затѣмъ инспекторомъ и ректоромъ С.-Петербургской Дух. Академіи. Это съ рѣшительностью можно сказать, по крайней мѣрѣ, о первой изъ этихъ статей, въ виду буквальнаго сходства ея съ трактатомъ преосвященнаго Макарія въ его Введеніи въ Православное Богословіе. Въ этой статьѣ авторъ опредѣляетъ по седьминамъ годъ рождества Христова и приходитъ къ тому выводу, что онъ есть именно 1-й годъ нашей (Діонисіевой) эры. Начало седьминъ опредѣляется по методу, принятому у Генгстенберга [30]. Во 2-ой и 3-ей статьяхъ о седьминахъ говорится очень кратко, въ самыхъ общихъ чертахъ. Краткостью же отличается и 4-я изъ названныхъ статей, хотя она и посвящена исключительно откровенію о седьминахъ. Въ ней доказывается: 1) что время, назначенное въ откровеніи Даніилу для пришествія Лица, называемаго Святымъ святыхъ и Христомъ, давно уже прошло; 2) что Лицо это есть Іисусъ Христосъ, и 3) что на Немъ буквально исполнилось откровеніе о седьминахъ.

Вскорѣ послѣ этихъ статей (въ 1847-мъ году) появился знаменитый трудъ преосвященнаго *Макарія:* «Введеніе въ Право-

[30] Hengstenberg, Christologie, Ss. 524—538.

славное Богословіе», въ которомъ нашло себѣ мѣсто и толкованіе Даніилова откровенія, какъ одного изъ пророчествъ, опредѣляющихъ время пришествія Мессіи (§ 78, стр. 214—225). Это одно изъ лучшихъ толкованій откровенія, появившихся въ Россіи, хотя оно и очень кратко, сообразно съ общею цѣлью автора— не толковать пророчество, а доказать только его исполненіе въ Лицѣ Іисуса Христа. Текстъ откровенія приводится на славянскомъ языкѣ, толкованіе же его строится на основѣ еврейскаго текста; въ тѣхъ мѣстахъ, гдѣ славянскій несогласенъ съ еврейскимъ, рядомъ съ славянскимъ въ скобкахъ ставится русскій переводъ соотвѣтствующихъ еврейскихъ словъ съ пояснительнымъ «то есть», безъ всякихъ дальнѣйшихъ объясненій, хотя бы смыслъ еврейскаго текста былъ совершенно отличенъ отъ славянскаго. Счисленіе седьминъ излагается особенно подробно, тѣмъ же методомъ и съ тѣмъ же результатомъ, какъ и у Генгстенберга.

А. *Бухаревъ.* Св. Пророкъ Даніилъ. Москва, 1864. Въ этомъ весьма хорошемъ сочиненіи пророчеству о седьминахъ отведено, къ сожалѣнію, очень немного мѣста (стр. 173—179). Здѣсь только кратко доказывается, что оно относится не ко времени Антіоха Епифана, а ко времени Христа, опредѣляется отношеніе его къ другимъ пророчествамъ и обстоятельствамъ времени, среди которыхъ оно дано, и указывается, какія седьмины здѣсь разумѣются.

Еще кратче говорится о седьминахъ въ сочиненіи В. Н. *Потапова:* «О книгѣ Св. Пророка Даніила», напечатанномъ сначала въ Прибавленіяхъ къ Твореніямъ Святыхъ Отцевъ, 1871, ч. 24-я, стр. 1, а потомъ и отдѣльнымъ изданіемъ. Здѣсь только замѣчено, какъ слѣдуетъ считать седьмины (стр. 64—65)—по Генгстенбергу, и указано на произвольность перевода LXX-ти въ данномъ мѣстѣ (стр. 125).

Гораздо больше вниманія удѣлено откровенію о седьминахъ въ обширномъ сочиненіи И. *Смирнова:* Св. Пророкъ Даніилъ. Рязань, 1879. Откровеніе это толкуется здѣсь по комментаріямъ Keil'я, Zöckler'а и отчасти Hengstenberg'а, которые иногда приводятся дословно. Такое соединеніе лучшихъ комментаріевъ можно поставить въ заслугу автору: его трудъ можетъ принести пользу

русскимъ людямъ, интересующимся Св. Писаніемъ и не имѣющимъ возможности читать нѣмецкіе комментаріи въ подлинникѣ. Но, къ сожалѣнію, авторъ не органически соединяетъ упомянутые комментаріи, а часто только списываетъ ихъ. Притомъ сочиненіе написано тяжелымъ языкомъ и издано неисправно, что иногда затрудняетъ его чтеніе.

Въ книгѣ А. *Разумовскаго:* Св. Пророкъ Даніилъ и его книга. С.-Петербургъ, 1891, кратко объясняется славянскій текстъ откровенія и дается нѣсколько способовъ счисленія седьминъ, съ указаніемъ ихъ сравнительныхъ достоинствъ и недостатковъ.

А. *Некрасовъ.* Годъ крестныхъ страданій Господа нашего Іисуса Христа и седьмины пророка Даніила. Казань, 1892. Авторъ даетъ своеобразное счисленіе седьминъ и столь же своеобразное толкованіе нѣкоторыхъ словъ откровенія,—тѣхъ именно, которыя опредѣляютъ начальные и конечные пункты отдѣльныхъ періодовъ седьминъ.

Въ 1894 году въ «Богословскомъ Вѣстникѣ» помѣщенъ рядъ статей профессора А. Д. *Бѣляева* подъ заглавіемъ: «Седьмины Даніиловы» (февраль стр. 193—228, іюнь 379—417, іюль 9—54). Въ этихъ статьяхъ дается обстоятельное разсмотрѣніе откровенія, съ цѣлью найти въ немъ указанія на время антихриста. Но такая задача не помѣшала автору довольно подробно раскрыть и мессіанское значеніе пророчества: въ главныхъ своихъ чертахъ оно исполнилось, по мнѣнію автора, съ пришествіемъ Христа, но въ нѣкоторыхъ частяхъ говоритъ и о послѣднихъ временахъ міра. Сообразно съ этимъ своимъ взглядомъ, авторъ подробно разбираетъ 27 стихъ, такъ какъ выраженія этого стиха могутъ быть удобно истолкованы въ эсхатологическомъ смыслѣ; остальные же стихи разсматриваются настолько, насколько это необходимо, чтобы былъ понятенъ смыслъ всего пророчества и его мессіанское значеніе. Авторъ долго останавливается на изложеніи нѣкоторыхъ свято-отеческихъ мнѣній относительно разбираемаго пророчества и особенно—относительно счисленія седьминъ; съ другой стороны, указывая на эсхатологическое значеніе откровенія, авторъ считаетъ нужнымъ разъяснить, что

онъ вовсе не согласенъ со взглядомъ на этотъ предметъ раскольниковъ-безпоповцевъ, и потому отводитъ много мѣста опроверженію этого взгляда.

Можно бы указать еще нѣсколько книгъ и статей, въ которыхъ такъ или иначе трактуется о седьминахъ. Для примѣра укажемъ на двѣ статьи въ Епархіальныхъ Вѣдомостяхъ: 1) Тамбовскихъ за 1869 г. № 17, стр. 131—144, въ переводной статьѣ Огюста Николя: «Философскія размышленія о божественности христіанской религіи»,—очень хорошо доказывается исполненіе откровенія съ пришествіемъ Іисуса Христа; и, 2) въ Ярославскихъ за 1880 г. стр. 201: «Пророкъ Даніилъ и его видѣнія», гдѣ на стр. 214—215 находится и толкованіе пророчества о седьминахъ, очень краткое и очень неудовлетворительное [31].

Пособія второстепенныя, прямо не относящіяся къ откровенію о седьминахъ, но помогшія намъ ориентироваться въ вопросахъ филологическихъ, хронологическихъ и историческихъ при толкованіи этого пророчества, будутъ указаны своевременно въ примѣчаніяхъ. Теперь назовемъ только слѣдующія: Hebräisches und chaldäisches Handwörterbuch über das Alte Testament, — W. *Gesenius*'a, цитуемый нами по 9-му изданію, Leipzig, 1883, и J. *Fürst*'a, 2-te Aufl. Leipzig, 1863; Hebräisches Wörterbuch zum Alten Testamente, v. C. *Siegfried* und B. *Stade*. Leipzig, 1892—3. Затѣмъ: C. *Kircheri*, Concordantiae Veteris Testamenti graecae. Francofurtii, 1607, а особенно: J. *Fürstii*, Concordantiae librorum Veteris Testamenti sacrorum hebraicae atque chaldaicae. Lipsiae, 1840.

[31] Авторъ, напр., допускаетъ возможность сомнѣнія пр. Даніила относительно исполненія пророчества Іереміи о семидесяти годахъ плѣна; говоритъ, что «до Христа протечетъ полныхъ 70 седьминъ» (стр. 214), а на слѣдующей страницѣ утверждаетъ, что смерть Христова произошла «въ половинѣ (послѣдней) седьмины, т. е. весной 30-го года, обыкновенно же здѣсь разумѣется 33-ій» и т. п. Очевидно, это—плохой переводъ изъ какого-нибудь нѣмецкаго сочиненія, не названнаго переводчикомъ. Это особенно ясно изъ его толкованія: «на крылѣ святилища, т. е. на оловѣ (?!) храма, будетъ стоять мерзость запустѣнія»: въ оригиналѣ здѣсь стояло, вѣроятно, слово Zinne, которое авторъ понялъ какъ Zinn!

I. Обстоятельства, предшествовавшія откровенію о седьминахъ.

Откровеніе Даніилу о семидесяти седьминахъ содержится въ послѣднихъ четырехъ (24—27) стихахъ 9-ой главы его книги. Сообщенію этого откровенія предшествовала молитва Даніила къ Богу за свой народъ (4—19 стихи), вызванная чтеніемъ пророчества Іереміи о семидесяти годахъ плѣна вавилонскаго (ст. 1—3).

Въ первое лѣто Да́ріа сына Ассуи́рова, отъ племене Мидска, иже царствова въ царствѣ Халдейстѣмъ: въ лѣто первое царства его, азъ Даніилъ разумѣхъ въ книгахъ число лѣтъ, о немже бысть слово Господне ко Іереміи пророку, на скончаніе опустѣнія Іерусалимля седмьдесятъ лѣтъ.

Вопросъ о Даріѣ Мидянинѣ—одинъ изъ труднѣйшихъ вопросовъ, возникающихъ при чтеніи книги пророка Даніила. Пророкъ неоднократно говоритъ о Даріѣ: кромѣ 9, 1. о немъ говорится въ 6, 1. или, по греческой библіи, въ 5, 31: *Валтасара царя халдейска убиша въ ту нощь, Дарій же Мидянинъ прія царство, сый шестидесяти и двою лѣтъ;* въ 6, 28. сказано, что *Даніилъ управляше въ царствѣ Дарієвѣ и въ царствѣ Кира Персянина;* въ 11, 1. въ еврейскомъ текстѣ также читается имя Дарія, но въ греческой библіи здѣсь стоитъ имя Кира. Такимъ образомъ, пророкъ ясно говоритъ, что послѣ паденія Валтасара, послѣдняго царя вавилонской династіи, въ Вавилонѣ воцарился Дарій, сынъ Ассупра, послѣдній представитель мидійской династіи, и только послѣ его непродолжительнаго царствованія вступилъ на престолъ Киръ, объединившій подъ своею властію царства древняго востока. Если бы такое извѣстіе исходило отъ какого-нибудь языческаго писателя, то никто бы, пожалуй, не сомнѣвался въ истинности его словъ: о Даріѣ говорится совершенно опредѣленно, указывается даже

его возрастъ. Но такъ какъ это извѣстіе находится въ священныхъ книгахъ и принадлежитъ священному писателю, то дѣло измѣняется: говорятъ, что разсказанное здѣсь событіе не подтверждается ни однимъ свѣтскимъ писателемъ и, слѣдовательно, недостовѣрно,—какъ будто священный писатель заслуживаетъ вѣры лишь постольку, поскольку его слова подтверждаются языческими авторами [32]. На этомъ, между прочимъ, основаніи отрицается и принадлежность пророку Даніилу книги, носящей его имя: пророкъ, современникъ Кира, не могъ сообщить невѣрныхъ свѣдѣній о своемъ времени; и это отрицаніе подлинности книги Даніила получило столь широкое распространеніе, что теперь, по заявленію одного нѣмецкаго профессора, въ протестантской богословской наукѣ принадлежность пророку Даніилу его книги не находитъ себѣ защитниковъ [33]. Между тѣмъ оказывается, что извѣстіе книги Даніила о царствованіи Дарія Мидянина не стоитъ безпомощнымъ особнякомъ среди показаній древнихъ историковъ: оно находитъ себѣ подтвержденіе въ Киропедіи Ксенофонта. Здѣсь говорится, что Астіагъ, предпослѣдній царь Мидійскій, имѣлъ двухъ дѣтей, Кіаксара и Мандану. Кіаксаръ наслѣдовалъ своему отцу, а его сестра вышла замужъ за Камбиза, царя Персидскаго; отъ этого союза и произошелъ Киръ. Въ войнѣ противъ Вавилона Киръ предводительствовалъ соединеннымъ мидійскимъ и персидскимъ войскомъ. Послѣ взятія Вавилона онъ былъ провозглашенъ царемъ всѣмъ своимъ войскомъ, но онъ предоставилъ вавилонское царство своему дядѣ Кіаксару. Въ награду онъ получилъ руку дочери Кіаксара, а затѣмъ, когда послѣдній умеръ, не оставивъ наслѣдниковъ, Киръ воцарился надъ всѣмъ востокомъ. Сравнивая это извѣстіе Ксенофонта съ приведенными выше словами пророка Даніила, находимъ большое сходство между этими двумя повѣствованіями. Дарій, подобно Кіаксару, является въ описаніи пророка Даніила человѣкомъ слабымъ, несамостоятельнымъ; тотъ и другой отличаются

[32] Ср. Knabenbauer 170.

[33] A. Kamphausen, Das Buch Daniel und die neuere Geschichtsforschung. Lpz. 1893. s. 17—18.

уже преклоннымъ возрастомъ; въ томъ и другомъ повѣствованіи мидійское и персидское царства изображаются объединенными, хотя нигдѣ не сливаются, и т. под. Въ виду этого многіе еще въ древности считали Дарія Мидянина тѣмъ же лицомъ, которое у Ксенофонта названо Кіаксаромъ, а Ассунра отожествляли съ Астіагомъ [34]; это мнѣніе поддерживается и многими новыми экзегетами. Здѣсь возникаетъ только одинъ вопросъ: почему одно и то же лицо называется у Ксенофонта Кіаксаромъ, сыномъ Астіага, а у Даніила—Даріемъ, сыномъ Ассунра? Какъ объяснить это различіе именъ? Но не говоря уже о томъ, что у восточныхъ народовъ было въ большомъ обычаѣ измѣненіе именъ въ различныхъ случаяхъ жизни, ношеніе однимъ и тѣмъ же лицомъ нѣсколькихъ именъ,—не говоря уже объ этомъ, обращаясь къ собственному значенію указанныхъ именъ, можно видѣть ихъ близкое сходство. Κυαξάρης есть мидійское имя Uwakshatra и означаетъ «самодержецъ», а Астіагъ—мидійское Ajisdahâku, «жалящая змѣя»—есть имя, общее царямъ мидійской династіи; значеніе имени דריוש Δαρεῖος, персидскаго Darjawusch, уже Геродотъ опредѣляетъ словомъ ἐρξείης, «удерживатель», правитель, властелинъ. Еврейское имя אחשורוש, переданное Θеодотіономъ Ἀσσουῆρος, и LXX-ю Ξέρξης, есть имя Ксеркса, Kschajârschâ, происходитъ отъ Kschaja «царство» и также составляетъ общее имя персидскихъ царей, подобно мидійскому имени Астіага [35]. Такимъ образомъ, имена: персидское Дарій и мидійское Кіаксаръ имѣютъ почти одинаковое значеніе, а имена отца: Ассуиръ и Астіагъ представляютъ обще-династическіе титулы; они вполнѣ могутъ принадлежать одному и тому же лицу, по-мидійски называвшемуся Кіаксаромъ, сыномъ Астіага, а по-персидски Даріемъ, сыномъ Ассунра.

Противъ такого отожествленія Дарія съ Кіаксаромъ представляютъ много возраженій. Говорятъ, что Кіропедія Ксенофонта есть историческій романъ, и на ней нельзя строить никакихъ заключеній о дѣйствительныхъ тогдашнихъ событіяхъ. Но если даже признать, что Ксенофонтъ писалъ только романъ, то

[34] Іосифъ Флавій Ant. 10, 11. 4; блаж. Іеронимъ Migne 25 lat. 522—3.
[35] Keil, 167.

все-таки его показанія имѣютъ нѣкоторую степень достовѣрности: даже современнымъ историческимъ романамъ нельзя отказать въ этомъ. Если же показанія Ксенофонта совпадаютъ съ извѣстіями книги пророка Даніила, т. е. совпадаютъ два совершенно независимые источника, то трудно отрицать ихъ достовѣрность. Говорятъ, что извѣстія книги пророка Даніила и Ксенофонта не подтверждаются другими, болѣе достовѣрными извѣстіями. Геродотъ разсказываетъ, что у Астіага не было сына, а была только дочь Мандана, вышедшая за Камбиза, мать Кира. Послѣдній, пришедши въ совершенный возрастъ, напалъ съ персидскимъ войскомъ на своего дѣда, взялъ его въ плѣнъ и по его смерти сдѣлался царемъ Мидіи и Персіи; а впослѣдствіи завоевалъ и лидійское и вавилонское царства, побѣдивъ вавилонскаго царя Лабинета (Herodot I, 107 сл.). И по словамъ Ктезія, Киръ имѣлъ дѣло съ самимъ Астіагомъ, а не его сыномъ. Таковы же извѣстія Бероза, Абидена и др. Наконецъ, въ клинообразныхъ надписяхъ сохранились извѣстія о времени завоеванія Вавилона Киромъ, и въ этихъ извѣстіяхъ, повидимому, нѣтъ мѣста для Дарія Мидянина. Изъ этихъ надписей (такъ называемый цилиндръ Кира и лѣтописи Набонида) оказывается, что послѣднимъ царемъ вавилонской династіи былъ Набонидъ (Набуна'идъ), а не Валтасаръ (Дан. 5, 1 и дал.), что онъ именно велъ войну съ Киромъ, былъ захваченъ имъ въ плѣнъ, а Вавилонъ безъ бою сдался Киру, который и воцарился тамъ [36]. Но прежде всего, эти клинообразныя надписи дошли до насъ въ такомъ видѣ, что едва ли есть возможность, основываясь на нихъ, отрицать достовѣрность несогласныхъ съ ними показаній: текстъ ихъ сохранился не совсѣмъ исправно, онъ очень кратокъ и труденъ для пониманія [37]. Геродотъ же имѣетъ обыкновеніе опускать незначительныхъ правителей и говорить только о болѣе важныхъ [38]; притомъ, его

---

[36] Halevy, «Balthasar et Darius le Mède» Revue Sémitique, 1894 avril p. 186—191, ср. Kamphausen l. c. S. 26 Anm.

[37] Самъ Галеви въ упомянутой статьѣ исправляетъ свой прежній переводъ текста приводимой имъ надписи.

[38] Gesenius, s. Keil 163, Anm.

разсказъ отличается явно сказочнымъ характеромъ. «Кажется, лучше подождать»,—скажемъ словами англійской толковой Библіи Кука (стр. 365): «можетъ быть, вавилонскія изысканія помогутъ выяснить сколько-нибудь детали» исторіи паденія Вавилона. Давно ли можно было сомнѣваться въ существованіи Валтасара; но въ 1854 году H. Rawlinson открылъ на цилиндрѣ Набонида имя Bil-śar-uṣur'a, сына Набонида, и съ тѣхъ поръ сомнѣніе въ его существованіи стало невозможнымъ [39]. То же самое можетъ случиться и съ Даріемъ Мидянином: открытіе и изученіе клинообразныхъ надписей далеко еще не закончилось.

Есть много и другихъ предположеній относительно личности Дарія Мидянина. Вѣроятнѣйшимъ изъ этихъ предположеній слѣдуетъ признать то, по которому Дарій есть сатрапъ Кира, занявшій Вавилонъ и пользовавшійся особенною любовью своего государя; въ клинообразныхъ надписяхъ онъ называется Gubaru, у греческихъ историковъ Γοβρύας. Въ 15 и дальнѣйшихъ строкахъ цилиндра Кира говорится: «Набонидъ убѣжалъ; Gubaru, сатрапъ страны Gutium, и воины Кира вошли безъ боя въ Вавилонъ; потомъ Набонидъ былъ взятъ въ Вавилонѣ.— —На третій день мѣсяца araḫsamnu Киръ вошелъ въ Вавилонъ, виновные исчезли до его появленія. Киръ объявилъ миръ городу; онъ объявилъ потомъ миръ всему Вавилону и далъ приказанія Gubaru, своему сатрапу, и другимъ сатрапамъ. И съ мѣсяца kisilimmu до мѣсяца adaru, боговъ акадскихъ, которыхъ Набонидъ заставилъ перевезти въ Вавилонъ, онъ возвратилъ въ ихъ прежнее мѣстопребываніе. Въ ночь съ 11 adaru онъ [Валтасаръ или Губару?] въ присутствіи (арміи) и царя умеръ. Съ 27 мѣсяца adaru до 3 мѣсяца nisanu былъ плачъ въ странѣ акадской, всѣ ходили съ непокрытою головою» [40]. Соглашая этотъ разсказъ съ показаніями книги пророка Даніила, представляютъ дѣло [41] такимъ образомъ: Губару захватываетъ Набонида и занимаетъ часть города съ іюля мѣсяца 539 года, но Валтасаръ, запершійся въ

[39] Kamphausen, 24.
[40] Revue Sém. 1894 avril 189.
[41] L'abbè F. de Moor, ibid. 187.

царскомъ кварталѣ, принимаетъ титулъ царя, организуетъ сопротивленіе, отказывается отъ мира, объявленнаго Кромъ въ октябрѣ, и погибаетъ 11 адара (мартъ), при взятіи квартала Губару. Послѣ смерти Валтасара Киръ пожаловалъ Губару титулъ царя Вавилонскаго, но онъ занималъ тронъ, подъ именемъ Дарія, только въ продолженіе года и нѣсколькихъ мѣсяцевъ, почти съ средины 538 до начала 536 года. Противъ такого представленія дѣла возражаютъ, что здѣсь говорится не о смерти Валтасара, а о смерти Губару, котораго и оплакивали вавилоняне; что Губару былъ не мидянинъ, а персъ, по словамъ Геродота и надписи Дарія, или ассиріецъ, по словамъ Ксенофонта. Не отстаивая предположенія о тожествѣ Губару съ Даріемъ Мидянином, замѣтимъ на эти возраженія, что позднѣйшіе писатели легко могли ошибаться относительно національности Губару, такъ какъ мидяне и персы дѣйствовали вмѣстѣ при завоеваніи Вавилона; съ другой стороны, 17-дневный (съ 11 адара по 3 нисана) плачъ по Губару выдѣляетъ его изъ обыкновенныхъ сатраповъ и заставляетъ предполагать особенное значеніе его для вавилонянъ.

Другія предположенія о личности Дарія не столь уже вѣроятны. Отождествляютъ, напр., Дарія Мидянина съ Кромъ (E. de Bunsen, Raška): имя Кира было будто бы ошибочно замѣнено въ книгѣ Даніила именемъ Дарія. Другіе думаютъ, что здѣсь говорится о Даріѣ сынѣ Гистаспа (Genebrard, Clavier, Bosanquet, Sayce), царствовавшемъ уже послѣ Кира и Камбиза. Третьи считаютъ Дарія тѣмъ же лицомъ, что и Астіагъ (Синкелъ и Кедринъ, Niebur); но тогда выходитъ, что Дарій-Астіагъ, вступившій на вавилонскій престолъ 62 лѣтъ, и его внукъ Киръ, умершій 70-ти лѣтъ черезъ 9 лѣтъ послѣ занятія Вавилона, были почти ровесники. Четвертые (F. d'Envieu 424 дал.) отождествляютъ Дарія съ Нериглиссоромъ, а Валтасара съ Евилмеродахомъ, но такое предположеніе совершенно произвольно и не соотвѣтствуетъ исторіи. Наконецъ, нѣкоторые думаютъ, что Дарій есть лицо, неизвѣстное остальнымъ историкамъ и указанное только въ книгѣ Даніила (Hebbelynck, Rohling), но и этого предположить невозможно, при обиліи извѣстій о переходѣ Вавилона подъ власть персовъ.

Такимъ образомъ, вѣроятнѣйшимъ остается предположеніе, что Дарій Мидянинъ, сынъ Ассуира, или Ахашвероша, есть Кіаксаръ II-й, сынъ Астіага, послѣдній царь мидійскій, дядя Кира по матери [42]. По завоеваніи Вавилона Киромъ, послѣдній, занятый, можетъ быть, другими войнами, предоставилъ своему престарѣлому дядѣ царскій тронъ въ Вавилонѣ. Употребленное здѣсь, въ 9, 1., пророкомъ Даніиломъ выраженіе: הַמְלַךְ «онъ воцаренъ, поставленъ царемъ», совершенно соотвѣтствуетъ обстоятельствамъ воцаренія Дарія надъ Вавилономъ: онъ былъ воцаренъ по волѣ другого, Кира, «принялъ царство» отъ него, какъ говорится въ другомъ мѣстѣ у пророка Даніила (5, 31., евр. 6, 1). Первый годъ Дарія Мидянина падаетъ на 538—537-й годъ до Рождества Христова.

Въ этомъ году, говоритъ пророкъ, *разумѣхъ въ книгахъ число лѣтъ, о немже бысть слово Господне ко Іереміи пророку, на скончаніе опустѣнія Іерусалимля седмьдесятъ лѣтъ.* Славянское выраженіе *разумѣхъ*, συνῆκα, intellexi, подобно русскому (въ синодальномъ переводѣ) «я сообразилъ», можетъ означать то, что Даніилъ только теперь, когда приблизилось время исполненія пророчества Іереміи, сообразилъ все его значеніе, понялъ его (συνῆκα) во всемъ объемѣ: понялъ, что теперь именно настало его исполненіе. Но еврейское выраженіе בִּינֹתִי даетъ менѣе точный смыслъ: «я обратилъ вниманіе»; при чтеніи книги пророка Іереміи Даніилъ остановилъ свое вниманіе на пророчествѣ о 70-ти годахъ плѣна вавилонскаго. И прежде этого пророкъ Даніилъ зналъ и, конечно, понималъ это пророчество; членъ въ словѣ בַּסְּפָרִים «въ книгахъ» указываетъ на извѣстность Даніилу Св. книгъ, содержавшихъ это пророчество,—такую извѣстность, что онъ не считаетъ нужнымъ опредѣлять эти книги точнѣе,

---

[42] При рѣшеніи вопроса о личности Дарія служили пособіями: названные уже комментаріи: Keil 160—167, Knabenbauer 169—176, F. d' Envieu 424—480; затѣмъ: E. Schrader, Die Keilinschriften u. d. Alte Testament, 2-te Aufl. Giessen, 1883, S. 437; F. Meinhold, Beiträge zur Erklärung des Buches Daniel, Leipzig 1888, S. 41—46; названная брошюра A. Kamphausen'a, и статья Halevy въ Revue Sémitique; A. Kuenen, Historisch-kritische Einleitung in die Bücher des A. T. 2 Th. Lpz. 1892, S. 464—466. J. V. Prášek, Medien und das Haus des Kyaxares. Berlin 1890.

будучи убѣжденъ, что читатели его такъ же хорошо, какъ онъ самъ, знаютъ, о какихъ книгахъ здѣсь рѣчь. Даніилъ зналъ и раньше это пророчество; но теперь, при концѣ опредѣленнаго Господомъ срока для плѣна, когда «помазанникъ Господень Киръ» (Ис. 45, 1) уже покорилъ многіе народы, и когда, слѣдовательно, со дня на день нужно было ожидать, что «онъ исполнитъ всю волю Божію, и скажетъ Іерусалиму: ты будешь построенъ! и храму: ты будешь основанъ!» (Ис. 44, 28),—теперь вниманіе Даніила къ пророчеству Іереміи, естественно, удвоилось, онъ подолгу останавливался на немъ своею мыслію.

Изъ упоминанія пророка Даніила о «книгахъ» многіе ученые отрицательнаго направленія заключаютъ, что здѣсь говорится о полномъ канонѣ Св. книгъ, τὰ βιβλία, и что это явный признакъ позднѣйшаго написанія книги пророка Даніила: она написана тогда, когда уже существовалъ канонъ Св. книгъ, то есть во времена маккавейскія [43]. Но для такого заключенія не представляютъ и не могутъ представить никакихъ основаній. Здѣсь гораздо естественнѣе разумѣть просто сборникъ нѣсколькихъ Св. Книгъ, бывшій подъ руками у пророка Даніила. Что такіе сборники существовали гораздо раньше составленія канона Св. книгъ, это понятно само собою: нельзя думать, что Св. книги, послѣ своего написанія, существовали каждая отдѣльно; одно практическое удобство требовало соединенія нѣсколькихъ книгъ въ одинъ свитокъ, сборникъ. Такъ какъ эти случайные сборники были, конечно, различны по своему составу и величинѣ, то трудно гадать о томъ, изъ какихъ именно книгъ состоялъ сборникъ, бывшій у пророка Даніила. Можетъ быть, онъ содержалъ только книгу пророка Іереміи, которая одна могла быть названа *сэфарим* по своей величинѣ и составу—изъ нѣсколькихъ рѣчей; можетъ быть, въ немъ были и какія-нибудь другія Св. книги или даже всѣ, появившіяся до Даніила: при учености, высокомъ общественномъ положеніи и, слѣдовательно, матеріальной состоятельности пророка Даніила послѣднее очень вѣроятно. Явно не-

[43] Ср. Lengerke, 414; Hitzig, 146; Kuenen, Einleitung 2 T., S. 452 прим. 10 и др.

состоятельны только догадки нѣкоторыхъ ученыхъ [44], что здѣсь разумѣется или только посланіе Іереміи къ переселенцамъ (Іер. 29 гл.), или, вообще, отрывокъ изъ книги пророка Іереміи, содержавшій пророчество о семидесятилѣтнемъ плѣнѣ (главы 25—29): такіе отрывки Св. книгъ едва ли были тогда въ употребленіи, да и множественное число *сэфарим* указываетъ скорѣе на величину и многосоставность бывшихъ у пророка Даніила писаній.

Пророчество Іереміи о 70-лѣтнемъ запустѣніи Іерусалима находится въ двухъ мѣстахъ его книги: въ 25, 11. 12. и въ 29, 10. Эти-то мѣста и привлекли къ себѣ особое вниманіе пророка Даніила и вызвали горячую молитву его за свой несчастный народъ. *Въ пость и во вретищи и пепелѣ* пророкъ молился Господу, исповѣдуя предъ Нимъ грѣхи своего народа и прося Его о помилованіи. *Согрѣшихомъ, беззаконновахомъ, нечествовахомъ, и отступихомъ, и уклонихомся отъ заповѣдей Твоихъ и отъ судовъ Твоихъ, и не послушахомъ рабъ Твоихъ пророковъ, иже глаголаша во имя Твое къ царемъ нашымъ, и княземъ нашымъ, и отцемъ нашымъ, и всѣмъ людемъ земли.* Пророкъ является здѣсь какъ-бы представителемъ своего народа, ходатаемъ за него предъ праведнымъ Богомъ. Исповѣдуя грѣхи своего народа, пророкъ признаетъ, что наказаніе, понесенное Израилемъ, вполнѣ заслужено, что оно вполнѣ согласно съ праведностью Божіею и преступностью народа. *Тебѣ, Господи, правда, намъ же стыдѣніе лица,* неоднократно повторяетъ пророкъ. Наказаніе это соотвѣтствуетъ тому, чѣмъ грозилъ израильтянамъ еще Моисей за ихъ непослушаніе закону Божію: *пріиде на ны клятва и заклятіе, вписанное въ законѣ Моисеа раба Божія, яко согрѣшихомъ Ему.* Теперь пророкъ умоляетъ Господа пощадить народъ Свой, не ради его заслугъ, а ради славы Божіей, ради Самаго Господа, имя Котораго носитъ на себѣ этотъ народъ. *И нынѣ, Господи Боже нашъ, услыши молитву раба Твоего и прошеніе его, и яви лице Твое на святилище Твое опустѣвшее, Тебе ради, Господи. Приклони, Господи*

[44] Ср. Wieseler, S. 4, и др. Bevan (146) толкуетъ это мѣсто очень искусственно: «я понялъ изъ Писаній (подъ которыми будто бы разумѣется Лев. 26, 18 и дал.) число лѣтъ»...

Боже мой, ухо Твое и услыши, отверзи очи Твои и виждь потребленіе наше, и града Твоего, въ немже призвася имя Твое: яко не на наша правды уповающе повергаемъ моленіе наше предъ Тобою, но на щедроты Твоя многія, Господи. Услыши Господи, очисти Господи, вонми Господи, и сотвори, и не закосни, Тебе ради, Боже мой, яко имя Твое призвася въ градѣ Твоемъ и въ людехъ Твоихъ! Этимъ заканчивается молитва пророка, достигая высшей степени духовнаго напряженія: какъ вздохи, вырываются изъ груди пророка послѣднія слова его молитвы.

И горячая молитва пророка была услышана: *Еще же ми глаголющу, и молящуся, и исповѣдающу грѣхи моя и грѣхи людей моихъ Израиля, и припадающу съ моленіемъ моимъ предъ Господемъ Богомъ моимъ, о горѣ святѣй Его, и еще глаголющу ми въ молитвѣ, и се мужъ Гаврінлъ, егоже видѣхъ въ видѣніи моемъ въ началѣ, парящъ и прикоснеся мнѣ, аки въ часъ жертвы вечернія, и вразуми мя, и глагола ко мнѣ, и рече* (ст. 20—22).

Молитва Даніила была такъ угодна Богу, что еще до ея окончанія Онъ послалъ ангела Своего для отвѣта на нее и для утѣшенія души пророка, томимой скорбію о своей разоренной родинѣ и страждущемъ народѣ. Въ стихѣ 20-мъ дважды дается содержаніе молитвы Даніила: исповѣданіе грѣховъ и мольба о спасеніи, а въ начальныхъ словахъ 21-го—образъ молитвы: *еще же ми глаголющу и молящуся.* Очевидно, молитва была не мысленная только, и въ стихахъ 4—19 передано не содержаніе только ея,—она изливалась въ пламенной устной рѣчи, которая здѣсь и передана. Въ словѣ אִישׁ, мужъ, членъ указываетъ на извѣстность уже пророку Гаврінла, и дальнѣйшія слова показываютъ, что это тотъ самый Гаврінлъ, котораго Даніилъ «видѣлъ въ видѣніи прежде»: это то видѣніе, которое было Даніилу *въ лѣто третіе царства Валтасара царя* и описано въ 8-ой главѣ кн. Дан. Тамъ, въ стихахъ 15—26., описано и явленіе *аки образа мужеска*, «какъ бы облика мужа», כְּמַרְאֵה גָבֶר, котораго «голосъ человѣческій изъ средины Улая» называлъ Гаврінломъ, тамъ же изложено и сообщенное имъ Даніилу толкованіе предшествующаго видѣнія. Имя גַּבְרִיאֵל значитъ: «мужъ Божій» и

есть собственное имя ангела, являвшагося Даніилу, а не нарицательное, какъ думаютъ нѣкоторые [45]. Это видно и изъ 8-ой главы, гдѣ Гавріиломъ называетъ явившагося мужа не самъ Даніилъ, которому естественно было бы назвать его «мужемъ Божіимъ», а «голосъ человѣческій изъ средины Улая», т. е. Богъ, въ устахъ же самого Бога названіе «мужъ Божій» было бы не такъ естественно. Видно это также и изъ 9-ой главы, гдѣ Гавріилъ называется *гаиш Габріель*, «мужъ Гавріилъ»: слово *гаиш* было бы совершенно лишнимъ, если бы *Габріель* было именемъ нарицательнымъ, а не собственнымъ («мужъ мужъ Божій»). Въ Св. Писаніи Ветхаго Завѣта объ архангелѣ Гавріилѣ упоминается только у пророка Даніила и всего два раза въ указанныхъ мѣстахъ. Гавріилъ снова является уже въ концѣ Ветхаго Завѣта, какъ благовѣстникъ Завѣта Новаго: онъ именно благовѣствуетъ Захаріи о рожденіи у него сына, который «предыдетъ предъ Господомъ въ духѣ и силѣ Иліи» (Лук. 1, 17. 19), онъ же благовѣствуетъ и Пресвятой Дѣвѣ Маріи о рожденіи отъ Нея Божественнаго Сына (Лук. 1, 26—33). Итакъ, ангелъ, который былъ посланъ къ Даніилу возвѣстить ему откровеніе о семидесяти седьминахъ, въ концѣ которыхъ имѣлъ явиться «Мессія-князь»,— тотъ же ангелъ посылается и при концѣ этихъ седьминъ для возвѣщенія объ имѣющемъ родиться Предтечѣ Мессіи, а затѣмъ—и о Самомъ Мессіи. Уже одно это можетъ служить нѣкоторымъ указаніемъ на время, къ которому слѣдуетъ относить откровеніе о седьминахъ.

Славянское выраженіе *парящь* соотвѣтствуетъ въ еврейскомъ текстѣ труднымъ для перевода и толкованія словамъ: מֻעָף בִּיעָף. Всѣ новѣйшіе толкователи согласны, что эти слова суть производныя отъ одной основы יעף, причемъ *муаф* есть причастіе 6-ой формы, а *бійаф* есть отглагольное существительное יְעָף съ предложной приставкой בְּ. Но относительно значенія этихъ словъ существуютъ различныя мнѣнія. Одни [46], принимая глаголъ *яеф* въ обычномъ значеніи «уставать, утомляться», перево-

[45] Напр., Keil, 257.

[46] Keil, 279, Gesenius, 343; Doederlein—vid. Rosenmüller, p. 294.

дятъ эти слова: «утомленный въ утомленіи», т. е. въ высшей степени утомленный, и относятъ ихъ не къ ангелу, которому утомленіе несвойственно, а къ Даніилу, который дѣйствительно находился въ подобномъ состояніи во время предшествующаго видѣнія (гл. 8, 17. 18. 27). Но едва ли возможно относить эти слова не къ ангелу, а къ Даніилу. Тогда опредѣлительное предложеніе, отдѣляющее подлежащее *(Гавріилъ)* отъ сказуемаго *(прикоснéся)*, и безъ того длинное *(егоже видѣхъ въ видѣніи моемъ въ началѣ)*, было бы еще длиннѣе; притомъ невозможно подразумѣвать два различныхъ подлежащихъ при рядомъ стоящихъ причастіяхъ *муаф* и נִגַּע. Другіе [47] берутъ первоначальное значеніе основы יעף, выясняющееся изъ арабскаго *vaghapha* «быстро бѣжать, спѣшить», и переводятъ: «заставленный спѣшить въ поспѣшности», разумѣя здѣсь повелѣніе Божіе Гавріилу о поспѣшности. Но древніе переводы, нѣкорые отцы и еврейскіе ученые находятъ въ разбираемыхъ словахъ выраженіе понятія «полета». Такое пониманіе мы находимъ у LXX-ти: τάχει φερόμενος, въ переводѣ сирскомъ: וּמְפַרְחָא, ѳеодотіоновомъ: πετόμενος, латинскомъ: cito volans, и славянскомъ: *парящь*, въ толкованіяхъ блаж. Іеронима [48], ѳеодорита [49] и др. На этомъ послѣднемъ пониманіи словъ *муаф бійаф* и можно остановиться и переводить ихъ: прилетѣвъ въ полетѣ, т. е. быстро прилетѣвъ. Это пониманіе подтверждается тѣмъ, что 1) основа יעף одного корня съ עוף «летать»; 2) Св. Писаніе ничего не говоритъ противъ признанія ангеловъ способными въ тѣлесномъ видѣ переноситься по воздуху. Напротивъ, въ Суд. 13, 20. разсказывается, что «ангелъ Іеговы», явившійся Маною, «поднялся въ пламени жертвенника»; пророки Исаія и Іезекіиль говорятъ о четырехъ животныхъ, носящихъ престолъ Божій, что они имѣютъ крылья (Ис. 6, 2 и дал., Іез. 1, 6 и дал.). Въ Апокалипсисѣ же прямо говорится о летящемъ ангелѣ (14, 6).

[47] Rosenmüller, 294. Lengerke, 425—426, Hävernick, 349—350.

[48] «Volare dicitur, quia ut vir apparuerit». Commentariorum in Danielem prophetam ad Pammachium et Marcellam liber unus. M. 25 lat. 541.

[49] «Πετᾶσθαι δὲ αὐτὸν ἔφη ὀξέως διατέμνοντα τὸν ἀέρα καὶ παρ' αὐτὸν θέοντα θεασάμενος». Ὑπόμνημα εἰς τὰς ὁράσεις τοῦ προφήτου Δανιήλ. M. 81 gr. 1468.

И прикоснеся ми, ἥψατό μου (θεοδοτіонъ), какъ и Вульгата: tetigit me. Но еврейскій глаголъ נָגַע въ значеніи «касаться» употребляется съ предлогомъ בְּ, а не אֶל, какъ здѣсь: אֵלַי. Лучше переводить: «достигъ до меня» или: «предсталъ предо мною» [50], какъ и LXX: προσήγγισέ μοι, сирскій: וְקִרֵב לָוָתִי «приблизился ко мнѣ».—*Яко въ часъ жертвы вечернія*, т. е. около того времени, когда, при существованіи храма, приносилась ежедневная вечерняя жертва, предписанная закономъ (Исх. 29, 39. Числ. 28, 4). Время это, очевидно, твердо сохранялось въ памяти плѣнниковъ и, можетъ быть, было посвящено молитвѣ.

Далѣе передается рѣчь ангела, сначала повѣствующаго о поводѣ и цѣли своего явленія, а затѣмъ передающаго пророку откровеніе о седьминахъ.

И рече: Даніиле, нынѣ изыдохъ устроити тебѣ разумъ. Въ началѣ молитвы твоея изыде слово, и азъ пріидохъ возвѣстити тебѣ, яко мужъ желаній еси ты. Размысли о словеси, разумѣй въ явленіи (ст. 22б—23).

Нынѣ, т. е. во время молитвы Даніила: это указываетъ на то, что именно молитва Даніила была поводомъ откровенія ему о судьбѣ его народа. Понятно, она была только поводомъ, причиною же была премудрость Божія, нашедшая благовременнымъ и полезнымъ для рода человѣческаго сообщить пророку Даніилу это откровеніе. Слово *изыдохъ* предполагаетъ опредѣленное и постоянное мѣсто, гдѣ Гавріилъ находился предъ этимъ; это образное выраженіе того, что Гавріилъ отъ вездѣсущаго Бога, Которому онъ предстоитъ (Лук. 1, 19), обратился, по Его повелѣнію, къ человѣку.—*Изыде слово*, יָצָא דָּבָר, т. е. вышло отъ Бога откровеніе о семидесяти седьминахъ для сообщенія его Даніилу. Что таковъ именно смыслъ слова *дабар*, это видно изъ дальнѣйшаго: *размысли о словеси*; тамъ въ еврейскомъ текстѣ при словѣ *дабар* стоитъ членъ, указывающій, что это—то же «слово», о которомъ говорилось раньше; а здѣсь подъ *дабар*, очевидно, разумѣется дальнѣйшая рѣчь ангела (24—27 стихи), содержащая откров-

[50] Ср. Rosenmüller, 294—295, Keil, 279, Gesenius, 519, Knabenbauer, 230, и др.

ніе.— При глаголѣ *возвѣстити* подразумѣвается дополненіе «слово», откровеніе, а не то, что онъ (Даніилъ) «мужъ желаній»: это причина, а не содержаніе вѣсти ангела. *Яко мужъ желаній еси ты* כִּי חֲמוּדוֹת אָתָּה; *хамудот* стоитъ вмѣсто *иш хамудот* «человѣкъ вожделѣній», вожделѣнный, любимецъ (ср. 10, 11. 19); здѣсь указывается, конечно, не причина пришествія Гавріила къ пророку, а причина выбора Богомъ именно Даніила для сообщенія ему откровенія. Славянское и русское выраженіе: «мужъ желаній», составляющее переводъ греческаго: ἀνὴρ ἐπιθυμιῶν (у Θеодотіона), подобно латинскому: vir desideriorum, можно понимать двояко: или — мужъ, составляющій предметъ желаній Божіихъ, любви Божіей (ἐπιθυμητός, desiderabilis), что согласно и со смысломъ еврейскаго текста; или—мужъ, имѣющій желанія, т. е. желающій, жаждущій откровеній, какъ толкуютъ, напр., блаж. Іеронимъ [51] и Василій Селевкійскій [52]. Но, не говоря уже о несоотвѣтствіи послѣдняго пониманія еврейскому тексту, оно и вообще не можетъ быть принято: невозможно допустить, чтобы причиною, даже второстепенною, сообщенія Даніилу откровенія о седьминахъ было его любопытство,—хотя бы и благочестивое и вполнѣ законное.

И разумѣй въ явленіи—это буквальный переводъ еврейскаго выраженія וְהָבֵן בַּמַּרְאֶה «и обрати вниманіе» или «и уразумѣй видѣніе». Слово *марѣе* означаетъ собственно «внѣшній видъ», наружность предмета, и употребляется въ такихъ, напр., выраженіяхъ: *вѣмъ азъ, яко жена добролична еси* (буквально: добра *видомъ*), говоритъ Авраамъ Саррѣ (Быт. 12, 11); Ревекка *бяше доброзрачна зѣло* (Быт. 24, 16., ср. 26, 7. 29, 17 и др.); затѣмъ, напр., при опредѣленіи проказы употребляются выраженія: *взоръ язвы* (Лев. 13, 3), *обличіе врѣда* или *прокаженія* (ст. 32. 43); особенно часто *марѣе* употребляется при указаніи подобія какого либо предмета другому: въ книгѣ пророка Іезекіиля, особенно въ

---

[51] «Quia vir desideriorum es, sive amabilis et Dei amore dignus,—sive vir desideriorum, quod pro desiderio tuo Dei secreta audire merearis et esse conscius futurorum». M. 25 lat. 541.

[52] «Ὅτι ἀνὴρ ἐπιθυμιῶν σὺ εἶ· ἐπιθυμῶν φησὶ τὴν τοῦ Χριστοῦ παρουσίαν θεάσασθαι». Ἀπόδειξις κατὰ Ἰουδαίων περὶ τῆς τοῦ Σωτῆρος παρουσίας, λόγος λή· M. 85 gr. 405.

1 гл. *марѣе* употребляется въ этомъ значеніи весьма часто (Іез. 1, 5. 13. 14 дал. 8, 2. 10, 9. 40, 3. Исх. 24, 17. Числ. 8, 4 и др.). Согласно съ этимъ, и въ пророческомъ словоупотребленіи *марѣе* всегда означаетъ «видѣніе» въ буквальномъ смыслѣ,— такое, въ которомъ откровеніе сообщается пророку въ видимыхъ образахъ, а не только въ изустной рѣчи. Такъ, у пророка Іезекіиля словомъ *марѣе* обозначается видѣніе славы Божіей, которое пророкъ созерцалъ на рѣкѣ Ховаръ (Іез. 8, 4. 43, 3) и другія подобныя видѣнія (Іез. 11, 24. 25). У самого пророка Даніила *марѣе* встрѣчается въ томъ и другомъ значеніи. Въ значеніи «внѣшній видъ» *марѣе* употребляется въ 1, 13. 15: *и да явятся предъ тобою лица* (букв. *виды*) *наша и лица отроковъ*; *явишася лица ихъ блага*; въ 8, 15: *аки образъ мужескъ*, въ 10, 6. 18: *лице его аки зрѣніе (марѣе) молніи*; *и прикоснеся мнѣ яко зракъ человѣчъ*. Въ значеніи пророческаго «видѣнія» *марѣе* употребляется въ 8 гл. Дан. (ст. 15. 16. 26. 27), гдѣ описывается видѣніе, сопровождавшееся сложными внѣшними образами. Такимъ образомъ, *марѣе* отличается отъ подобнаго ему выраженія חָזוֹן «видѣніе» между прочимъ тѣмъ, что оно не можетъ, подобно послѣднему, обозначать просто содержаніе откровенія, все равно, дано ли оно въ видимыхъ образахъ или на словахъ. «Даніилъ долженъ обратить вниманіе на то и на другое, на слово и на форму откровенія» [53]. Такому пониманію слова *марѣе* можетъ противорѣчить, повидимому, малозначительность формы откровенія о седьминахъ: здѣсь—просто явленіе ангела, названнаго только по имени, но не описываемаго подробно; все вниманіе сосредоточено на его словахъ. Другое дѣло—въ остальныхъ откровеніяхъ Даніилу (напр., въ 7, 8, 10 главахъ): тамъ, дѣйствительно, откровеніе сообщается въ видимыхъ образахъ. Поэтому возможно предположить, что Даніилу повелѣвается обратить вниманіе и на форму откровенія, несмотря на ея кажущуюся незначительность, именно потому, что и въ ней скрывается важный смыслъ, понятный если не самому Даніилу, то тѣмъ, которые живутъ уже послѣ исполне-

[53] Keil, 280.

ненія сообщеннаго ему откровенія. Выше уже указано, что одинъ и тотъ же архангелъ Гавріилъ возвѣщаетъ и откровеніе о семидесяти седьминахъ, и событія, долженствовавшія быть «началомъ конца» этихъ седьминъ. Не потому ли Господь чрезъ ангела и повелѣваетъ Даніилу обратить вниманіе на форму сообщенія ему откровенія, что эта форма, явленіе архангела Гавріила, имѣла повториться въ будущемъ, чтобы этимъ показать людямъ, что наступилъ конецъ седьминъ?

Сообщенное далѣе Даніилу откровеніе о семидесяти седьминахъ даетъ какъ разъ такой отвѣтъ на его молитву, въ какомъ онъ нуждался. Даніилъ просилъ о прекращеніи настоящаго бѣдственнаго состоянія евреевъ. Онъ основывалъ свою молитву на пророчествахъ Іереміи, а Іеремія, какъ и другіе пророки, не различалъ въ своихъ рѣчахъ времени избавленія евреевъ изъ плѣна отъ времени пришествія Мессіи, представляя эти событія какъ бы одновременными (ср., напр., Іер. 30, 8—10. 18—22., гл. 31 и др.). Поэтому требовалось показать Даніилу, что не тотчасъ послѣ освобожденія евреевъ изъ плѣна (которое, по пророчеству Іереміи, скоро уже послѣдуетъ) начнется и царство Мессіи, что до этого времени пройдетъ еще много лѣтъ;—это и сообщается Даніилу въ откровеніи о седьминахъ. Даніилъ, какъ видно изъ его молитвы (ст. 15. 16. 17. 19), желалъ блага для своего народа не по простому патріотизму, а потому, что народъ этотъ былъ носителемъ истиннаго богопочитанія: *Тебе ради, Господи.* Но Господь предвидѣлъ, что народъ этотъ отвергнетъ Мессію, когда Онъ придетъ, и за это, по праведному суду Божію, самъ будетъ отвергнутъ Богомъ и преданъ на разореніе врагамъ;—и это сообщается пророку, чтобы показать ему, что царство Божіе не вѣчно будетъ связано съ еврейскимъ народомъ, и что судьба послѣдняго вовсе не вліяетъ на судьбу перваго.

Переходимъ теперь къ истолкованію самаго откровенія о седьминахъ.

II. Толкованіе откровенія.

Одного взгляда на славянскій текстъ откровенія о седьминахъ достаточно, чтобы видѣть, что оно состоитъ собственно изъ двухъ частей. Сначала, въ стихѣ 24-мъ, дается какъ бы общее содержаніе откровенія, указываются тѣ блага, которыя принесетъ съ собою весь періодъ семидесяти седьминъ. Далѣе, въ слѣдующихъ трехъ стихахъ, періодъ этотъ расчленяется, указываются содержаніе и границы каждой части его, излагаются слѣдствія имѣющихъ совершиться въ немъ событій. Что это такъ, что въ стихахъ 25—27 дается только раскрытіе сказаннаго въ 24-мъ стихѣ, а не продолженіе (особенно—въ хронологическомъ отношеніи), это ясно видно, во-первыхъ, изъ того, что сумма седьминъ, чи́сла которыхъ даются въ 25—27 стихахъ, равна какъ разъ семидесяти, т. е. именно тому числу, какое дано въ 24-мъ стихѣ; во-вторыхъ изъ того, что 25-й стихъ начинается новыми вступительными словами: *и увѣси и уразумѣеши* (ср. ст. 23), исключающими мысль о томъ, что далѣе слѣдуетъ продолженіе пророчества, а не частнѣйшее его раскрытіе: послѣднее, естественно, требуетъ особаго вниманія къ подробностямъ возвѣщаемыхъ событій, въ первомъ же случаѣ такого вниманія вовсе не требовалось бы, тѣмъ болѣе, что предыдущій стихъ важнѣе послѣдующихъ. Самое толкованіе еще болѣе покажетъ намъ справедливость такого дѣленія откровенія.

Стихъ 24-й.

Откровеніе начинается датой времени, опредѣляющей продолжительность всего періода, къ которому относятся возвѣщае-

мыя далѣе событія: *седмьдесятъ седминъ*, שָׁבֻעִים שִׁבְעִים [54]. Первое слово есть множественное число существительнаго שָׁבוּעַ, второе—имя числительное. *Шабуа* значитъ: «седьмеричное время, седьмина», т. е. время, состоящее изъ семи частей, безотносительно къ тому, каковы эти части. Какія седьмины разумѣются здѣсь, мы увидимъ впослѣдствіи, теперь же, для ясности пониманія пророчества, допустимъ впередъ, что это—седьмины лѣтъ, семилѣтія. *Шабуим* стоитъ впереди числительнаго *шибъим* «семьдесятъ» для того, очевидно, чтобы сильнѣе оттѣнить отличіе сообщаемаго Даніилу откровенія отъ пророчества Іереміи: не лѣтъ, а седьминъ семьдесятъ протечетъ до мессіанскаго времени. Множественное число отъ *шабуа* образовано здѣсь не по женскому роду, какъ обыкновенно: *шабуот*, а по мужескому: *шабуим*; такая форма встрѣчается только въ книгѣ пророка Даніила (9, 24. 25. дважды, 26. 10, 2. 3). Очевидно, *шабуа* принадлежитъ къ тѣмъ словамъ, которыя «во множественномъ числѣ употребляются рядомъ и въ мужеской, и въ женской формѣ» [55], безъ перемѣны значенія. Нѣкоторые думаютъ, что мужеское окончаніе употреблено здѣсь просто по созвучію со словомъ *шибъим* [56]; но такое созвучіе имѣется только въ 9, 24., во всѣхъ же остальныхъ мѣстахъ книги Дан., гдѣ употреблена та же мужеская форма, такого созвучія нѣтъ. Другимъ эта мужеская форма *шабуим* дала поводъ измѣнить пунктуацію и читать: שִׁבְעִים שָׁבֻעִים «семьдесятъ, именно семьдесятъ» лѣтъ, разумѣя здѣсь годы плѣна [57]. Но такое измѣненіе текста не имѣетъ за себя рѣшительно никакихъ основаній. Во-первыхъ, мужеская форма множественнаго числа *шабуим* остается все-таки необъясненною, такъ какъ въ другихъ мѣстахъ, гдѣ она встрѣчается, измѣнить пунктуацію уже невозможно. Во-вторыхъ, при измѣненномъ чтеніи нѣтъ существи-

---

[54] Вмѣсто שָׁבֻעִים въ 13-ти кодексахъ K. и въ 5 de-R. стоитъ scriptio plena שבועים, а вмѣсто שִׁבְעִים 1 кодексъ K. и 1 de-R. ошибочно имѣютъ שבועים; 1 кодексъ K. совсѣмъ не имѣетъ послѣдняго слова.

[55] См. «Еврейскую грамматику» В. Гезеніуса § 87, 3.

[56] Bertholdt—vid. Hengstenberg, 408.

[57] Напр., Schmidt, Jahn—vid. Zöckler, 190.

тельнаго, къ которому относится числительное имя: семьдесятъ— чего? Подразумѣвать: «лѣтъ» будетъ большой натяжкой, такъ какъ упоминаніе о пророчествѣ Іереміи, откуда это существительное заимствуется, слишкомъ далеко. Въ-третьихъ, сряду бросается въ глаза то обстоятельство,—какъ уже и сказано,—что числа, указанныя въ послѣднихъ трехъ стихахъ откровенія, суть части періода, указаннаго въ 24 стихѣ, а между тѣмъ въ 27 стихѣ единицей счисленія прямо является *шабуа*. Въ-четвертыхъ, наконецъ, всѣ древніе переводы и толкователи видятъ здѣсь не два числительныхъ, а одно, и переводятъ «семьдесятъ седьминъ».

Сократившаяся: еврейское слово נֶחְתַּךְ есть ἅπαξ λεγόμενον, слово, встрѣчающееся только въ этомъ мѣстѣ Св. Писанія Ветхаго Завѣта. Судя по позднѣйшему, раввинскому употребленію, глаголъ חָתַךְ значитъ, собственно, «рѣзать», а затѣмъ, какъ и другіе глаголы съ такимъ значеніемъ (напр., קָצַץ съ его родственными, חָרַץ и др.), получаетъ значеніе: «опредѣлять, рѣшать», подобно греческому выраженію: τέμνειν τὰς δίκας, латинскому: secare lites, или русскому выраженію о твердомъ, рѣшительномъ человѣкѣ: «скажетъ, какъ отрубитъ!» LXX правильно переводятъ глаголъ *нехтак*: ἐκρίθησαν. Тотъ же смыслъ, конечно, имѣетъ и переводъ Ѳеодотіона: συνετμήθησαν, который только болѣе буквалень; по крайней мѣрѣ, копто-саг. переводъ передаетъ это слово значеніемъ «опредѣлены», и блаж. Ѳеодоритъ толкуетъ это слово въ такомъ же смыслѣ: «опредѣлены и присуждены» [58]. Сирскій переводъ имѣетъ здѣсь: *нетпнихун* «успокоятся», что́ Ефремъ Сиринъ объясняетъ въ смыслѣ полнаго покоя, имѣвшаго наступить для евреевъ при концѣ періода седьминъ [59]. Очевидно, переводчики ошибочно производили *нехтак* отъ נוּחַ «покоиться».

---

[58] Ἑβδ. ἑβδ. συνετμήθησαν, ἀντὶ τοῦ, ἐδοκιμάσθησαν καὶ ἐκρίθησαν· οὕτω γάρ τινες τῶν ἑρμηνευτῶν ἐκδεδώκασιν. M. 81 gr. 1469.

[59] «Покой будетъ народу твоему, чтобы завершились беззаконія семидесяти лѣтъ вавилонскаго (плѣна), и чтобы исполнились грѣхи всѣхъ сыновъ израилевыхъ; *чтобы исполнились грѣхи и окончились беззаконія*, т. е. чтобы исполнились грѣхи всѣхъ народовъ, и скончались неправды, и отпущено было преступленіе чрезъ крещеніе Іоанново». См. Толкованіе на книгу пр. Даніила въ изданіи:

Но Вульгата даетъ здѣсь уже другой смыслъ, переводя *нехтак*: abbreviatae sunt, «сокращены», подобно армянскому переводу и славянскому: *сократишася*. Ту же мысль о «сокращеніи» седьминъ выводятъ изъ Ѳеодотіонова перевода (συνετμήθησαν) Тертулліанъ [60] и псевдо-Кипріанъ [61], передающіе разбираемое выраженіе: «breviatae sunt». Бэда Достопочтенный, основываясь на этой мысли, трактуетъ о томъ, что седьмины слѣдуетъ считать по лунным годамъ, а не по солнечнымъ [62]. Въ новое время такой переводъ возобновилъ Визелеръ [63], чтобы вывести нужную для него мысль о сокращеніи семидесяти лѣтъ плѣна вавилонскаго, къ концу котораго онъ относитъ семьдесятъ седьмицъ 24-го стиха. Понятіе «сокращенія» онъ выводитъ изъ значенія глагола *хатак*: «отсѣкать». Но противъ возможности такого выведенія Кэйль [64] справедливо замѣчаетъ, что «если отъ цѣлаго отсѣкается часть, то сокращается цѣлое на эту отсѣченную часть, а не сама часть», т. е. если «семьдесятъ седьминъ отсѣчены», то сокращено то цѣлое, отъ котораго онѣ отсѣчены, а не сами онѣ. Гэверникъ [65] также придерживается мысли о «сокращеніи» седьминъ, и въ доказательство возможности этой мысли ссылается на арабскій глаголъ *chataka* и на еврейское *харац*, употребляемое въ 26-мъ стихѣ; но арабскій языкъ можетъ имѣть значеніе при опредѣленіи смысла еврейскихъ словъ только тогда, когда эти послѣднія не имѣютъ себѣ аналогіи въ ближайшемъ къ еврейскому, раввинско-арамейскомъ языкѣ, тогда какъ здѣсь такая аналогія имѣется; слово же *харац* само еще нуждается въ опредѣленіи его смысла [66].

Sancti patris nostri Ephraem Syri opera omnia quae extant graece, syriace, latine. Tom. II (V). Romae, 1740, p. 221. Ср. Творенія св. Ефрема Сирина, ч. 8-я, въ 22 томѣ «Твореній святыхъ отцевъ» Москва 1853, стр. 85.

[60] См. его Liber adversus Judaeos. Cap. VIII. M. 2 lat. 612.

[61] См. Fraidl S. 54 Anm. 3.

[62] Ibid. S. 103.

[63] Wieseler Ss. 15—16. 95.

[64] Keil S. 283, ср. Hitzig 153.

[65] Hävernick Ss. 357—358.

[66] Нашъ русскій ученый, профессоръ А. Некрасовъ, также держится мнѣнія, что *нехтак* значитъ здѣсь: «сокращены, скучены, слиты», и выводитъ такое

Такимъ образомъ, глаголъ *хатак* вѣрнѣе всего понимать въ значеніи «опредѣлять, рѣшать», согласно съ его позднѣйшимъ употребленіемъ и переводомъ LXX-ти. *Нехтак* поставлено въ единственномъ числѣ, хотя относится ко множественному *шабуим*,—потому, что «семьдесятъ седьминъ» принимаются здѣсь какъ одно цѣлое, одинъ непрерывный періодъ. Такое употребленіе единственнаго числа, обычное въ еврейскомъ языкѣ [67], находитъ аналогію и въ русскомъ, гдѣ можно сказать: «семьдесятъ

значеніе какъ изъ смысла еврейскаго слова, такъ и изъ перевода Ѳеодотіона (который онъ ошибочно называетъ переводомъ LXX-ти): συνετμήθησαν. Но 1) нельзя съ такою рѣшительностью, какъ г. Некрасовъ, говорить о «собственномъ значеніи глагола *хатак*», такъ какъ глаголъ этотъ встрѣчается въ Св. Писаніи только одинъ разъ. 2) Г. Некрасовъ говоритъ, что «LXX, жившіе гораздо ближе насъ къ тѣмъ древнимъ временамъ, могли лучше понимать языкъ священныхъ книгъ, чѣмъ даже евреи, современные намъ». Но LXX, какъ уже сказано, и передаютъ *нехтак* словомъ ἐκρίθησαν; основываться же исключительно на переводѣ Ѳеодотіона, какъ уже не столь древнемъ, невозможно. Да и слово συνετμήθησαν блаж. Ѳеодоритъ находитъ возможнымъ, какъ мы видѣли, толковать также въ значеніи «опредѣлять». Наконецъ, 3) цѣль, къ которой стремится г. Некрасовъ, едва ли оправдываетъ его средства, т. е. стараніе вывести изъ текста откровенія мысль о «сокращеніи» семидесяти седьминъ. Онъ такъ передаетъ 24 стихъ: «70 седьминъ для устраненія преступности, для запечатанія грѣховъ и заглажденія беззаконій, для приведенія вѣчной правды, для запечатлѣнія видѣній и пророковъ и помазанія Святого святыхъ сократились предъ народомъ твоимъ въ одну».—«Слова: въ одну—нѣтъ въ текстѣ», замѣчаетъ г. Некрасовъ, «но смыслъ несомнѣнно таковъ; потому что весь періодъ времени дѣлится на единственныя единицы—седьмины. Подтвержденіемъ такого заключенія служатъ также и слѣдующія затѣмъ слова: знай и разумѣй, что до Христа Владыки остается еще 69 седьминъ. Значитъ, время сокращено было до изданія повелѣнія о возстановленіи Іерусалима. А ранѣе этого повелѣнія могла быть только одна седьмина, такъ какъ 69 слѣдовали послѣ повелѣнія». Эта седьмина протекла отъ 13-го года Артаксеркса, когда евреи были избавлены Есѳирью и Мардохеемъ отъ козней Амана, до 20-го года Артаксеркса, въ которомъ онъ отпустилъ Неемію на родину («Годъ крестныхъ страданій»... стр. 24—26 и дал.). Но, не говоря уже о бросающейся въ глаза натянутости такого толкованія, оно рѣшительно не можетъ быть принято потому, что основано на совершено произвольной прибавкѣ къ тексту, измѣняющей его смыслъ. Откуда взялъ авторъ слова: «въ одну седьмину»? Указанія его на текстъ откровенія ничего не доказываютъ. Съ другой стороны, еслы бы и дѣйствительно событія, разсказанныя въ книгѣ Есѳирь, были въ 13-мъ году Артаксеркса (что еще далеко не рѣшенный вопросъ, ср. F. W. Schultz въ Lange's Bibelwerk, 9 Th: Die Bücher Esra, Nehemia und Esther, S. 240—241), то это еще не давало бы права измѣнять текстъ откровенія. Произвольно прибавляя или убавляя слова текста, можно доказать все, что угодно.

[67] См. «Еврейскую грамматику» Гезеніуса, § 143. 1 b., ср. 146, 2.

седьминъ *опредѣлено*». Подразумѣвать здѣсь, подобно Генгстенбергу [68], какое-либо имя существительное, напр., עֵת «время», вовсе нѣтъ нужды. Генгстенбергъ, защищая свою прибавку, ссылается на правило, по которому, будто бы, въ случаяхъ, подобныхъ настоящему, употребляется не мужескій, а женскій родъ глагола. Но уже изъ приведенныхъ имъ самимъ мѣстъ (Быт. 46, 22. Еккл. 2, 7) видно, что это правило не безъ исключеній.

О людехъ твоихъ и о градѣ твоемъ святѣмъ. Еврейскій предлогъ עַל употребляется для означенія движенія сверху внизъ и значитъ: «надъ, на», подобно греческимъ ἐπί, ὑπέρ: «на народъ твой и на городъ святой твой». Понятіе движенія сверху внизъ здѣсь вполнѣ естественно, когда говорится о приговорѣ, изшедшемъ отъ Бога на Его народъ. Мѣстоименіе «твой», служащее опредѣленіемъ при словахъ «народъ» и «городъ», дало поводъ нѣкоторымъ древнимъ толкователямъ, подобно Евсевію Кесарійскому [69] и св. Іоанну Златоустому [70], видѣть здѣсь указаніе на отверженіе Богомъ Своего народа: Онъ не хочетъ называть его Своимъ; «на святый городъ твой» значитъ, по Евсевію,—«на городъ, считаемый тобою святымъ». Какъ на параллельное мѣсто, при такомъ пониманіи, указываютъ на Исх. 32, 7., гдѣ Господь говоритъ Моисею: *иди скоро, сниди отсюду* (съ Синая), *беззаконноваша бо людіе твои, ихже извелъ еси изъ земли египетскія.* Говорятъ, что «твой» въ началѣ откровенія Даніилу употребляется для того, чтобы показать неправильность употребленія «Твой» въ его молитвѣ: не Мой, какъ бы говоритъ Господь, а твой народъ. Но такое тол-

---

[68] Hengstenberg S. 413.

[69] «Καὶ οὐκέτι γε αὐτοὺς ἐν τούτοις Θεοῦ λαὸν προσαγορεύει, ἀλλὰ τῷ Δανιὴλ φησι, λαόν σου. Ὥσπερ γὰρ ἀσεβήσαντά ποτε καὶ εἰδωλολατρήσαντα ἐπὶ τῆς ἐρήμου, οὐκέτι λαὸν ἑαυτοῦ ὁ Θεός, ἀλλὰ τοῦ Μωυσέως προσεῖπε, φήσας· Βάδιζε, καταβηθι· ἡνόμισε γὰρ ὁ λαός σου· τὸν αὐτὸν τρόπον κἀνταῦθα τοῦ περιωρίσθαι κατ' αὐτῶν τὸν δηλοθέντα χρόνον τὸ αἴτιον ἐκδιδάσκει· τοῦτο δ' ἦν τὸ μηκέτι τοῦ Θεοῦ λαὸν αὐτοὺς καταξιοῦσθαι χρηματίζειν. Ἐπιλέγει δὲ, Καὶ ἐπὶ τὴν πόλιν τὴν ἁγίαν· τὸ σοῦ πάλιν ἐξακουόντων ἡμῶν κατὰ κοινοῦ— —ὡς εἰ ἔφασκαι· Τὴν σοὶ νενομισμένην ἁγίαν— —μονονουχὶ καὶ τὴν πόλιν, καὶ τὸν λαὸν, καὶ τὸ ἁγίασμα ἀνάξιον εἶναι τῆς τοῦ Θεοῦ προσηγορίας ἀποφήνας». Εὐαγγελικὴ ἀπόδειξις, βιβλ. η'. M. 22 gr. 600.

[70] «Ἐπὶ τὸν λαόν σου· οὐκ ἔτι ἐπὶ τὸν λαὸν τὸν ἐμὸν, καίτοι ὁ προφήτης ἔλεγεν· Ἐπίφανον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ τὸν λαόν σου· Ἀλλ' ὁ Θεὸς ἀλλοτριοῦται αὐτὸν λοιπὸν διὰ τὸ μέλλον ἔσεσθαι τόλμημα». Λόγοι κατὰ Ἰουδαίων. M. 47 gr. 898.

кованіе невозможно въ виду того, что дальше въ этомъ же стихѣ обѣщаются блага мессіанскаго времени, въ которыхъ будутъ участниками и многіе изъ народа еврейскаго (ср. ст. 27),—слѣдовательно, народъ этотъ еще не отверженъ; городъ называется прямо «святымъ», и предполагать здѣсь что-то въ родѣ ироніи невозможно. Даніиловыми называются и народъ, и городъ просто потому, что они были родные ему не по плоти только, но и по духу, къ нимъ онъ питалъ пламенную любовь, выразившуюся между прочимъ и въ его молитвѣ. Такъ же называется народъ и дальше, Дан. 12, 1., гдѣ уже положительно невозможно допустить какого-либо неблагопріятнаго смысла въ мѣстоименіи «твой».—Изъ того, что городъ названъ здѣсь «святымъ», нѣкоторые [71] выводятъ, что храмъ, дававшій ему право на это названіе, уже существовалъ во время написанія книги пророка Даніила, и что, слѣдовательно, она написана уже послѣ времени Ездры и Нееміи. Но такое заключеніе неосновательно: здѣсь употреблено прежнее, притомъ обычное названіе города, и онъ представляется какъ бы уже построеннымъ, потому что, какъ увидимъ далѣе, самое исполненіе сообщаемаго откровенія начнется со времени его построенія.

Только ли еврейскій народъ и городъ Іерусалимъ будутъ пользоваться тѣми благами, которыя обѣщаны далѣе? Хотя само откровеніе о седьминахъ ничего не говоритъ о другихъ народахъ, но невозможно предположить, что здѣсь разумѣется только и исключительно еврейскій народъ. Изъ другихъ пророчествъ извѣстно, что и другіе народы будутъ участниками спасенія, совершающагося въ Іудеѣ (см., напр., Ис. 2, 3. 19, 23—25. 49, 6 и мн. др.); а изъ дальнѣйшихъ словъ откровенія о седьминахъ будетъ видно, что народъ еврейскій будетъ даже отверженъ Богомъ. Поэтому, хотя въ 24 стихѣ буквально говорится только объ одномъ народѣ еврейскомъ, но общій смыслъ какъ всѣхъ ветхозавѣтныхъ пророчествъ, такъ и откровенія о седьминахъ требуетъ признать, что блага, о которыхъ говоритъ 24-й

---

[71] Напр., Lengerke, S. 433.

стихъ, назначаются для всѣхъ народовъ, для всего міра. Говорится же здѣсь только о еврейскомъ народѣ потому, что онъ до сихъ поръ былъ носителемъ царства Божія на землѣ и первымъ наслѣдникомъ спасенія; и только въ концѣ откровенія, послѣ указанія на великое преступленіе народа еврейскаго, Богъ сообщаетъ Даніилу, что народъ этотъ будетъ отверженъ. Тогда, послѣ такого указанія, эта вѣсть не могла уже казаться Даніилу слишкомъ ужасною, и наказаніе—незаслуженнымъ. Теперь же, пока эта вѣсть не сообщена, говорится только о народѣ еврейскомъ, въ соотвѣтствіе молитвѣ Даніила, гдѣ онъ проситъ именно за свой народъ.

Далѣе слѣдуетъ въ еврейскомъ текстѣ шесть неопредѣленныхъ наклоненій съ предлогомъ ל и съ дополненіями. Въ переводѣ LXX-ти 5-е еврейское предложеніе переведено дважды, причемъ вторичный переводъ его помѣщенъ на третьемъ мѣстѣ, передъ 4-мъ предложеніемъ. Въ переводѣ Ѳеодотіоновомъ 5-е предложеніе передано только одинъ разъ, но зато дважды переведено 3-е еврейское предложеніе. Такимъ образомъ, въ греческихъ переводахъ 24-го стиха имѣется не 6, а 7 предложеній. Въ старо-славянскомъ переводѣ также 7 предложеній, но здѣсь дважды переводится не 5-е и не 3-е, а 1-е еврейское предложеніе. Въ этомъ (въ двукратной передачѣ 1-го предложенія) старо-славянскій переводъ сходится съ группой греческихъ кодексовъ (Лукіановской), но послѣдніе и 3-е еврейское предложеніе передаютъ дважды, такъ что въ нихъ уже восемь предложеній. Къ нимъ примыкаетъ и ново-славянская библія, въ которой также восемь предложеній. Ясно, что не еврейскій текстъ представляетъ сокращеніе болѣе пространнаго подлинника, а наоборотъ: переводы вносятъ въ текстъ нѣчто лишнее, чего не имѣлось въ подлинникѣ. Дѣлалось это, вѣроятно, въ видахъ объясненія краткихъ положеній 24-го стиха; только въ переводѣ LXX-ти лишнее предложеніе противъ еврейскаго текста объясняется вѣрнѣе ошибкой переводчика.

Давно уже замѣчено, что первыя три предложенія имѣютъ характеръ отрицательный, а послѣднія три — положительный.

Еще по мнѣнію Аполлинарія Лаодикійскаго въ первыхъ говорится о «стѣсненіи грѣховъ и всѣхъ пороковъ, отъ грѣховъ происходящихъ», а въ послѣднихъ—объ «имѣющихъ прійти благахъ» [72]; подобнымъ же образомъ раздѣляетъ эти предложенія и Василій Селевкійскій [73]. Такое дѣленіе шести еврейскихъ предложеній на двѣ части усвоено и нѣкоторыми новѣйшими экзегетами [74], хотя другіе дѣлятъ эти предложенія на три части, по два въ каждой [75]. Первое дѣленіе, какъ увидимъ при толкованіи, сообразнѣе со смысломъ данныхъ предложеній. Но примемъ ли мы то или другое дѣленіе,—стройность еврейскаго текста сохраняется и заставляетъ отдать ему предпочтеніе предъ текстами переводовъ.

Эти шесть предложеній составляютъ, такъ сказать, содержаніе періода семидесяти седьминъ, описываютъ блага, которыя принесетъ съ собою этотъ періодъ. Блага эти суть именно тѣ, которыя обыкновенно въ Ветхомъ Завѣтѣ приписываются мессіанскому времени. Это относится какъ къ каждому изъ нихъ въ отдѣльности, такъ въ особенности ко всей ихъ совокупности. Такимъ образомъ, шесть предложеній 24-го стиха придаютъ откровенію о седьминахъ явно мессіанскій характеръ. Буквальный смыслъ этихъ предложеній и то значеніе ихъ, какое могъ соединять съ ними ветхозавѣтный человѣкъ, весьма просты и не требуютъ обширнаго толкованія; дальнѣйшій разборъ ихъ будетъ касаться и того, какое значеніе соединяется съ обѣщанными здѣсь благами съ точки зрѣнія человѣка новозавѣтнаго, уже воспріявшаго эти блага и познавшаго ихъ смыслъ и значеніе въ полномъ объемѣ.

---

[72] «In quadringentis nonaginta annis peccata et omnia, quae ex peccatis oriuntur vitia comprimenda: post quae ventura sint bona et reconciliandum Deo mundum in adventu Christi filii ejus.» Толкованіе откровенія о седьминахъ, принадлежащее Аполлинарію Лаодикійскому, дословно приводится въ цитованномъ уже комментаріи блаж. Іеронима M. 25 lat. 548.

[73] См. M. 85 gr. 405.

[74] См. напр. Sostmann 105, Lengerke 435, Hävernick 358—359, Keil 284, Wolf 38, Knabenbauer 234—237, van Lennep, 13 etc.

[75] Напр., Maurer, Kranichfeld—vid. Keil S. 284; Hitzig, 154 ff, Zöckler 177—178 etc.

Въ евр. текстѣ предъ глаголами въ неопредѣленномъ наклоненіи стоитъ предлогъ *лэ* «къ, для». Онъ означаетъ здѣсь только цѣль «для», но ни въ какомъ случаѣ не конечный пунктъ «до»; второе значеніе невозможно здѣсь потому, что, какъ увидимъ далѣе (ст. 27), исполненіе обѣщанныхъ благъ не совпадаетъ въ точности съ концомъ періода седминъ, а нѣсколько предваряетъ его. Такъ и переводы: греческіе употребляютъ здѣсь неопредѣленное наклоненіе съ членомъ въ родительномъ падежѣ (LXX безъ члена) для выраженія цѣли, только нѣкоторые кодексы Θеодотіонова перевода имѣютъ ἕως τοῦ, къ нимъ примыкаетъ и старославянскій: «дондеже». Вульгата употребляетъ союзъ ut съ сослагательнымъ наклоненіемъ, ново-слав.: «яко да», русскій синод.: «чтобы» со страдательнымъ оборотомъ. Удобнѣе было бы переводить неопредѣленнымъ наклоненіемъ: смыслъ при этомъ остается тотъ же и сохраняется близость къ подлиннику.

Первыя два предложенія читаются въ слав. переводѣ такимъ образомъ: *яко да обетшаетъ согрѣшеніе и скончается грѣхъ*. Уже замѣчено, что эти два предложенія передаютъ одно евр. предложеніе: לְכַלֹּא חַפָּשַׁע. Переводъ: *яко да* (старо-слав.: *дондеже*) *обетшаетъ согрѣшеніе*, ἕως τοῦ παλαιωθῆναι τὸ παράπτωμα въ нѣкоторыхъ кодексахъ Θеод. перевода, произошелъ изъ неправильнаго чтенія евр. слова *лэкалле*, вмѣсто котораго читали לְבַלֹּא отъ בָּלָה «быть негоднымъ, старѣть». Еврейское неопредѣленное наклоненіе *калле* можно производить двояко: или отъ כָּלָא «заключать, затворять», или отъ כָּלָה «быть исполнену, окончену», такъ какъ нѣкоторыя формы глаголовъ ל"ה, между прочимъ и неопредѣленное наклоненіе, могутъ быть образованы по образцу глаголовъ ל"א [76]. Первое производство предпочитаютъ многіе протестантскіе богословы [77] и думаютъ, что переводъ «заключить грѣхъ» гораздо болѣе соотвѣтствуетъ смыслу дальнѣйшихъ предложеній, чѣмъ: «окончить грѣхъ»,—хотя они не отрицаютъ возможности и послѣдняго перевода. Въ пунктуаціи же לְכַלֹּא они видятъ только произволъ масоретовъ, желавшихъ оттѣнить производство этого слова отъ

[76] См. Евр. Грамматику Гезеніуса, § 75, 17.

[77] Напр., Hävernick 359 ff., Hengstenberg 417—418, Keil 284—285, Wolf 37.

כָּלָה; на самомъ дѣлѣ здѣсь, по ихъ мнѣнію, слѣдуетъ читать לִכְלֹא, такъ какъ כָּלָא въ 3-й формѣ не употребляется. Генгстенбергъ [78] ссылается еще на то, что כָּלָה въ книгѣ Дан. встрѣчается постоянно съ ה, а не съ א: въ 9, 27, 11, 36, 12, 7. Но въ послѣднемъ мѣстѣ стоитъ כִּלּוֹת, могущее получиться и изъ כָּלָא; въ 9, 27 כָּלָה является именемъ существительнымъ, какъ и въ 11, 16. Остается, такимъ образомъ, одинъ случай употребленія כָּלָה съ ה, Дан. 11, 36, и на немъ, конечно, невозможно строить никакихъ заключеній. Далѣе, пунктуація масоретовъ можетъ являться не просто произвольной поправкой ихъ (въ такомъ случаѣ они поставили бы: קרי לכלה), а, напротивъ, истиннымъ чтеніемъ, сохранившимся до нихъ посредствомъ живого преданія. И въ настоящемъ случаѣ это тѣмъ болѣе вѣроятно, что всѣ древніе переводы имѣютъ здѣсь выраженія, соотвѣтствующія производству *лэкалле* отъ כָּלָה. Такъ, LXX и Θеодотіонъ переводятъ: τοῦ συντελεσθῆναι, Акила: τοῦ συντελέσαι (или τελέσαι), Пешито: לְמִשְׁלַם, Вульгата: ut consummetur. И вторичный переводъ этого предложенія, имѣющійся въ нѣкоторыхъ кодексахъ Θеодотіонова перевода: παλαιωθῆναι, косвеннымъ образомъ говоритъ за производство *лэкалле* отъ כָּלָה: переводчикъ не затруднился произвесть לִכְלֹא отъ כָּלָה и, слѣдовательно, перемѣну согласной считалъ совершенно естественною. Да, наконецъ, и многіе кодексы [79] еврейскаго текста имѣютъ здѣсь לכלה. Въ виду этого вѣрнѣе переводить разбираемое предложеніе: «чтобы окончить преступленіе». Русскій синодальный переводъ: «чтобы покрыто было преступленіе» не имѣетъ за себя видимыхъ основаній; значеніе «покрыть» не принадлежитъ ни כָּלָה, ни כָּלָא, а только встрѣчающемуся далѣе כָּמַר.

פֶּשַׁע собственно значитъ: отступленіе отъ Бога и Его заповѣдей, измѣна завѣту съ Нимъ, преступленіе закона Божія. *Лэкалле гаппеша*, такимъ образомъ, значитъ, «чтобы завершить», или «окончить преступленіе». Нѣкоторые древніе толкователи придаютъ этому выраженію тотъ смыслъ, что грѣхи Израиля къ

[78] Hengstenberg S. 419; cf. Keil, S. 284.

[79] 28 кодексовъ (изъ 209-ти) K. и 14 de-R.

концу періода семидесяти седьминъ достигнутъ высшей степени, что и исполнилось въ распятіи Христа (такъ думаютъ Оригенъ [80], Евсевій [81], св. Іоаннъ Златоустъ [82], блаж. Ѳеодоритъ [83], а также Евѳимій Зигабенъ и др.). Но такой смыслъ не соотвѣтствуетъ дальнѣйшимъ обѣтованіямъ, особенно — третьему предложенію, стоящему въ тѣсной связи съ первыми двумя: тамъ говорится объ «искупленіи вины», далѣе даются другія благія обѣтованія, напр., помазаніе Святого святыхъ, приведеніе вѣчной правды и т. под.,—слѣдовательно, и здѣсь мы должны видѣть обѣтованіе блага, а не наказанія. Такой смыслъ не соотвѣтствуетъ и всему характеру откровенія о седьминахъ. «Семьдесятъ седьминъ опредѣлены, конечно, Богомъ. На что или для чего онѣ опредѣлены? Если сказать, что онѣ опредѣлены для того, чтобы совершилось злодѣяніе богоубійства, чтобы грѣхъ дошелъ до высшей степени и этимъ закончился, то такой способъ выраженія и пониманія нельзя назвать правильнымъ и въ догматическомъ отношеніи. Богъ не предназначаетъ, не предопредѣляетъ ни самаго зла, ни времени его совершенія: Онъ только попускаетъ совершиться злу» [84]. Вѣрнѣе понимать выраженіе: «чтобы окончить преступленіе» въ томъ смыслѣ, что при концѣ періода седьминъ грѣхъ будетъ прекращенъ, окончится его могущество и власть надъ

---

[80] «Consummatum est enim peccatum populi, propter quod et a Deo est derelictus. Et illorum quidem peccatum signatum est, credentium autem injustitia est deleta, et post deletionem ejus adducta est in Christo vita aeterna» Series veteris interpretationis commentariorum Origenis in Matthaeum. M. 13 gr. 1658.

[81] Τὸ γὰρ, Πληρώσατε τὸ μέτρον τῶν πατέρων ὑμῶν, εἰρημένον ὑπὸ τοῦ Σωτῆρος ἡμῶν πρὸς τοὺς ἐκ περιτομῆς, καὶ διὰ τούτων οἶμαι παρίστασθαι.— —Ἕως μὲν γὰρ οὐκ ἐπληροῦντο αὐτῶν αἱ ἁμαρτίαι, ἡ τοῦ Θεοῦ ἀνοχὴ καὶ μακροθυμία ἔφερεν αὐτούς, εἰς ἐπιστροφὴν ἑκάστοτε προσκαλουμένη διὰ τῶν προφητῶν. Ἐπεὶ δὲ κατὰ τὴν Σωτηρίαν φωνὴν ἐπλήρωσαν τὸ μέτρον τῶν πατέρων αὐτῶν, οὕτω δ' ἂν πάντα συναχθέντα κατὰ τὸ αὐτὸ τὸν ἔσχατον αὐτοῖς κατειργάσατο ὄλεθρον. M. 22 gr. 601.

[82] Τί ἐστιν· Ἕως τοῦ συντελεσθῆναι ἁμαρτίαν; Πολλὰ, φησίν, ἁμαρτάνουσιν· ἀλλ. ἡ κορωνὶς τῶν κακῶν τότε ἔσται, ὅταν τὸν Δεσπότην αὐτῶν ἀνέλωσι· [ср. Матѳ. 23, 32.]— — Τί ἐστι σφραγίσαι; Ὥστε μηδὲν ὑπολελεῖφθαι λοιπόν. M. 47 gr. 898.

[83] Ἕως τοῦ παλαιωθῆναι τὸ παράπτωμα καὶ τοῦ τελεσθῆναι ἁμαρτίαν· ἀντὶ τοῦ, ἕως ἂν αὐξηθῇ αὐτῶν τὸ δυσσεβὲς τόλμημα, καὶ τέλος λάβῃ ἡ ἁμαρτία. Λέγει δὲ ἁμαρτίαν τελειουμένην καὶ παράπτωμα παλαιούμενον, εἴτ' οὖν αὐξανόμενον, καὶ εἰς ἔσχατον ἀφικνούμενον, τὸν κατὰ τοῦ Κυρίου τολμηθέντα σταυρόν. M. 81 gr. 1472.

[84] Проф. А. Д. Бѣляевъ, Бог. В. 1894 іюнь, 388.

людьми [85]. Такъ какъ *пеша* значитъ: «отступленіе отъ заповѣдей Божіихъ, преступленіе», то выраженіе это въ высшей степени приложимо къ искупленію Христомъ первороднаго грѣха, который состоялъ въ преступленіи человѣкомъ Божіей заповѣди, отступленіи отъ Бога. Изъ древнихъ писателей такого мнѣнія держится Василій Селевкійскій [86].—Это искупленіе первороднаго грѣха и поставляется во главѣ Божіихъ обѣтованій, какъ главное и существенное дѣйствіе Мессіи, имѣющаго явиться при концѣ семидесяти седьминъ.

Далѣе слѣдуетъ: *и запечатаютъ* (старо-слав.: *знаменаютъ*) *грѣси*, по-еврейски: וְלַחְתֹּם חַטָּאוֹת. Таково чтеніе текста; но въ Кэри масореты предлагаютъ здѣсь двѣ поправки: во-первыхъ, вмѣсто וְלַחְתֹּם «и чтобы запечатать» (отъ חָתַם «печатать») они предлагаютъ читать וּלְהָתֵם «и чтобы закончить» (отъ תָּמַם «быть готовымъ»); во-вторыхъ, вмѣсто множественнаго числа חַטָּאוֹת «грѣхи», ставятъ единственное число חַטָּאת «грѣхъ». [87] Поправки эти совершенно излишни, такъ какъ и чтеніе текста даетъ, какъ увидимъ, весьма опредѣленный смыслъ. Изъ древнихъ переводовъ рѣшительно говоритъ въ пользу чтенія текста переводъ Ѳеодотіонова: καὶ τοῦ σφραγίσαι ἁμαρτίας. Другіе переводы передаютъ евр. слово *лахтом* значеніемъ «окончить» (Акила: καὶ τοῦ τελειῶσαι ἁμαρτίαν, сирскій: וְלַמְגַמַר חַטָהָא «и чтобы завершить грѣхи», Вульгата: et finem accipiat peccatum); однако это не значитъ, что они читали не *лахтом*, а *лѣгатем:* они только разрѣшали образное выраженіе въ отвлеченное, толкуя «печатать» въ смыслѣ

[85] Въ такомъ же приблизительно значеніи употреблено выраженіе συντελεσθῆναι у св. Ипполита Римскаго, хотя его толкованіе и отличается отъ предложеннаго: «ὅσοι γὰρ ἕως τέλους ἠπείθησαν αὐτῷ, τούτων οὖν οὐ συντετελέσθησαν αἱ ἁμαρτίαι, ἀλλ' ἐσφραγίσθησαν εἰς κρίσιν τηρούμεναι· ὅσοι δὲ μέλλουσι πιστεύειν αὐτῷ ὡς δυναμένῳ ἀφιέναι ἁμαρτίας, τούτων ἀπηλείφοντο». Τῆς τοῦ Δανιὴλ ὁράσεως καὶ τοῦ Ναβουχοδόνοσορ ἐπιδύξεις, XVII. M. 10 gr. 653.

[86] Τὴν συντελουμένην ἁμαρτίαν, τὴν ἀπὸ τοῦ Ἀδὰμ ἕως τοῦ Σωτῆρος βασιλεύσασαν ἐφ' ἡμᾶς λέγει, ἣν οὐκ ἴσχυσεν ὁ νόμος περιᾶραι· ἀλλ' αὐτὸς ὁ Σωτὴρ ταύτης ἡμᾶς ἠλευθέρωσε διὰ τοῦ ἁγίου ὑπὲρ ἡμῶν μώλωπος (Ис. 53, 5. 1 Петр. 2, 24. Рим. 8, 3.). Ὅτι δὲ καὶ τὰς λοιπὰς ἡμῶν ἀνομίας καὶ ἀσεβείας, ἃς ἐποιήσαμεν μετὰ τὴν κατακρισιν τὴν διὰ τοῦ Ἀδὰμ, ἀπαλεῖψαι ἔμελλε διὰ τοῦ λουτροῦ τῆς παλιγγενεσίας— — λέγει οὕτως ὁ ἄγγελος· Καὶ τοῦ σφρ. ἁμ., κτλ. M. 85 gr. 405.

[87] ולהתם въ 38 кодд. K. и въ 7 de-R.; חטאת въ 82 кодд. K.

«закончить». Это неопровержимо доказывается тѣмъ, что названные переводы и въ 5-мъ предложеніи, гдѣ несомнѣнно стоитъ глаголъ *хатам,* «печатать», передаютъ его значеніемъ «совершить»; и блаж. Θеодоритъ толкуетъ послѣднее предложеніе такъ: «и запечатать видѣніе и пророка—это значитъ: положить конецъ всѣмъ пророчествамъ» [88]. Переводъ LXX не можетъ оказать намъ помощи при опредѣленіи подлиннаго чтенія разбираемаго мѣста, такъ какъ до сихъ поръ не объяснено происхожденіе его чтенія: καὶ τὰς ἀδικίας σπανίσαι, «и чтобы истощить неправды». Думали, на основаніи цитатъ у св. Аѳанасія и блаж. Θеодорита, что чтеніе σπανίσαι появилось ошибочно вмѣсто σφραγίσαι; но Аѳанасій и Θеодоритъ пользовались Θеодотіоновымъ переводомъ, а не LXX, почему нѣтъ основаній заподозрѣвать чтеніе существующихъ кодексовъ LXX [89]. Вѣроятнѣе, что LXX даютъ здѣсь свободный переводъ «истощить неправды», т. е. прекратить ихъ, уничтожить; такой переводъ могъ произойти какъ изъ чтенія текста: «запечатать грѣхи», такъ и Кэри: «закончить грѣхи». Такимъ образомъ, чтеніе евр. текста (Кэтиб) подтверждается переводомъ Θеодотіона и не подрывается другими переводами; поэтому его и слѣдуетъ признать подлиннымъ чтеніемъ. Предполагаютъ даже [90] и, повидимому, не безъ основанія, что самое Кэри произошло подъ вліяніемъ свободныхъ переводовъ слова *лахтом* (напр., перевода Акилы): по этимъ переводамъ масореты и заключили о существованіи другого чтенія, тѣмъ болѣе, что слово *гатем* «закончить» встрѣчается и въ Дан. 8, 23 и также въ приложеніи ко грѣхамъ. Послѣднее обстоятельство приводится защитниками Кэри въ пользу того, что и въ 9, 24 должно читать не *вэлахтом,* и *улэгатем.* Однако извѣстный оборотъ, употребленный въ одномъ мѣстѣ, не даетъ ручательства въ томъ, что онъ же будетъ употребленъ и въ другомъ. Второе возраженіе защитниковъ Кэри, что глаголъ *хатам* не могъ быть употребленъ дважды почти

---

[88] M. 81 gr. 1472.

[89] Hahn, Δανιὴλ κατὰ τοὺς Ο′, 65; Field, Origenis hexaplorum... II, 3 p. 926, adn. 22; cf. v. Lennep, 15.

[90] Hengstenberg, 421.

рядомъ, притомъ съ различнымъ значеніемъ,—это возраженіе также легко опровергнуть. Повтореніе однихъ и тѣхъ же словъ принадлежитъ къ особенностямъ книги Дан.; оно особенно часто замѣчается въ 11 главѣ, но и въ откровеніи о седьминахъ по трижды повторяются формы глаголовъ *харац* и *шамем*. А что *хатам* употребляется дважды съ различнымъ значеніемъ, это зависитъ, какъ увидимъ, отъ различія дополненій, стоящихъ при этомъ глаголѣ.

Что касается второй поправки масоретовъ, *хаттат* вмѣсто *хаттаот*, то и она, какъ мы видѣли, не подтверждается древними переводами (кромѣ Акилы и латинскаго). Она сдѣлана, вѣроятно, въ соотвѣтствіе единственному числу словъ פֶּשַׁע и עָוֹן въ сосѣднихъ предложеніяхъ; между тѣмъ множественное число *хаттаот* здѣсь гораздо умѣстнѣе, чѣмъ единственное: *хаттат* есть частное, единичное грѣховное дѣйствіе, прегрѣшеніе, проступокъ [91], а *пеша* и *авон* имѣютъ болѣе общее значеніе, какъ отступленіе отъ закона Божія и нечестіе. Поэтому и у пр. Михея 1, 5 рядомъ стоятъ единственное число *пеша* и множественное *хаттаот* [92].

Итакъ, *вэлахтом хаттаот* значитъ: «и чтобы запечатать грѣхи». Образъ «запечатанія» употребляется въ Св. Писаніи, во-первыхъ, для выраженія прекращенія свободы дѣйствія извѣстнаго лица, ср. Іов. 37, 7: *въ руцѣ всякаго человѣка знаменаетъ* (т. е. Богъ ставитъ границы силѣ человѣка), *да познаетъ всякъ человѣкъ свою немощь;* особенно выясняется это значеніе изъ Апок. 20, 2. 3, гдѣ о *древнемъ зміи* говорится, что Богъ *связа̀ и на тысящу лѣтъ, и въ бездну вверже его, и заключи его, и запечатлѣ надъ нимъ, да не прелститъ ктому языки.* Сюда же относится и то значеніе «запечатанія», по которому «запечатать» значитъ ограничить свободу пользованія извѣстнымъ предметомъ: скрывать или охранять предметъ. Такъ, запечатать книги или словеса значитъ у пр. Даніила скрыть ихъ 12, 4. 9; въ книгѣ Іов. 9, 7 говорится: *глаголяй солнцу и не восходитъ, звѣзды же печатствуетъ* (т. е. закрываетъ); Ис. 8, 16: *тогда явлени будутъ печатлѣю-*

[91] «Fehltritt», см. Gesenius, 258.

[92] Ср. Hengstenberg 422.

щіи законъ, еже не учитися; 29, 11: *и будутъ вамъ вся сія словеса, аки словеса книги запечатлѣнныя сея, юже аще дадутъ человѣку вѣдущему писанія, глаголюще: прочти сіе, и речетъ: не могу прочести, запечатлѣнна бо;* ср. Апок. 10, 4. 22, 10. Значеніе охраненія въ образѣ запечатанія видно, напр., изъ Пѣсн. П. 4 12: *вертоградъ заключенъ сестра моя невѣста, вертоградъ заключенъ, источникъ запечатлѣнъ;* отчасти изъ Дан. 6, 17, гдѣ говорится, что Дарій запечаталъ Даніила во рвѣ перстнемъ своимъ и своихъ вельможъ; Мѳ. 27, 66: *они же шедше утвердиша гробъ, знаменавше камень съ кустодіею.* Во-вторыхъ, образъ запечатанія употребляется для выраженія присвоенія предмета, признанія его своимъ: въ Іоан. 6, 27 о Сынѣ Человѣческомъ говорится, что Его *Отецъ знамена Богъ;* вѣрующіе запечатлѣваются Духомъ Святымъ: Еф. 1, 13. 4, 30. 2 Кор. 1, 22; при концѣ міра вѣрные запечатлѣваются печатію Бога живого, Апок. 7, 2—4. 9, 4, а невѣрные—печатью антихриста, Апок. 13, 16. Въ Ветхомъ Завѣтѣ это значеніе «запечатанія» употребительно особенно въ отношеніи къ царскимъ и др. указамъ, которые утверждаются печатями: 3 Цар. 21, 8. Есѳ. 3, 12 (по евр. т.), 8, 10. ср. Неем. 9, 38. 10, 1. Кромѣ этихъ двухъ основныхъ значеній образа «запечатанія», нѣкоторые хотятъ видѣть въ немъ еще значеніе «окончанія», основываясь на томъ, что печать въ письмахъ или указахъ прикладывалась обычно въ концѣ и сама означала какъ бы конецъ письма, что евреи эпилогъ называютъ חתימה, и что арабскій глаголъ *chatama* имѣетъ именно такое значеніе [93]. Авторы древнихъ переводовъ (Акилы, Пешито, Вульгаты) также понимали слово «запечатать» въ смыслѣ «окончить»; нѣкоторые толкователи свято-отеческаго времени объясняли въ этомъ смыслѣ переводъ ѳеодотіоновъ: τοῦ σφραγίσαι ἁμαρτίας (Полихроній [94], Василій Селевкійскій, ср. св. І. Златоустъ и блаж. ѳеодоритъ [95]). Но въ Св. Писаніи изъ множества случаевъ употреб-

---

[93] Sostmann, p. 131 и др.

[94] Τοῦ σφρ. ἁμ. ἀντὶ τοῦ· φέρει αὐτοὺς ἕως εἰς ἔσχατον ἁμαρτίας ἐλάσουσι καὶ ἀνίατον σχῶσι τὴν νόσον. См. отрывки Ἐκ τῆς Πολυχρονίου εἰς τὸν Δανιὴλ ἑρμηνείας въ изданіи A. Majus, Scriptorum veterum nova collectio t. I, Romae 1825, p. 16.

[95] См. примѣчанія 86, 82, 99.

ленія глагола *хатам* нельзя найти ни одного, гдѣ бы онъ могъ быть переведенъ значеніемъ «окончить». Приводятъ въ защиту этого значенія слова пророка Іезекіиля 28, 12., гдѣ царь Тирскій называется חוֹתֵם תָּכְנִית, что будто бы значитъ: «совершающій (запечатлѣвающій) прекрасное» (слав.: *печать уподобленія);* но ссылаться на эти слова совершенно невозможно, такъ какъ они сами еще недостаточно истолкованы, и нѣкоторые ученые [96] прямо отказываются понять ихъ. Въ древнихъ же переводахъ и толкованіяхъ второго предложенія, которые понимаютъ «печатаніе» также въ смыслѣ «завершенія, окончанія», всего естественнѣе видѣть подражаніе предшествующему предложенію или желаніе и здѣсь переводить חָתַם тѣмъ же значеніемъ, какъ и въ 5-мъ предложеніи, гдѣ «утвержденіе» пророчествъ равносильно ихъ «исполненію». Но «утвержденіе», какъ признаніе извѣстнаго предмета своимъ и засвидѣтельствованіе этого признанія, не можетъ быть примѣнено ко «грѣхамъ». Поэтому здѣсь должно остановиться на значеніи «запечатанія», какъ прекращенія свободы дѣйствія; «запечатать грѣхи» значитъ—прекратить ихъ власть надъ людьми, обуздать ихъ силу. Образъ этотъ замѣчательно подходитъ къ тому «удерживающему» (2 Θесс. 2, 6. 7), къ той благодати, которая принесена на землю Христомъ. Съ пришествіемъ Христа, грѣхъ уже потерялъ свою прежнюю власть надъ человѣкомъ; уничтоженъ, «оконченъ» первородный грѣхъ (см. предшествующее предложеніе), а съ нимъ вмѣстѣ обузданы и всѣ грѣховныя влеченія, присущія человѣку, «запечатаны грѣхи», ср. 1 Іоан. 3, 9. Рим. гл. 6 и др. Запечатаны, а не уничтожены, какъ первородный грѣхъ,—такъ какъ человѣку дана только благодать, помогающая ему бороться противъ своихъ грѣховныхъ влеченій, но въ его волѣ остается воспользоваться или не воспользоваться этою благодатью. Такое состояніе искупленнаго человѣка предносилось еще и ветхозавѣтному человѣку, но какъ невозможное для него въ то время (Іов. 14, 17: חָתַם בִּצְרוֹר פִּשְׁעִי «запечатанъ [былъ бы] въ свиткѣ грѣхъ мой») и принадлежащее только времени

[96] Cornill, Das B. des Pr. Ezechiel, 359—360; cf. Smend, Der Pr. Ezechiel, Leipzig 1880, S. 220.

мессіанскому, когда Богъ *ввержетъ въ глубины морскія вся грѣхи наша* (Мих. 7, 19).

Слѣдующія два предложенія по славянской библіи: *и загладятся неправды, и очистятся беззаконія*, по Ѳеодотіону: καὶ ἀπαλεῖψαι τὰς ἀδικίας (въ большинствѣ кодексовъ: ἀνομίας), καὶ τοῦ ἐξιλάσασθαι ἀδικίας, — составляютъ двоякій переводъ одного (третьяго) евр. предложенія: וְיֻכַּפֶּר עָוֹן; въ старо-слав. переводѣ здѣсь также одно только предложеніе: *и очьистятся неправды*. При толкованіи этого предложенія мы уже не встрѣчаемъ такого разнообразія мнѣній о его смыслѣ, какое видѣли относительно предыдущихъ двухъ предложеній. Причина этого лежитъ въ томъ, что глаголъ כִּפֶּר есть извѣстный литургическій терминъ, очень часто употребляющійся въ Ветхомъ Завѣтѣ и имѣющій вполнѣ опредѣленное значеніе. Глаголъ *кафар* буквально значитъ «покрывать», затѣмъ, по отношенію ко грѣхамъ, особенно въ 3-й формѣ כִּפֶּר— очищать ихъ посредствомъ жертвы, искуплять [97]. *Авон* значитъ собственно: «извращенность, грѣховность, нечестіе», а затѣмъ часто—виновность за грѣхи [98]. Такимъ образомъ *лэкаппер авон* значитъ: «чтобы искупить вину» и является какъ бы объединяющимъ въ себѣ два предыдущія предложенія: тамъ говорилось о прекращеніи Христомъ первороднаго грѣха и обузданіи благодатію Его всѣхъ отдѣльныхъ грѣховныхъ влеченій человѣка, тамъ говорилось о результатахъ искупленія, а здѣсь—о самомъ искупленіи, лежащемъ въ основѣ литургическаго дѣйствія—жертвы,— отъ котораго здѣсь взятъ терминъ. Въ этомъ смыслѣ толкуютъ третье предложеніе и всѣ отцы и учители Церкви. Укажемъ для примѣра на блаж. Ѳеодорита [99], Полихронія [100] и Василія Селевкійскаго [101]. Переводъ Акилы и вторичный Ѳеодотіона имѣютъ

[97] См. Gesenius, S. 397.

[98] Ibid., S. 605—606.

[99] Ἀπέλειψε μὲν γὰρ τὰς ἀνομίας τῶν εἰς αὐτὸν πεπιστευκότων, ἐξαλείψας τὸ καθ' ἡμῶν χειρόγραφον, ἣ φησιν ὁ μακάριος Παῦλος. Ἐσφράγισε δὲ τὰς ἁμαρτίας, παύσας μὲν τὴν κατὰ νόμον πολιτείαν, τὴν δὲ τοῦ Πνεύματος δωρησάμενος χάριν. M. 81 gr. 1472.

[100] Ἀπαλεῖψαι τὰς ἀνομίας· ὃ δὴ παρέσχεν ἡμῖν διὰ τῆς τοῦ λουτροῦ παλιγγενεσίας, καὶ δικαιοσύνην ἡμῖν παρέχει. Maji t. I, p. 16.

[101] См. прим. 86.

здѣсь греческій терминъ, употребляющійся для обозначенія искупленія: καὶ τοῦ «ἐξιλάσασθαι» ἀνομίαν (крышка Ковчега завѣта, на которую первосвященникъ кропилъ кровію жертвы за грѣхъ въ день очищенія, и которая поэтому называлась כַּפֹּרֶת, по-гречески называется ἱλαστήριον, ср. Рим. 3, 25.); подобно передаетъ и Пешито: לשׁוּבקָן עַוְלָא; LXX переводятъ буквально: καὶ ἀπαλεῖψαι τὰς ἀδικίας, «и стереть», или «изгладить неправды»,—заимствуется значеніе отъ арамейскаго כְּפַר, כַּפֵּר, каковое значеніе имѣетъ и еврейскій глаголъ *кафар* въ 4-ой формѣ [102]; такъ и Вульгата: et deleatur iniquitas, и Θеодотіонъ: καὶ ἀπαλεῖψαι τὰς ἀδικίας.

Протестанскіе богословы придаютъ тремъ только что разобраннымъ предложеніямъ смыслъ, соотвѣтствующій лютеранской теоріи оправданія. Именно, переводя эти предложенія: «чтобы заключить грѣхъ, и чтобы запечатать грѣхи, и чтобы покрыть преступленіе», они видятъ въ нихъ подтвержденіе того мнѣнія, что грѣхъ не совершенно уничтожается въ человѣкѣ искупленіемъ, а только закрывается, такъ сказать, отъ очей Божіихъ, не вмѣняется человѣку искупленному, хотя и остается въ немъ. Ихъ переводъ разбираемыхъ предложеній, повидимому, очень благопріятствуетъ такой теоріи, почему они и настаиваютъ на немъ; особенно горячимъ защитникомъ такого перевода является Генгстенбергъ [103]. На самомъ дѣлѣ едва ли можно выводить такую теорію даже изъ ихъ перевода. Вѣдь выраженія, здѣсь употребленныя, суть выраженія образныя, не могущія вполнѣ соотвѣтствовать передаваемой посредствомъ ихъ мысли, и если «заключеніе, запечатаніе и покрытіе» предполагаютъ предметъ заключаемый и проч. остающимся, то отсюда еще не слѣдуетъ, что то же предполагается здѣсь и въ отношеніи грѣха [104]. Съ другой стороны, здѣсь берутся выраженія еврейскаго богослужебнаго языка, какъ наиболѣе понятныя ветхозавѣтному человѣку; а въ Ветхомъ Завѣтѣ грѣхъ, дѣйствительно, не уничтожался богослужебными дѣйствіями, а только «покрывался» при

[102] Gesenius, S. 398.
[103] Hengstenberg S. 417 ff.
[104] Ср. Rohling, 260.

вѣрѣ грѣшника въ будущее искупленіе. Но отсюда не слѣдуетъ, что и въ примѣненіи къ Новому Завѣту эти выраженія имѣютъ тотъ же смыслъ: Ветхій Завѣтъ былъ только тѣнью Новаго (Евр. 10, 1.), а тѣнь не даетъ всѣхъ очертаній предмета. Протестанты ссылаются на то, что при ихъ переводѣ получается замѣчательная стройность мысли: грѣхъ сначала затворяется, потомъ запечатывается и наконецъ покрывается. Но эта стройность получается, какъ мы видѣли, и въ принятомъ нами переводѣ разбираемыхъ предложеній; искать же въ откровеніи вполнѣ точной послѣдовательности понятій и терминовъ нѣтъ основаній: въ немъ вся сила не въ выраженіяхъ, а въ общей идеѣ.

4-е предложеніе: *и приведется правда вѣчная,* по-еврейски читается: וּלְהָבִיא צֶדֶק עֹלָמִים «и чтобы привести правду вѣчную». Такъ и всѣ переводы, кромѣ LXX-ти, который, во-первыхъ, предъ этимъ предложеніемъ имѣетъ вставку: καὶ διανοηθῆναι τὸ ὅραμα, а, во-вторыхъ, и самое 4-е предложеніе передаетъ такъ: καὶ δοθῆναι δικαιοσύνην αἰώνιον; послѣднія слова, несомнѣнно, соотвѣтствуютъ 4-му евр. предложенію, передавая его глаголъ не буквально; что же касается вставки, то одни считаютъ ее вторичнымъ переводомъ 5-го евр. предложенія [105], другіе думаютъ, что эта вставка перенесена сюда изъ 23 стиха и соотвѣтствуетъ еврейскимъ словамъ: וְהָבֵן בַּמַּרְאֶה «разумѣй въ явленіи» [106] Вѣрнѣе первое предположеніе: διανοηθῆναι τὸ ὅραμα «обдумать» или «понять видѣніе» близко по мѣсту, по формѣ и отчасти по смыслу къ словамъ: «и запечатать видѣніе и пророка».

Многіе отцы и учители Церкви прямо высказываются въ томъ смыслѣ, что «вѣчная правда» есть Христосъ, и ссылаются на 1 Кор. 1, 30., гдѣ Онъ названъ, между прочимъ, δικαιοσύνη (Евсевій Кесарійскій [107],

---

[105] Fraidl, 6.

[106] Hahn, 65; cf. v. Lennep 16.

[107] Ἔστι μὲν οὖν αὐτὸς ὁ τοῦ Θεοῦ λόγος αἰώνιος δικαιοσύνη, ὃς ἐγενήθη σοφία ἡμῖν ἀπὸ Θεοῦ, δικαιοσύνη τε καὶ ἁγιασμὸς, καὶ ἀπολύτρωσις, κατὰ τὸν ἀπόστολον. Πλὴν ἀλλὰ σὺν τῇ ἑαυτοῦ παρουσίᾳ καὶ πᾶσιν ἀνθρώποις προὐξένησε δικαιοσύνην— —. Приводятся цитаты: Рим. 3 29. 30. Дѣ. 10, 34. 35. Рим. 1, 16. 17. и др. M. 22 gr. 604.

блаж. Θеодоритъ [108], ср. Аѳанасій Великій [109], Ефремъ Сиринъ [110] и др.). Это толкованіе можетъ находить себѣ подтвержденіе въ томъ, что въ 1 Кор. 1, 30, рядомъ съ наименованіемъ Христа δικαιοσύνη къ Нему же относится и другое наименованіе: σοφία ἀπὸ τοῦ Θεοῦ, а послѣднее въ Ветхомъ Завѣтѣ часто прямо указываетъ на Лице Христово (особенно въ книгѣ Притчей, Екклезіастъ и др.). Но проще и естественнѣе толкованіе другихъ отцовъ и древнихъ писателей, которые подъ «вѣчной правдой» разумѣютъ не Самого Христа, а оправданіе, принесенное Имъ людямъ (Св. Іоаннъ Златоустъ [111], Полихроній [112], Василій Селевкійскій [113] и др.). Вѣчная правда есть то положительное, что привходитъ на мѣсто искупленнаго грѣха, есть состояніе человѣка «оправданнаго», состояніе подъ благодатію, свободное отъ грѣха, жизнь по законамъ и заповѣдямъ Божіимъ, требуемая правдою Божіею (1 Петр. 2, 24. Рим. 5, 1. 9. 18—21. 6, 18—20. и др.). Таковъ новозавѣтный смыслъ «правды», δικαιοσύνη; таковъ же смыслъ и ветхозавѣтной *цедек* въ приложеніи къ мессіанскому времени (ср. Пс. 84, 11. 12. 14. Ис. 53, 11. Іер. 23, 6. 33, 16. Мал. 4, 2.). «Вѣчною» правда называется по вѣчности своего Начала и Источника—Бога, въ Которомъ она пребываетъ отъ вѣка (такъ и сирскій переводъ: «правда, которая отъ вѣка»), и потому, что правда, водворившаяся на землѣ, будетъ пребывать такъ же вѣчно, какъ и царствіе Божіе,

---

[108] Δικαιοσύνη δὲ αἰώνιος κυρίως ἐστὶν αὐτὸς ὁ Δεσπότης Χριστός. Περὶ γὰρ αὐτοῦ φησιν ὁ μακάριος Παῦλος—(1 Кор. 1, 30. Рим. 1, 17.).— —Ἐπειδὴ δὲ φιλοτιμίᾳ χρησάμενος καὶ τὴν πρόξενον τῆς αἰωνίου ζωῆς δικαιοσύνην τοῖς εἰς αὐτὸν πεπιστευκόσιν ἐχαρίσατο— —ἀναγκαίως εἶπεν ὁ ἅγιος Γαβριήλ· Καὶ τοῦ ἁγ. δ. αἰώνιον. M. 81 gr. 1472.

[109] «Ἐλθόντος γὰρ τοῦ σημαινομένου, τίς ἔτι χρεία τῶν σημαινόντων ἦν; Καὶ παρούσης τῆς ἀληθείας, τίς ἔτι χρεία τῆς σκιᾶς ἦν; Διὰ τοῦτο γὰρ καὶ προεφήτευον ἕως ἂν ἔλθῃ ἡ αὐτοδικαιοσύνη καὶ ὁ λυτρούμενος τὰς ἁπάντων ἁμαρτίας». Λόγος περὶ τῆς ἐνανθρωπήσεως τοῦ Λόγου καὶ τῆς διὰ σώματος πρὸς ἡμᾶς ἐπιφανείας αὐτοῦ. M. 25 gr. 165.

[110] «И приведется правда вѣчная,—придетъ Христосъ, оправдывающій грѣшниковъ, отъ дней вѣка предвозвѣщенный пророками». Op. omnia t. II. p. 221, ср. Творенія ч. 8 стр. 85.

[111] Καὶ τοῦ ἁγ. δ. αἰ. Ποία δὲ δικαιοσύνη αἰώνιος, ἀλλ' ἡ ἡ παρὰ τοῦ Χριστοῦ δοθεῖσα; M. 47 gr. 898.

[112] См. примѣчаніе 100.

[113] Καὶ τοῦ ἀναγαγεῖν δικαιοσύνην αἰώνιον, οὐκ ἄλλην οὖσαν τοῦ Σωτῆρος —. (Пс. 84, 11. 12.). M. 85 gr. 405.

которому она принадлежитъ (Матѳ. 6, 33. ср. 16, 18. и др.; Евр. 9, 12. ср. Ис. 45, 17. 51, 6. 8. и др.).

Сами евреи, по свидѣтельству блаж. Іеронима, разумѣли подъ «вѣчной правдой» Христа [114]; къ Нему же, повидимому, относятъ эти слова Раши [115] и раббн Варахія [116], ожидая Его, конечно, еще въ будущемъ. Но Саадіа Гаонъ разумѣетъ здѣсь храмъ, называемый «вѣчнымъ» въ 3 Цар. 8, 13., и во множественномъ числѣ *олямим* видитъ указаніе на три храма; Ибн-Езра разумѣетъ здѣсь или праведность суда Божія, или—паденіе правды (на основаніи употребленія глагола בּוֹא о солнцѣ въ значеніи «заходить»); Абарбанель—приведеніе всѣхъ народовъ къ истинной вѣрѣ. Уже изъ такого разногласія еврейскихъ ученыхъ, изъ крайней натянутости и произвольности ихъ толкованій, можно видѣть, что они сбиты здѣсь съ почвы.

И запечатается (старо-слав.: *знаменается*) *видѣніе и пророкъ*, Ѳеодотіонъ: καὶ τοῦ σφραγίσαι ὅρασιν καὶ προφήτην: этотъ переводъ вполнѣ соотвѣтствуетъ евр. тексту: וְלַחְתֹּם חָזוֹן וְנָבִיא «и чтобы запечатать видѣніе и пророка». Но другіе переводы отступаютъ уже отъ буквы текста, переводя болѣе свободно. Такъ, Акила: καὶ τοῦ τελέσαι ὁραματισμὸν καὶ προφήτην, гдѣ τελέσαι является, конечно, не указаніемъ на чтеніе въ текстѣ ולהתם [117], а толкованіемъ употребленнаго въ немъ образнаго выраженія; Пешито: «и чтобы исполнить видѣніе и пророка»; Вульгата: et impleatur visio et prophetia (по нѣкоторымъ кодексамъ: prophetae). LXX переводятъ

---

[114] Hebraei quid de hoc loco sentiant, brevi sermone pertringam (al: perstrinxi), fidem dictorum his a quibus dicta sunt derelinquens. Dicamus igitur παραφραστικῶς, ut sensus manifestior fiat.——Et non solum hoc fiet in his septuaginta hebdomadibus, ut aedificetur civitas et templum instauretur, sed nascatur Christus, id est, justitia sempiterna. M. 25 lat. 551.

[115] Толкованія Раши, Саадіи Гаона, Ибн-Езры и Абарбанеля см. у Fraidl'я.

[116] Vid. Sostmann, p. 121.

[117] Изъ кодексовъ, разночтенія которыхъ приведены у Кенникотта, ни въ одномъ нѣтъ такого чтенія; въ одномъ или, можетъ быть, въ двухъ вмѣсто ונבוא стоитъ только נבוא; этому замѣчательнымъ образомъ соотвѣтствуетъ древне-слав. переводъ, который также не имѣетъ союза: «и знаменается видѣніе пророкъ». Но какъ еврейское, такъ и древне-слав. чтенія, очевидно, явились по ошибкѣ писца и не могутъ подтверждать перевода Г. П. Павскаго и др.: «и положится печать на пророково видѣніе».

это предложеніе дважды и сначала (между 3-мъ и 4-мъ предложеніями) не сполна: καὶ διανοηθῆναι τὸ ὅραμα, а затѣмъ: καὶ συντελεσθῆναι τὰ ὁράματα καὶ προφήτην. И эти оба перевода являются также толкованіемъ текста; переводя: «и чтобы было понято видѣніе», имѣли въ виду, что видѣніе запечатывается, подтверждается печатью тогда, когда оно становится вполнѣ понятнымъ при исполненіи [118].

Итакъ, переводы Акилы, Пешито, Вульгата и LXX «запечатаніе» пророчествъ понимаютъ какъ ихъ исполненіе, или окончаніе. Такъ, въ слѣдъ за переводами, толковали и многіе древніе писатели и отцы Церкви, видя исполненіе пророчествъ и, слѣдовательно, вмѣстѣ съ тѣмъ и ихъ окончаніе—во Христѣ. Климентъ Александрійскій [119], Тертулліанъ [120], Евсевій Кесарійскій [121], Аѳанасій Великій [122], Ефремъ Сринъ [123], Іоаннъ Златоустъ [124], По-

---

[118] Cp. Fraidl, S. 6.

[119] Καὶ ὁ Κύριος ἡμῶν Χριστός, ἅγιος τῶν ἁγίων, ἐλθὼν καὶ πληρώσας τὴν ὅρασιν καὶ τὸν προφήτην, ἐχρίσθη τὴν σάρκα τῷ τοῦ Πατρὸς αὐτοῦ Πνεύματι. См. Строматы, кн. 1. M. 8 gr. 856.

[120] Igitur, quoniam adimpleta est prophetia per adventum ejus, propterea signari visionem et prophetiam dicebat, quoniam ipse est signaculum omnium prophetarum, adimplens omnia quae retro de eo prophetae nunciaverant. Post enim adventum Christi et passionem ipsius, jam non visio, neque prophetia est, qui Christum nunciet venturum. M. 2 lat. 615.

[121] Οὐκ ἄρα τοῦ ἀποκλεῖσαι ὅρασιν καὶ προφήτην ἐλήλυθεν ὁ Χριστὸς τοῦ Θεοῦ, μᾶλλον δὲ ἀναπετάσθαι καὶ εἰς φῶς ἀγαγεῖν——ὃ καὶ συνᾴδει τῷ· Οὐκ ἦλθον καταλῦσαι τὸν νόμον ἢ τοὺς προφήτας, ἀλλὰ πληρῶσαι——. Τέλος γὰρ νόμου Χριστός, καὶ πᾶσαί γε αἱ περὶ αὐτοῦ προφητεῖαι ἀπλήρωτοι καὶ ἀτελεῖς ἔμενον, εἰσόυ αὐτὸς ἐπιστὰς ἐπιτέθεικεν ἅπασι τέλος τοῖς περὶ αὐτοῦ προαναπεφωνημένοις. Δύναται δὲ καὶ——τοιαύτην ἔχειν διάνοιαν τὸ· Τοῦ σφρ. ὅρ. καὶ πρ.· ἐπεὶ ὁ νόμος καὶ οἱ προφῆται μέχρις Ἰωάννου διήρκεσαν, ἐξ ἐκείνου τε διαλελοίπασιν οἱ πάλαι παρὰ τῷ Ἰουδαίων ἔθνει πνευματοφορούμενοι——διὸ συμβαίνει ἐξ ἐκείνου μηκέτι προφήτην ἐνεργεῖν. M. 22 gr. 605.

[122] Аѳанасій приводитъ стихъ 24 и начало 25-го и продолжаетъ: Τί δὲ πρός ταῦτα λέγειν ἢ ὅλως ἀντωπῆσαι δύνανται, ὅπου γε καὶ ὁ Χριστὸς σημαίνεται, καὶ ὁ χριόμενος οὐκ ἄνθρωπος ἁπλῶς, ἀλλ' ἅγιος ἁγίων εἶναι καταγγέλλεται, καὶ ἕως τῆς παρουσίας αὐτοῦ Ἱερουσαλὴμ συνίσταται [al.: συνίστασθαι], καὶ λοιπὸν παύεται προφήτης καὶ ὅρασις ἐν τῷ Ἰσραήλ; Ἐχρίσθη πάλαι Δαβὶδ, καὶ Σολομὼν, καὶ Ἐζεκίας· ἀλλὰ καὶ πάλιν Ἱερουσαλὴμ καὶ ὁ τόπος συνειστήκει, καὶ προφῆται προεφήτευον.——Ἔπειτα καὶ αὐτοὶ οἱ χρισθέντες ἄνθρωποι ἅγιοι, καὶ οὐχ ἅγιοι ἁγίων ἐκλήθησαν. M. 25 gr. 164.

[123] «(Христосъ) придетъ, чтобы запечатать видѣніе и пророка; ибо Онъ придетъ и страданіемъ Своимъ исполнитъ ихъ». Op. omnia t. II p. 221.

[124] Καὶ τοῦ σφρ. ὅρ. καὶ πρ. καὶ τοῦ χρῖσαι ἅγ. ἁγ.· τουτέστι, στῆσαι λοιπὸν τὰς προφητείας· τοῦτο γάρ ἐστι σφραγίσαι, τὸ στῆσαι τὸ χρῖσμα, στῆσαι τὰς ὁράσεις. Διὰ τοῦτο ὁ Χριστὸς ἔλεγεν· Ὁ νόμος καὶ οἱ προφῆται ἕως Ἰωάννου. M. 47 gr. 898.

лихроній [125], Θеодоритъ [126], Василій Селевкійскій [127]—всѣ видѣли въ 5-мъ предложеніи именно этотъ смыслъ, причемъ одни особенно настаивали на «исполненіи» пророчествъ во Христѣ, другіе—на ихъ «окончаніи», на прекращеніи ветхозавѣтныхъ пророчествъ и закона съ пришествіемъ Христа, третьи же принимали тотъ и другой смыслъ. Всѣ они при этомъ имѣли въ виду тѣ мѣста Новаго Завѣта, въ которыхъ говорится объ исполненіи пророчествъ во Христѣ: Матѳ. 5, 17. Лук. 24, 25—27. Дѣян. 3, 18. ср. Матѳ. 11, 13. Лук. 22, 37.

Какъ мы уже видѣли, образъ «запечатанія» нигдѣ не употребляется въ значеніи «окончанія». Въ приложеніи къ пророчествамъ такой смыслъ не соотвѣтствуетъ и ветхозавѣтному представленію о мессіанскомъ времени, когда, по словамъ пророка Іоиля (2, 28, въ еврейской библіи 3, 1), *пророкутъ* (וְנִבְּאוּ) *сынове ваши и дщери ваши, и старцы ваши сонія узрятъ, и юноты ваши видѣнія увидятъ* (וּבַחוּרֵיכֶם חֲלֹמוֹת). Мѣсто это приводится и апостоломъ Петромъ въ его рѣчи по сошествіи Св. Духа на апостоловъ (Дѣян. 2, 16—21); во многихъ мѣстахъ Новаго Завѣта говорится о пророчествахъ, не прекращавшихся въ Церкви (Дѣян. 11, 27. 13, 1. 15, 32. 19, 6. 21, 10. 1 Кор. 11, 4. 5. 12, 10. и дал. Еф. 3, 5. 4, 11. 1 Θесс. 5, 20 и др.), и ни откуда нельзя заключить, что это новозавѣтное пророчество было совершенно отлично отъ ветхозавѣтнаго. Поэтому, если можно говорить объ «окончаніи» пророчествъ, то только въ томъ случаѣ, если разумѣть подъ ними ветхозавѣтныя пророчества, говорившія о грядущемъ Мессіи,—какъ они и разумѣются въ Матѳ. 11, 13. Лук. 22, 37. Самый смыслъ «окончанія» изъ образа «запечатанія» можетъ быть выведенъ только косвеннымъ путемъ, въ приложеніи этого образа къ

---

[125] Συφρ. ὅρ.· ἀντὶ τοῦ περαιῶσαι τὰ τῶν προφητῶν ὁράματα· ἀπὸ τῶν φησάντων τὰ εἰρημένα σημαίνων. Maji I, p. 16—17.

[126] Καὶ τοῦ σφρ. ὅρ. καὶ πρ., τουτέστι, τοῦ δοῦναι μὲν τέλος ἁπάσαις ταῖς προφητείαις—(Рим. 10, 4.)—παῦσαι δὲ λοιπὸν τὴν προφητικὴν χάριν ἀπὸ τοῦ Ἰουδαίων ἔθνους.— —Πληροῖ τοίνυν καὶ οἱονεὶ σφραγίζει καὶ βεβαιοῖ τὰ ὑπὸ τῶν προφητῶν προῤῥηθέντα. ποιῶν ἅπαντα καὶ πάσχων τὰ ὑπ' ἐκείνων χρησμῳδηθέντα. M. 81 gr. 1472—1473.

[127] Τὸ δὲ σφραγίσαι τὸ καταπαῦσαι λέγει τὰς ὁράσεις καὶ τὰς προφητείας, τὰς περὶ τῆς ἐπιδημίας τοῦ Σωτῆρος. M. 85 gr. 408.

пророчествамъ. Именно, «запечатать» пророчества значитъ подтвердить ихъ; подтвержденіе же пророчествъ заключается въ исполненіи ихъ, а исполнившееся пророчество является уже какъ бы «оконченнымъ», потерявшимъ свое прежнее значеніе. Аналогію къ этому можно видѣть въ словахъ Христа при отшествіи Его въ Іерусалимъ на страданія: *се восходимъ во Іерусалимъ, и скончаются* (τελεσθήσεται) *вся писанная пророки* (διὰ τῶν προφητῶν) *о Сынѣ Человѣчестѣ* (Лук. 18, 31. ср. 24, 44).

Таковы основанія, на которыхъ утверждаются древніе переводы и толкованія, понимая «запечатаніе» пророчествъ въ смыслѣ ихъ окончанія. Большинство ученыхъ новаго времени [128] понимаютъ этотъ образъ болѣе правильно, въ значеніи «подтвержденія» и исполненія; только нѣкоторые [129] настаиваютъ на значеніи «окончанія», не соглашаясь съ мнѣніемъ большинства въ виду того, главнымъ образомъ, будто «неестественно полагать, что *хатам* въ одномъ и томъ же стихѣ встрѣчается въ разныхъ значеніяхъ, и здѣсь тѣмъ болѣе неестественно, что запечатаніе видѣнія и пророка уже по самому положенію стоитъ въ очевиднѣйшемъ отношеніи къ запечатанію грѣха»—такъ какъ 5-е предложеніе параллельно 2-му [130]. Но на это можно возразить, что такое различіе значеній одного и того же слова въ одномъ и томъ же стихѣ иногда встрѣчается у Даніила; напр., въ 8, 24: «и укрѣпится сила его, хотя и не его силою» (וְעָצַם כֹּחוֹ וְלֹא בְכֹחוֹ) слово «сила» никакъ нельзя понимать оба раза въ одномъ и томъ же смыслѣ, иначе будетъ противорѣчіе. Съ другой стороны, всякій образъ получаетъ свое частное значеніе отъ того предмета, къ которому онъ относится, и если различны эти предметы, то и образъ не можетъ имѣть одинаковаго значенія. Здѣсь же «запечатываются» въ одномъ случаѣ — грѣхи, въ другомъ— пророчества, одно представляетъ дурное въ нравственномъ отношеніи дѣйствіе, другое—хорошее (такъ какъ здѣсь говорится, ко-

---

[128] Напр., Hävernick 363—364, Lengerke 438—439, Zöckler 178, Rohling 262, Knabenbauer 238, Bevan 154, и многіе другіе.

[129] Hengstenberg 435—436, Keil 286—287, Wolf 40, и др.

[130] Hengstenberg 436.

нечно, объ истинномъ пророчествѣ, а не о ложномъ). Такимъ образомъ, если мы возьмемъ «запечатать» въ одномъ и томъ же значеніи, напр., въ значеніи «окончить», то окончаніе грѣховъ будетъ благомъ, а окончаніе пророчествъ—зломъ, тогда какъ здѣсь, по контексту, говорится объ однихъ только благахъ. То же самое получится, если мы возьмемъ всякое другое значеніе образа «запечатанія».

Запечатаніе пророчествъ естественнѣе всего понимать, какъ ихъ подтвержденіе, какъ бы засвидѣтельствованіе Богомъ ихъ достовѣрности. Такое подтвержденіе пророчества должны получить съ пришествіемъ Мессіи. Какія же пророчества разумѣются здѣсь? *Хазон* отъ חָזָה «видѣть», значитъ «видѣніе, явленіе», затѣмъ—божественное откровеніе, при чемъ не необходимо, чтобы оно сопровождалось какими-либо видимыми образами; этимъ именемъ называются, напр., цѣлыя пророческія книги Авдія 1, 1, Наума 1, 1 и Исаіи 1, 1, содержащія большею частію пророческія рѣчи, а не видѣнія. *Наби*—обычное названіе пророка, т. е. не предсказателя только будущаго, какъ въ обычной рѣчи употребляется имя «пророкъ», а проповѣдника божественной воли и божественныхъ откровеній. Соединеніе этихъ двухъ словъ, взятыхъ притомъ безъ члена, означаетъ всю совокупность божественныхъ откровеній, сообщавшихся пророками избранному народу для руководительства его въ дѣлѣ спасенія. А такъ какъ центромъ всѣхъ этихъ откровеній былъ Мессія, то и разумѣются здѣсь, конечно, именно мессіанскія пророчества, что̀ видно и изъ характера всего откровенія о седьминахъ и его дальнѣйшаго содержанія.

И помажется святый святыхъ. Какъ переводы, такъ особенно толкованія 6-го предложенія 24-го стиха представляютъ много разногласій. Еврейское выраженіе וְלִמְשֹׁחַ קֹדֶשׁ קָדָשִׁים *Акила* передаетъ педантически-буквально: καὶ τοῦ ἀλεῖψαι ἡγιασμένον ἡγιασμένων, почти такъ же буквально и Ѳеодотіонъ: καὶ τοῦ χρῖσαι ἅγιον ἁγίων. Какого рода здѣсь ἡγιασμένον и ἅγιον, мужескаго или средняго, сказать съ рѣшительностью невозможно; но, судя по толкованіямъ древнѣйшихъ писателей, пользовавшихся переводомъ Ѳеодотіона, вѣрнѣе видѣть здѣсь мужескій родъ. Такъ и Вульгата: et ungatur sanctus sanctorum. LXX переводятъ: καὶ εὐφρᾶναι ἅγιον

ἁγίων «и обрадовать святого святыхъ». Послѣдній переводъ произошелъ или отъ чтенія לְשַׂמֵּחַ (отъ שָׂמַח «радоваться») вмѣсто לְמָשֵׁחַ, или есть только своеобразный, намѣренно вольный переводъ этого же слова, подъ вліяніемъ, можетъ быть, словъ Пс. 44, 8: *помаза тя, Боже, Богъ Твой елеемъ радости* [131]. Ἅγιος ἁγίων въ переводѣ LXX есть, очевидно, лицо, а не предметъ, такъ какъ къ предмету нельзя отнести слово εὐφραίνω; въ виду того, что въ 25 стихѣ послѣдній глаголъ повторяется во 2-мъ лицѣ: καὶ εὐφρανθήσῃ, нѣкоторые даже думаютъ, что «святымъ святыхъ» переводчики называютъ самого пр. Даніила. Сирскій переводъ также уклоняется здѣсь отъ подлинника: «и до Мессіи Святого Святыхъ»; переводъ этотъ произошелъ или вслѣдствіе ошибочнаго чтенія מָשִׁיחַ вмѣсто מְשִׁיחַ, или есть свободная передача евр. словъ для того, чтобы оттѣнить мессіанскій смыслъ откровенія о седьминахъ.

Обращаясь къ толкователямъ свято-отеческаго времени, мы видимъ, что почти всѣ они относятъ пятое предложеніе къ Іисусу Христу, понимая Его подъ «Святымъ Святыхъ»; подъ «помазаніемъ» же они разумѣютъ или Его Божество, какъ Евсевій Кесарійскій [132], Полихроній [133], ср. Аѳанасій Великій [134], или—помазаніе Его человѣчества (σάρξ) Духомъ Святымъ, какъ Аммоній [135], Климентъ Александрійскій [136] и Ѳеодоритъ [137]. Только немногіе

---

[131] Cp. Fraidl 6; Wieseler 200—201, Anm. d.

[132] Ἀλλ' ἔγωγε τῆς θείας Γραφῆς οὐδαμοῦ εὑρὼν τὸν παρὰ Ἰουδαίοις ἀρχιερέα ἅγιον ἁγίων ὠνομασμένον, ἡγοῦμαι ἐν τούτοις μόνον αὐτὸν τὸν μονογενῆ τοῦ Θεοῦ Λόγον δηλοῦσθαι, κυρίως τε καὶ ἀληθῶς ταύτης ἄξιον τῆς ἐπωνυμίας.— —Ἐπεὶ οὖν διαφέροντι καὶ πνευματικῷ, μᾶλλον δὲ θεότητος χρίσματι μόνος παρὰ τοὺς πώποτε ὁ ἡμέτερος Σωτὴρ κεχρίσθαι μεμαρτύρηται— —. M. 22 gr. 605. 608.

[133] Ἅγιον δὲ ἁγίων ἔφη ὡς ὑπερβαίνοντος τούτου τὸν παρὰ Ἰουδαίους διὰ τοῦ χρίσματος ἁγιασμόν· ἢ ἵνα αὐτὸν χριστὸν σημάνῃ, χρίσασθαι αὐτὸν φάσκει τῷ ἁγίῳ πνεύματι.— —Οὐκ εἶπεν ἁγίῳ ἁγίων, ἀλλ' ἅγιον ἁγίων, αὐτὸν σημαίνων τὸν Χριστόν, τὸν ἁγιασμοῦ μὴ δεόμενον, ἀλλ' ἁγιασμοῦ χορηγὸν ὡς Θεόν, χρισθέντα δὲ διὰ τὴν οἰκονομίαν. Maji I. p. 17.

[134] Ср. прим. 122.

[135] Ἅγιος ἁγίων ὁ χριστὸς, χριόμενος οἰκονομικῶς διὰ τὴν σάρκα. Vid. Fraidl 98.

[136] См. прим. 119.

[137] Τίς δὲ οὗτός ἐστιν ὁ τῶν ἁγίων ἅγιος; εἰπάτωσαν Ἰουδαῖοι· εἰ δὲ ἀγνοοῦσι, παρ' ἡμῶν μαθέτωσαν, ὡς αὐτός ἐστιν ὁ Δεσπότης Χριστός—(Пс. 61, 1. Пс. 44, 8. Дѣян. 10, 38)—ὃς Ἅγιος ἁγίων ὀνομαζόμενος, ἅτε δὴ ἁγιωσύνης ὑπάρχων πηγή, χρίεται μὲν κατὰ τὸ ἀνθρώπειον τῷ ἁγίῳ Πνεύματι. M. 81. gr. 1473.

изъ писателей этого времени, напр., псевдо-Кипріанъ [138] и Юлій Иларіанъ [139] относятъ это наименованіе, «святое святыхъ», къ храму или, въ частности, къ его Давиру.

Изъ старыхъ еврейскихъ толкователей нѣкоторые также относятъ пятое предложеніе къ Мессіи. Таково толкованіе евреевъ, приведенное у блаж. Іеронима [140], а также Ибн-Езры и Абарбанеля; понятно, они имѣютъ въ виду не пришедшаго уже Мессію, Іисуса Христа, а еще ожидаемаго ими. Ибн-Езра при этомъ читаетъ послѣднее предложеніе: «и запечатать Мессію, Святого святыхъ», перенося «запечатать» изъ предыдущаго предложенія и разумѣя, вѣроятно, «замедленіе» пришествія Мессіи, ожидаемаго евреями [141]. У Абарбанеля есть и другое толкованіе «святого святыхъ»; именно, онъ разумѣетъ здѣсь третій храмъ, который будетъ помазанъ и будетъ превосходить второй [142]. Саадіа Гаонъ и Раши относятъ это наименованіе ко второму храму. Всѣ они при всемъ разнообразіи ихъ толкованій, относятъ разбираемое предложеніе къ мессіанскому времени.

Такимъ образомъ, почти всѣ древніе толкователи понимали подъ *кодеш кодашим* Мессію. Но въ новѣйшее время обыкновенно уже не считаютъ возможнымъ прямо утверждать, что слова эти

---

[138] См. у Fraidl'я, S. 55.

[139] Послѣ перевода: «Et tu quiesce et intellige de proventu Sanctorum, sive praeceptum respondendum et aedificandam urbem Hierusalem, usque ad Christum ducem hebdomadas septem», Юлій продолжаетъ: «quae hebdomadae sunt XLIX anni: qui anni ad corpus LXX annorum captivitatis Hierusalem pertinent. Anno enim primo Darii regis— —Daniel vidit visionem: et fuit XXI annus captivitatis Hierusalem.— —Cujus [Darii] anno primo Danieli ab angelo dicitur de hebdomadis septuaginta: quas cum partiretur, septem hebdomadae primo ab eodem angelo nominatae sunt: quae (ut dictum est) sunt anni quadraginta novem, qui junguntur ad XXI captivitatis— —et efficiuntur anni septuaginta, qui completi sunt in Babylonia, ut impleretur visio et prophetia Hieremiae. Post quos annos Cyrus rex Persarum jubet populos ire ad Hierusalem, primo anno regni sui, ut aedificari posset Hierusalem et ungeretur sanctum sanctorum, quod fuit in templo Dei sacratissimum». Chronologia sive libellus de mundi duratione. M. 13 lat. 1102—1103.

[140] Et signabitur visio et prophetia, ut nequaquam propheta inveniatur in Israel, et ungatur sanctus sanctorum. De quo in Psalteria legimus: Propterea unxit te Deus, Deus tuus oleo laetitiae prae consortibus tuis. Qui et in alio loco dicit de se: Sancti estote, quia et ego sanctus sum. M. 25 lat. 552.

[141] См. Sostmann, 141.

[142] Fraidl 133: тамъ же см. толкованія и другихъ названныхъ евреевъ.

значатъ: «Святой святыхъ» и относятся къ Лицу Мессіи. Еще Евсевій, опровергая то мнѣніе, по которому *кодеш кодашим* есть первосвященникъ іудейскій, говоритъ, что онъ нигдѣ въ Св. Писаніи не нашелъ, чтобы первосвященникъ такъ назывался [143]. И дѣйствительно, этимъ именемъ называются въ Св. Писаніи почти исключительно предметы, но не лица. Прежде всего, такъ называется отдѣленіе скиніи и храма, гдѣ стоялъ Ковчегъ Завѣта (Исх. 26, 33. 34. Числ. 4, 4. 19. 3 Цар. 6, 16. 7, 50. 8, 6. 1 Пар. 6, 49. 2 Пар. 3, 10. 4, 22. 5, 7. Іез. 41, 4), затѣмъ — жертвенникъ всесожженія (Исх. 29, 37. 40, 10) и куренія (Исх. 30, 10), далѣе — всѣ сосуды и принадлежности скиніи (Исх. 30, 29), всѣ жертвы, приносимыя въ ней (Лев. 2, 3. 10. 6, 17. 25. 29. 7, 1. 6. 10, 12. 17. 14, 13. 24, 9. Числ. 18, 9. 10. Ездр. 2, 63. Неем. 7, 66), и заклятое, посвященное Господу (Лев. 27, 28); у Іезекіиля же такъ называется святилище (Іез. 45, 3) и все пространство на вершинѣ горы вокругъ новаго храма (Іез. 43, 12). Изъ указанныхъ случаевъ употребленія наименованія *кодеш кодашим* видно, что имъ обозначаются въ Св. Писаніи всѣ предметы, изъятые изъ обычнаго употребленія и предназначенные для высшихъ цѣлей, для употребленія при служеніи человѣка Богу; значитъ, понятіе *кодеш кодашим* только съуживаетъ, ограничиваетъ понятіе *кодеш*, такъ какъ не можетъ, подобно послѣднему, означать свойства святости и относиться къ лицамъ. Единственное мѣсто, гдѣ *кодеш кодашим* употребляется, повидимому, о лицахъ, есть 1 Пар. 23, 13; буквально съ еврейскаго оно читается такъ: «Ааронъ былъ отдѣленъ, чтобы посвятить его во святое святыхъ». Но у LXX это мѣсто читается иначе: τοῦ ἁγιασθῆναι ἅγια ἁγίων — *еже освящати святая святыхъ* или буквально: чтобы освящались святыя святыхъ; и это чтеніе слѣдуетъ предпочесть масоретскому, такъ какъ нигдѣ въ Библіи Ааронъ и его сыновья не называются именемъ *кодеш кодашим* [144].

Въ виду такого употребленія этого имени въ Св. Писаніи, новѣйшіе экзегеты, если и разумѣютъ здѣсь Самого Іисуса Христа [145],

---

[143] См. прим. 132.

[144] Ср. v. Lennep 18.

[145] Какъ Häverniсk, 365 и дал., ср. Оберленъ, 149 и дал., Rohling, 264—265.

то относятъ это наименованіе не прямо къ Его Лицу, а къ «святому святыхъ» храма, какъ мѣсту особеннаго пребыванія Бога среди людей, и затѣмъ уже—ко Христу, въ Которомъ «обитаетъ полнота Божества тѣлесно» (Кол. 2, 9.), Который есть и истинный Богъ и истинный человѣкъ, являясь, такимъ образомъ, выраженіемъ полнаго общенія Бога съ людьми. Поэтому *кодеш кодашим* переводятъ: «Святое святыхъ» и разумѣютъ здѣсь Христа, новое Святое святыхъ, полное и совершеннѣйшее. Для подтвержденія такого толкованія ссылаются на Пс. 8, 14, гдѣ объ Іеговѣ говорится, что Онъ לְמִקְדָּשׁ הָיָה «будетъ святилищемъ», ср. Іез. 11, 16., а также на тѣ мѣста Новаго Завѣта, гдѣ Христосъ называется τὸ ἅγιον (Лук. 1, 35.) и сравниваетъ Себя съ храмомъ (Іоан. 2, 19.) [146]. Главное же основаніе въ пользу этого взгляда есть то, что дальше, когда говорится о «Помазанникѣ», весьма естественно разумѣть подъ Нимъ именно того, о помазаніи котораго сейчасъ говорилось; а такъ какъ тамъ «Помазанникъ» есть именно Мессія, то и здѣсь естественнѣе всего разумѣть Его же [147].

Другіе, не отрицая возможности разумѣть подъ «святымъ святыхъ» Мессію, предпочитаютъ другое пониманіе: наименованіе *кодеш кодашим* они относятъ къ Церкви, основанной Христомъ [148]. Они ссылаются на то, что образъ храма въ Ветхомъ Завѣтѣ всегда употребляется для выраженія понятія Церкви и никогда не означаетъ лица Мессіи. Для доказательства этой мысли приводятъ, напр., мѣста изъ Псалмовъ 14, 1: *Господи, кто обитаетъ въ жилищи Твоемъ* и т. д.; 22, 6: *еже вселитимися въ домъ Господень въ долготу дній;* 62, 3: *тако во святыхъ явихся тебѣ* (букв. «такъ какъ я видѣлъ тебя во святилищѣ»); 72, 17: *дондеже вниду во святило Божіе;* 26, 4: *едино просихъ отъ Господа, то взыщу: еже жити ми въ дому Господни вся дни живота моего* и т. д.; весь 83 псаломъ: *Коль возлюбленна селенія Твоя, Господи силъ.* Во всѣхъ этихъ мѣстахъ справедливо видятъ указаніе не на внѣшній храмъ только, но и на Церковь, общество вѣрныхъ, обра-

[146] Ср. Hävernick, 365.
[147] Ср. Оберлеп., 149.
[148] Hengstenberg. 447—450.

зомъ которой служитъ храмъ. Обращаютъ на себя вниманіе слова Спасителя Іоан. 2, 19., въ которыхъ Онъ сравниваетъ Себя съ храмомъ; но и здѣсь аналогія простирается только на тѣло Христово (ср. 21 ст.). Остаются въ силѣ только тѣ мѣста, гдѣ Іегова называется Святилищемъ и Христосъ—τὸ ἅγιον.

Между тѣмъ вовсе нѣтъ нужды такъ раздѣлять Христа и Его Церковь, какъ дѣлаютъ названные выше ученые. Если мы примемъ во вниманіе тотъ образъ Церкви, который данъ у апостола Павла (Рим. 12, 5. 1 Кор. 6, 15. 12, 12. 13. 27. Еф. 4, 4. 12. 5, 30. Кол. 1, 18. 2, 17.), именно—образъ тѣла съ Главою—Христомъ; если мы представимъ предполагаемую этимъ образомъ тѣсную связь Христа съ Церковью, какъ бы даже единство ихъ жизни (ср. 1 Іоан. 1, 3. 1 Кор. 1, 9.), то мы поймемъ, что слова: *кодеш кодашим* слѣдуетъ относить какъ ко Христу, такъ и къ Его Церкви, или, лучше сказать, ко всему церковному цѣлому, къ тѣлу—Церкви и ея Главѣ—Христу [149]. Это будетъ вполнѣ соотвѣтствовать тому постепенному расширенію области «святого святыхъ», какое можно замѣчать уже и въ Ветхомъ Завѣтѣ. Тамъ сначала «святымъ святыхъ» называлась только скинія и ея принадлежности, а затѣмъ, у пророка Іезекіиля, весь храмъ и даже вся гора храма; здѣсь же, у пророка Даніила, подъ «святымъ святыхъ» разумѣется, такъ сказать, вся «земля обѣтованная», вся Церковь Христова со своимъ Божественнымъ Главою.

«Помазаніе» святого святыхъ есть сообщеніе Духа Божія, пріобщеніе Божеству. Христосъ, Глава Церкви, уже въ Своемъ воплощеніи носилъ такое помазаніе Божества и принялъ сугубое помазаніе въ Своемъ крещеніи. Церковь, какъ имѣющая своимъ Главою Христа, тѣмъ самымъ носитъ уже въ себѣ «помазаніе», пріобщеніе Божеству. «Отъ полноты Его» всѣ принимаютъ «и благодать на благодать» (Іоан. 1, 16. Ефес. 1, 23.); отъ Него, какъ отъ Главы, «все тѣло, составами и связями будучи соединяемо и скрѣпляемо, растетъ возрастомъ Божіимъ» (Кол. 2, 19.); на Немъ «все зданіе, слагаясь стройно, возрастаетъ въ святый храмъ въ

[149] Ср. Knabenbauer, 239 sqq.

Господѣ, на которомъ» и вѣрующіе устрояются «въ жилище Божіе Духомъ» (Еф. 2, 21. 22.). Но были и есть въ Церкви и особыя явленія и дѣйствія, въ которыхъ вѣрующіе принимаютъ помазаніе Божества. По отношенію къ апостоламъ это помазаніе совершилось въ день Пятидесятницы, а по отношенію ко всѣмъ вѣрующимъ оно совершается въ таинствахъ церковныхъ, особенно же—въ миропомазаніи, сообщающемъ дары Св. Духа, и причащеніи, тѣснѣйшимъ образомъ соединяющемъ вѣрующаго со Христомъ. Какъ по отношенію къ предыдущимъ предложеніямъ 24-го стиха, съ пришествіемъ Христа дана только возможность осуществить обѣщанное въ нихъ (напр., не грѣшить, оправдаться), такъ и здѣсь пріобщеніе Духу Святому только началось съ пришествіемъ Христа и совершается въ теченіе всей жизни Церкви.

Что «помазаніе» есть именно пріобщеніе Божеству, низведеніе Св. Духа, это ясно вытекаетъ какъ изъ ветхозавѣтнаго, такъ и изъ новозавѣтнаго употребленія этого образа. Такъ, Господь повелѣваетъ Моисею помазать скинію и ея принадлежности, чтобы освятить ихъ: *И освятиши я, и будутъ святая святыхъ: всякъ прикасаяйся имъ освятится. И Аарона и сыны его помажеши, и освятиши я священнодѣйствовати мнѣ. И сыномъ израилевымъ да речеши, глаголя: елей масть помазанія, святъ да будетъ сей вамъ въ роды ваша,— —святъ есть, и освященіе будетъ вамъ* (Исх. 30, 29—32, ср. 40, 9 дал.). Помазаніе царей также имѣло цѣлью низвести на нихъ особую благодать Божію для управленія народомъ Божіимъ, сдѣлать ихъ, такъ сказать, намѣстниками Бога на землѣ, замѣняющими Самого Бога, Который ранѣе Самъ управлялъ избраннымъ народомъ. Поэтому на Саула послѣ его помазанія сходитъ Духъ Божій (1 Цар. 10, 1. 6.), а затѣмъ, когда Самуилъ помазалъ на царство Давида, *ношашеся Духъ Господень надъ Давидомъ отъ того дне и потомъ,— —и Духъ Господень отступи отъ Саула* (1 Цар. 16, 13. 14.). Таково же и образное употребленіе этого выраженія, что особенно ясно видно изъ Ис. 61, 1: *Духъ Господень на мнѣ, егоже ради* (евр: ибо) *помаза мя;* въ Новомъ Завѣтѣ этотъ образъ съ тѣмъ же значеніемъ (пріобщенія Божеству) употребляется какъ въ приложеніи къ Іисусу

Христу, Который называется помазаннымъ отъ Бога Духомъ Святымъ въ Дѣян. 10, 38., такъ и въ приложеніи къ вѣрующимъ: *и вы помазаніе имате отъ святаго и вьсте вся* (1 Іоан. 2, 20, ср. 27); *извъствуяй же насъ съ вами во Христа и помазавый насъ Богъ, иже и запечатлѣ насъ и даде обрученіе Духа въ сердца наша* (2 Кор. 1, 21. 22.).

Такимъ образомъ, для новозавѣтнаго читателя понятенъ смыслъ словъ: «и чтобы помазать святое святыхъ»: здѣсь говорится о Церкви Божіей, которая въ концѣ періода седьминъ будетъ помазана Духомъ Святымъ, т. е. будетъ тѣснѣйшимъ образомъ соединена съ Богомъ въ своей Главѣ и въ дарованныхъ ея членамъ благодатныхъ дѣйствіяхъ. Но здѣсь возможно возраженіе, что пророкъ Даніилъ не могъ такъ понимать этихъ словъ, для ветхозавѣтнаго человѣка они должны были имѣть другое значеніе. Однако изъ ранѣе сказаннаго видно, что и въ Ветхомъ Завѣтѣ можно найти зачатки того пониманія «святого святыхъ» и «помазанія», какое указано выше. Изъ дальнѣйшихъ словъ откровенія Даніилъ узналъ, что храмъ, къ которому онъ ближе всего могъ относить наименованіе «святого святыхъ», будетъ построенъ не въ концѣ періода седьминъ, а въ самомъ началѣ, и что потомъ онъ будетъ разрушенъ. Слѣдовательно, пророкъ могъ понять, что храмъ нельзя разумѣть подъ «святымъ святыхъ», а въ такомъ случаѣ онъ долженъ былъ понимать это выраженіе въ смыслѣ образа и относить его именно къ Церкви, которую основетъ на землѣ Мессія. Пророкъ молится о разрушенномъ храмѣ Іерусалимскомъ (9, 17.); теперь онъ узнаётъ, что храмъ этотъ, хотя и возстановится, но впослѣдствіи будетъ разрушенъ, и вмѣсто него помажется новое святое святыхъ, установится болѣе тѣсное и совершенное общеніе Бога съ людьми. Послѣ такого сообщенія уже не такъ горько было для пр. Даніила дальнѣйшее откровеніе о «мерзости», подлежавшей «опустошенію».

Все содержаніе 24-го стиха ясно говоритъ намъ о томъ, что откровеніе о седьминахъ указываетъ время пришествія на землю Мессіи, Искупителя міра. Для народа Божія, являющагося здѣсь представителемъ всѣхъ народовъ, назначается опредѣленный срокъ,

по истеченіи котораго наступитъ царство Мессіи. И царство это изображается такими чертами, которыя характеризуютъ истинное пророчество, истинное откровеніе всевѣдущаго Бога. Здѣсь ничего не говорится о земномъ царствѣ, о возвышеніи евреевъ, объ ихъ всемірномъ владычествѣ,—обо всемъ, чего могъ ожидать отъ своего Мессіи еврей-патріотъ Маккавейскаго времени, которому приписываютъ книгу пр. Даніила новѣйшіе раціоналисты. Нѣтъ, царство Мессіи изображается въ 24-мъ стихѣ такимъ, какимъ оно явилось въ дѣйствительности: на первомъ мѣстѣ стоитъ здѣсь уничтоженіе грѣха, освобожденіе людей отъ его власти надъ ними и искупленіе ихъ виновности передъ Богомъ; мѣсто грѣха займетъ въ искупленномъ человѣкѣ «вѣчная правда»—благодать Божія, всѣ ветхозавѣтныя пророчества о Мессіи исполнятся, и на землѣ будетъ основано новое «святое святыхъ», новое мѣсто тѣснѣйшаго общенія Бога съ людьми, Церковь, помазанная Духомъ Божіимъ въ своей Главѣ и членахъ.

Стихъ 25-й.

Послѣ указанія въ 24-мъ стихѣ общаго содержанія періода седьминъ, далѣе, въ 25—27 стихахъ, слѣдуетъ частнѣйшее раскрытіе этого періода: дѣленіе его на части и указаніе содержанія каждой изъ этихъ частей.

25-й стихъ начинается вступительными словами: *И увѣси и уразумѣеши*, по евр. וְתֵדַע וְתַשְׂכֵּל. Союзъ וְ передъ этими словами употребленъ для обозначенія вывода изъ предыдущаго и приготовленія къ послѣдующему: тебѣ сообщено очень важное откровеніе, и слѣдуетъ подробнѣйшее его раскрытіе; «итакъ, знай и разумѣй». Глаголы יָדַע «знать» и שָׂכַל «быть умнымъ, разумѣть» — поставлены здѣсь въ изъявительномъ наклоненіи 2-го еврейскаго времени, но, по смыслу рѣчи и по свойству языка, переводить ихъ слѣдуетъ повелительнымъ наклоненіемъ и понимать въ смыслѣ приглашенія Даніилу обратить свое вниманіе на то, что будетъ сообщено. Вульгата и русскій синодальный переводъ прямо употребляютъ здѣсь повелительное наклоненіе,

остальные же переводы ставятъ изъявительное наклоненіе будущаго времени, также имѣющее значеніе повелительнаго.

Далѣе указывается событіе, которымъ начинается первая часть періода седьминъ: *отъ исхода словесе, еже отвѣщати, и еже соградити Іерусалимъ*. Первыя слова, по-еврейски: מִן מֹצָא דָבָר [150] не требуютъ никакого грамматическаго объясненія: седьмины начинаются съ того времени, какъ выйдетъ слово... *Моца*—имя существительное отъ глагола יָצָא—значитъ «выходъ, исходъ» [151]. Такъ какъ смыслъ слова *дабар* опредѣляется здѣсь только по связи со слѣдующими словами, то разберемъ сначала эти послѣднія.

Еврейское выраженіе: לְהָשִׁיב וְלִבְנוֹת יְרוּשָׁלִַם буквально значитъ: «чтобы возстановить и построить Іерусалимъ». Предлогъ לְ передъ глаголами, такъ же какъ и въ 24-мъ стихѣ, указываетъ на то, что здѣсь говорится о цѣли «слова», о дѣйствіи, являющемся слѣдствіемъ, результатомъ «слова». Удачный примѣръ такого употребленія предлога *лэ* приводитъ Генгстенбергъ: «Саулъ сказалъ, чтобы убить Давида» (לְהָמִית, 1 Цар. 19, 1). Но далѣе толкованіе этого предлога у Генгстенберга въ высшей степени натянуто. Онъ думаетъ, что предлогомъ *лэ* обозначается предѣлъ, terminus ad quem, и значитъ онъ «до», подобно предлогу עַד. Такое толкованіе надобно Генгстенбергу для того, чтобы объяснить двухсоставность слѣдующаго числа седьминъ, требующаго, по его мнѣнію, «чтобы и въ предыдущемъ, гдѣ этотъ двухсоставный періодъ опредѣляется по своему началу и концу, было упомянуто о его двухсоставности» [152]. Поэтому онъ и переводитъ: «отъ выхода слова до возстановленія и построенія Іерусалима и до Помазанника-Князя семь седьминъ и шестьдесятъ двѣ седьмины», считая семь седьминъ отъ выхода слова до возстановленія Іерусалима и шестьдесятъ двѣ седьмины—

---

[150] Одинъ кодексъ de-R. не имѣетъ מִן; это, конечно, ошибка переписчика.

[151] Совершенно несогласно со смысломъ еврейскаго слова *моца* толкованіе его Stawars'омъ въ смыслѣ «истеченія, исполненія» слова, причемъ онъ разумѣетъ здѣсь время окончательнаго построенія Іерусалима. См. Knabenbauer, 251.

[152] Hengstenberg, 454; ср. Reichel—vid. v. Lennep 28.

отъ послѣдняго событія до Христа. Со временемъ будетъ видно, что двухсоставность періода 69-ти седьминъ можетъ быть объяснена и безъ натянутаго толкованія предлога *лэ*. Здѣсь же достаточно указать на то, что Генгстенбергъ не представилъ ни одного примѣра, гдѣ бы этотъ предлогъ употреблялся въ значеніи terminі ad quem. Изъ указанныхъ у него мѣстъ Св. Писанія одно, Іер. 31, 40 касается предлога *ад*, а въ другомъ, Зах. 14, 10, хотя и употребленъ предлогъ *лэ*, но въ приложеніи къ опредѣленію мѣста, а не времени, что̀ далеко не одно и то же. Съ другой стороны, при объясненіи Генгстенберга, не можетъ быть понято слово *дабар*, лишающееся своего опредѣленія. Это возраженіе, предвидимое самимъ Генгстенбергомъ, нисколько не ослабляется его указаніемъ на слова 23-го стиха: *ягца дабар*: тамъ *дабар* вполнѣ ясно опредѣляется изъ послѣдующаго, здѣсь же этого нѣтъ; «отъ исхода слова до возстановленія и построенія Іерусалима»,—какого слова и о чемъ, остается рѣшительно непонятнымъ. Мнѣніе Генгстенберга, какъ увидимъ, можетъ найти себѣ нѣкоторое подтвержденіе въ спрскомъ переводѣ; но зато всѣ другіе переводы говорятъ противъ него.

О значеніи въ настоящемъ стихѣ глагольной формы הָשִׁיב (неопредѣленное наклоненіе 5-й формы глагола שׁוּב) сильно разногласятъ. Переводя ее буквально, получимъ: «чтобы возвратить»,— но кого или что? Подразумѣвать здѣсь «Іерусалимъ», какъ дополненіе къ слѣдующему глаголу בְּנוֹת «построить»,—при такомъ переводѣ невозможно: «возвратить Іерусалимъ» — нѣтъ смысла. Нѣкоторые думаютъ, что здѣсь подразумѣвается «народъ» [153]. Мнѣніе это имѣетъ за себя то, что «народъ» есть логическое подлежащее всего откровенія о седьминахъ: объ немъ молился Даніилъ, для него предназначаются блага 24-го стиха, о его судьбѣ говорится и далѣе; значитъ, и здѣсь можно подразумѣвать «народъ», какъ дополненіе. Но противъ этого говоритъ, во-первыхъ, то, что *лэгашиб* «возвратить» тѣсно связано здѣсь съ *либнот* «построить», а это послѣднее имѣетъ уже свое дополне-

[153] Напр., Wieseler, 19—21, и др.

ніе, которое поэтому естественнѣе всего разумѣть и при *лэгашиб*. Во-вторыхъ, возвращеніе народа изъ плѣна произошло раньше позволенія строить Іерусалимъ, а не одновременно, что̀ необходимо требовалось бы здѣсь тѣсной связью этихъ двухъ глаголовъ. Другіе [154] думаютъ, что *гашиб* должно понимать здѣсь въ смыслѣ нарѣчія, опредѣляющаго слѣдующій глаголъ, и переводить: «*опять* построить Іерусалимъ»; въ этомъ значеніи часто употребляется 1-я форма глагола *шуб*. Но 5-я форма этого глагола въ такомъ значеніи никогда не употребляется; единственное мѣсто, приводимое какъ примѣръ такого употребленія,—2 Цар. 15, 25, должно переводить, подобно LXX-ти: *и возвратитъ мя, и покажетъ ми его*, а не: «Онъ снова дастъ мнѣ видѣть» [155]. Поэтому, разумѣя здѣсь дополненіе «Іерусалимъ», гораздо вѣрнѣе переводить *гашиб*: «возстановить», привести въ прежнее состояніе; такой смыслъ совершенно согласенъ съ основнымъ значеніемъ глагола *шуб* и находитъ себѣ аналогію въ Пс. 79 [80]-мъ, гдѣ трижды (стихи 4, 8 и 20) повторяется молитвенное восклицаніе: «Боже, возстанови насъ (הֲשִׁיבֵנוּ)!» и у Исаіи 1, 26: וְאָשִׁיבָה שֹׁפְטַיִךְ «и возстановлю судей твоихъ» (синодальный переводъ: «и опять буду поставлять тебѣ судей») [156]. Особенно же ясно говоритъ за таковой переводъ совершенно параллельное мѣсто у Ис. 44, 26: הָאֹמֵר לִירוּשָׁלַם תּוּשָׁב וְלָעָרֵי יְהוּדָה תִּבָּנֶינָה «говорящій Іерусалиму: ты будешь возстановленъ! и городамъ Іудинымъ: вы будете построены!» Здѣсь оба глагола *шуб* и *бана*, стоятъ въ такой же связи, какъ и въ разбираемомъ мѣстѣ книги Даніила, и *шуб* относится прямо къ слову *Йэрушалáим*. *Бана* «строить» иногда употребляется о построенномъ уже городѣ (ср. 2 Пар. 11, 5—6) и значитъ «укрѣплять», какое значеніе нѣкоторые хотятъ придать этому глаголу и здѣсь [157]. Но такое значеніе, во-первыхъ, малоупотребительно; во-вторыхъ, оно можетъ быть принимаемо только тогда, когда

---

[154] Scaliger, Bertholdt, vid. Hengstenberg, 455; Hebbelynck vid. v. Lennep, 27—28.

[155] Ср. Hengstenberg, 455—456.

[156] Ср. Gesenius 821, Keil 292, Lengerke 443.

[157] Vid. Hengstenberg, 457.

прямое значеніе принять рѣшительно невозможно; а въ-третьихъ, въ слѣдующей половинѣ стиха, гдѣ глаголъ этотъ является въ той же связи и, слѣдовательно, съ тѣмъ же значеніемъ, оно противорѣчитъ своему дополненію: «укрѣпить улицы» невозможно.

Древніе переводы значительно разногласятъ при передачѣ разбираемыхъ словъ. Θеодотіонъ: ἀπὸ ἐξόδου λόγου τοῦ ἀποκριθῆναι καὶ τοῦ οἰκοδομῆσαι Ἱερουσαλήμ; *шуб* принимается въ его значеніи «отвѣчать», въ какомъ этотъ глаголъ часто употребляется,—хотя значеніе это вовсе не подходитъ къ данному мѣсту. Пешито и Вульгата даютъ формѣ *ташиб* значеніе нарѣчія; П.: «до построенія вновь» (*лэ* принимается въ смыслѣ обозначенія termini ad quem); В.: ab exitu sermonis, ut iterum aedificetur...» Переводъ LXX-ти, который, начиная съ этого мѣста, значительно отступаетъ отъ еврейскаго текста откровенія, въ соотвѣтствіе разбираемымъ словамъ имѣетъ: καὶ εὐφρανθήσῃ καὶ εὑρήσεις προστάγματα ἀποκριθῆναι, καὶ οἰκοδομήσεις Ἱερουσαλήμ. Первому слову нѣтъ соотвѣтствующаго въ еврейскомъ текстѣ. Возможно, что слово это не есть первоначальное въ переводѣ LXX-ти. На основаніи перевода Тертулліана: «et scies, et perspicies, et intelliges», Fraidl заключаетъ, что Тертулліанъ читалъ у LXX-ти: καὶ γνώσῃ, καὶ διανοηθήσῃ, καὶ φρονήσῃ [158]; другіе думаютъ, что εὐφρανθήσῃ есть вторичный переводъ слова וְתַשְׂכֵּל, такъ какъ глаголъ *сакал* въ формѣ Гифиль часто значитъ: «имѣть счастье» [159]. Дальнѣйшія слова перевода LXX болѣе или менѣе соотвѣтствуютъ словамъ евр. текста, хотя и передаютъ ихъ неправильно. Εὑρήσεις вышло изъ ошибочнаго чтенія יִצָּא вмѣсто מִצָּא и производства этого слова отъ *маца* «находить». Προστάγματα соотвѣтствуетъ слову דָּבָר; ἀποκριθῆναι—לְהָשִׁיב. Послѣднія слова перевода LXX трудно понять; одни переводятъ ихъ: «и найдешь приказанія отвѣчать» [160], другіе: «и найдешь, что приказанія, или слова, пророчества, отвѣчены, т. е. исполнены» [161]. Καὶ οἰκοδομήσεις Ἱερουσαλήμ, — и здѣсь, какъ въ

---

[158] Fraidl 35, Anm. 6; cf. M. 2 lat. 613.
[159] Hahn 67; v. Lennep 23.
[160] Pusey,—vid. v. Lennep l. c.
[161] Wieseler 201, Anm. b; v. Lennep. l. c.

предыдущихъ словахъ, подлежащимъ является мѣстоименіе «ты», т. е. самъ пр. Даніилъ. Повидимому, переводъ предполагаетъ, что самъ Даніилъ будетъ обрадованъ возвращеніемъ въ отечество и построитъ Іерусалимъ. Такимъ образомъ, насколько ясенъ еврейскій текстъ въ разбираемомъ мѣстѣ, настолько неясны и недостаточны переводы, почему и несправедливо было бы на нихъ основываться.

Возвращаясь къ опредѣленію значенія слова *дабар* въ началѣ 25-го стиха, мы видимъ, что содержаніемъ и, въ то же время, результатомъ этого «слова» будетъ «возстановленіе и построеніе Іерусалима». Очевидно, «слово» употреблено здѣсь въ смыслѣ «повелѣнія, приказа». Въ такомъ смыслѣ *дабар* употребляется о повелѣніяхъ, указахъ царей, напр. Есѳ. 1, 19. 3, 15. 4, 3. 8, 14; о приказаніяхъ другихъ начальственныхъ лицъ, напр. 1 Цар. 17, 29: «развѣ не было (на это) приказанія?» говоритъ Давидъ братьямъ, указывая на приказаніе отца навѣстить ихъ (ср. ст. 17. 18; синодальный переводъ стиха 29-го: «не слова ли это?»); Іис. Нав. 1, 13: *помяните слово, еже заповѣда* (въ русскомъ переводѣ: вспомните, что̀ заповѣдалъ) *вамъ Моисей, рабъ Господень*; ср. Пс. 8, 10. Наконецъ, *дабар* употребляется и о повелѣніяхъ Божіихъ; такъ, десять заповѣдей Божіихъ называются עֲשֶׂרֶת הַדְּבָרִים «десятословіе» (Исх. 34, 28). Въ разбираемомъ мѣстѣ откровенія о седьминахъ тѣмъ лицомъ, отъ котораго исходитъ «повелѣніе», естественнѣе всего считать Самого Бога. Во всѣхъ указанныхъ выше случаяхъ, гдѣ такими лицами являются люди, они прямо и обозначаются; здѣсь же такого обозначенія нѣтъ, и никого нельзя подразумѣвать, кромѣ Того, отъ Котораго исходитъ самое откровеніе, къ Которому и Даніилъ обращался въ своей молитвѣ.

Но повелѣнія Божіи становятся извѣстны человѣку или тогда, когда они ему сообщаются чрезъ служителей Божіихъ, или тогда, когда они приводятся въ исполненіе, такъ какъ исполненіе это слѣдуетъ немедленно за повелѣніемъ (ср. Пс. 32, 9. 148, 5. Быт. гл. 1). Въ настоящемъ случаѣ повелѣніе Божіе о возстановленіи и построеніи Іерусалима никому не было сообщено непосредственно: въ Св. Писаніи нѣтъ упоминанія объ этомъ. Только по исполне-

нію этого повелѣнія Божія, т. е. по самому событію построенія Іерусалима, можно судить, когда «вышло слово» Божіе объ этомъ. Такимъ образомъ, если опредѣлится время, когда началась постройка Іерусалима послѣ возвращенія евреевъ изъ вавилонскаго плѣна, то тѣмъ самымъ опредѣлится и начало періода седьминъ.

Изложеннымъ толкованіемъ «слова о возстановленіи и построеніи Іерусалима» совершенно устраняется возможность видѣть въ немъ пророчество Іереміи, о которомъ упоминается во 2-мъ стихѣ 9-й главы, или самое откровеніе о седьминахъ, названное «словомъ» въ 23-мъ стихѣ. Первое пониманіе особенно защищается отрицательной критикой, для которой важно относить начало седьминъ ко времени Іереміи, чтобы имѣть возможность довести ихъ до Антіоха Епифана [162]. Но въ тѣхъ пророчествахъ Іереміи, которыя имѣются въ виду во 2-мъ стихѣ (Іер. гл. 25 и 29), вовсе ничего не говорится о возстановленіи и построеніи Іерусалима, а говорится только о возвращеніи народа изъ плѣна. Во всякомъ случаѣ, пророчества эти никакъ нельзя назвать «откровеніемъ о возстановленіи и построеніи Іерусалима», а тѣмъ болѣе—«повелѣніемъ о возстановленіи»; напротивъ, на основаніи 2-го стиха 9-й гл. Дан., пророчество это могло бы быть названо пророчествомъ о семидесятилѣтнемъ запустѣніи Іерусалима. Указываютъ [163] на 30 и 31 главы книги пр. Іереміи, какъ на содержащія въ себѣ предсказаніе о построеніи Іерусалима. Но въ такомъ случаѣ, если искать такихъ пророчествъ внѣ того мѣста, которое прямо имѣетъ въ виду 2-й стихъ 9-й главы книги Даніила, то можно найти ихъ и въ другихъ мѣстахъ Св. Писанія, напр. у Исаіи гл. 40 и дал., и мн. др.; на какомъ основаніи подъ «словомъ» 25-го стиха слѣдуетъ разумѣть одно, а не другое?

Еще менѣе можно разумѣть подъ этимъ «словомъ» самое откровеніе Даніилу, какъ думаютъ нѣкоторые изъ новыхъ [164] и

---

[162] Такъ, по примѣру Саадіи Гаона, толкуютъ: Rosenmüller 303, Wieseler 19—21, Hitzig 158—159, Lengerke 442—443, Zöckler 179, Bevan 155, Kranichfeld—vid. Keil, S. 292. Этотъ же взглядъ защищаетъ и Г. П. Павскій,—см. Хр. Чтеніе 1872, II, стр. 130—131.

[163] Hitzig 159.

[164] См. у Zöckler'a, S. 188, 4. c.

многіе изъ древнихъ толкователей (напр., Тертулліанъ [165], Ипполитъ [166], Юлій Иларіанъ [167], Полихроній [168], евреи у Іеронима [169], Раши, Ибн-Езра). Не говоря уже о томъ, что тогда, вмѣсто всѣхъ этихъ словъ: «отъ выхода слова» и т. д., гораздо проще было бы сказать: מִמָּחָר («отнынѣ» ср. Ис. 9, 7.),—такое предположеніе невозможно уже потому, что откровеніе о седьминахъ скорѣе можно было бы назвать пророчествомъ о запустѣніи Іерусалима, о которомъ подробно говорится въ 26-мъ стихѣ, чѣмъ о его возстановленіи, о которомъ только въ 25-мъ стихѣ и упоминается. Утверждаютъ, что *дабар* 25-го стиха прямо указываетъ на *яца дабар* стиха 23-го. Но противъ такого отожествленія этихъ двухъ *дабар* говоритъ, во-первыхъ, весь контекстъ, а, во-вторыхъ, отсутствіе члена при словѣ *дабар* въ 25-мъ стихѣ.

Конецъ первой (или собственно, какъ увидимъ дальше, первой и второй) части седьминъ опредѣляется словами: *до Христа Старѣйшины*, עַד־מָשִׁיחַ נָגִיד. Всѣ древніе переводы согласно передаютъ эти слова: «до Помазанника-Князя». Такъ, Ѳеодотіонъ: ἕως Χριστοῦ ἡγουμένου, Вульгата: usque ad Christum ducem, Пешито болѣе опредѣленно: «и до пришествія Помазанника Царя». Только переводъ LXX ти совершенно отступаетъ здѣсь отъ еврейскаго текста и, тѣсно соединяя эти слова съ предыдущими, передаетъ ихъ: (καὶ οἰκοδομήσεις Ἰερουσαλὴμ) πόλιν Κυρίῳ; вѣроятно, вмѣсто עַד LXX читали עִר и, считая слова *машіах нагид* опредѣленіемъ къ

---

[165] — —Unde a primo anno Darii debemus computare, quando hanc visionem vidit Daniel. M. 2 lat. 614.

[166] Ἕως Χριστοῦ ἡγουμένου ἑβδομάδες ἑπτά· ἃ ἐστιν ἔτη τεσσαρακονταεννέα. εἰκοστῷ καὶ πρώτῳ ἔτει θεωρεῖ ταῦτα ἐν Βαβυλῶνι Δανιὴλ· τῶν οὖν τεσσαράκοντα ἐννέα πρὸς τῷ εἰκοστῷ πρώτῳ ἔτει ψηφιζομένων, πληροῦται ἑβδομήκοντα ἔτη, ἅπερ εἴρηκεν ὁ μακάριος Ἱερεμίας. M. 10 gr. 652.

[167] Ср. прим. 139.

[168] Ἀπὸ ἐξ. λ. τοῦ ἀποκριθῆναι. Λέγει πῶς προσήκει καὶ πόθεν τὰς ὁ ἑβδομάδας ἀριθμεῖν, τουτέστι τὰ υγ' (υϭ'?) ἔτη· ἀντὶ τοῦ σημειῶσαι ἀφ' οὗ ἠρξάμην λέγειν, ἀποκρινόμενος πρὸς τὴν ἐρώτησιν· ἦν δὲ πρῶτον ἔτος Δαρείου τοῦ μήδου. Maji t. I, p. 17.

[169] O Daniel, scito quod a die hac qua tibi nunc loquor (erat autem annus primus Darii— —), usque ad septuagesimam annorum hebdomadam, hoc est annos quadringentos nonaginta, haec populo tuo per partes accident—. M. 25 lat. 551.

ир, свободно переводили ихъ словомъ «Κυρίῳ» [170]. Если это предположеніе вѣрно, то оно доказываетъ, что и LXX относили слова *машіах нагид* къ Богу. Большинство свято-отеческихъ толкованій относятъ эти слова къ Іисусу Христу (за исключеніемъ очень немногихъ, о которыхъ рѣчь дальше). Такое пониманіе было господствующимъ въ древней Церкви, остается господствующимъ и теперь и оспаривается только раціоналистами.

Ири разборѣ словъ *машіах нагид* остановимся сначала на опредѣленіи значенія каждаго изъ нихъ, а затѣмъ—и обоихъ ихъ въ ихъ соединеніи.

Машіах есть собственно отглагольное прилагательное съ страдательнымъ значеніемъ: «помазанный», и въ приложеніи къ предметамъ употребляется о щитѣ, намазанномъ передъ битвой масломъ для скользкости 2 Цар. 1, 21; въ приложеніи же къ лицамъ—о помазанномъ первосвященникѣ: הַכֹּהֵן הַמָּשִׁיחַ Лев. 4, 3. 5. 16.; затѣмъ *машіах* употребляется уже въ качествѣ существительнаго: «помазанникъ», иногда съ опредѣленіемъ: מְשִׁיחַ יְהוָה: 1 Цар. 2, 10. 35. 12, 3. 5. 16, 6. 24, 7. 11. 26, 9. 11. Пс. 17, 51. 19, 7.; даже Киръ называется этимъ именемъ: Ис. 45, 1.; въ Пс. 104, 15. такъ называются патріархи; имя это встрѣчается, наконецъ, въ мессіанскомъ 2-мъ псалмѣ (ст. 2) въ приложеніи къ Тому, Которому Господь сказалъ: *Сынъ Мой еси ты, Азъ днесь родихъ тя* (ст. 7, ср. Дѣян. 13, 33. Евр. 1, 5. 5, 5.). Такимъ образомъ, *машіах* кромѣ буквальнаго значенія: «человѣкъ, помазанный священнымъ елеемъ», получаетъ еще значеніе образное, свойственное, какъ мы видѣли, глаголу *машах*, и употребляется о лицахъ, пріобщившихся Духу Святому, получившихъ отъ Бога особыя духовныя дарованія и полномочія для совершенія дѣла Божія, устроенія царства Божія на землѣ. А такъ какъ въ Ветхомъ Завѣтѣ это царство Божіе сосредоточивалось въ еврейскомъ царствѣ, то, естественно, помазанниками Божіими называются люди, имѣвшіе особенное вліяніе на судьбу именно евреевъ: ихъ первосвященники и особенно

[170] Hahn, 67, Fraidl, 6, cf. Wieseler, 201.

цари. Но уже во 2-мъ псалмѣ можно видѣть, что этимъ именемъ называется и Тотъ, служить Которому призываются всѣ «цари и судьи земли» (ст. 10. 11. 12.),—будущій Спаситель не только Израиля, но и всѣхъ народовъ.

Нагид есть также отглагольное прилагательное, образованное по той же формѣ, что и *машіах*, и значитъ собственно: «возвышенный, высокій», затѣмъ—«князь», т. е. вообще человѣкъ, возвышающійся надъ остальнымъ народомъ по своему общественному положенію. Это имя употребляется какъ о князьяхъ въ собственномъ смыслѣ, о привиллегированномъ и приближенномъ къ царю сословіи, такъ и о военачальникахъ (1 Пар. 13. 1. 2 Пар. 32, 21.), и о священникахъ—князьяхъ храма (*начальники дому Господня* 1 Пар. 9, 11. 2 Пар. 31, 13. и др.) [171].

Соединеніе этихъ двухъ словъ: *машіах нагид* толкуется различно. Но должно признать, какъ неоспоримое, что *машіах* здѣсь не прилагательное, а существительное имя, такъ какъ оно стоитъ впереди; по правилу же [172], прилагательное имя должно стоять позади того существительнаго, которому оно служитъ опредѣленіемъ; — исключенія весьма рѣдки [173]. Такъ и слово *машіах*, когда употребляется въ качествѣ прилагательнаго, ставится позади существительнаго,—напр., въ приведенномъ выше примѣрѣ: *гаккоген гаммашіах* «помазанный священникъ» Лев. 4, 3. дал. Нельзя считать прилагательнымъ и *нагид*, такъ какъ оно употребляется всегда въ значеніи существительнаго. *Машіах нагид* должно переводить: «помазанникъ-князь» и разумѣть здѣсь такое лицо, которое, будучи прежде всего носителемъ Духа Святого, является въ то же время и облеченнымъ властію. Какое же это лицо? Очевидно, такимъ лицомъ можетъ быть только Мессія, называемый прямо Княземъ у Іс. 55, 4. и часто описываемый въ В. Завѣтѣ такими чертами, которыя говорятъ о Его силѣ и власти: *Яко отроча родися намъ, Сынъ и дадеся намъ, егоже начальство бысть на рамѣ Его, и нарицается имя Его:——Богъ*

---

[171] Ср. Gesenius, 518.

[172] См. Евр. грамматику Гезеніуса § 112, 1.

[173] Ibid. прим. 1.

крѣпкій, Властелинъ, Князь мира (Ис. 9, 6.); *Азъ Господь буду имъ въ Бога, и рабъ Мой Давидъ Князь средь ихъ* (Іез. 34, 24.); изъ Виѳлеема *изыдетъ Старѣйшина, еже быти въ князя во Израили* (Мих, 5, 2.). Такимъ образомъ, названіе *нагид* «князь» вполнѣ прилично Мессіи. О томъ же, насколько приличествуетъ Ему имя *машіах*, Χριστός, Помазанникъ, свидѣтельствуетъ то обстоятельство, что это имя въ Новомъ Завѣтѣ стало обычнымъ именемъ Искупителя рода человѣческаго. Замѣчательно, что Мессія названъ здѣсь не царемъ, מֶלֶךְ, а Княземъ, *нагид*. Съ одной стороны, этимъ какъ бы указывается, что Мессія будетъ не мірскимъ царемъ, *мелек*, что царство Его *нѣсть отъ міра сего* (Іоан. 18, 36.); съ другой стороны, названіе это прилично Ему и потому, что Онъ явился на землю не отъ Своего имени, а какъ Посланникъ Отца, какъ Князь Царя небеснаго (Іоан. 5, 30. 6, 38. и мн. др.). Въ виду всего этого большинство новѣйшихъ толкователей, подобно древнимъ, относятъ слова *машіах нагид* «Помазанникъ-Князь» къ Іисусу Христу. Даже нѣкоторые изъ раціоналистовъ вынуждены признать, что «если и не прямо необходимо, то все-таки очень естественно» разумѣть здѣсь, равно какъ и въ стихѣ 26-мъ, именно Іисуса Христа [174].

Но другіе несогласны съ такимъ мнѣніемъ и стараются въ еврейской исторіи отъ возвращенія изъ плѣна до предъ-христіанскаго времени отыскать такое лицо, которое могло бы быть названо *машіах нагид*. Одни думаютъ, что это языческій царь, Киръ [175] или даже Навуходоносоръ [176]. Но языческій царь никогда не можетъ быть названъ прямо, безъ дальнѣйшихъ объясненій, «помазанникомъ», потому что, какъ мы видѣли, это имя принадлежитъ единственно теократическимъ вождямъ еврейскаго народа. Указываютъ на то, что такъ названъ Киръ у Ис. 45, 1: *сице глаю-*

---

[174] Bertholdt, vid. Hengstenberg, 460.

[175] По примѣру Саадіи Гаона и Раши, такъ думаютъ Ewald 434, Hitzig 159, Lengerke, 443—444, Zöckler, 179, Cornill 8, Behrmann 66, Г. П. Павскій—см. Хр. Чтеніе 1872, II, стр. 131, и мн. др.—см. таблицу у Rohling'a. S. 285.

[176] Eichhorn, Ammon—см. ту же таблицу.

летъ Господь Богъ помазанному моему Киру... Но и здѣсь теократическое значеніе этого наименованія ясно видно изъ дальнѣйшихъ словъ пророка: *ради раба моего Іакова, и Израиля избранна́го моего, азъ прозову тя именемъ твоимъ, и пріиму тя* (ст. 4) и т. д. Киръ называется помазанникомъ по своему особому значенію для еврейскаго народа и вообще для домостроительства Божія на землѣ; онъ называется такъ потому, что Богъ надѣлилъ его особыми дарами для свершенія Своихъ цѣлей, что имъ положено начало познанія истиннаго Бога на землѣ, какъ видно изъ его указа (1 Ездр. 1, 2), что, наконецъ, освобожденіе имъ евреевъ изъ Вавилонскаго плѣна было прообразомъ будущаго спасенія всѣхъ людей изъ рабства діаволу. Въ Ветхомъ Завѣтѣ извѣстенъ еще случай, когда пророкъ Илія, по повелѣнію Божію, помазалъ на царство спрійское спріянина Азаила (3 Цар. 19, 15. 16). Но и это помазаніе имѣло чисто теократическое значеніе: Азаилъ долженъ былъ содѣйствовать Божественному промыслу при искорененіи язычества въ Израилѣ; это видно изъ того, что вмѣстѣ съ Азаиломъ Богъ повелѣваетъ помазать Іуя царемъ Израильскимъ и Елисея пророкомъ: *и будетъ, спасаемаго отъ оружія Азаилева убіетъ Іуй, и спасаемаго отъ оружія Іуина убіетъ Елисей, и оставиши во Израили седмь тысящъ мужей, вся колѣна, яже не преклониша колѣна Ваалу, и всяка уста, яже не молишася ему* (ст. 17—18). Въ такомъ же теократическомъ смыслѣ и Киръ названъ помазанникомъ Божіимъ, и этотъ смыслъ разъясняется пророкомъ непосредственно вслѣдъ за этимъ наименованіемъ; въ откровеніи же о седьминахъ названіе «Помазанникъ-Князь» стоитъ безъ всякаго объясненія. Это откровеніе предназначено для Даніила и для всѣхъ израильтянъ, ждавшихъ избавленія изъ плѣна и царства Мессіи; но ни одинъ вѣрующій израильтянинъ, услышавъ слова *машіах нагид*, не подумалъ бы о языческомъ царѣ, а именно—о Мессіи, потомкѣ царя Давида. Нѣкоторые подъ «помазанникомъ-княземъ» разумѣютъ первосвященника іудейскаго, и именно—Іисуса, сына Іоседекова [177] (по

[177] Herzfeld, Grätz,—см. ту же таблицу.

примѣру св. Ипполита римскаго [178]), или Онію III [179]. Евсевій Кесарійскій видитъ здѣсь весь рядъ (κατάλογος) первосвященниковъ іудейскихъ отъ вавилонскаго плѣна до Христа [180]. Но неосновательность послѣдняго мнѣнія очевидна: слова «Помазанникъ-Князь» могутъ означать только одно опредѣленное лицо, въ собирательномъ же значеніи ни одно изъ этихъ словъ не употребляется. Нельзя относить этого наименованія и къ Іисусу, сыну Іоседека, или къ Онію III; хотя первосвященники іудейскіе и назывались иногда «помазанниками» и даже «князьями», но ни то, ни другое названіе, ни оба эти названія вмѣстѣ не составляли отличительнаго наименованія первосвященниковъ, такого, по которому можно было бы тотчасъ узнать, что здѣсь говорится именно о первосвященникѣ. Съ другой стороны, первосвященниковъ было много, и Іисусъ и Онія ничѣмъ не выдѣлялись изъ ряда другихъ: почему же именно они, именно тотъ, а не другой изъ нихъ долженъ быть названъ «помазанникомъ-княземъ»? Нѣкоторые, далѣе, «помазанникомъ-княземъ» считаютъ одного изъ еврейскихъ вождей времени переселенія изъ плѣна на родину: Неемію (Ибн-Езра), Зоровавеля (Юлій Иларіанъ [181]), или Ездру [182]; но и эти лица не могутъ здѣсь разумѣться, такъ какъ они не «помазанники»: ни царь, ни первосвященникъ. Наконецъ, Абарбанель колеблется между тремя лицами: Зоровавелемъ, первосвященникомъ и Киромъ [183], не зная, кого изъ нихъ считать пома-

---

[178] Χριστοῦ δὲ τίνος λέγει, ἀλλ' ἢ Ἰησοῦ τοῦ Ἰωσεδέκ— —πάντες γὰρ οἱ βασιλεῖς καὶ οἱ ἱερεῖς χριστοὶ προσηγορεύοντο. διὰ τὸ χρίεσθαι αὐτοὺς τῷ ἐλαίῳ τῷ ἁγίῳ.— — Οὗτοι οὖν τὸ κύριον ὄνομα ἕφερον μεθ' ἑαυτῶν, τὸν τύπον προμηνύοντες καὶ τὴν εἰκόνα προφέροντες.—M. 10 gr. 652.

[179] Wieseler 123.

[180] — —Φημὶ— —τὸν ἐν τῇ προκειμένῃ γραφῇ δηλούμενον Χριστὸν ἡγούμενον— — οὐκ ἄλλον εἶναι τοῦ καταλόγου τῶν μετὰ τὴν προφητείαν καὶ τὴν ἀπὸ Βαβυλῶνος ἐπάνοδον ἡγησαμένων τοῦ λαοῦ ἀρχιερέων, οὓς χριστοὺς ἔθος ἀποκαλεῖν τῇ Γραφῇ. M. 22 gr. 612. Въ новое время взглядъ Евсевія раздѣляютъ Graetz и Bevan, p. 155—156.

[181] Revertuntur igitur populi de Babylonia, habentes secum ducem Zorobabel. de quo mentio facta est ab angelo ad Danielem: usque ad christum ducem hebdomadae septem. Omnis enim rex populi Dei in divina lege christus appellatus est. M. 13 lat. 1103; изъ новыхъ—Eckermann, см. таблицу у Rohling'a, S. 285.

[182] Steudel—vid. Keil S. 295.

[183] Vid. Fraidl 133.

заннпкомъ-княземъ, и этимъ лучше всего доказываетъ невозможность относить эти слова къ кому бы то ни было, кромѣ Самого Христа.

Далѣе указывается число седьминъ, имѣющихъ протечь между выходомъ повелѣнія о возстановленіи и построеніи Іерусалима и явленіемъ Помазанника-Князя: *седминъ седмь, и седминъ тестьдесятъ двѣ*. Въ еврейскомъ текстѣ этотъ промежутокъ опредѣляется только семью седьминами: שָׁבֻעִים שִׁבְעָה; атнахъ, поставленный подъ שִׁבְעָה, показываетъ, что слѣдующія слова: וְשָׁבֻעִים שִׁשִּׁים וּשְׁנַיִם [184] масореты относили къ дальнѣйшему, читая такимъ образомъ: «отъ выхода слова——до помазанника-князя семь седьминъ; и въ продолженіе шестидесяти двухъ седьминъ возстановится и построится» и т. д. Такое раздѣленіе двухъ данныхъ здѣсь чиселъ принято какъ всѣми еврейскими учеными, такъ и нѣкоторыми изъ христіанскихъ толкователей, древнѣйшихъ (ср. Климентъ Александрійскій [185], св. Ипполитъ [186], Юлій Иларіанъ [187]), средневѣковыхъ (напр., Петръ Альфонсъ [188]) и весьма многихъ новѣйшихъ, кромѣ только тѣхъ, которые толкуютъ откровеніе о седьминахъ прямо-мессіански.

Но всѣ древніе переводы, вѣрные въ общемъ еврейскому тексту, не подтверждаютъ такого раздѣленія 7 и 62 седьминъ. Переводъ Ѳеодотіона, освященный всеобщимъ употребленіемъ въ христіанской Церкви, читаетъ это мѣсто такъ: ἀπὸ ἐξόδου λόγου——ἕως Χριστοῦ ἡγουμένου ἑβδομάδες ἑπτὰ καὶ ἑβδομάδες ἑξήκοντα δύο.

---

[184] Одинъ кодексъ K. измѣняетъ שבעה въ שנה: «70 лѣтъ», 2 кодекса—въ ששה: «семьдесятъ шесть», и одинъ совсѣмъ опускаетъ это слово; вмѣсто ושבעים въ одномъ кодексѣ K. читается שבוע; вмѣсто ששים 1 кодексъ K. и 1 de-R. имѣютъ וששים, 1 de-R.—ששה и 1—שבעים. Всѣ эти разночтенія представляютъ собою произвольныя поправки или ошибки переписчиковъ. Ср. v. Lennep, 31.

[185] Ὅτι μὲν οὖν ἐν ἑπτὰ ἑβδομάσιν ᾠκοδομήθη ὁ ναός, τοῦτο φανερόν ἐστι· καὶ γὰρ ἐν τῷ Ἔσδρᾳ γέγραπται. Καὶ οὕτως ἐγένετο Χριστὸς βασιλεὺς Ἰουδαίων ἡγούμενος, πληρουμένων τῶν ἑπτὰ ἑβδομάδων ἐν Ἱερουσαλήμ· καὶ ἐν ταῖς ἑξηκονταδύο ἑβδομάσιν ἡσύχασεν ἅπασα ἡ Ἰουδαία. καὶ ἐγένετο ἄνευ πολέμων. M. 8 gr. 856.

[186] См. его переводъ, M. 10 gr. 652.

[187] См. прим. 139.

[188] Vid. Fraidl.

Вульгата такъ же: hebdomades septem et hebdomades sexaginta duae erunt. Древне-латинскій переводъ, начинающійся въ сохранившемся до насъ кодексѣ именно отсюда, передаетъ эти числа въ общемъ согласно съ Ѳеодотіоновымъ: hebdomades septem et hebdomades septuaginta duas. Чтеніе septuaginta нужно объяснить ошибкой, происшедшей подъ вліяніемъ перевода LXX-ти, который передаетъ разбираемыя числа такимъ образомъ: καὶ μετὰ ἑπτὰ καὶ ἑβδομήκοντα καὶ ἑξήκοντα δύο, и затѣмъ переходитъ прямо къ 26-му стиху. Во всякомъ случаѣ, и этотъ переводъ, при всей его испорченности, подтверждаетъ ту мысль, что 62 седьмины не должны быть отдѣляемы отъ семи седьминъ такъ, какъ сдѣлано это въ масоретскомъ текстѣ. О сирскомъ переводѣ трудно сказать, примыкаетъ ли онъ къ масоретскому тексту или къ переводамъ. Послѣднее вѣроятнѣе въ виду того, во-первыхъ, что онъ даетъ два terminos ad quos перваго періода седьминъ, переводя начало 25-го стиха такъ: «отъ исхода слова до возстановленія Іерусалима и до пришествія Помазанника-Царя седьминъ семь и седьминъ шестьдесятъ и двѣ»: пришествіе Помазанника-Царя переводчикъ относитъ, вѣроятно, къ концу всѣхъ 69 седьминъ. Во-вторыхъ, преп. Ефремъ Сиринъ, толкуя по переводу Пешито, полагаетъ пришествіе Христа именно подъ конецъ 70-ти, а не 7-ми седьминъ [189]. Слѣдуя переводу Ѳеодотіона, и большинство древнихъ Отцовъ и учителей Церкви (напр., св. Ипполитъ Римскій, блаж. Ѳеодоритъ, Африканъ, Евсевій. Василій Селевкійскій, Полихроній и др.) относили пришествіе Христа не къ концу 7, а къ концу 62 седьминъ. Такъ же думаютъ и многіе новѣйшіе толкователи, защитники прямо-мессіанскаго значенія откровенія о седьминахъ [190].

---

[189] «Какъ, по сказанному тебѣ мною, при началѣ семидесяти седьминъ (будетъ) возобновленіе города, такъ въ концѣ 70-ти седьминъ, какъ я открылъ тебѣ, придетъ Христосъ: и до пришествія Христова 70 седьминъ. И какъ сооруженіе города продолжится 7 седьминъ, такъ послѣ 62 седьминъ потребится Мессія,——и не будетъ уже для него (города) другого Мессіи. Городъ же святой разорится съ царемъ грядущимъ, т. е. съ царемъ Христомъ который придетъ и будетъ распятъ». Op. omnia t. II p. 222.

[190] Hengstenberg, Häverniсk, Auberlen, Knabenbauer etc.

Противъ того раздѣленія седьминъ, которое указано въ масоретскомъ текстѣ, говорятъ многія соображенія. Прежде всего укажемъ слѣдующее. По масоретскому тексту ходъ мыслей въ 25 стихѣ представляется такимъ: отъ выхода слова о возстановленіи Іерусалима и до явленія Помазанника-Князя пройдетъ семь седьминъ, а затѣмъ начнется возстановленіе Іерусалима, которое и продолжится цѣлыхъ 62 седьмины. Но мы видѣли, что слово о возстановленіи Іерусалима слѣдуетъ понимать въ смыслѣ повелѣнія построить Іерусалимъ, повелѣнія, изшедшаго отъ Бога. А если такъ, то было бы противно здравому смыслу думать, что Божіе повелѣніе построить городъ, данное въ самомъ началѣ періода седьминъ, оставалось безъ исполненія цѣлыхъ семь седьминъ. Далѣе, если принять отдѣленіе 62 седьминъ отъ семи, то для построенія города назначается слишкомъ большое количество времени; по масоретскому тексту выходитъ, что «въ продолженіе 62 седьминъ» будетъ возстановленъ Іерусалимъ: столь продолжительный срокъ для постройки города (434 года) рѣшительно противорѣчитъ исторіи. Наконецъ, противъ раздѣленія первыхъ двухъ періодовъ 70-ти седьминъ въ данномъ мѣстѣ говоритъ и контекстъ, если, конечно, онъ не искаженъ толкованіемъ съ предвзятою мыслью. Было доказано, что подъ наименованіемъ *машіах нагид* необходимо разумѣть будущаго Мессію, Спасителя евреевъ и язычниковъ. Если принять отдѣленіе семи седьминъ отъ шестидесяти двухъ, Мессія долженъ явиться послѣ первыхъ семи седьминъ. Но въ слѣдующемъ же, 26-мъ стихѣ читается: «и послѣ шестидесяти двухъ седьминъ будетъ убитъ Помазанникъ»; очевидно, Помазанникъ этотъ есть тотъ же, о которомъ говорилось раньше, иначе трудно понять, почему здѣсь сказано только о явленіи перваго и о смерти второго. Если же такъ, то нужно будетъ допустить, что одно и то же лицо является послѣ семи первыхъ седьминъ и умираетъ только черезъ 62 седьмины послѣ этого, т. е., что жизнь его продолжается больше 434 лѣтъ!

Итакъ, несомнѣнное преимущество правильнаго раздѣленія чиселъ въ 25 стихѣ принадлежитъ древнимъ переводамъ, а не

масоретскому тексту. Атнахъ, поставленный масоретами для отнесенія пришествія Мессіи къ концу семи, а не шестидесяти двухъ седьминъ, не можетъ имѣть важнаго значенія. Масореты могли ошибаться, могли даже намѣренно дать невѣрное толкованіе тексту, какъ они дѣлали иногда въ другихъ мѣстахъ Библіи; нельзя даже отвергать того предположенія, что масореты понимали мессіанское значеніе откровенія о седьминахъ, видѣли справедливость христіанскихъ толкованій его и, не рѣшившись искажать его текстъ, поставили свои знаки такъ, чтобы ослабить силу откровенія: до пришествія Мессіи не 69, а 7 седьминъ. Съ другой стороны, какъ сознаются даже защитники масоретскаго дѣленія седьминъ [191], атнахъ не всегда служитъ сильнымъ раздѣлительнымъ акцентомъ (въ родѣ нашей точки съ запятой), а иногда указываетъ только остановку и отдыхъ при чтеніи. Примѣръ такого употребленія атнаха можно видѣть во 2 ст. 9-ой главы книги Даніила: *въ лѣто первое царства его, азъ Даніилъ разумѣхъ въ книгахъ* (בַּסְּפָרִים) *число лѣтъ, о немже бысть слово Господне ко Іереміи пророку;* какъ бы ни переводили это мѣсто: «я обратилъ вниманіе въ книгахъ на число лѣтъ», или: «я обратилъ вниманіе на книги, что число лѣтъ»,—въ томъ и другомъ случаѣ слова «въ книгахъ» не могутъ быть отдѣлены отъ послѣдующихъ чѣмъ-то въ родѣ точки съ запятой. Таково же употребленіе атнаха и въ поэтическихъ книгахъ В. Завѣта [192]; напр., Пс. 35, 8: *яко умножилъ еси милость твою, Боже, сынове же человѣчестіи* (здѣсь атнахъ въ еврейскомъ текстѣ) *въ кровъ крилу Твоею надѣятися имутъ;* Пс. 83, 3: *желаетъ и скончава́ется душа моя во дворы* (атнахъ) *Господни, сердце мое и плоть моя* (атнахъ) *возрадовастася о Бозѣ живѣ.* Если атнахъ имѣетъ такую же силу и въ 9, 25 книги Даніила, то онъ нисколько не препятствуетъ тому, чтобы относить пришествіе Мессіи къ концу 69 седьминъ.

При этомъ является недоумѣніе: если «отъ исхода слова—— до Помазанника-Князя» не 7 только, а 69 седьминъ, то почему здѣсь не дано прямо это число, зачѣмъ оно расчленено на двѣ

[191] Ср. Keil 296.

[192] См. Евр. Грамматику Гезеніуса § 15, A. I. 2.

части: «семь седьминъ и 62 седьмины»? Цѣль такого дѣленія выясняется изъ слѣдующаго соображенія. Началомъ седьминъ служитъ «выходъ повелѣнія о возстановленіи и построеніи Іерусалима»; но это построеніе не можетъ совершиться въ короткое время даже при благопріятныхъ обстоятельствахъ, между тѣмъ немного далѣе сказано, какъ увидимъ, что оно совершится при трудныхъ обстоятельствахъ, «въ стѣсненіи временъ». Поэтому нужно думать, что первыя семь седьминъ назначаются именно для построенія города: въ продолженіе семи седьминъ (49 лѣтъ) построится городъ, а спустя 62 седьмины послѣ окончанія постройки, т. е. черезъ 69 седьминъ отъ начала седьминъ явится Мессія. Такому порядку этихъ событій соотвѣтствуетъ и дальнѣйшее содержаніе откровенія, гдѣ дается болѣе подробное раскрытіе указанныхъ событій: тамъ сначала (ст. 25) говорится о построеніи города, а затѣмъ уже о Мессіи (ст. 26—27); между тѣмъ, если бы смыслъ первой половины 25 стиха былъ таковъ: до Мессіи 7 седьминъ, а въ продолженіе слѣдующихъ 62 седьминъ будетъ построенъ Іерусалимъ,—то и дальнѣйшее содержаніе откровенія должно бы было итти въ обратномъ порядкѣ: сначала была бы рѣчь о Мессіи и затѣмъ—о городѣ. Наконецъ, есть еще возраженіе противъ соединенія семи и шестидесяти двухъ седьминъ. Оно опирается на то, что въ 26-мъ стихѣ сказано: «послѣ 62-хъ седьминъ», а не «послѣ 69 седьминъ». Но это возраженіе имѣло бы силу только въ томъ случаѣ, если бы приходилось совсѣмъ сливать въ одно оба періода; если же этого нѣтъ, то возраженіе падаетъ само собою: въ 26-мъ стихѣ, при указаніи послѣдовательности періодовъ, а не разстоянія ихъ отъ начала седьминъ, берется только послѣдній изъ протекшихъ періодовъ, а не оба періода вмѣстѣ.

Послѣ указанія числа седьминъ, изъ которыхъ будутъ состоять два первые періода, ангелъ говоритъ пророку: *И возвратится, и сограднтся стогна и забрала,* по-еврейски: וְשָׁבָה וְנִבְנְתָה רְחוֹב וְחָרוּץ [193]. Первыя слова, очевидно, составляютъ

[193] Одинъ кодексъ К. имѣетъ וחרוץ вмѣсто רחרוץ; v. Lenner, вполнѣ сознавая, что это разночтеніе, какъ и большинство другихъ, произошло вслѣдствіе

повтореніе предшествующихъ *лэгашиб вэлибнот*, только въ опредѣленной формѣ: «возстановится и построится»; съ этимъ согласны всѣ новые толкователи, многіе древніе (напр., св. Ипполитъ [194], Юлій Иларіанъ [195], псевдо-Кипріанъ [196]), такъ передаютъ и нѣкоторые переводы,—Пешито: «снова построитъ», Вульгата: et rursum aedificabitur. Но переводъ Ѳеодотіона, передавъ предшествующее *лэгашиб* чрезъ τοῦ ἀποκριθῆναι, здѣсь уже не повторяетъ этого слова, а даетъ новое: καὶ ἐπιστρέψει καὶ οἰκοδομηθήσεται, какъ и LXX въ соотвѣтствующемъ мѣстѣ: καὶ πάλιν ἐπιστρέψει, καὶ ἀνοικοδομηθήσεται; къ Ѳеодотіонову переводу примыкаетъ славянскій, древнелатинскій: et conuertet et aedificabitur и др. За Ѳеодотіоновымъ переводомъ послѣдовали и нѣкоторые толкователи свято-отеческаго времени, напр., Тертулліанъ [197] и Василій Селевкійскій [198]. Послѣдній основываетъ на этомъ переводѣ довольно оригинальное толкованіе. Ссылаясь на слова Пс. 89, 13. и 79, 15., Василій утверждаетъ, что ἐπιστρέψει значитъ то же, что ἐπισκέψεται: «посѣтитъ» Богъ Іерусалимъ; подъ этимъ «посѣщеніемъ» Василій разумѣетъ судьбу Іерусалима послѣ взятія его римлянами, т. е. построеніе надъ его развалинами Элій Капитолины.

Изъ приведенныхъ переводовъ видно, что всѣ они (кромѣ Пешито) въ началѣ разбираемыхъ словъ имѣютъ союзъ «и»: и возвратится и построится...; одинъ евр. кодексъ имѣетъ ושוב вмѣсто תשוב. Не было ли и въ подлинномъ текстѣ союза ו

ошибки писца, думаетъ все-таки, что оно было бы здѣсь весьма умѣстно: ירוץ онъ производитъ отъ глагола רצץ «разламывать» и «быть безсильнымъ», и даетъ такой переводъ: Іерусалимъ будетъ построенъ широко, но будетъ безсиленъ, незначителенъ. Но самъ авторъ тотчасъ же и отказывается отъ своего предположенія. Bl. 36.

[194] См. его переводъ—M. 10 gr. 656.

[195] См. прим. 139; ср. M. 13 lat. 1103.

[196] Vid. Fraidl.

[197] См. его переводъ M. 2 lat. 613.

[198] Τὸ δὲ, καὶ ἐπιστρέψει. ἀντὶ τοῦ, ἐπισκέψεται, λέγει. Ὅτι δὲ τοῦ ἐπιστρέψαι τὸν Θεὸν τὸ ἐπισκέψασθαι σημαίνει ἡ Γραφὴ, ἔστι μαθεῖν ἀπὸ τῶν προφητῶν, καὶ μάλιστα ἀπὸ τοῦ Δαυίδ— —(Пс. 89, 13. 79, 15.).—Οὕτως καὶ ὁ ἄγγελος τὸ ἐπιστρέψαι τὸ ἐπισκέψασθαι λέγων, τὰ μετὰ τὴν ἅλωσιν τὴν ἐπὶ Οὐεσπασιανοῦ λέγει.— —τὸ δὲ, οἰκοδομηθήσεται καὶ πλατεῖα καὶ περίτειχος, τὴν τοῦ ναοῦ πλατεῖαν καὶ τὸ τεῖχος τῆς καλουμένης Αἰλίας· ὃ ᾠκοδόμησεν Αἴλιος Τίτος ἐν αὐτῷ τῷ τόπῳ μετὰ τὴν καταστροφήν. M. 85 gr. 408—409.

ותשוב? Тогда и изъ евр. текста, какъ и изъ переводовъ, было бы ясно видно, что здѣсь начинается новый рядъ мыслей, и тогда тѣмъ болѣе было бы невозможно переводить: «въ продолженіе 62 седьминъ возстановится и построится Іерусалимъ», какъ переводятъ евр. текстъ большинство современныхъ экзегетовъ.

Слѣдующія слова: רְחוֹב וְחָרוּץ естественнѣе всего считать только описаніемъ ранѣе названнаго *Йэрушалаим*. Но что собственно значатъ эти слова, рѣшительно сказать очень трудно. *Рэхоб* (отъ רָחַב быть широкимъ) имѣетъ болѣе или менѣе твердо установленное значеніе: «улица, площадь» (ср. Быт. 19, 2. Суд. 19, 20. 2 Цар. 21, 12. 2 Пар. 32, 6. и др.). Но что касается *харуц*, то относительно значенія его въ разбираемомъ мѣстѣ очень спорятъ. Всѣ древніе переводы и толкованія согласны только въ томъ, что слово это связано съ предшествующимъ, а не съ послѣдующимъ, и не стоитъ отдѣльно,—какъ думаютъ нѣкоторые въ новое время. Такъ, Θеодотіонъ: πλατεία καὶ τεῖχος (9 рукописей изъ 30-ти у Holmes'a, въ томъ числѣ александрійскій кодексъ: περίτειχος), древне-латинскій: platea et murus, древне-слав.: *широцѣ и забрала;* Пешито: «(снова построятъ) Іерусалимъ (винительный падежъ), площади его и улицы его»; LXX: (снова будетъ выстроенъ) εἰς πλάτος καὶ μῆκος, «въ ширину и длину»; Вульгата: platea et muri. Такимъ же образомъ соединяютъ эти слова и древніе толкователи, напр. Тертулліанъ [199], псевдо-Кипріанъ [200] и многіе другіе, прямо слѣдовавшіе переводу Θеодотіона; такъ и еврейскіе ученые: Саадіа Гаонъ (*рэхоб*—улицы и площади Іерусалима, а *харуц*—дворы храма), Раши (*харуц*—городскіе рвы), Ибн-Езра («укрѣпленія и стѣны»), Абарбанель («улицы и стѣны») [201]. При такомъ согласіи древнихъ переводовъ и толкованій разбираемыхъ словъ, не остается ничего болѣе, какъ принять данный въ нихъ смыслъ слова *харуц* и считать его за обозначеніе городскихъ укрѣпленій. И *харуц*, дѣйствительно, можетъ имѣть такое значеніе. Происходя отъ חָרַץ

[199] Et aedificabitur in laetitiam (al.: latitudinem) et convallationem. M. 2 lat. 613.
[200] «Platea et murus», vid. Fraidl, S. 54, Anm. 3.
[201] Vid. Fraidl.

«быть острымъ, рѣзать», отсюда—«вырѣзать, выкапывать», *харуц* значитъ собственно: «вырѣзанный, выкопанный»,—отсюда: «ровъ» (крѣпостной), подобно халдейскому חְרִיץ [202]. Противъ послѣдней аналогіи возражаютъ, что халдейское слово *хариц* значитъ не «крѣпостной ровъ», а «водопроводъ» [203]; но и это все-таки говоритъ въ пользу того, что *харуц* можетъ значить «ровъ»: понятіе «рва» отъ понятія водопровода совсѣмъ недалеко. Говорятъ, «что халдейское значеніе только тогда могло бы быть призываемо на помощь, если бы въ еврейскомъ языкѣ глаголъ *харац* вовсе не встрѣчался въ сколько-нибудь подходящемъ значеніи» [204]. Но въ еврейскомъ языкѣ болѣе или менѣе опредѣленно выяснено только значеніе самого глагола *харац*, а не производнаго отъ него слова *харуц;* съ другой стороны, хотя и вѣрно, что не слѣдуетъ кстати и некстати прибѣгать къ родственнымъ языкамъ для опредѣленія значенія еврейскихъ словъ, но по отношенію къ книгѣ Даніила халдейскій языкъ долженъ имѣть очень большое значеніе, такъ какъ цѣлая половина ея написана на этомъ языкѣ, да и языкъ остальной половины изобилуетъ халдаизмами. Что же касается слова *харуц*, то значеніе его въ еврейскомъ языкѣ далеко не опредѣлено. Такъ, оно, кромѣ ясно вытекающаго изъ глагола *харац* значенія: «опредѣленіе», значитъ еще: «золото» (Пс. 67 [68], 14. Прит. 3, 14. 8, 10. 19. 16, 16. Зах. 9, 3.), затѣмъ, какъ прилагательное: «острый, съ острыми зубцами» (о молотильныхъ валахъ: Пс. 28, 27. 41, 15. Ам. 1, 3. Іов. 41, 22.). Трудно понять, что́ общаго между этими значеніями, если не признать, что въ нихъ лежитъ значеніе «выкапыванія, вырѣзанія»: золото выкапывается изъ земли, а зубцы въ молотильныхъ валахъ получаются посредствомъ вырѣзыванія въ деревѣ продольныхъ углубленій, рóвиковъ. Такимъ образомъ *харуц* можетъ имѣть значеніе: «выкопанный, вырѣзанный», а отсюда—«ровъ»; послѣднее значеніе и есть наиболѣе вѣроятное въ 25-мъ стихѣ.

---

[202] Fürst, Concordantiae I, 438, Gesenius, 11 Aufl., 293, Siegfried u. Stade, 223.

[203] Hengstenberg, 470; Іов. 38, 25: «Кто проводитъ протоки для изліянія воды», Таргумъ: חרוצי מיא, v. Lengerke, 35—36.

[204] Hengstenberg, ibid.

Оба эти слова вмѣстѣ: *рэхоб вэхаруц* «улица и ровъ» взяты здѣсь для обозначенія всего Іерусалима,—во-первыхъ, какъ города, населеннаго мѣста («улица»), и, во-вторыхъ, какъ крѣпости («ровъ»). Такой способъ выраженія, именно употребленіе словъ попарно, неоднократно встрѣчается въ откровеніи о седьминахъ: «народъ и городъ», «видѣніе и пророкъ», «возстановитъ и построитъ», «городъ и храмъ», «жертва и приношеніе». Даже и это частое употребленіе такихъ парныхъ словъ можетъ говорить за то, что *рэхоб вэхаруц* есть одинъ изъ примѣровъ его, и что эти слова не должно раздѣлять[205]. И сказуемое при этихъ словахъ: *ташуб вэнибнэта* «возстановится и построится», стоитъ въ единственномъ числѣ, а не во множественномъ, потому именно, что они разсматриваются, какъ обозначеніе одного предмета, города Іерусалима.

Большинство новыхъ толкователей отвергаютъ общепринятое почти въ древности значеніе слова *харуц* и стараются найти другое, болѣе соотвѣтствующее значенію глагола *харац*. Основываясь, съ одной стороны, на Іов. 14, 5. Іс. 10, 23. Іоил. 3, 14., гдѣ *харуц* значитъ: «твердо опредѣленный», съ другой—на двукратномъ употребленіи формъ глагола *харац* въ послѣднихъ стихахъ откровенія о седьминахъ, они и здѣсь переводятъ *вэхаруц* такимъ образомъ: «и это твердо опредѣлено»[206]. Но уже нестройность мыслей, получающаяся вслѣдствіе такого перевода, говоритъ противъ него: «и возстановится и построится улица, и это твердо опредѣлено, и въ стѣсненіи временъ». При этомъ послѣднее предложеніе, если оно относится къ строенію города, будетъ отстоять слишкомъ далеко отъ тѣхъ словъ, къ которымъ относится; къ непосредственно же предшествующему оно относиться не можетъ, такъ какъ тогда не получалось бы никакого смысла: «это твердо опредѣлено въ стѣсненіи временъ». Это со-

---

[205] Ср. Rohling, 272.

[206] Hitzig 161, Hengstenberg 470, Hävernick 373—374, v. Lengerke 451, Bleek, Kranichfeld—vid. Wolf. 46; cf. v. Lennep 36—37. Graetz и Bevan стараются исправить евр. текстъ и вмѣсто חרוץ читаютъ חוץ «стѣна» или חוץ «улица» (Bevan 156—157); Behrmann (S. 63) думаетъ, что здѣсь разумѣются какія-то опредѣленныя мѣстности въ Іерусалимѣ. Но всѣ эти догадки не имѣютъ за себя никакихъ основаній.

знаютъ и сами защитники такого перевода и стараются устранить тѣмъ, что указываютъ на тождество и одновременность опредѣленія Божія и его исполненія,—подобно «слову» 25-го стиха,—и переводятъ: «и это (построеніе Іерусалима) будетъ твердо опредѣлено (т. е. непремѣнно исполнится), хотя и въ стѣсненіи временъ» [207]. Но, не говоря уже о натянутости такого толкованія, тогда рѣшительно непонятно, почему здѣсь стояло бы причастіе *харуц*, когда другіе глаголы, рядомъ съ которыми оно стоитъ, употреблены въ изъявительномъ наклоненіи. Ничего не говоритъ въ пользу новаго перевода слова *харуц* и употребленіе глагола *харац* въ послѣднихъ стихахъ откровенія: если одно производное отъ глагола *харац*, именно חֲרָצָה, употребляется съ отвлеченнымъ значеніемъ: «опредѣленіе», то отсюда вовсе еще не слѣдуетъ, что и другое производное, *харуц*, должно имѣть такой же смыслъ; тѣмъ болѣе, что уже отмѣчены были примѣры употребленія у пророка Даніила одного и того же слова рядомъ въ различныхъ значеніяхъ.

Послѣднія слова 25-го стиха: *и истощатся лѣта* соотвѣтствуютъ переводу Ѳеодотіона: καὶ ἐκκενωθήσονται οἱ καιροί; еврейскія же слова: וּבְצוֹק הָעִתִּים значатъ собственно: «но въ стѣсненіи временъ». Союзъ *вэ* «и» имѣетъ здѣсь, по смыслу, значеніе союза уступительнаго: «хотя, но». *Цок* отъ глагола צוּק «тѣснить», значитъ: «стѣсненіе» и стоитъ здѣсь, какъ nomen regens, т. е. слово, управляющее слѣдующимъ словомъ: *иттим*. Это послѣднее, множественное число отъ עֵת, значитъ: «времена, обстоятельства». Будетъ построенъ Іерусалимъ, «но въ стѣсненіи временъ», т. е. въ трудныя времена, среди неблагопріятныхъ обстоятельствъ.

Трудно объяснить происхожденіе Ѳеодотіонова перевода: καὶ ἐκκενωθήσονται οἱ καιροί [208]. «Можетъ быть, Ѳеодотіонъ считалъ

---

[207] Hengstenberg, 471—472.

[208] Чтеніе: καὶ ἐκκαινωθήσονται οἱ καιροί «и обновятся времена», имѣющееся въ одномъ (42) кодексѣ НР, затѣмъ—у Терт., Ѳеодорита и въ переводѣ армянскомъ, нельзя объяснить нитѣмъ, кромѣ описки, вкравшейся въ одинъ или цѣлую группу греческихъ списковъ.

слово *цок* существительнымъ, происходящимъ отъ корня צרר съ значеніемъ effundere, и затѣмъ свободно переводитъ это выраженіе посредствомъ глагола; или онъ бралъ глаголъ בָּצַק въ значеніи корня בקק» [209]. LXX переводятъ: καὶ κατὰ συντέλειαν καιρῶν, какъ и Пешито: «до конца времени»; переводъ этотъ, вѣроятно, произошелъ изъ чтенія: לְבֶקֶץ; это объясненіе, по крайней мѣрѣ, правдоподобнѣе того, какое даетъ Fraidl, что «переводчикъ, кажется, произвелъ слово בצוק отъ корня בצק, а этому корню далъ значеніе глагола בצע—отрѣзать, кончать» [210]. Только Вульгата правильно передаетъ разбираемыя слова: in angustia temporum.

Толкователи свято-отеческаго времени, разбирая эти слова по переводу Θеодотіона, или ограничиваются краткимъ перифразомъ ихъ, или даютъ имъ довольно натянутое объясненіе (ср., напр., толкованія Ипполихронія [211], блаж. Θеодорита [212], Василія Селевкійскаго [213]). Нѣкоторые, по примѣру Ибн-Езры, подъ «стѣсненіемъ временъ» разумѣютъ краткость времени, въ какое были построены стѣны Іерусалима, какъ это извѣстно изъ Неем. 6, 15. Но въ словѣ *цок* вовсе не заключается понятія «краткости», непродолжительности, а только понятіе «тѣсноты, давленія», почему такое пониманіе не можетъ быть признано правильнымъ.

Итакъ, въ 25 стихѣ періодъ 70 седьминъ расчленяется и указывается содержаніе первыхъ двухъ частей этого періода: семи и 62 седьминъ. Такъ какъ подробности, если желательно, чтобы онѣ были замѣчены, требуютъ больше вниманія, чѣмъ

---

[209] Fraidl, 25.

[210] Fraidl, 7. Также неправдоподобно и объясненіе Wolf'a (S. 29), что LXX, «кажется, читали סרך, συντέλεια, вмѣсто יצרק». Основываясь на переводѣ LXX, Graetz и Bevan (p. 157) предлагаютъ читать לְבֶקֶץ и соединять эти слова со слѣдующими: «и въ концѣ временъ [послѣ 62 седьминъ] будетъ убитъ помазанникъ». При этомъ союзъ וְ въ началѣ 26 стиха уничтожается, или же это начало признается объяснительной вставкой.

[211] Ἐκκ. οἱ κ. Τότε γάρ φησι ἀναλωθήσονται οἱ καιροὶ οὗτοι οἱ προειρημένοι· τουτέστιν ὁ τῶν υλδ' ἐτῶν χρόνος· μεθ' οὓς αὐτίκα χριστὸς τὰς ἐν ἀνθρώποις ποιήσει διατριβάς. Maji t. I, p. 18.

[212] Καὶ ἐκκ. οἱ κ. Τουτέστιν, ὁ πρὸ τῆς οἰκοδομίας χρόνος. M. 81 gr. 1480.

[213] Τὸ δὲ, Καὶ ἐκκ. οἱ καιροί· ὅτι ἐν ταύτῃ τῇ καταστάσει ἔσονται οἱ Ἰουδαῖοι μέχρι συντελείας τῶν καιρῶν. M. 85 gr. 409.

главныя мысли, то ангелъ въ началѣ 25 стиха приглашаетъ пророка къ такому вниманію, а затѣмъ уже обращается къ раскрытію откровенія. Пророкъ могъ думать, судя по началу откровенія, что періодъ седьминъ начинается съ момента сообщенія ему откровенія; теперь ему указывается истинное начало седьминъ: выходъ Божія повелѣнія о возобновленіи и постройкѣ Іерусалима. Съ этого времени до явленія Мессіи, Помазанника-Князя, протечетъ два періода седьминъ: 7 и 62 седьмины. Первый періодъ назначается для постройки Іерусалима: въ продолженіе 7 седьминъ онъ возстановится со всѣми улицами и укрѣпленіями, хотя этому и будутъ препятствовать неблагопріятныя обстоятельства. Далѣе, въ 26 стихѣ, говорится уже о второмъ періодѣ седьминъ, въ концѣ котораго долженъ явиться «Помазанникъ-Князь».

Стихъ 26-й.

Этотъ стихъ, подобно 24-му, прямо начинается числовою датой: *и по седминахъ шестидесяти двухъ*. Но эта дата, по самому существу своему, уже не отличается такою опредѣленностью, какъ остальныя даты откровенія о седьминахъ. Предлогъ אַחֲרֵי «послѣ, вслѣдъ за», указываетъ только, что событія, о которыхъ говорится дальше, случились не ранѣе конца шестидесяти двухъ седьминъ, но не опредѣляетъ точно времени этихъ событій: они могли случиться и непосредственно послѣ 62-хъ седьминъ, и чрезъ извѣстный, хотя и незначительный во всякомъ случаѣ, промежутокъ времени послѣ нихъ. Членъ въ הַשָּׁבֻעִים שִׁשִּׁים וּשְׁנַיִם указываетъ на то, что эти «шестьдесятъ двѣ седьмины» суть тѣ же, о которыхъ говорилось и раньше,—именно, составляющія второй періодъ семидесяти седьминъ. И изъ того, что здѣсь указывается только второй, а не оба протекшіе періода, можно выводить, что здѣсь не имѣется въ виду дать точное опредѣленіе времени дальнѣйшихъ событій, а только указывается ихъ отношеніе по времени ко второму періоду седьминъ: эти событія совершатся «послѣ» второго періода седьминъ. Хотя здѣсь и упоминается только о второмъ періодѣ седьминъ, но ясно, что

разстояніе указываемыхъ далѣе событій отъ начала седьминъ слѣдуетъ опредѣлять не въ 62, а въ 69 седьминъ: не было нужды повторять здѣсь оба числа (7 седьминъ и 62 седьмины), такъ какъ послѣдовательность ихъ уже указана въ 25-мъ стихѣ. Переводы Акилы и Симмаха, какъ и переводъ арабскій, и здѣсь повторяютъ эти числа: καὶ μετὰ τὰς ἑπτὰ ἑβδομάδας (Симмахъ: τὰς ἑβδομάδας τὰς ἑπτὰ) καὶ ἑξήκοντα δύο; можетъ быть, и въ еврейскомъ текстѣ, бывшемъ у нихъ подъ руками, стояли оба числа. О переводѣ LXX-ти, также имѣющемъ оба эти числа, съ нѣкоторымъ измѣненіемъ, сказано уже раньше; въ немъ имѣется и вторичный переводъ тѣхъ же чиселъ передъ 27-мъ стихомъ: καὶ μετὰ ἑπτὰ καὶ ἑβδομήκοντα καιροὺς καὶ ἑξήκοντα δύο ἐτῶν; здѣсь уже вставлены единицы счисленія, подразумѣваемыя переводчиками при этихъ числахъ. Переводъ Ѳеодотіоновъ слѣдуетъ евр. тексту: καὶ μετὰ τὰς ἑβδομάδας τὰς ἑξήκοντα δύο, такъ же и славянскій. Особенность древнелат. перевода: et post hebdomades *septuaginta* duas объясняется, вѣроятно, ошибкой писца, такъ какъ она не находитъ себѣ подтвержденія въ древнихъ переводахъ. Пешито и Вульгата точно передаютъ евр. текстъ: et post hebdomades sexaginta duas. Во всякомъ случаѣ, оба эти чтенія: Акилы, Симмаха и, можетъ быть, LXX—съ одной стороны, и еврейское, Ѳеодотіоново и проч., съ другой, совершенно тожественны по смыслу; въ первомъ указаны оба періода, по истеченіи которыхъ совершатся указанныя далѣе событія, во второмъ же названъ только второй, послѣдній періодъ, и само собою подразумѣвается, что раньше его протечетъ первый, семиседьминный періодъ: «послѣ второго періода въ 62 седьмины» значитъ то же, что—послѣ 69 седьминъ отъ начала всего періода.

Здѣсь слѣдуетъ упомянуть о мнѣніи Бертольдта [214], въ виду того, что оно раздѣляется и Г. П. Павскимъ [215], будто *ахаре* значитъ: «при концѣ, къ концу»: «при концѣ шестидесяти двухъ седьминъ». Но это мнѣніе не заслуживаетъ и опроверженія, такъ какъ прямо противорѣчитъ значенію еврейскаго предлога.

[214] Bertholdt, vid. Lengerke 451.

[215] Хр. Чтеніе 1872, II, стр. 131.

Далѣе передается событіе, имѣющее совершиться «послѣ шестидесяти двухъ седьминъ»: יִכָּרֵת מָשִׁיחַ «будетъ убитъ помазанникъ». כָּרַת значитъ «рѣзать, рубить», затѣмъ, въ соединеніи съ מֵעַם или מֵאֶרֶץ יִשְׂרָאֵל: «истреблять изъ народа, изъ общества израилева», т. е. казнить, умерщвлять. Въ такомъ значеніи *карат* встрѣчается и безъ этихъ дополненій, особенно во 2-ой и 5-ой формахъ. Такъ, во 2-ой формѣ этотъ глаголъ употребленъ въ Быт. 9, 11. объ истребленіи потопомъ, Зах. 13, 8., ср. 7—объ истребленіи мечомъ, Лев. 17, 14. 20, 17. Іс. 36 [евр. 37], 9. Притч. 2, 22—вообще объ истребленіи, и т. п. Отсюда видно, что глаголъ этотъ означаетъ вообще насильственную смерть, какова бы она ни была, и *йиккарет* должно переводить: «будетъ умерщвленъ, убитъ».

Кого же нужно разумѣть подъ *машіах* въ 26-мъ стихѣ? Естественнѣе всего, конечно, разумѣть здѣсь то же самое лицо, которое выше названо *машіах нагид*; здѣсь же оно называется просто *машіах* для того, чтобы не дать повода смѣшивать его съ упоминаемымъ далѣе נְגִיד הַבָּא, «княземъ грядущимъ». Но почему тогда при словѣ *машіах* нѣтъ члена, который указывалъ бы, что объ этомъ лицѣ было уже упоминаніе раньше? Это объясняется отчасти общимъ характеромъ пророчества, характеромъ прикровеннымъ и неопредѣленнымъ, а отчасти и тѣмъ, что уже послѣдовательность рѣчи ясно говоритъ за тожество «помазанника» 26-го стиха съ «помазанникомъ-княземъ» стиха 25-го. Если же вспомнимъ, что тамъ подъ «Помазанникомъ-Княземъ» разумѣется Іисусъ Христосъ, то станетъ совершенно ясно, что Онъ же разумѣется и здѣсь подъ именемъ *машіах*. 26-й стихъ показываетъ, какія послѣдствія повлекло за собою умерщвленіе «Помазанника»: разрушеніе города, который еще недавно (ст. 24) назывался «святымъ», и самого святилища, опустошительная, гибельная война,—все это становится совершенно понятнымъ, какъ слѣдствіе умерщвленія евреями своего Мессіи, для нихъ прежде всего пришедшаго на землю. Такимъ образомъ, слова: *йиккарет машіах* «будетъ убитъ Помазанникъ» составляютъ пророчество о крестной смерти Іисуса Христа, подобное другимъ ветхозавѣтнымъ пророчествамъ о томъ

же, напр. Ис. 53, 8. Зах. 12, 10.,—пророчество прямое и ясное. Смерть Мессіи относится здѣсь ко времени «послѣ» второго періода седьминъ, т. е. послѣ шестидесяти девяти седьминъ отъ начала періода, но точно не опредѣляется ея время. Изъ дальнѣйшихъ словъ откровенія можно будетъ вывести и болѣе точное опредѣленіе времени смерти Мессіи.

Кѣмъ «будетъ убитъ Помазанникъ»? Откровеніе не говоритъ объ этомъ прямо. Но изъ того, какія послѣдствія для народа еврейскаго повлечетъ смерть Мессіи,—объ этихъ послѣдствіяхъ говорится дальше,—можно уже заключить, что виновникомъ этой смерти будетъ именно народъ еврейскій. «Народъ» есть логическое подлежащее всего откровенія, о его отверженіи, какъ увидимъ, говорится въ слѣдующихъ словахъ откровенія,—ясно, что онъ разумѣется и здѣсь.

Изъ древнихъ переводовъ указанному толкованію словъ *йикъкарет машіах* благопріятствуютъ сирскій, Акилы, Симмаха и латинскій. Первый переводитъ: «будетъ убитъ Мессія», Акила: ἐξολοθρευθήσεται ἠλειμμένος, Симмахъ: ἐκκοπήσεται χριστός, Вульгата: occidetur Christus. Но LXX переводятъ: ἀποσταθήσεται χρῖσμα, «будетъ отнято, прекратится помазаніе», Θеодотіонъ: ἐξολοθρευθήσεται χρῖσμα, древне-латинскій: interibit chrisma, славянскій: *потребится помазаніе*. Читали ли здѣсь LXX и Θеодотіонъ מָשִׁיחַ вмѣсто מְשִׁיחַ [216], или послѣднее переводили словомъ χρῖσμα,—сказать трудно. Подъ этимъ «помазаніемъ» они разумѣли, вѣроятно, священное помазаніе елеемъ, съ прекращеніемъ котораго становится уже невозможнымъ законное поставленіе царей и первосвященниковъ. Такъ именно понимали разбираемыя слова многіе древнѣйшіе толкователи, напримѣръ: Тертулліанъ (переводитъ: exterminabitur unctio) [217], псевдо-Кипріанъ (disperibit unctio, «по-

[216] Wieseler, 202, cf. Fraidl, 6.

[217] См. переводъ M. 2 lat. 613. Толкованіе: Nam et unctio illic exterminata est post passionem Christi. Col. 616. Ср. далѣе: Si enim, secundum Judaeos, adhuc non venit (Christus), cum venire coeperit, unde ungetur?— —Si autem jam nec unctio est illis, ut Daniel prophetavit, dicit enim: Exterminabitur unctio; ergo jam non est illic unctio, quia nec templum ubi erat cornu, de quo reges ungebantur— —. Cap. XIII, col. 634.

гибнетъ помазаніе»), Евсевій Кесарійскій [218], Полихроній Апамейскій [219], св. Исидоръ Пелусіотъ [220], блаж. Θеодоритъ [221], Василій Селевкійскій [222], ср. Оригенъ [223], св. Кириллъ Іерусалимскій [224]. Всѣ они слѣдовали Θеодотіонову переводу и потому не знали истиннаго смысла еврейскаго текста. Но Ефремъ Сиринъ, пользовавшійся переводомъ Пешито, правильно толкуетъ разбираемыя слова и относитъ ихъ къ крестной смерти Іисуса Христа [225]. И блаж. Іеронимъ своимъ переводомъ положилъ начало ряду правильныхъ толкованій этихъ словъ, напр.—Августина, затѣмъ Юліана Толедскаго, Бэды Достопочтеннаго и др.; такъ же толко-

---

[218] Οὐῷ γοῦν καὶ τάξει τοῦ κατὰ τὴν ἀρχιερωσύνην χρίσματος μέχρι τῶν Ἡρώδου καὶ Αὐγούστου χρόνων διαρκέσαντος, τῆς δὲ διαδοχῆς τῶν πάλαι ἀρχιερέων ἐπὶ Ἀλέξανδρον τὸν Ὑρκανοῦ πατέρα περιγραφείσης, Ἡρώδης τὸν Ὑρκανὸν ἀνελών, οὐκέτι τοῖς ἐκ πατέρων διαδόχοις ἐπιτρέψαι λέγεται τὴν λειτουργίαν, ἀλλὰ τισιν ἀσήμοις καὶ ἀφανέσιν ἀνθρώποις. M. 22 gr. 621; cf. Eclogae propheticae, lib. III, ibid. col. 1184.

[219] Ἔξολ. χρῖσμα. Τουτέστι πᾶσα ἡ ἰουδαϊκὴ κατάστασις ἀφανισθήσεται· χρῖσμα μὲν γὰρ λέγει τὸν ἱερέα τὸν κεχρισμένον. Maji t. I, p. 18.

[220] «Βουλόμενος δεῖξαι ὁ προφήτης Δανιὴλ τὴν παντελῆ τῶν ἰουδαϊκῶν πραγμάτων μετὰ τὸν σταυρὸν καθαίρεσιν, καὶ ὡς οὐδὲ λείψανον αὐτοῖς χρηστῆς ἐλπίδος περιλειφθήσεται, οὐδέ τις προσδοκία αὐτοῖς ἀμείνων φανεῖται, ἔφη· Ἐξολοθρευθήσεται χρῖσμα, καὶ κρίμα οὐκ ἔσται ἐν αὐτῇ. Διὰ μὲν τοῦ χρίσματος τὴν ἱερωσύνην μηνύων· διὰ δὲ τοῦ κρίματος, τὴν βασιλείαν καὶ τὴν πολιτικὴν κατάστασιν». Ἐπιστολῶν βιβλία πέντε εἰς τὴν ἑρμηνείαν τῆς θείας γραφῆς. Βιβλ. γ΄, ἐπιστολὴ συμθ΄, Ἰσιδώρῳ διακόνῳ. M. 78 gr. 929.

[221] Ἔξολ. χρῖσμα· τουτέστιν ἡ [al.: ἐν] τοῖς ἀρχιερεῦσιν ἐπανθοῦσα χάρις. M. 81 gr. 1480.

[222] Εἶτα ἐπαναλαβὼν ὁ ἄγγελος τὰ περὶ τοῦ πάθους τοῦ Κυρίου διηγεῖται, καὶ διὰ τὸ πάθος καταλύσιν τῆς κιβωτοῦ, καὶ τῶν ἐν αὐτῇ ἁγίων, καὶ τοῦ κέρατος ἐν ᾧ ἐχρίοντο βασιλεῖς καὶ προφῆται οἱ κρίνοντες τὸν λαόν· καὶ τί συμβήσεται τοῖς Ἰουδαίοις τοῖς σταυρώσασιν αὐτόν· λέγει γὰρ οὕτως· Καὶ μετὰ τὰς ξβ΄ ἑβδ. ἐξολοθρευθήσεται χρῖσμα, καὶ κρῖμα οὐκέτι ἔσται ἐν αὐτῷ. Τὸ κέρας λέγει ἐν ᾧ ἐχρίοντο οἱ βασιλεῖς καὶ προφῆται οἱ κρίνοντες τὸν λαὸν καὶ τὴν πόλιν. M. 85 gr. 409, 412.

[223] Переводъ: Et post septimanas sexaginta duas interibit unctio, et judicium non est in ea. Толкованіе: Evacuata sunt autem populi tempora, propterea quod super additas septem septimanas, sexaginta duas septimanas, sublatum est a populo chrisma quod fuit in templo, ut jam non sit judicium apud eos. M. 13 gr. 1657—1658.

[224] «Ἑξήκοντα τοίνυν καὶ ἐννέα ἑβδομάδες τῶν ἐτῶν συνάγουσιν ἔτη τετρακόσια ὀγδοήκοντα τρία. Εἶπεν οὖν, ὅτι μετὰ τὸ οἰκοδομηθῆναι Ἱερουσαλὴμ, τετρακοσίων ὀγδοήκοντα τριῶν ἐτῶν διελθόντων, καὶ τῶν ἀρχόντων ἐκλιπόντων, τότε ἔρχεται τις ἀλλόφυλος βασιλεὺς, ἐφ' οὗ γεννᾶται ὁ Χριστός». Κατήχησις ιβ΄, XIX. M. 33 gr. 748—749. Слова: τῶν ἀρχόντων ἐκλιπόντων, очевидно, соотвѣтствуютъ: ἐξολοθρευθήσεται χρῖσμα.

[225] См. прим. 189.

вали и евреи, принявшіе христіанство: Самуилъ Мароккскій и Петръ Альфонсъ. И еврейскіе ученые въ *машіах* 26-го стиха видѣли опредѣленное лицо, «помазанника», но считали такимъ помазанникомъ своего послѣдняго царя Ирода Агриппу; такъ думали Раши, Ибн-Езра и Абарбанель [226]. Въ новое же время уже совершенно оставлено пониманіе *машіах* какъ «помазанія», хотя подъ «помазанникомъ» далеко не всѣ, конечно, разумѣютъ Іисуса Христа.

Далѣе въ еврейскомъ текстѣ стоитъ краткое, но въ высшей степени трудное для пониманія предложеніе: וְאֵין לוֹ, «и нѣтъ ему» или «и нѣтъ для него». Здѣсь мы видимъ только сказуемое אֵין «нѣтъ, не есть», и косвенное дополненіе, выражающее принадлежность нѣкотораго подлежащаго нѣкоторому лицу, обозначенному мѣстоименіемъ 3-го лица мужескаго рода: לוֹ. Но какое это подлежащее и какому лицу оно принадлежитъ, или, вѣрнѣе, не принадлежитъ, сказать трудно. Существовало и существуетъ множество попытокъ такъ или иначе рѣшить эту задачу, но почти всѣ онѣ не удались, благодаря одной, кажется, существенной ошибкѣ. Познакомимся съ важнѣйшими толкованіями разбираемыхъ словъ.

Обращаясь къ древнимъ переводамъ, видимъ, что только Пешито, Акила и Симмахъ даютъ буквальный переводъ этихъ словъ, безъ всякаго толкованія ихъ. Такъ, Пешито: וְלָא אִיתַ לַהּ «и не будетъ для него», Акила: καὶ οὐκ ἔστιν αὐτῷ, Симмахъ: καὶ οὐχ ὑπάρξει αὐτῷ. Но другіе переводы являются не столь буквальными и заключаютъ въ себѣ уже нѣкоторое толкованіе переводимыхъ словъ. Такъ, LXX переводятъ: καὶ οὐκ ἔσται, подразумѣвая подлежащее предшествующаго предложенія, χρῖσμα, и считая выраженіе *ен ло* равноспльнымъ אֵינֶנּוּ «нѣтъ его»; къ LXX-ти примыкаетъ и Тертулліанъ, переводя: et non erit [227]. Θеодотіонъ: καὶ κρίμα οὐκ ἔστιν (7 кодексовъ НР. и Альдинское изд.: ἔσται) ἐν αὐτῷ [228],

[226] Vid. Fraidl.

[227] Vid. M. 2 lat. 613.

[228] Нѣкоторые думаютъ (напр., Wolf 30, ср. Behrmann 63), что Θеодотіонъ читалъ здѣсь דִּין «судъ», вмѣсто אֵין. Но тогда нужно предположить, что онъ или невѣрно перевелъ еврейскія слова: וְדִין לוֹ, прибавивъ отрицаніе, или читалъ וְאֵין דִּין לוֹ. Естественнѣе поэтому видѣть въ переводѣ Θеодотіона попытку толкованія даннаго еврейскаго текста.

такъ и древне-латинскій: et iudicium non erit in eo, и новославянскій: *и судъ не будетъ въ немъ*; старо-славянскій даже не переводитъ сказуемаго: *потребится помазаніе и судъ*, а контосагидскій объясняетъ: «и судъ не будетъ ему напрасный». Переводъ θеодотіона имѣетъ здѣсь въ виду,—какъ можно заключать изъ древнихъ толкованій, основанныхъ на немъ,—незаконное поставленіе у евреевъ первосвященниковъ послѣ прекращенія законнаго (χρίσματος). Такъ понимаетъ этотъ переводъ, по крайней мѣрѣ, Евсевій Кесарійскій [229], θеодоритъ [230] и др. Но нѣкоторые понимаютъ это выраженіе нѣсколько иначе, именно—въ смыслѣ прекращенія политическаго могущества евреевъ; таковы, напр., Полихроній [231] и Исидоръ Пелусіотъ [232]. Вульгата даетъ уже другое толкованіе разбираемымъ словамъ: et non erit ejus populus, qui eum negaturus est, «и народъ уже не будетъ Его (народомъ), такъ какъ онъ отречется отъ Него». Слова: populus и дал. здѣсь, очевидно, прибавлены для объясненія непонятнаго текста: et non erit ejus; но принадлежатъ ли они самому Іерониму или появились уже позднѣе, какъ вставка,—объ этомъ сказать опредѣленно нельзя. По крайней мѣрѣ, блаж. Августинъ, цитуя это мѣсто, приводитъ неполный текстъ и затѣмъ отъ себя прибавляетъ: id est, non erit ejus civitatis [233]. Послѣднее толкованіе Іеронимъ приписываетъ и евреямъ своего времени: Мессія не будетъ имѣть господства надъ ними [234]. Къ этому толкованію примыкаетъ и

---

[229] Ἔτι δὲ μᾶλλον δῆλον πῶς εἴρηται τὸ· Κρίμα οὐκ ἔστιν ἐν αὐτῷ, τὸ ἄκριτον συνιδὼν τῆς τῶν ἀρχιερέων καταστάσεως, τῶν μετὰ Ἡρῴδην καὶ κατὰ τοὺς χρόνους τοῦ Σωτῆρος ἡμῶν γεγενημένων. M. 22 gr. 624, cf. Eclogae propheticae, ibid. col. 1184.

[230] Καὶ κρίμα οὐκ ἔστιν ἐν αὐτῷ. Εἰ γὰρ καὶ χρίονται, φησὶν (οἱ ἀρχιερεῖς), ἀλλ' οὐ κατὰ λόγον χρίονται, παρανόμως δὲ τοῦτο ποιεῖν τολμῶσι. M. 81 gr. 1480.

[231] Κρ. οὐκ ἔ. ἐν αὐτῷ. Ἀντὶ τοῦ· δικαστήρια καὶ ψῆφοι καὶ νόμοι· ἅπερ πάντα τὴν βασιλικὴν εὐταξίαν δείκνυσιν καὶ τὴν πολιτικὴν κατάστασιν. Maji, t. I, p. 18.

[232] См. прим. 220.

[233] Vid. Fraidl.

[234] Nam post sexaginta duas hebdomadas occidetur Christus, et non erit ejus populus, qui eum negaturus est, sive, ut illi [hebraei] dicunt, non erit illius [al: illis] imperium, quod putabant se retenturos [al: quod putabat se redempturum]. M. 25 lat. 552.

прен. Ефремъ Сиринъ, но онъ «народъ» или «Іерусалимъ» считаетъ не подлежащимъ, а дополненіемъ, относя къ этому дополненію и мѣстоименіе въ словѣ לָהּ (по Пешито), подлежащимъ же считаетъ Мессію: ему (народу) не будетъ уже другого Мессіи [235]. Изъ еврейскихъ ученыхъ Саадіа Гаонъ даетъ толкованіе, подобное толкованію Августина; Ибн-Езра толкуетъ разбираемыя слова въ смыслѣ прекращенія политической самостоятельности евреевъ, а Раши и Абарбанель примыкаютъ къ переводу LXX-ти.

И новые толкователи не пришли къ какому-либо опредѣленному рѣшенію вопроса о значеніи разбираемыхъ словъ. Одни изъ нихъ повторяютъ старыя попытки рѣшить этотъ вопросъ, другіе стараются сдѣлать это самостоятельно. Такъ, 1) многіе, подобно LXX-ти переводятъ: «и нѣтъ его», «не будетъ его», т. е. помазанника [236]. Но такой переводъ невозможенъ въ виду того, что здѣсь стоитъ не *енення* «нѣтъ его» (подобно Быт. 5, 24: «и не обрѣташеся» Енохъ), а *ен ло* «нѣтъ ему» или «у него», гдѣ лицо, выраженное мѣстоименіемъ съ предлогомъ, является не подлежащимъ, а дополненіемъ. 2) Нѣкоторые [237] переводятъ: «и не за Себя», т. е.,—будетъ убитъ Христосъ. Такой переводъ былъ бы очень удобенъ въ этомъ мѣстѣ и представлялъ бы глубокую мысль, особенно по сравненію съ 53-ей главой пророка Исаіи. Но грамматически онъ не можетъ быть принятъ: *ен* никогда не имѣетъ значенія простого отрицанія אֵין, а всегда—отрицанія бытія: «не есть, нѣтъ», въ соединеніи же со слѣдующимъ предлогомъ *лэ* выражаетъ отрицаніе обладанія: «у него нѣтъ», «онъ не имѣетъ» [238]. 3) Большинство уже не находитъ возможнымъ ограничиться словами, какія даны въ текстѣ, и изъ нихъ только вывести удовлетворительный смыслъ, а считаетъ необходимымъ подразумѣвать здѣсь какія-либо объяснительныя слова. Сюда прежде всего слѣдуетъ отнести тѣхъ, которые, стараясь быть

[235] См. прим. 189.

[236] Sostmann 169—170, C. B. Michaelis 346, Rosenmüller 307, Hitzig 163, cf. Bevan 157.

[237] Vitringa, Tholuck—vid. Hengstenberg, S. 474; Hävernick, 377, Некрасовъ, 32.

[238] Ср. Gesenius, 35.

осторожными, переводятъ: «и ничего нѣтъ ему» [239] или: «и никого нѣтъ ему» [240]. Такіе переводы видятъ въ *ен* не простое отрицаніе чего-либо опредѣленнаго, а отрицаніе бытія чего бы и кого бы то ни было; это вовсе не заключается въ смыслѣ слова *ен* и является привнесеннымъ самими толкователями. Но и при ихъ толкованіи неопредѣленность разбираемыхъ словъ остается, необходимо все-таки ихъ такъ или иначе дополнять: отсутствіе какой именно области явленій разумѣется подъ словомъ «ничего» и—какого рода лицъ подъ словомъ «никого»? 4) Нѣкоторые [241] берутъ подлежащее для разбираемыхъ словъ изъ глагола предыдущаго предложенія: «будетъ уничтоженъ Помазанникъ и не будетъ ему уничтоженія», и видятъ здѣсь указаніе на важное значеніе для христіанства смерти Христовой; при этомъ ссылаются на Пс. 53, 3—11., гдѣ рабъ Господень и послѣ смерти своей представляется живымъ. Недостатокъ этого остроумнаго толкованія—въ его искусственности; если бы разбираемое мѣсто имѣло дѣйствительно такой смыслъ, то оно являлось бы какой-то загадкой, недопустимой въ откровеніи. 5) Большинство толкователей, видящихъ въ *машіах* царя, дополняютъ разбираемыя слова такимъ образомъ: «не будетъ ему преемника, сына» [242]. Но такое толкованіе не имѣетъ для себя никакихъ основаній въ текстѣ и является только плодомъ сильнаго желанія его авторовъ оправдать примѣненіе даннаго откровенія ко времени Антіоха Епифана. 6) Таково же и толкованіе: «нѣтъ при немъ послѣдователей», или «защитниковъ, помощниковъ» [243]; его нельзя примѣнить и ко Христу, такъ какъ оставленіе Его учениками предъ страданіями было только временнымъ и едва ли могло бы разумѣться здѣсь. 7) Наконецъ, многіе толкователи, подобно блаж.

---

[239] Coccejus, Gousset—vid. Hengstenberg, S. 475.

[240] L'Empereur, Sack—ibid. S. 477.

[241] Knabenbauer, 256.

[242] Lengerke, 455, Wieseler, 61 ff., Ewald, 435, Rösch, Bleek,—vid. Zöckler, S. 182; Cornill 10; Г. П. Павскій,—Хр. Чтеніе 1872, II, стр. 131, и другіе.

[243] Füller, vid. Zöckler, S. 182; Zöckler, ibid., ср. Оберленъ, 158. Въ новое время нѣкоторые думаютъ (Graetz, vid. Bevan 157), что здѣсь слѣдуетъ вставить слово עֹזֵר изъ Дан. 11, 45: «и нѣтъ помогающаго ему»—т. е. Антіоху Епифану. Но такая прибавка нигдѣ не имѣетъ для себя основаній.

Іерониму и Августину, разумѣютъ здѣсь «власть, господство надъ народомъ еврейскимъ», котораго не имѣлъ Христосъ, вслѣдствіе невѣрія евреевъ [244]. Но и это толкованіе не можетъ быть легко выведено изъ текста, а въ его обычной формулировкѣ (напр., у Генгстенберга): «и Мессія (т. е. Его существенный признакъ, господство) не будетъ Ему (т. е. Мессіи же)»—представляетъ тавтологію.

Итакъ, ни одно толкованіе разбираемыхъ словъ не можетъ быть названо удовлетворительнымъ. Это обстоятельство, повидимому, объясняется тѣмъ, что всѣ толкованія (т. е. тѣ, которыя остаются вѣрны тексту) относятъ къ Мессіи мѣстоименіе (въ словѣ *ло*) «ему» и стараются найти подлежащее къ сказуемому *ен* «нѣтъ». Ближе всѣхъ къ истинѣ латинскій переводъ со своими толкователями: онъ ставитъ такимъ подлежащимъ «народъ», который, дѣйствительно, служитъ логическимъ подлежащимъ во всемъ откровеніи и, слѣдовательно, легко можетъ быть подразумѣваемъ и здѣсь. Но недостатокъ такого толкованія состоитъ въ томъ, что въ предшествующемъ предложеніи: *йиккарет машіах* дано прямое подлежащее: «Помазанникъ», и трудно ожидать, чтобы въ другомъ, рядомъ съ нимъ стоящемъ предложеніи подразумѣвалось другое подлежащее. Вотъ почему многіе [245] стараются подлежащее для разбираемыхъ словъ вывести изъ подлежащаго предшествующаго предложенія, но, относя къ нему же и мѣстоименіе въ словѣ *ло*, получаютъ только тавтологію. Между тѣмъ есть возможность избѣжать этой тавтологіи, если примкнуть къ толкованію, намѣченному еще преп. Ефремомъ Сиринымъ и повторенному Гофманномъ [246], хотя послѣдній потомъ и оставилъ его. Именно, подлежащимъ разбираемаго предложенія *вэен ло* слѣдуетъ считать подлежащее предшествующаго предложенія *машіах*, но мѣстоименіе въ словѣ *ло* относитъ уже не къ нему, а

---

[244] Hengstenberg, 479, Calvin, Junius, Ebrard, Kranichfeld, Kliefoth,—vid. Zöckler, S. 182; Rohling, 275, cf. Wolf, 48, Keil, 301.

[245] Hengstenberg и др., указанные въ прим. 244.

[246] Weissagung und Erfüllung, S. 303—304. Но въ Schriftbeweis II, 2, S. 589 онъ даетъ уже другое толкованіе разбираемыхъ словъ.

къ логическому подлежащему всего откровенія, къ народу еврейскому, подобно тому, какъ, мы увидимъ, это подлежащее подразумѣвается и далѣе, подъ мѣстоименіемъ въ словѣ וְאַחֲרִיתוֹ «и конецъ его». Примѣры подобнаго употребленія мѣстоименной приставки вмѣсто существительнаго, далеко отстоящаго отъ него, можно найти въ еврейской Библіи. Ис. 8, 21. 22 въ синод. переводѣ читается такъ: «И будутъ они бродить по землѣ, жестоко угнетенные и голодные; и во время голода будутъ злиться, хулить царя своего и Бога своего. И взглянутъ вверхъ, и посмотрятъ на землю, и вотъ горе и мракъ, и густая тьма, и будутъ повержены въ тьму». Этотъ переводъ соотвѣтствуетъ въ общемъ евр. тексту, но въ послѣднемъ вмѣсто «по землѣ» читается «по ней» בָּהּ; между тѣмъ раньше, до 9-го стиха, нигдѣ не говорится о землѣ, о ней упоминается только въ слѣдующемъ 22 стихѣ. Правда, по переводу LXX о землѣ упоминается въ 19 стихѣ: ζητήσατε— —τοὺς ἀπὸ τῆς γῆς φωνοῦντας *изыщите чревоволшебниковъ и отъ земли возглашающихъ*, но и въ такомъ случаѣ мѣстоимѣніе въ словѣ *бам* отстоитъ слишкомъ далеко отъ своего существительнаго. То же нужно сказать и о Пс. 67 [68], 11. 15., гдѣ также употребляется слово *бам* о землѣ, которая названа только въ 9 ст.: *земля потрясеся, ибо небеса кануша отъ лица Бога Синаина*, (въ евр.: и этотъ Синай—) *отъ лица Бога Израилева. Дождь волень отлучиши* (евр.: проливалъ Ты), *Боже, достоянію твоему, и изнеможе, Ты же совершилъ еси е. Животная твоя* (евр.: народъ твой) *живутъ на ней* (ст. 9—11); *внегда разнствитъ небесный* (когда Всемогущій разсѣялъ) *цари на ней, оснѣжатся* (она забѣлѣла какъ снѣгъ) *въ Селмонѣ* (ст. 15). Въ этихъ примѣрахъ разстояніе между мѣстоименіями и существительнымъ, къ которому они относятся, нисколько не менѣе, чѣмъ разстояніе между существительнымъ «народъ» въ 24 стихѣ откровенія о седьминахъ и словами 26 стиха: и Мессія не будетъ *ему*.

Такимъ образомъ, выраженіе: *вэен ло* можно перевести: «и Мессія не будетъ для него, т. е. для народа еврейскаго». Народъ этотъ былъ избранъ Богомъ для особаго приготовленія его къ принятію Мессіи и воспріятію Его ученія; онъ долженъ былъ

сдѣлаться первымъ наслѣдникомъ царствія Божія, принесеннаго на землю Христомъ. Поэтому и Іисусъ Христосъ во время Своей земной жизни училъ и дѣйствовалъ почти исключительно среди еврейскаго народа и для него. *Нѣсмь посланъ*, говорилъ Онъ, *токмо ко овцамъ погибшымъ дому израилева* (Матѳ. 15, 24); посылая апостоловъ на проповѣдь, Онъ говорилъ имъ: *на путь языкъ не идите, и во градъ Самарянскій не внидите; идите же паче ко овцамъ погибшымъ дому израилева* (Матѳ. 10, 5. 6.). Но народъ этотъ оказался недостойнымъ Божія избранія; онъ «убилъ Мессію», распявъ Его на крестѣ; и за это онъ лишается своего исключительнаго и руководительнаго положенія среди другихъ народовъ, становится на ряду или даже ниже ихъ въ царствіи Божіемъ, по слову Христа: *глаголю же вамъ: яко мнози отъ востокъ и западъ пріидутъ и возлягутъ со Авраамомъ и Исаакомъ и Іаковомъ во царствіи небесномъ, сынове же царствія изгнани будутъ во тму кромѣшнюю* (Матѳ. 8, 11. 12.); *и се суть послѣдніи, иже будутъ первіи, и суть первіи, иже будутъ послѣдни* (Лук. 13, 30.). Мессія уже не будетъ тогда принадлежать только «ему», еврейскому народу, но будетъ *всѣческая и во всѣхъ Христосъ* (Колосс. 3, 11.).

«И не будетъ ему» Мессія—это первое слѣдствіе убійства еврейскимъ народомъ своего Мессіи. Далѣе излагаются и другія гибельныя слѣдствія этого страшнаго преступленія. И прежде всего такимъ слѣдствіемъ является разрушеніе города и святилища, какъ мѣстъ, уже потерявшихъ свое значеніе послѣ отверженія народа, мѣстъ, отверженныхъ Богомъ и оставленныхъ Имъ на произволъ тогдашнихъ вершителей міровой судьбы, римлянъ.

Градъ же и святое разсыплется со старѣйшиною грядущимъ; въ еврейскомъ текстѣ это мѣсто читается нѣсколько иначе: וְהָעִיר וְהַקֹּדֶשׁ יַשְׁחִית עַם נָגִיד הַבָּא «и городъ и святилище разрушитъ народъ князя пришедшаго». Такъ переводитъ и Акила: καὶ τὴν πόλιν καὶ τὸ ἅγιον διαφθερεῖ λαὸς ἡγουμένου ἐρχομένου. Но переводы сирскій и Ѳеодотіоновъ отступаютъ здѣсь отъ еврейскаго текста и вмѣсто עַם «народъ» читаютъ עִם—предлогъ «съ»; Пешито:

«и городъ святости разорится съ царемъ грядущимъ»; θεοδοτίονъ: καὶ τὴν πόλιν (11 кодд. НР., Ald., Compl.: τὴν δὲ πόλιν) καὶ τὸ ἅγιον διαφθερεῖ σὺν τῷ ἡγουμένῳ τῷ ἐρχομένῳ; къ нему примыкаетъ и славянскій. Древне-лат. переводъ также въ существенномъ согласенъ съ θεοδοτίоновымъ: et ciuitatem et sanctum corrumpet, et cum duce uenientе; онъ имѣетъ только ту особенность, что предъ словами cum duce ставитъ союзъ et, относя ихъ, повидимому, къ слѣдующимъ: excidetur in cataclysmo; возможно, что союзъ долженъ стоять предъ excidetur, согласно съ большинствомъ греческихъ кодексовъ, и перенесенъ выше по ошибкѣ писца. LXX соединяютъ здѣсь оба чтенія עם: καὶ βασιλεία ἐθνῶν φθερεῖ τὴν πόλιν καὶ τὸ ἅγιον μετὰ τοῦ χριστοῦ; здѣсь βασιλεία ἐθνῶν есть, вѣроятно, свободный переводъ словъ *ам нагид габба*, которыя затѣмъ снова передаются уже иначе: μετὰ τοῦ χριστοῦ, причемъ *нагид* считается тождественнымъ съ *машіах нагид* [247]; впрочемъ, возможно и то, что слова: βασιλεία ἐθνῶν составляютъ свободный переводъ одного слова *габба*, какъ думаютъ нѣкоторые [248]. Такое же соединеніе обоихъ чтеній слова עם представляетъ и Вульгата: et ciuitatem et sanctuarium dissipabit populus cum duce venturo. Здѣсь слѣдуетъ отдать предпочтеніе чтенію еврейскаго текста. Глаголъ *яшхит* имѣетъ значеніе дѣйствительнаго залога, что подтверждается и переводами LXX (φθερεῖ) и θеодотіона (διαφθερεῖ); а въ такомъ случаѣ, если עם считать предлогомъ «съ», а не существительнымъ «народъ», то не будетъ подлежащаго въ этомъ предложеніи. «Будетъ убитъ Помазанникъ, и не будетъ ему, и городъ и святилище разрушитъ съ княземъ пришедшимъ»,—кто разрушитъ? Не помазанникъ же, который убитъ? Въ еврейскомъ же текстѣ смыслъ получается весьма простой и ясный: «разрушитъ народъ князя пришедшаго».

Какіе городъ и святилище разумѣются здѣсь,—это совершенно ясно: Іерусалимъ и его храмъ. На это указываетъ какъ весь ходъ рѣчи и общій смыслъ откровенія, такъ и членъ, стоящій при словахъ *гаир вэгаккодеш* и указывающій, что это именно

[247] Ср. Rosenmüller, 308.

[248] Wieseler, 202, a; Fraidl, 6.

тотъ городъ, о которомъ говорилось выше. Спрскій переводъ: «городъ святости», или «святой городъ» невозможно принять потому, что слово *гакодеш* соединено съ предшествующимъ *гаир* союзомъ *вэ*, а не подчинено ему. Дополнительныя слова: «городъ и святилище» поставлены здѣсь въ началѣ предложенія въ виду того, что вопросъ о нихъ прежде всего является послѣ предшествующихъ словъ откровенія: «Мессія будетъ убитъ и не будетъ больше принадлежать Израилю»,—но что же будетъ со святымъ городомъ и храмомъ? Они будутъ разрушены,—возвѣщаетъ ангелъ Даніилу.

Яшхит есть 5-я форма отъ глагола שָׁחַת, имѣющаго значеніе «низвергать»; эта форма употребляется въ значеніи: «разрушать»—о стѣнахъ, домахъ, городахъ, «разорять»—о странахъ, царствахъ, также: «губить»—о людяхъ [249]. Дѣйствительное, переходное значеніе 5-й формы правильно передается греческими переводами; спрскій же и славянскій неправильно употребляютъ здѣсь страдательный залогъ: תִּתְחַבֵּל, *разсыплется*. Послѣдніе переводы объясняются неопредѣленностью, какая получается, если читать не *ам* «народъ», а *им* «съ»: тогда подлежащаго на лицо нѣтъ и приходится его подразумѣвать. Большинство древнихъ искали это подлежащее въ предыдущихъ предложеніяхъ: Христосъ разрушитъ; но нѣкоторые подразумѣвали здѣсь Бога Отца (Исидоръ Пелусіотъ [250]), другіе—евреевъ, измѣняя διαφθερεῖ въ διαφθεροῦσι (Василій Селевкійскій [251]) и т. п. При этомъ интересно то, что стоящій далѣе предлогъ σύν они понимали неодинаково. Одни считали его связывающимъ два предмета, подлежащихъ разрушенію: будутъ разрушены городъ и святилище съ княземъ грядущимъ, т. е. погибнутъ какъ городъ, такъ и князь (Тертул-

---

[249] Ср. Gesenius, 829.

[250] Οὐκ εἶπε· Διαφθαρήσεται σὺν τῷ ἡγουμένῳ, ὡς οἴονταί τινες, ἀλλὰ Διαφθερεῖ ὁ Πατὴρ τὸν ναὸν καὶ τὴν πόλιν, συμπράττοντος τοῦ ἡγουμένου τοῦ παροιχηθέντος δηλονότι παρ' αὐτῶν ἐν τῇ πρώτῃ ἐπιφανείᾳ.— —Ὁ Θεὸς καὶ ὁ ἡγούμενος, τουτέστιν ὁ Χριστός. Βιβλ. γ', ἐπ. συζ', Παύλῳ. M. 78 gr. 936.

[251] Καὶ τὸ ἅγιον διαφθεροῦσι σὺν τῷ ἡγουμένῳ τῶν ἐρχομένων [читай: τῷ ἐρχομένῳ]. Τὸν ἡγούμενον δὲ τὸν ἐρχόμενον, τὸν Σωτῆρα λέγει. Περὶ δὲ τῶν σταυρωσάντων αὐτὸν λέγει οὕτως· Καὶ ἐκκοπήσονται ἐν κατακλυσμῷ— —κτλ. M. 85 gr. 412.

ліанъ [252], Оригенъ [253], Василій Селевкійскій [254], блаж. Θеодоритъ [255]); другіе же связывали предлогомъ σύν два лица разрушающихъ: Богъ или Христосъ съ княземъ грядущимъ разрушатъ городъ и храмъ (псевдо-Кипріанъ, Евсевій Кесарійскій [256], прп. Исидоръ Пелусіотъ [257]). Уже одна возможность такой двоякости смысла показываетъ, что истина не на сторонѣ такого чтенія; притомъ считать Самого Бога или Христа разрушителемъ города и храма, хотя бы и черезъ посредство римлянъ, едва ли возможно: Онъ только попустилъ это разрушеніе, предоставилъ невѣрный городъ и осквернённый храмъ ихъ собственной судьбѣ.

Ам нагид габба—«народъ князя пришедшаго» или «пришедшій»—это подлежащее разбираемаго предложенія. Является вопросъ: къ чему относится опредѣленіе *габба* «пришедшій»—къ народу, *ам*, или къ князю, *нагид*: «народъ князя пришедшій» или «народъ князя пришедшаго»? Грамматически возможно отнести это слово къ тому и къ другому существительному безразлично. Но если *габба* отнести къ *ам*, то получится очень неопредѣленный смыслъ: «пришедшій народъ князя»; слово «народъ» опредѣляется словомъ «князя», которое само по себѣ еще неопредѣленнѣе, чѣмъ первое: какого князя? Притомъ, это

---

[252] См. его переводъ—M. 2 lat. 613. Ср. далѣе: Dicit enim Scriptura: sic et civitatem et sanctum simul exterminari cum duce,—indubitate, qui de Bethleem et de tribu Juda esset processurus. Unde et manifestum est, quod civitas simul eo tempore exterminari deberet, cum ducator ejus in ea pati haberet. Cap. XIII. col. 634.

[253] Sed et civitas et sanctum corruptum est cum superveniente postea duce populo illi, sive Herode, sive Agrippa. Hunc enim dicit esse historia Judaeorum. Sed vide ne putes quod ait corrumpi cum duce veniente referri ad Christum. Ubi enim voluit ipsum intelligi Christum, utrisque nominibus usus est Daniel, dicens usque ad Christum ducem. M. 13 gr. 1658.

[254] См. прим. 251.

[255] Ταῦτα δὲ πείσεται ἡ πόλις σὺν τῷ ἡγουμένῳ τῷ ἐρχομένῳ, τουτέστι, τοῖς ἐρχομένοις παρανόμοις ἄρχουσιν. Ἡγούμενον γὰρ ἐρχόμενον τὴν ἀλλόφυλον βασιλείαν καὶ τὴν παράνομον ἀρχιερωσύνην ὠνόμασεν. M. 81 gr. 1481.

[256] Καὶ τὴν π. καὶ τὸ ἁ. διαφθερεῖ σὺν τῷ ἡ. τῷ ἐ. Ἔνθα πάλιν τὸν Ἡρώδην αὐτὸν καὶ τοὺς μετὰ αὐτὸν ἄρξαντας ἐξ ἀλλοφύλου γένους ὑπολαμβάνω δηλοῦσθαι—σὺν οἷς καὶ μεθ' ὧν, ὥσπερεὶ συνεργοῖς χρώμενος, ὁ μισόκαλος καὶ τῶν ἀγαθῶν φθορεὺς καὶ τὴν πόλιν καὶ τὸ ἅγιον διαφθερεῖν εἴρηται. M. 22 gr. 624—625; cf. Eccl. pr. ibid. col. 1188.

[257] См. прим. 250.

опредѣленіе («князя») было бы тогда совершенно лишнимъ: вѣдь всякій «народъ», т. е. войско,—какъ здѣсь, очевидно, разумѣется,—имѣетъ своего «князя», предводителя. Другое дѣло, если *габба* относить къ *нагид*: «народъ пришедшаго князя»; тогда постепенность опредѣленій вполнѣ соблюдется. Тогда названіе *габба* будетъ служить отличіемъ этого «князя» отъ «Помазанника-Князя», о которомъ говорилось въ 25-мъ стихѣ, и который подъ именемъ *машіах* упоминается и въ данномъ стихѣ. *Габба* есть причастіе отъ глагола בּוֹא, съ членомъ. *Бо* «приходить» у пророка Даніила постоянно употребляется для обозначенія перехода изъ отечества въ чужую землю, особенно—непріятельскаго нападенія (ср. 11, 13. 16. 21. 40. 41) [258]. Изъ такого значенія глагола *бо* у Даніила видно, что *габба* не можетъ значить: «наступившій по немъ», какъ переводитъ Г. П. Павскій [259], подобно нѣкоторымъ нѣмецкимъ ученымъ [260]. Изъ такого значенія *габба* видно также и то, что «князь», о которомъ здѣсь говорится, не можетъ быть тѣмъ же лицомъ, которое только что названо *машіах*. На это указываетъ и различіе наименованій этихъ двухъ лицъ. Было уже указано, что *машіах* есть наименованіе лица, получившаго отъ Бога особыя силы и полномочія къ прохожденію своего служенія на пользу избраннаго народа; это наименованіе отличается, слѣдовательно, теократическимъ характеромъ. *Нагид* же есть простое гражданское наименованіе лица привилегированнаго, не имѣющее никакого теократическаго значенія. Поэтому называть одно и то же лицо послѣдовательно двумя такими различными именами невозможно. Нельзя ссылаться на то, что выше одно лицо названо обоими именами: *машіах нагид*; въ соединеніи оба эти имена получаютъ особый смыслъ, который не можетъ быть приписанъ одному имени, особенно имени *нагид*.

---

[258] Ср. Hengstenberg, 481.

[259] Хр. Чтеніе, 1872, II, стр. 131.

[260] Roesch, Maurer,—vid. Keil, 302. Bevan (158) предлагаетъ здѣсь читать вмѣсто *им—им* и вмѣсто *яшхит*— יַשְׁחִית: «и городъ и святилище будетъ опустошено вмѣстѣ съ княземъ, который придетъ (послѣ Оніи)». Но самъ Bevan не увѣренъ въ правильности своихъ поправокъ, сознавая ихъ произвольность.

Итакъ, *нагид габба* означаетъ чуждаго евреямъ князя, который нападетъ на Іерусалимъ, и войско котораго разрушитъ Іерусалимъ и храмъ. Если мы припомнимъ исторію разрушенія Іерусалима и храма Титомъ, по разсказу Іосифа Флавія, то смыслъ откровенія, по которому это разрушеніе приписывается «народу», войску, какъ бы безъ участія его вождя, окажется замѣчательно соотвѣтствующимъ дѣйствительности: разрушеніе Іерусалима и храма произведено войсками, озлобленными упорствомъ іудеевъ, противъ воли Тита. Подъ *нагид* и нѣкоторые древніе толкователи разумѣли Тита или Веспасіана, таковы: Іеронимъ [261], псевдо-Кипріанъ, затѣмъ болѣе поздніе: Бэда Достопочтенный, Самуилъ Марокскій, Петръ Альфонсъ, а также Ибн-Езра, Раши и Абарбанель [262]. Но другіе разумѣли здѣсь то Самого Христа (какъ Тертулліанъ, Ефремъ Сиринъ, Исидоръ Пелусіотъ, Василій Селевкійскій [263]), то еврейскихъ царей не-іудейскаго происхожденія: Прода или Агриппу (Оригенъ, Евсевій Кесарійскій, Ѳеодоритъ, ср. Кириллъ Іерусалимскій [264]).

Слѣдующія слова: *и потребятся аки въ потопъ* въ еврейскомъ текстѣ читаются такъ: וְקִצּוֹ בַּשֶּׁטֶף; они описываютъ предыдущее выраженіе *яшхит* «разрушитъ» и буквально съ еврейскаго значатъ: «и конецъ его въ потопѣ». *Шетеф*, отъ שָׁטַף «изливаться», значитъ собственно: «изліяніе»—о паденіи дождя, Іов. 38, 25, о гнѣвѣ, Притч. 27, 4, затѣмъ: «потопъ, наводненіе», Іс. 31 [32] 6. Наум. 1, 8. У Даніила же какъ это существительное, такъ и глаголъ *шатаф* употребляется въ образномъ значеніи о войскѣ, какъ бы наводняющемъ завоеванную землю и потопляющемъ на ней все: Дан. 11, 10. 22. 26. 40. [265]. Поэтому и здѣсь «потопъ» можетъ значить скорѣе всего «потопъ войны», какъ думаютъ, напр.,

[261] Et quid dico de Christo occidendo, et populo penitus deserendo auxilio Dei, cum civitatem et sanctuarium dissipaturus sit populus Romanus cum duce venturo Vespasiano? M. 25 lat. 552. Здѣсь блаж. Іеронимъ высказываетъ, повидимому, свое собственное воззрѣніе, возмущаясь невѣріемъ іудеевъ, толкованіе которыхъ онъ излагалъ ранѣе.

[262] Vid. Fraidl.

[263] См. примѣчанія 252, 189, 250, 251.

[264] См. примѣчанія 253, 256, 255, 224.

[265] Ср. Gesenius, 830—831.

блаж. Θеодоритъ [266] и Василій Селевкійскій [267], а не «потопъ Божія гнѣва или суда», какъ думаютъ многіе новѣйшіе толкователи [268], хотя и послѣднее пониманіе даетъ вполнѣ удовлетворительный смыслъ. И членъ въ словѣ *башшетеф* можетъ указывать на предшествующее выраженіе *габба*, въ которомъ заключается мысль о непріятельскомъ нашествіи; то же значеніе слова *шетеф* подтверждается и контекстомъ, въ которомъ говорится объ опустошительной войнѣ. При томъ пониманіи, по которому *шетеф* есть изліяніе гнѣва и суда Божія, членъ при немъ объясняютъ, какъ указаніе на потопъ, уничтожившій войска Фараона по переходѣ евреевъ черезъ Чермное море. Но это возможно было бы только въ томъ случаѣ, если бы о событіи этомъ упоминалось у Даніила гдѣ-нибудь раньше, напр.,—въ его молитвѣ; а этого нѣтъ (въ 9, 15. ничего не говорится о потопленіи египтянъ, а только о переходѣ евреевъ черезъ Чермное море). Менѣе удаченъ переводъ выраженія *башшетеф* «внезапно, подобно потопу [269]»: членъ при такомъ переводѣ рѣшительно необъяснимъ.

О чьемъ же «концѣ» говорится здѣсь? Къ кому или къ чему относится мѣстоименіе въ словѣ *кицо*? Прежде всего, конечно, представляется вѣроятнѣйшимъ отнесеніе его къ вождю, о которомъ только что говорилось; такъ и дѣлаютъ очень многіе [270], понимая здѣсь не «конецъ, причиненный имъ»,—такъ какъ такое пониманіе грамматически невозможно [271],—а конецъ его самого, его погибель. Но отнесеніе мѣстоименія въ словѣ *кицо* къ князю, *наид*, допустимое грамматически, невозможно по смыслу: дальше

---

[266] Καὶ ἐκκοπήσονται ὡς ἐν κατακλυσμῷ· τουτέστι, πανωλεθρίαν ὑπομενοῦσιν οἵαν ὑπέμειναν οἱ πάλαι ἄνθρωποι τοῦ κατακλυσμοῦ τὴν γῆν πᾶσαν συγκαλύψαντος. M. 81 gr. 1481.

[267] Τὸν πόλεμον τὸν ἐπὶ Οὐεσπασιανοῦ ἀφανισμοῦ κατακλυσμὸν ὠνόμασεν. Ὅτι δὲ ἔθος τῇ Γραφῇ τὴν αἱματεκχυσίαν τὸν πολλὸν τοῦ πολέμου κατακλυσμὸν ὀνομάζειν, καὶ ἐκ τῆς ὁράσεως τοῦ Δανιὴλ ἐπιμάθωμεν [Дан. 11, 10. 22.]. M. 85 gr. 412.

[268] Gesenius, 831, Wieseler, 29, Hoffmann W. u. E. I, 305, Keil, 303, Kranichfeld, Kliefoth—vid. Keil l. c.

[269] Напр., Rosenmüller, 308.

[270] Wieseler, 29, Hoffmann W. u. E. I, 304, Keil, 302, Kranichfeld, Kliefoth,—vid. Keil, l. c.; Wolf, 49—50, v. Lennep 57.

[271] Ср. Hengstenberg, 482.

разсказывается объ опустошеніяхъ и войнѣ безъ указанія новаго дѣйствующаго лица, и такимъ дѣйствующимъ лицомъ необходимо представлять тамъ того же «пришедшаго князя». Поэтому здѣсь, раньше этихъ опустошеній, о его «концѣ» не можетъ быть и рѣчи. Съ другой стороны, и то обстоятельство, что этотъ «князь» погибнетъ въ произведенномъ самимъ же имъ «потопѣ» войны, представляется «не очень вѣроятнымъ», по сознанію самихъ защитниковъ такого толкованія [272]; вотъ почему они и хотятъ видѣть въ *шетеф* не потопъ войны, а изліяніе суда Божія.

Гораздо естественнѣе по смыслу относить мѣстоименіе въ словѣ *кицо* къ тому же предмету, къ какому относятся и опустошенія и война, упоминаемыя дальше, т. е. къ народу еврейскому, который, какъ уже сказано раньше, есть логическое подлежащее всего откровенія. «Конецъ его», народа еврейскаго, будетъ «въ потопѣ» войны. Говоря о «концѣ» народа еврейскаго, слѣдуетъ разумѣть только окончаніе его церковно-политическаго существованія, какъ народа, избраннаго Богомъ для особаго Ему служенія, снабженнаго Его закономъ и верховно управляемаго Имъ Самимъ. «Конецъ» такого народа есть отнятіе у него теократическаго устройства, состояніе его, какъ לא עמי «не-народа Божія» (Осіи 1, 9.). О евреяхъ, какъ о націи, здѣсь ничего не говорится, такъ какъ и вся молитва Даніила и все откровеніе о седьминахъ имѣетъ въ виду не націю еврейскую, а народъ Божій. Этотъ-то народъ, его политически-церковный строй, и кончится среди бѣдствій войны, послѣ отверженія имъ Мессіи.

По смыслу, недалеко отстоятъ отъ даннаго толкованія и тѣ экзегеты, которые мѣстоименіе въ словѣ *кицо* относятъ къ упомянутымъ раньше городу и храму [273] или къ одному храму [274]. Но относить это мѣстоименіе къ городу и храму невозможно потому, что тогда оно стояло бы во множественномъ числѣ; относить же его къ одному храму, минуя городъ, нѣтъ основаній.

---

[272] Keil, 303.

[273] Geier,—vid. Hengstenberg, 482.

[274] Sostmann, 193, Hävernick, 379.

Невозможно также принять и то толкованіе, по которому это мѣстоименіе относится къ самому опустошенію города и храма: «и конецъ опустошенія будетъ въ потопѣ [275]». При такомъ толкованіи (по справедливому замѣчанію Визелера [276]), получится тавтологія: «и конецъ опустошенія», произведеннаго войскомъ пришедшаго князя, «будетъ въ наводненіи» тѣмъ же войскомъ, или: конецъ опустошенія будетъ въ опустошеніи.

Изъ древнихъ переводовъ ближе всѣхъ къ еврейскому тексту сирскій: «и конецъ его въ наводненіи», Вульгата: et finis ejus vastitas, и Симмахъ: καὶ ἡ προθεσμία αὐτοῦ ἐν ἐπικλυσμῷ «и срокъ, предѣлъ его въ наводненіи». LXX соединяютъ эти слова съ предшествующимъ *габба*, читая вмѣсто послѣдняго: וּבָא: καὶ ἥξει ἡ συντέλεια αὐτοῦ μετ' ὀργῆς, причемъ αὐτοῦ относится, конечно, къ τοῦ χριστοῦ *(нагид)*, а *шетеф* понимается въ смыслѣ אַף שֶׁטֶף «изліяніе гнѣва» Иритч. 27, 4 [277]. Ѳеодотіонъ же переводитъ: ἐκκοπήσονται (22 кодд. HP, въ томъ числѣ Александрійскій, изданія Альд. и Компл.: καὶ ἐκκοπήσονται) ἐν κατακλυσμῷ (5 кодд. и Компл. изд.: ὡς ἐν κατακλυσμῷ), древне-лат.: excidetur in cataclysmo, слав.: *и потребятся аки въ потопъ*. Вѣроятно, Ѳеодотіонъ читалъ здѣсь: וְנִקְצָה вмѣсто *вэкиццо* (ср. Суд. 1, 7); или, можетъ быть, онъ отнесплъ мѣстоименіе къ предшествующимъ словамъ: καὶ τὴν πόλιν καὶ τὸ ἅγιον и свободно переводилъ вмѣсто «и конецъ ихъ»— «и окончатся». Изъ русскихъ переводовъ обращаетъ на себя вниманіе переводъ Кіевской Академіи: «и стремленія котораго, какъ разлившъ воды»; онъ смѣшиваетъ понятіе «конца» съ понятіемъ «цѣли, стремленія», какое смѣшеніе не имѣетъ для себя основанія въ еврейскомъ языкѣ [278].

Заключительныя слова 26-го стиха: *и до конца рати сокращенныя чиномъ погибелми*, переводятся съ еврейскаго и толкуются весьма различно, смотря по тому, какъ связываются между

---

[275] Vitringa—vid. C. B. Michaelis, 349; C. B. Michaelis, l. c., Hengstenberg, 482—483.

[276] Wieseler, 28.

[277] Ср. Hahn, 67, Fraidl, 7.

[278] Ср. Gesenius, 740.

собою четыре слова, стоящія рядомъ въ еврейскомъ текстѣ: וְעַד מִלְחָמָה נֶחֱרֶצֶת שֹׁמֵמוֹת קֵץ [279]. Значеніе каждаго изъ этихъ словъ довольно опредѣленно: послѣ соединительнаго союза *вэ* «и» слѣдуетъ предлогъ *ад* «до», *кец* значитъ «конецъ», *мильхама* — война; менѣе устойчиво значеніе двухъ остальныхъ словъ: *нехэрецет* «опредѣленіе» и *шомемот* «опустошеніе»; объ нихъ будетъ сказано впослѣдствіи. Посмотримъ, какъ передаютъ эти слова древніе переводы. Пешито и здѣсь стоитъ ближе другихъ къ еврейскому тексту: «до конца войны, приговора опустошеній», причемъ онъ еврейскія слова *мильхама* и *нехэрецет* считаетъ зависящими отъ *кец*, а *шомемот* отъ *нехэрецет*. Ѳеодотіонъ также всѣ слова ставитъ въ зависимость отъ *кец*: καὶ ἕως τέλους πολέμου συντετμημένου τάξει ἀφανισμοῖς (въ 7 кодд. HP, равно какъ у Климента Александрійскаго [280], Евсевія Кесарійскаго [281], св. Іоанна Златоуста [282] и блаж. Ѳеодорита [283] τάξει нѣтъ); древне-лат.: et usque ad finem belli concisi interitus (τάξει не имѣется); армянскій переводъ: «и до конца войны сокращенной онъ опредѣлитъ (τάξει) уничтоженіе», конто-мемф.: «онъ утвердитъ погибели» (конто-саг. конецъ разбираемыхъ словъ относитъ къ слѣдующимъ: «опредѣлена на погибели седьмина одна и половина седьмины»), старо-славянскій имѣетъ здѣсь только: *и до конца рати съкращенныѣ*. Въ этихъ переводахъ *мильхама* ставится въ зависимость отъ *кец*, *нехэрецет* передается дважды и считается то опредѣленіемъ къ *мильхама*, съ двойнымъ значеніемъ: «сокращенная по опредѣленію» или: «опредѣленная на сокращеніе», то сказуемымъ: «онъ опредѣлитъ», а *шомемот*

---

[279] Вмѣсто ועד одинъ кодексъ K. имѣетъ ועל; вмѣсто קץ 1 имѣетъ מקץ и 1— צת; у de-R. 1 имѣетъ оба слова: עת קץ. Вмѣсто נחרצת въ 1 кодексѣ K. стоитъ ונחרצת; שממות въ 45 кодексахъ пишется שממות и въ 5—שממת.

[280] См. M. 8 gr. 856.

[281] См. переводъ M. 22 gr. 597.

[282] См. переводъ M. 47 gr. 899; ср. Ἑρμηνεῖα εἰς τὸν Δανιὴλ προφήτην, M. 56 gr. 240.

[283] Καὶ ἕως τέλους, φησὶ, πολέμου συντετμημένου ἀφανισμοῖς. Ἀφανισμὸν γὰρ φησὶ, παντελῆ ὑπομενοῦσιν, οἷόν τινι καταλυσμῷ τῷ πολέμῳ παραδοθέντες, καὶ εἰς τέλος τούτοις ὑποκλιθήσονται [al: ὑποβληθήσονται] τοῖς κακοῖς, καὶ οὐδεμιᾶς πώποτε ἀνακλήσεως τεύξονται. M. 81 gr. 1481.

представляется дополненіемъ къ *нехэрецет* съ значеніемъ орудія, средства. Древніе латинскіе переводы, слѣдующіе вообще за Θеодотіономъ, здѣсь нѣсколько уклоняются отъ него; такъ, Тертулліанъ переводитъ: usque ad finem belli, quod concidetur usque ad interitum, «до конца войны, которая сократится (собственно: отрѣжется) до погибели [284]»; псевдо-Кипріанъ: usque ad finem belli breviati exterminii [285]. Симмахъ переводитъ уже иначе: καὶ ἕως τῆς προθεσμίας πόλεμος τέτμηται ἐρημώσεων, «и до срока война опредѣлена на опустошенія»; здѣсь *мильхама* считается подлежащимъ, а *нехэрецет* сказуемымъ. Еще иначе LXX: καὶ ἕως καιροῦ συντελείας ἀπὸ πολέμου πολεμηθήσεται; здѣсь переводятся только три слова: *вэад кец мильхама*, причемъ послѣднее слово переводится дважды, а вмѣсто «до конца» говорится: «до времени скончанія» или: «до скончанія времени». *Мильхама* и здѣсь, очевидно, представляется стоящимъ независимо отъ *кец*. Вторично у LXX-ти эти слова переводятся полнѣе: ἕως καιροῦ συντελείας πολέμου· καὶ ἀφαιρεθήσεται ἡ ἐρήμωσις «до времени скончанія войны: и прекратится опустѣніе»; здѣсь *мильхама* ставится уже въ зависимость отъ *кец*; слова: καὶ ἀφαιρεθήσεται ἡ ἐρήμωσις, относящіяся въ переводѣ LXX-ти къ дальнѣйшимъ словамъ, взятымъ изъ 27-го стиха, являются свободнымъ переводомъ еврейскихъ словъ: *нехэрецет шомемот*. Вообще, всѣ эти слова текста переданы у LXX-ти очень свободно, съ цѣлію вывести изъ нихъ указаніе на войну Маккавеевъ и удаленіе ими мерзостей изъ храма, оскверненнаго Антіохомъ [286]. Вульгата допускаетъ здѣсь одно существенное отступленіе отъ еврейскаго текста: предлогъ *ад* переводитъ предлогомъ post: et post finem belli statuta desolatio [287]. Здѣсь *мильхама* также ставится въ зависимость отъ *кец*, *нехэрецет* же согласуется не съ *мильхама*, какъ у Θеодотіона, а съ *шомемот*.

---

[284] Vid. M. 2 lat. 613.

[285] Vid. Fraidl.

[286] Ср. Wieseler, 202, c. 203, a.

[287] Sanctius, по словамъ Sostmann'a (p. 197), объясняетъ этотъ переводъ чтеніемъ עוֹד вмѣсто עַד, такъ какъ עוֹד можетъ иногда имѣть значеніе «послѣ», напр., Іон. 3, 4: «еще сорокъ (=послѣ сорока) дней, и Ниневія будетъ разрушена».

Такое же разногласіе въ пониманіи разбираемыхъ словъ находимъ и у древнихъ и новыхъ толкователей. Нѣтъ нужды останавливаться на указаніи и разборѣ этихъ разногласій; перейдемъ прямо къ обоснованію болѣе вѣроятнаго толкованія.

Прежде всего является вопросъ: зависитъ ли *милхама* «война» отъ предшествующаго *кец* «конецъ» или стоитъ независимо отъ него, образуя подлежащее всего предложенія? За послѣднее рѣшеніе вопроса говоритъ, во-первыхъ, то, что *кец* является здѣсь только повтореніемъ предшествующаго выраженія *кицо*, «конецъ его», слѣдовательно, при немъ должно быть подразумѣваемо то же существительное, какъ и тамъ: «конецъ народа». Что *кец* здѣсь не имѣетъ ни члена, ни мѣстоименной приставки, это не можетъ говорить за отличіе подразумѣваемаго при немъ опредѣленія отъ того, которое выше разумѣлось въ *кицо:* эти два одинаковыхъ слова стоятъ такъ близко одно отъ другого, что и безъ члена совершенно понятно, что опредѣленія ихъ не могутъ быть различны. Нѣкоторые [288] думаютъ, что здѣсь говорится о концѣ всего періода семидесяти седьминъ, но ничѣмъ не могутъ подтвердить этого своего мнѣнія, такъ какъ никакихъ основаній для него не имѣется. То же нужно сказать и о томъ мнѣніи [289], будто здѣсь разумѣется «конецъ всего», т. е. конецъ міра. Во-вторыхъ, если бы *милхама* являлось опредѣленіемъ къ *кец* и было только прямымъ названіемъ того, что уже прежде разумѣлось въ *шетеф* и отчасти въ *габба*, то оно имѣло бы при себѣ членъ, какъ имѣютъ и эти слова: «до конца войны», о которой говорилось раньше, «до конца этой войны [290]». Другое дѣло, когда говорится: «и до конца война», т. е. будетъ продолжаться; здѣсь, когда *милхама* является подлежащимъ, то въ этой войнѣ должно видѣть уже нѣчто новое, не заключавшееся въ предшествующихъ словахъ, иначе была бы только тавтологія. И дѣйствительно, тамъ говорилось о враждебномъ походѣ князя и наводненіи земли его войсками; здѣсь же прибавляется, что это на-

[288] Keil 303; cf. Hitzig 164, Lengerke 458.
[289] Kliefoth vid. Zöckler, S. 183; Rohling, 277.
[290] Ср. Hengstenberg, 485, Lengerke, 458.

водненіе встрѣтитъ сопротивленіе жителей, будетъ сопровождаться постоянной войной. Наконецъ, въ-третьихъ, и слѣдующія слова: «опредѣленіе опустошеній» болѣе умѣстны какъ приложеніе, чѣмъ какъ подлежащее: понятіе, выражаемое ими, не столь существенно отлично отъ понятія «войны», чтобы оно могло составлять подлежащее новаго предложенія; всякая война сопровождается опустошеніями, и разъ сказано, что будетъ война, то уже нѣтъ нужды добавлять, что будутъ опустошенія. Между тѣмъ эти слова вполнѣ умѣстны въ качествѣ приложенія, хотя въ нихъ и мало новаго сравнительно съ опредѣляемымъ ими словомъ: было уже отмѣчено особенное пристрастіе книги пр. Даніила къ парамъ словъ для выраженія одного понятія, и въ настоящемъ случаѣ можно видѣть одинъ изъ примѣровъ этого. Итакъ, примыкая къ переводу Симмаха (и отчасти LXX-ти) и слѣдуя большинству новѣйшихъ экзегетовъ, можно переводить начало разбираемаго предложенія такъ: «и до конца (еврейскаго народа будетъ) война».

Дальнѣйшія два существительныхъ составляютъ приложеніе къ *милхама*. Первое изъ нихъ, *нехэрецет*, происходитъ отъ глагола *харац*, который встрѣчался уже раньше, съ значеніемъ «быть острымъ, рѣзать», а затѣмъ—«опредѣлять, рѣшать». *Нехэрецет* есть причастіе 2-й формы, употребляемое въ значеніи имени существительнаго и поставленное здѣсь in statu constructo; дальше, въ стихѣ 27-мъ, встрѣчается и его status absolutus: נֶחֱרָצָה, какъ и въ другихъ мѣстахъ: въ книгѣ Даніила 11, 36 и Исаіи 10, 23. 28, 22. Изъ сравненія этихъ мѣстъ можно вывести, что *нехэраца* значитъ: «опредѣленіе, приговоръ», собственно: «отсѣченное, твердо опредѣленное». Уже самый status constructus показываетъ, что слово это въ разбираемомъ предложеніи тѣсно связано со слѣдующимъ; въ такой связи оно, какъ мы видѣли, стоитъ и въ древнихъ переводахъ, хотя большинство ихъ и передаетъ его глагольной формой.

Шомемот есть также причастіе, употребляемое въ значеніи имени существительнаго, и происходитъ отъ глагола שָׁמַם «столбенѣть, быть неподвижнымъ», отсюда — «быть безжизненнымъ, пустыннымъ»; שׁוֹמֵם значитъ «опустошенный, пустынный»

(о землѣ), а множественное число женскаго рода: *шомемот*—«опустошенія, опустошенныя мѣста, развалины». Такое значеніе подтверждается употребленіемъ этого слова у самого пророка Даніила, именно,—въ его молитвѣ, предшествующей откровенію о седьминахъ (9, 18), а также у Пс. 61, 4, Іез. 36, 4, гдѣ слово это параллельно съ חָרְבוֹת, «развалины» [291]. «Опредѣленіе опустошеній», или: «опредѣленіе объ опустошеніяхъ» значитъ то же, что и «опредѣленныя опустошенія».

Все разбираемое предложеніе: «до конца—война, опредѣленіе объ опустошеніяхъ» имѣетъ такой смыслъ: до конца еврейскаго народа, до прекращенія его церковно-политическаго существованія, будетъ продолжаться опустошительная война, и война эта будетъ вызвана не человѣческими страстями и «интересами», выражаясь языкомъ современной политики, а опредѣленіемъ Божіимъ, какъ наказаніе невѣрному народу. Конечно, нельзя говорить, что іудейская война, закончившаяся разрушеніемъ Іерусалима и храма, не имѣла поводовъ въ человѣческихъ страстяхъ; такіе поводы были. Но ея внутреннею причиною (въ противоположность внѣшнимъ поводамъ) было именно опредѣленіе Божіе, выразившееся въ томъ, что Богъ попустилъ вызванную этими поводами войну. Самая ея опустошительность и жестокость, столь не согласующаяся съ характеромъ предводителей римскихъ войскъ, вызываетъ недоумѣніе свѣтскихъ историковъ, а насъ можетъ убѣдить въ томъ, что эта война вызвана и продолжалась по божественному опредѣленію.

Въ словахъ: «опредѣленныя опустошенія» нельзя видѣть мысли объ ограниченности этихъ опустошеній извѣстною, Богомъ предопредѣленною, мѣрою [292]. Этой мысли не заключаетъ въ себѣ ни глаголъ *харац*, ни его причастіе *нехэраца;* здѣсь дается мысль о причинѣ опустошеній, о томъ именно, что они происходили по «опредѣленію» Божію, но не объ ихъ ограниченіи какою-либо мѣрою [293]. Переводъ Кіевской Дух. Академіи и здѣсь уклоняется

---

[291] Ср. Hengstenberg, 486.

[292] Такъ думаетъ Оберленъ, 154.

[293] Ср. Keil, 304.

отъ еврейскаго текста и, въ частности, слишкомъ оригинально понимаетъ слово *нехэрецет:* «такъ что къ концу войны все получитъ видъ развалинъ»; «опредѣленіе», объясняетъ авторъ перевода въ примѣчаніи, «собственно внѣшнее, т. е. форма или видъ— отъ *харац* вырѣзывать». Но такого значенія, какъ мы видѣли, *нехэрецет* вовсе не имѣетъ. Синодальный переводъ совсѣмъ не передаетъ этого слова: «и до конца войны будутъ опустошенія»; такъ же и Г. П. Павскій, только онъ усиливаетъ понятіе *шомемот:* «и до скончанія войны опустошительныя истребленія».

Весь 26-й стихъ имѣетъ такой смыслъ. Чрезъ нѣкоторый промежутокъ времени послѣ двухъ первыхъ періодовъ семидесяти седьминъ, Мессія, явившійся на границѣ 69-й и 70-й седьминъ (ст. 25), будетъ убитъ, а народъ еврейскій будетъ отверженъ, городъ и храмъ будутъ разрушены войскомъ непріязненнаго вождя, и самъ народъ погибнетъ среди войны и опустошеній, предопредѣленныхъ Богомъ. Стихъ этотъ, по сравненію съ 25-мъ и 27-мъ, является какъ бы вставкой между ними: расчлененіе періода седьминъ, возвѣщеніе будущихъ событій, сопровождаемое указаніемъ точныхъ границъ ихъ и разстоянія одного отъ другого, здѣсь прерывается и снова начинается только въ 27-мъ стихѣ. События же, возвѣщенныя въ 26-мъ стихѣ, имѣютъ очень неточное хронологическое опредѣленіе, указывающее только, что они совершатся «послѣ» 2-го періода седьминъ, да и по самому характеру своему они отличаются неопредѣленностью: «конецъ», «до конца» и т. п. Почему же эти событія указываются именно здѣсь, а не въ томъ мѣстѣ, гдѣ имъ слѣдовало стоять по хронологическому порядку? Другими словами: почему для возвѣщенія объ убійствѣ Мессіи и послѣдствіяхъ этого убійства ангелъ отступаетъ отъ строго-хронологическаго порядка повѣствованія и говоритъ объ этихъ событіяхъ, случившихся въ срединѣ и послѣ 70-й седьмины,—раньше, чѣмъ о событіи, относящемся ко всей этой седьминѣ,—объ «укрѣпленіи завѣта для многихъ»? Кажется, можно объяснить это отступленіе намѣреніемъ Господа сряду же дать Даніилу возможность понять характеръ мессіанскаго времени, разсказъ о которомъ снова начинается въ 26-мъ стихѣ. Евреи

склонны были ждать Мессію, какъ славнаго земного царя, имѣющаго возстановить и возвеличить земное еврейское царство и подчинить ему всѣ остальные народы. 24-й стихъ откровенія о седьминахъ могъ отчасти, для предубѣжденнаго читателя, благопріятствовать этой мысли: хотя блага, обѣщанныя въ немъ, сами по себѣ отличаются духовнымъ характеромъ, но совсѣмъ не исключаютъ возможности и матеріальнаго благосостоянія; въ 25-мъ стихѣ Мессія называется даже «княземъ». И вотъ, когда, по ходу повѣствованія, снова пришло время говорить о царствѣ Мессіи, Господь, чтобы отнять у Даніила всякую возможность понимать подъ этимъ царствомъ земное еврейское царство, прямо указываетъ ему то, что ярче всего говоритъ о невѣрности такого пониманія: отверженіе Мессіи народомъ еврейскимъ и послѣдствія этого. И только послѣ такого предупрежденія, когда Даніилъ могъ уже понять смыслъ обѣтованій 24-го стиха и сущность мессіанскаго царства, когда онъ могъ вспомнить и пророчество Исаіи объ уничиженіи Мессіи (ср. 53 гл.), тогда только ему сообщается и хронологія мессіанскаго времени [294].

Стихъ 27-й.

Послѣ установки общей точки зрѣнія на мессіанское время, Даніилу могли быть вполнѣ понятны и слова откровенія, содержащіяся въ 27-мъ стихѣ. Онъ уже не могъ теперь подъ завѣтомъ, о которомъ здѣсь говорится, понимать какой-либо союзъ съ матеріальными цѣлями, не могъ недоумѣвать относительно того, почему прекращается ветхозавѣтная обрядность и т. п. Поэтому ангелъ прямо и приступаетъ къ возвѣщенію этихъ событій.

Первое предложеніе этого стиха: *и утвердитъ завѣтъ многимъ седьмина едина*, по-еврейски читается: וְהִגְבִּיר בְּרִית לָרַבִּים שָׁבוּעַ אֶחָד и переводится почти всѣми одинаково: «и утвердитъ завѣтъ для многихъ одна седьмина». *Гигбир* отъ גָּבַר или גִּבֵּר

[294] Ср. Оберленъ, 154—156.

«дѣлаться сильнымъ», откуда גֶּבֶר «мужъ» и др.; 5-я форма этого глагола, поставленная здѣсь, имѣетъ дѣйствительное значеніе: («заставлять дѣлаться сильнымъ» =) «дѣлать сильнымъ, крѣпкимъ»; это видно отчасти изъ употребленія этой формы въ Пс. 11 [12], 5, отчасти изъ обычнаго значенія ея и сравненія съ употребленіемъ 3-й формы того же глагола, напр., въ Еккл. 10, 10, особенно—въ Зах. 10, 6. 12 [295]. Неправильно толкуетъ форму *гибгир* г. Некрасовъ [296], придавая ей начинательное значеніе: «положитъ основаніе завѣта». Ни на чемъ не основано и пониманіе этого слова въ смыслѣ: «сдѣлать тяжкимъ» [297]; глаголъ *габар* не имѣетъ и признака такого значенія.

Бэрит есть обычное выраженіе для обозначенія союза Бога съ людьми, или—съ избраннымъ народомъ, Израилемъ. Правда, оно употребляется и для обозначенія союзовъ между народами (Іис. Н. 9, 6. и дал.), союзовъ между отдѣльными людьми: брака (Мал. 2, 14: *жена завѣта твоего*, синодальный переводъ: «законная жена твоя»), дружбы (1 Цар. 18, 3. 23, 18.); но чаще всего вообще въ Св. Писаніи [298], а въ книгѣ пр. Даніила—исключительно (кромѣ 9, 27. встрѣчается шесть разъ: 9, 4. 11, 22. 28. 30 дважды, 32) слово *бэрит* употребляется для обозначенія именно завѣта Бога съ людьми. На основаніи такого употребленія этого слова и общаго характера откровенія о седьминахъ, слѣдуетъ заключить, что и здѣсь *бэрит* употреблено въ томъ же смыслѣ, въ смыслѣ «завѣта» Бога съ людьми. «Утвержденіе завѣта», какъ одно изъ благъ мессіанскаго времени, не есть нѣчто новое, незнакомое Даніилу изъ откровеній прежнихъ пророковъ: Іеремія (31, 31—34. 32, 40—41.) и Іезекіиль (16, 60. 62. 34, 25. 37, 26.) много говорили о «новомъ», «вѣчномъ завѣтѣ», который заключитъ Господь со Своимъ народомъ, а чрезъ него и со всѣми людьми. Теперь Даніилу, уже

---

[295] Ср. Hengstenberg, 489.

[296] «Годъ крестныхъ страданій» стр. 33.

[297] Hitzig, 165, ср. Cornill, 6; Behrmann (64) переводитъ: «онъ заставитъ многихъ отступить отъ завѣта»; Graetz и Bevan и здѣсь стараются исправить евр. текстъ (Bevan p. 159—160), яснѣе всего доказывая этимъ невозможность толковать данное мѣсто въ приложеніи ко времени Епифана.

[298] Ср. Gesenius, 128—129.

предупрежденному въ предшествующемъ стихѣ о сущности этого завѣта, точно указывается время его установленія.

Дополненіе *лараббим* указываетъ на вторую изъ заключающихъ завѣтъ сторонъ. Завѣтъ утвержденъ будетъ Богомъ «для многихъ», т. е. «со многими». Но кто эти «многіе»? Обращаясь за рѣшеніемъ этого вопроса прежде всего къ книгѣ пр. Даніила, мы видимъ, что слово «многіе» въ приложеніи къ людямъ употребляется однажды въ 8-й главѣ (ст. 25), шесть разъ въ 11-й (14. 33. 34. 39. 40. 44.) и четыре въ 12-й (2. 3. 4. 10.). Такимъ образомъ, слово это принадлежитъ къ числу обычнѣйшихъ у пр. Даніила выраженій, характеризующихъ его пророческую рѣчь. При этомъ, рѣшительно незамѣтно, чтобы этимъ словомъ онъ называлъ преимущественно одну какую-нибудь часть людей, напр., исключительно евреевъ или язычниковъ, или изъ первыхъ—вѣрныхъ своей религіи или ей измѣнившихъ и т. под. Между перечисленными случаями употребленія слова «многіе» есть даже совершенно аналогичный новозавѣтному: «за васъ и за многихъ проливаемая»—Кровь Христова (ср. Матѳ. 26, 28. Марк. 14, 24. Евр. 9, 28. Рим. 5, 15. 19.), гдѣ «многіе» равносильно «всѣ»,— это именно въ Дан. 12, 2: «*и мнози отъ спящихъ въ земныя персти востанутъ, сіи въ жизнь вѣчную, а оніи во укоризну и въ стыдѣніе вѣчное*. Въ большинствѣ указанныхъ случаевъ *раббим* употреблено безъ члена; но и тѣ случаи, гдѣ оно имѣетъ членъ (11, 33. 39. 12, 3.), ничѣмъ не отличаются отъ первыхъ, и нельзя даже замѣтить, чтобы въ этихъ случаяхъ говорилось о «многихъ», раньше уже упомянутыхъ. Поэтому напрасно будемъ искать «многихъ», о которыхъ говорится въ 27-мъ стихѣ, гдѣ-либо раньше; эти поиски не будутъ имѣть успѣха. 8, 25 сюда совершенно не подходитъ, такъ какъ тамъ говорится не о «заключеніи союза со многими», а, напротивъ, о «погубленіи, истребленіи многихъ»: יַשְׁחִית רַבִּים. Искать же «многихъ» дальше, напр. въ 11, 33 [299], мы не имѣемъ никакого права: это будетъ противъ

[299] Какъ дѣлаетъ Lengerke (S. 461), говоря, что «объ нихъ (отступникахъ, упоминаемыхъ въ 11, 33.) думаетъ авторъ, и это понятно для слушателя».

всякихъ правилъ употребленія члена; да если бы 11, 33. было и раньше 27-го ст. 9-й гл., и тогда бы невозможно было отождествлять «многихъ», упоминаемыхъ въ нихъ: въ откровеніи о седьминахъ говорится объ «укрѣпленіи завѣта для многихъ», а въ 11, 33—объ «отступленіи» многихъ «отъ завѣта»; что «многіе» эти не одни и тѣ же, видно съ перваго взгляда. Поэтому лучше подъ «многими» 27-го стиха разумѣть «объектъ благодатныхъ обѣтованій» 24-го стиха [300], такъ какъ «укрѣпленіе завѣта» есть краткое обозначеніе всѣхъ этихъ благъ, принесенныхъ на землю Мессіей. Тамъ, въ 24-мъ стихѣ, этотъ объектъ обозначенъ словами: «на народъ твой и на святой городъ твой»; здѣсь, когда Даніилу уже сообщено, что народъ еврейскій убьетъ Мессію и за это будетъ отвергнутъ и прекратитъ свое церковно-политическое существованіе,—здѣсь объектъ этотъ представляется только какъ «многіе»,—значитъ, далеко не весь еврейскій народъ, какъ раньше, можетъ быть, надѣялся Даніилъ; послѣ 26-го стиха это «многіе» было для него уже вполнѣ понятно. При такомъ пониманіи легко объяснить и членъ въ словѣ *лараббим:* онъ указываетъ, что эти «многіе» принадлежатъ тому народу, о которомъ говорится во всемъ пророчествѣ. Такое пониманіе соотвѣтствуетъ и молитвѣ Даніила о своемъ народѣ и его любви къ нему. Иначе, если бы «многіе» эти были не изъ народа еврейскаго, то, при всей высотѣ души пророка, любящаго этотъ народъ не какъ свой, родной, а какъ избранный Богомъ для высшихъ цѣлей,—все-таки какъ огорчила бы его вѣсть о совершенномъ отверженіи Богомъ его народа! Теперь же ему возвѣщено, что хотя нѣкоторые изъ его народа, «многіе», вступятъ въ Завѣтъ Христовъ. Поэтому-то св. Іоаннъ Златоустъ называлъ это предложеніе «благимъ» (τὰ χρηστά [301]),—главнымъ образомъ, разумѣется, для самого Даніила. И нѣкоторые изъ древнихъ толкователей подъ «многими» 27-го стиха прямо разумѣли вѣрую-

---

[300] Hengstenberg, 490—491.

[301] Ὅρα πῶς ἐν τοῖς λυπηροῖς τὸν λόγον κατέπαυσε, καὶ τὰ μὲν χρηστὰ ἀσαφῶς εἶπεν, τοῦτο γάρ ἐστι· Δυναμώσει πολλοῖς διαθήκην ἑβδομάς μία· τὰ δὲ λυπηρὰ συνεχῶς καὶ πολλάκις. Ἑρμηνεῖα, M. 56 gr. 240.

щихъ во Христа изъ іудеевъ (напр. Евсевій Кесарійскій [302], Василій Селевкійскій [303]).

Гдѣ же подлежащее разбираемаго предложенія? Естественнѣе всего слѣдуетъ считать таковымъ послѣднія слова предложенія: *шабуа ехад,* «седьмина одна». Это слѣдуетъ какъ изъ того, что почти всѣ слова, опредѣляющія время, занимаютъ въ откровеніи о седьминахъ мѣста подлежащихъ, такъ и изъ того, что трудно найти для разбираемаго предложенія другое какое-либо подлежащее: подразумѣвать, какъ дѣлаютъ многіе новые экзегеты, Мессію [304] или «князя пришедшаго» [305]—невозможно, такъ какъ эти слова стоятъ слишкомъ далеко отъ даннаго предложенія, и въ предшествующихъ предложеніяхъ подлежащее было другое. Поэтому уже и всѣ древніе переводы (Θеодотіонъ: καὶ δυναμώσει διαθήκην πολλοῖς ἑβδομὰς μία, Вульгата: Confirmabit autem pactum multis hebdomada una), кромѣ LXX-ти и Пешито, и древніе толкователи, нѣкоторые еврейскіе ученые (напр., Раши) и многіе новѣйшіе экзегеты [306] считаютъ подлежащимъ даннаго предложенія слова *шабуа ехад:* «утвердитъ завѣтъ для многихъ одна седьмина». Это значитъ, что въ продолженіе одной седьмины будетъ утвержденъ завѣтъ со многими;—кѣмъ, здѣсь не говорится, но ясно, что Тѣмъ, Который и раньше заключилъ съ Израилемъ Ветхій Завѣтъ, потомъ обѣщалъ заключить и Новый (Іер. 31, 31.),—т. е. Самимъ Богомъ. Случаи, подобные этому, когда единицы времени представляются какъ бы дѣйствующими

---

[302] Τίσι δὲ πολλοῖς ταύτην [τὴν καινὴν διαθήκην] ἐνεδυνάμωσεν, ἢ δηλονότι τοῖς ἑαυτοῦ μαθηταῖς καὶ ἀποστόλοις, καὶ τοῖς ἐξ Ἑβραίων εἰς αὐτὸν πεπιστευκόσιν ἅπασι; M. 22 gr. 625. 628.

[303] Εἶτα πάλιν ἐπαναλαβὼν τὰ περὶ τῆς διαθήκης τῆς πρὸς τοὺς ἀγαπῶντας τὸν Θεὸν καὶ φυλάσσοντας τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ, λέγει· Καὶ δυναμώσει διαθήκην πολλῶν. Ἑβδομὰς μία. Ἕως γὰρ ἑβδόμου ἔτους μετὰ τὴν ἀνάληψιν τοῦ Σωτῆρος, πλειόνων ἀλλεπαλλήλων κακῶν καταλαβόντων τοὺς Ἰουδαίους, πολλοὶ τῇ ἐκδίκησιν θεωροῦντες ἐπίστευσαν εἰς τὸν Σωτῆρα. M. 85 gr. 412.

[304] Sostmann 174, Rohling 278, и др.

[305] Rosenmüller 309, Wieseler 32—34, Keil 305, Zöckler 183, Wolf 51, v. Lennep 66, Павскій въ своемъ переводѣ и др.

[306] Hitzig 164, Hävernick 381, Hengstenberg 487, Lengerke 460, Оберлинъ 160, Knabenbauer 260, и др.

лицами, неоднократно встрѣчаются въ Св. Писаніи (напр. Мал. 4, 1. Іов. 3, 3. 10. 30, 17.[307]).

Переводы сирскій и LXX-ти, какъ уже замѣчено, отступаютъ здѣсь отъ еврейскаго текста. Пешито разнится отъ другихъ переводовъ только въ передачѣ послѣднихъ словъ предложенія; именно, онъ соединяетъ слова *шабуа ехад* со слѣдующими: וְחֲצִי הַשָּׁבוּעַ и переводитъ ихъ: «въ продолженіе одной седьмины и половины седьмины». LXX же, передавая данное предложеніе дважды, оба раза далеко отступаютъ отъ еврейскаго текста: καὶ δυναστεύσει ἡ διαθήκη εἰς πολλούς,—здѣсь совсѣмъ опущены слова, опредѣляющія время; (καὶ ἀφαιρεθήσεται ἡ ἐρήμωσις) ἐν τῷ κατισχῦσαι τὴν διαθήκην ἐπὶ πολλὰς ἑβδομάδας,—здѣсь искаженъ самый смыслъ предложенія. Вторичный переводъ разбираемыхъ словъ мы находимъ и у Ѳеодотіона и въ зависящихъ отъ него переводахъ, но онъ буквально сходенъ съ первичнымъ переводомъ, уже приведеннымъ.

Указавъ содержаніе всей 70-й седьмины, ангелъ говоритъ о томъ, что случится въ срединѣ ея: *въ полъ же седьмины отъимется жертва и возліяніе* וְחֲצִי הַשָּׁבוּעַ יַשְׁבִּית זֶבַח וּמִנְחָה «и средина седьмины прекратитъ жертву и приношеніе»; слѣдовательно, и здѣсь грамматическимъ подлежащимъ являются слова, опредѣляющія время: «средина седьмины», логическимъ же—Богъ. Еврейскому тексту слѣдуютъ переводы Акилы и Симмаха: ἥμισυ δὲ τῆς ἑβδομάδος παύσεται θυσία καὶ δῶρον. Ѳеодотіоновъ переводъ двукратно передаетъ эти слова такимъ образомъ: καὶ ἐν τῷ ἡμίσει (9 кодд. HP, Ald.: ἥμισυ) τῆς ἑβδομάδος καταπαύσει θυσιαστήρια (другіе кодд.: θυσιαστήριον, θυσίασμα, θυμίαμα) καὶ θυσίας (др.: θυσίαν, или: καὶ θυσίας καὶ σπονδήν), и затѣмъ: ἀρθήσεταί μου (въ 10 кодд. HP, Compl., μου нѣтъ) θυσία καὶ σπονδή; такъ и старо-славянскій: *полъ же седмины ставить трѣбникы и трѣбу*, и снова: *отъимется треба и възліяніе*. Древне-латинскій переводъ, какъ уже сказано, не имѣетъ вставки, соотвѣтствующей Ѳеодотіонову; онъ передаетъ начало 27-го стиха такъ: et in dimidia hebdomade tolletur sacrificium meum et

[307] Ср. Hengstenberg, 487.

supplicatio (libatio?). Такъ же почти, какъ Θεοδοτίωνъ, вторично переводятъ и LXX, только вмѣсто חֲצִי они читаютъ חֵץ: καὶ ἐν τῷ τέλει τῆς ἑβδομάδος ἀρθήσεται ἡ θυσία καὶ ἡ σπονδή. Вульгата: et in dimidio hebdomadis deficiet hostia et sacrificium. Пешито, какъ уже сказано, соединяетъ «половину седьмины» съ предшествующей «одной седьминой», относя къ этимъ полутора седьминамъ и прекращеніе жертвъ. Но такой переводъ, очевидно, неправиленъ: членъ при словѣ *гашшабуа* ясно показываетъ, что здѣсь говорится объ одной и той же седьминѣ.

Хаци можетъ значить какъ «половина» (ср. Исх. 24, 6. 2 Цар. 18, 3.), такъ и: «средина» (Исх. 12, 29. Суд. 16, 3. Пс. 101 [102] 25.), смотря по тому событію, время котораго опредѣляется. Въ книгѣ пророка Даніила, кромѣ даннаго мѣста, *хаци* встрѣчается только однажды, въ 12, 7., въ значеніи «половина». Но одинъ случай не можетъ говорить за то, что и въ данномъ мѣстѣ это слово должно имѣть такой же смыслъ. Здѣсь его гораздо удобнѣе переводить значеніемъ «средина», такъ какъ прекращеніе жертвъ есть событіе, не могущее продолжаться цѣлыя полъ-седьмины. Это видно изъ самаго слова *яшбит*. Оно происходитъ отъ שָׁבַת «покоиться», откуда שַׁבָּת суббота; въ 5-й формѣ этотъ глаголъ значитъ: «заставлять покоиться», затѣмъ: «прекращать, устранять». Всѣ эти значенія вовсе не благопріятствуютъ переводу *хаци* посредствомъ: «половина»; по-русски можно еще сказать: «заставлять покоиться въ продолженіе половины седьмины», но такой переводъ представляетъ только одинъ изъ случаевъ неточности языка: «заставить покоиться» есть также дѣйствіе однократное, и когда говорится: «заставилъ покоиться въ продолженіе полу-седьмины», то собственно разумѣется: заставилъ покоиться и оставилъ въ такомъ состояніи (покоя) въ продолженіе полу-седьмины. Едва ли можно придать такое значеніе еврейской 5-й формѣ. Тѣмъ менѣе можно придавать этой формѣ значеніе начинательное, какъ дѣлаетъ г. Некрасовъ: «съ половины седьмины начнется отмѣненіе жертвоприношенія»[308]. Въ своемъ даль-

[308] «Годъ крестныхъ страданій», стр. 33—34.

нѣйшемъ объясненіи онъ еще болѣе усиливаетъ начинательное значеніе 5-й формы: «съ половины послѣдней седьмины сначала Іоаннъ Креститель, а потомъ и Самъ Спаситель *стали подготовлять* отмѣненіе жертвоприношеній». Значитъ, 5-я форма, по г. Некрасову, имѣетъ даже не начинательное, а, такъ сказать, подготовительное значеніе! Почти такъ же толкуетъ эту еврейскую форму и г. Бѣляевъ [309]: «и половина седьмины заставитъ (или будетъ заставлять) прекратить жертву и приношеніе. Это значитъ, что въ половинѣ седьмины будетъ дѣйствовать причина, которая будетъ прекращать принесеніе жертвъ и даровъ Богу. Но прекратитъ ли она ихъ окончательно? Форма гифилъ на это указанія не даетъ.— —Глаголъ въ этой формѣ можетъ означать и окончательное прекращеніе жертвы, или же продолжающіяся усилія прекратить ее». Такое толкованіе 5-й еврейской формы, понадобившееся г. Бѣляеву для примѣненія откровенія о седьминахъ ко времени антихриста, не подтверждается ни еврейской грамматикой, ни употребленіемъ глагола *шабат*.

Зебах значитъ собственно «закланіе», а затѣмъ и чаще всего, какъ техническій терминъ, означаетъ кровавую жертву. *Минха* «даръ, приношеніе», затѣмъ—«жертва безкровная», куда относятся жертвы хлѣбная и возліянія. *Зебах уминха* «жертва и приношеніе», «жертвы кровная и безкровная», обнимаютъ собою всѣ виды ветхозавѣтныхъ жертвъ; а такъ какъ въ Ветхомъ Завѣтѣ жертвы составляли центръ и главное содержаніе богослуженія, то подъ этимъ выраженіемъ все это богослуженіе и разумѣется. Это еще болѣе подтверждается тѣмъ, что въ 8, 11., гдѣ говорится о временномъ прекращеніи жертвоприношеній въ храмѣ, употребляется не *зебах уминха*, а תָּמִיד, «постоянныя жертвы». Итакъ, смыслъ даннаго предложенія таковъ: въ срединѣ послѣдней седьмины прекратится ветхозавѣтное богослуженіе.

Сопоставляя эти слова съ предыдущими, слѣдуетъ вывести то заключеніе, что «завѣтъ», о которомъ говорилось выше, не есть Ветхій Завѣтъ, тѣсно связанный съ богослуженіемъ: бого-

---

[309] Богословскій Вѣстникъ 1894, іюнь, стр. 412.

служеніе это прекращается въ срединѣ седьмины, а завѣтъ утверждается въ продолженіе всей этой седьмины. Слѣдовательно, какъ уже сказано, онъ есть особый, «новый» завѣтъ, высшій ветхаго, какъ заключающій въ себѣ блага, указанныя въ 24-мъ стихѣ, не принадлежавшія завѣту ветхому. Съ другой стороны, смерть Мессіи, о которой выше говорилось (ст. 26), что она произойдетъ «послѣ шестидесяти двухъ седьминъ», эту смерть естественнѣе всего пріурочить именно къ моменту прекращенія ветхозавѣтнаго богослуженія. Правда, текстъ откровенія не требуетъ этого съ принудительностью, но во всякомъ случаѣ въ немъ можно найти нѣкоторыя основанія къ этому. Прекращеніе ветхозавѣтнаго богослуженія, по связи рѣчи, является однимъ изъ послѣдствій убіенія Мессіи и отверженія народа еврейскаго—и послѣдствіемъ самымъ важнымъ, съ одной стороны, а съ другой—первымъ по времени или даже одновременнымъ съ своей причиной. Мессія убитъ народомъ и народъ отверженъ Богомъ; это, конечно, событія одновременныя, почему и въ текстѣ они связаны весьма тѣсно. Но возможно ли послѣ этого ветхозавѣтное богослуженіе, какъ выраженіе общенія Израиля съ Іеговой? Очевидно, если прервано это общеніе, то прекращается и его проявленіе, богослуженіе. Могутъ возразить, что исторія не подтверждаетъ этого: извѣстно, что и послѣ смерти Христа ветхозавѣтное богослуженіе продолжалось,—до тѣхъ поръ, пока не былъ разрушенъ храмъ. Но здѣсь дѣло не во внѣшнихъ дѣйствіяхъ, а во внутреннемъ значеніи богослуженія: внѣшнія формы его могли сохраниться, могутъ быть возстановлены даже теперь, но онѣ и останутся внѣшними формами, безъ всякаго внутренняго значенія, поскольку уже не будутъ сопровождаться благоволеніемъ и снисхожденіемъ Божіимъ. Наши раскольники, напримѣръ, могутъ усвоить всѣ формы православнаго богослуженія, могутъ совершать внѣшнимъ образомъ всѣ таинства, но все это не будетъ имѣть никакого значенія, такъ какъ благодать Божія, главный и необходимый элементъ богослуженія, у нихъ отсутствуетъ. Итакъ, прекращеніе ветхозавѣтнаго богослуженія должно относить къ самому моменту крестной смерти Христа Спасителя.

Не это ли означало и то обстоятельство, что въ то время, какъ Христосъ «испустилъ духъ»,—«завѣса въ храмѣ раздралась надвое, сверху до низу» (Матѳ. 27, 50. 51. Марк. 15, 37. 38. ср. Лук. 23, 45. 46)? Это показывало, что ветхій завѣтъ, завѣтъ тѣни и покрововъ (Евр. 10, 1. 13, 10. ср. 2 Кор. 3, 13—16), уже прекратился, и святое святыхъ, доступное до тѣхъ поръ только первосвященнику однажды въ годъ, теперь стало доступно каждому вѣрующему, или, точнѣе, каждый вѣрующій получилъ возможность сдѣлаться «святымъ-святыхъ», вмѣщая въ себѣ Христа въ таинствѣ причащенія. Такъ понимаетъ прекращеніе жертвы и блаж. Ѳеодоритъ [310] и др.

Дальнѣйшія слова откровенія: *и во святилищи мерзость запустѣнія будетъ, и даже до скончанія времене скончаніе дастся на опустѣніе,* представляютъ очень большія трудности для толкованія. Но трудности эти относятся почти исключительно къ толкованію частностей, общій же смыслъ словъ совершенно ясенъ: здѣсь снова говорится о разрушеніяхъ и опустошеніяхъ, о которыхъ говорилось въ 26-мъ стихѣ. Такимъ образомъ, 26 и 27 стихи тѣсно связаны между собою и представляютъ два параллельныя описанія событій послѣдней седьмины и непосредственно слѣдующаго послѣ нея времени. 27-й стихъ представляетъ только хронологическое опредѣленіе тѣхъ же событій, которыя возвѣщены въ 26-мъ стихѣ, и отчасти—ихъ дополненіе и поясненіе.

Союзомъ *вэ* послѣднія слова 27-го стиха въ еврейскомъ текстѣ видимо дѣлятся на два предложенія. Союзъ этотъ, правда, встрѣчается здѣсь два раза, но во второмъ случаѣ онъ соединяетъ только отдѣльныя слова, а не предложенія.

Первое предложеніе читается такъ: וְעַל כְּנַף שִׁקּוּצִים מְשֹׁמֵם. Главныя трудности заключаются здѣсь, во-первыхъ, въ опредѣ-

[310] Μεσούσης δὲ ταύτης τῆς ἑβδομάδος, ἀρθήσεται θυσία καὶ σπονδή. Παυθήσεται, φησὶν, ἡ κατὰ νόμον θυσία, τῆς ἀληθοῦς προσφερομένης θυσίας τοῦ ἀμώμου ἀμνοῦ, τοῦ αἴροντος τὴν ἁμαρτίαν τοῦ κόσμου.——Οὔκουν, εὐθὺς τῆς θυσίας πληρωθείσης, καὶ τοῦ Σωτῆρος ἡμῶν ἀφέντος τὸ πνεῦμα, τὸ καταπέτασμα τοῦ ναοῦ ἐῤῥάγη ἀπὸ ἄνωθεν ἕως κάτω, τὰ πάλαι ἀθεώρητα τοῖς πᾶσι ποιοῦν θεωρητὰ, καὶ τὰ ἄψαυστα καὶ ἄβατα ἀποφαίνων βατά. M. 81 gr. 1481.

ленiи значенiя слова *кэнаф*, а во-вторыхъ, въ опредѣленiи положенiя каждаго слова въ предложенiи и отношенiя его къ другимъ словамъ.

כָּנָף, по своему значенiю, прямо соотвѣтствуетъ русскому слову «крыло». Какъ и послѣднее, оно происходитъ отъ корня съ значенiемъ «крыть, покрывать» (евр. כָּנַן, כָּנַף, араб. kanna, kanaza) и чаще всего употребляется въ значенiи «крыло» въ собственномъ смыслѣ (араб. kanarh), а отсюда въ образномъ значенiи—край широкаго предмета или пространства: край одежды (Числ. 15, 38. 1 Цар. 24, 5. 12. Iез. 5, 3. Агг. 2, 12. Зах. 8, 23), край одѣяла, покрывала (особенно—о брачномъ ложѣ; Втор. 22, 30 [евр. 23, 1], 27, 20. Руѳ. 3, 9. Iез. 16, 8), край, граница страны (Iов. 37, 3. 38, 13. Ис. 11, 12. 24, 16. Iез. 7, 2), крыло войска (Пс. 8, 8. — собственно «берега» рѣки, такъ какъ войско здѣсь представляется подъ образомъ рѣки) [311]. Такимъ образомъ, *канаф* можетъ значить только: «крыло, край» предмета, но не его вершина, какъ думаютъ нѣкоторые толкователи [312]. Основанiе для ихъ пониманiя слишкомъ шатко: они основываются на греческомъ словѣ πτερύγιον, посредствомъ котораго переводится *канаф*, и которое будто бы, судя по Матѳ. 4, 5 и Лук. 4, 9, означаетъ крышу храма. Но такое значенiе слова πτερύγιον въ указанныхъ мѣстахъ Евангелiя далеко не доказано, и гораздо правильнѣе понимать здѣсь боковыя постройки, флигеля храма; это сообразнѣе съ общимъ значенiемъ этого слова въ Св. Писанiи и у греческихъ классиковъ [313].

Остальныя слова даннаго предложенiя, каждое въ отдѣльности, не представляютъ затрудненiй для пониманiя. *Шиккуцим* есть множественное число отъ שִׁקּוּץ, встрѣчающагося у Данiила въ

---

[311] Gesenius, S. 392, считаетъ основнымъ значенiемъ слова *канаф* «покрывало». Но едва ли это справедливо. Вѣрнѣе считать основнымъ значенiемъ этого слова «крыло» и въ соотвѣтствующихъ мѣстахъ Св. Писанiя понимать подъ нимъ не «покрывало, одѣяло», а «край» одежды (греч. πτέρυξ, πτερύγιον, слав. *воскрилiе ризъ*, какъ и въ русскомъ переводѣ: «край одежды, ризъ»). И самъ Gesenius признаетъ далѣе это производное значенiе.

[312] Hävernick, 384, Hengstenberg, 494, Оберлендъ, 165—166.

[313] Ср. Keil, 307.

11, 31 и 12, 11 и значащ. о: «мерзость, постыдное»,—особенно объ идолахъ и относящихся къ нимъ предметахъ. *Мэшомем* есть причастіе 3-й формы (Поэль) отъ глагола *шамем*, который выше уже встрѣчался, и имѣетъ дѣйствительное значеніе: «опустошающій, опустошитель». Значеніе это очевидно изъ сравненія съ причастіемъ *шомем*, которое, какъ мы видѣли, имѣетъ страдательное значеніе, затѣмъ—изъ сопоставленія съ употребленіемъ *мэшомем* въ 11, 31 и, наконецъ, изъ обычнаго значенія 3-й глагольной формы [314]. Остается только опредѣлить отношеніе между собою этихъ словъ въ данномъ предложеніи.

Самое естественное отношеніе ихъ должно быть выведено изъ самаго текста. И такъ какъ всѣ три имени не могутъ стоять независимо другъ отъ друга, то возникаетъ вопросъ: какое изъ двухъ послѣднихъ именъ должно считать опредѣленіемъ предыдущаго? Масореты считали *шиккуцим* опредѣленіемъ слова *кэнаф*, почему послѣднее и вокализировали, какъ status constructus. Въ такомъ случаѣ *мэшомем* становится подлежащимъ, а сказуемое должно быть подразумѣваемо по смыслу: «и на крылѣ мерзостей (появится или будетъ) опустошитель». Такъ передаетъ и Пешито: «и на крылья (или на крыльяхъ) мерзости—опустошеніе»; подобно Акила и Симмахъ: καὶ ἐπὶ τῆς ἀρχῆς τῶν βδελυγμάτων ἐρημωθήσεται. Первый переводъ измѣняетъ еврейскому тексту только въ передачѣ послѣдняго слова предложенія, понимая его въ страдательномъ значеніи; второй же передаетъ это слово глаголомъ и свободно переводитъ *кэнаф* словомъ ἀρχή.

Но всѣ другіе древніе переводы соединяютъ слова даннаго предложенія иначе и считаютъ *мэшомем* опредѣленіемъ къ подлежащему *шиккуцим;* такъ, LXX переводятъ: καὶ ἐπὶ τὸ ἱερὸν βδέλυγμα τῶν ερημώσεων ἔσται; точно также и Θеодотіонъ: καὶ ἐπὶ τὸ ἱερὸν βδέλυγμα τῶν ἐρημώσεων (въ 6 Лукіановскихъ кодд. НР прибавлено послѣ καὶ: ἐπὶ τούτοις; 4 кодд., Коптскіе переводы, блаж. Θеодоритъ и Ириней читаютъ вмѣсто τῶν ἐρημώσεων: τῆς ἐρημώσεως; 15 кодд., въ томъ числѣ Ватиканскій, прибавляютъ ἔσται). Древне-лат. и слав.

[314] Ср. Hengstenberg 495; Fürst, Concordantiae III, p. 1166.

переводы нѣсколько отступаютъ здѣсь отъ θеодотіонова; первый читаетъ: et ad sacrificium abominatio, причемъ сюда же относится, вѣроятно, и слово desolationum, ошибочно поставленное ранѣе; второй: *на святый храмъ омрѣзѣніе и опустѣніе*. Древне-слав. чтеніе не находитъ себѣ подтвержденія въ другихъ переводахъ и кодексахъ, и потому справедливо будетъ считать его ошибочнымъ. Вторичный переводъ тѣхъ же словъ, имѣющійся въ нѣкоторыхъ кодексахъ θеодотіонова перевода, весьма неясенъ: καὶ ἕως πτερυγίου ἀπὸ ἀφανισμοῦ (7 кодд., Альд. и армянскій переводъ опускаютъ ἕως, 4 кодд. καὶ ἐπὶ πτερύγιον τάξει ἐπὶ ἀφανισμοῦ или ἀφανισμῷ), древне-слав.: *и крилу отъ потрьбленія*. Такой переводъ произошелъ, вѣроятно, изъ чтенія: וְעַד כָּנָף מְשֹׁמֵם [315] «и до крыла отъ опустошенія». Наконецъ, и въ Вульгатѣ читается: et erit in templo abominatio desolationis. Многіе новые переводы также соединяютъ *шиккуцим* съ *мэшомем*. Таковы ново-слав., уже приведенный выше, затѣмъ русскіе синодальный и арх. Макарія: «и на крылѣ святилища (Мак.: храма) будетъ мерзость запустѣнія»; Лютеръ: und bei den Flügeln werden stehen Greuel der Verwüstung; нѣкоторые изъ новѣйшихъ экзегетовъ также возвращаются къ такому переводу [316].

Древнѣйшіе толкователи откровенія о седьминахъ слѣдовали, конечно, θеодот. переводу. Нѣкоторые изъ нихъ, какъ Юлій Иларіанъ [317] и Аммоній Александрійскій [318] разумѣютъ здѣсь ту же «мерзость запустѣнія», о которой говорится въ Дан. 11, 31 и 12, 11., и которую поставилъ въ Іерусалимскомъ храмѣ Антіохъ

---

[315] v. Lennep 74.

[316] Hitzig 167, Zöckler 184—185; Knabenbauer 261; Kuenen, Hist.-krit. Einleitung in das A. T. II, S. 453; Bertholdt, Eichhorn, Rösch,—vid. v. Lennep 77.

[317] In hac scilicet hebdomada gentium malitia excrevit, sicut jam ab angelo fuerat dictum; ut etiam in dimidio hebdomadis ejusdem ab Antiocho rege Graecorum auferatur sacrificium de loco sancto: et sanctum ipsum pollutum est feminino aspernamento, et abominatio desolationis facta est super altare, et statua Jovis, quem Olympium vocant, illic collocata. Iste etiam Antiochus mente perversa antichristi imaginem portans, unam plebem unumque sacrilegum populum sub regno suo efficere conabatur M. 13 lat. 1104.

[318] Καθολικὸν βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως ὁ ἀντίχριστος, μερικὸν δὲ ὁ Ἀντίοχος. Catena in Danielem, 12, 11. Vid. Fraidl 98, Anm. 1.

Епифанъ; впрочемъ, они считаютъ эту «мерзость» только прообразомъ той, которую поставитъ антихристъ предъ вторымъ пришествіемъ Христовымъ. Къ послѣднему времени относятъ разбираемыя слова откровенія и нѣкоторые другіе древніе толкователи, разумѣя подъ «мерзостью запустѣнія» или самого антихриста, или его изображеніе; такъ думали св. Ипполитъ Римскій [319], псевдо-Кипріанъ [320], Иларій Пуатьесскій [321], Аполлинарій Лаодикійскій [322] и Амвросій Медіоланскій [323]. Большинство же древнихъ относили какъ все откровеніе о седьминахъ, такъ и изреченіе о мерзости запустѣнія ко времени перваго пришествія Христова и думали, что здѣсь разумѣется статуя языческаго бога или изображеніе римскаго императора, поставленныя въ Іерусалимскомъ храмѣ незадолго до его разрушенія. Такъ, блаж. Θеодоритъ [324]

[319] Τῶν γὰρ ἑξήκοντα δύο ἑβδομάδων πλειρωθεισῶν, καὶ Χριστοῦ παραγενομένου, καὶ τοῦ εὐαγγελίου ἐν παντὶ τόπῳ κηρυχθέντος ἐκκενωθέντων τῶν καιρῶν, μία ἑβδομὰς περιλειφθήσεται ἡ ἐσχάτη, ἐν ᾗ παρέσται Ἠλίας καὶ Ἐνὼχ, καὶ ἐν τῷ ἡμίσει αὐτῆς ἀναφανήσεται τὸ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως, [ἕως] ὁ Ἀντίχριστος ἐρήμωσιν τῷ κόσμῳ καταγγέλλων. M. 10 gr. 656.

[320] Vid. Fraidl 54.

[321] Abominatio ex eo dictus (antichristus), quod adversus Deum veniens honorem sibi Dei vindicet: desolationis autem abominatio, quia bellis et caedibus terram cum piaculo desolaturus sit. Въ «Комментаріи на Евангеліе отъ Матѳея», см. Fraidl 69.

[322] Cum autem quadringenti triginta quatuor anni post hoc (послѣ 8-го года царствованія Клавдія) fuerint evoluti, id est, sexaginta duae hebdomadae, tunc ab Elia, qui venturus est,— —in ultima hebdomade aedificandam Jerusalem et templum, per annos tres et semis: venturumque Antichristum— —atque ita fieri, ut media hebdomas confirmet testamentum Dei cum sanctis, et rursum media cessationem victimarum esse praenuntiet sub Antichristo, qui ponet abominationem desolationis, id est, idolum et statuam proprii dei in templo— —. M. 25 lat. 548.

[323] Vere Hierusalem ab exercitu obsessa est et expugnata a Romano duce. Unde judaei putaverunt tunc factam abominationem desolationis, eo quod caput porci in templum jecerint illudentes Romani Judaeicae ritum observantiae. Quod ego nec furens dixerim. Abominatio enim desolationis exsecrabilis adventus antichristi est; eo quod sacrilegis infaustis mentium interiora contaminet: sedens juxta historiam in templo, ut sibi divinae vindicet solium potestatis. Въ «Комментаріи на Ев. Луки», см. Fraidl 75.

[324] Διὰ ταύτην γὰρ, φησὶ, τὴν θυσίαν [=смерть Христова] οὐ μόνον ἐκείνη ἡ θυσία παυθήσεται, ἀλλὰ καὶ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως ἐπὶ τὸ ἱερὸν δοθήσεται, τουτέστι, τὸ πάλαι σεπτὸν καὶ φρικῶδες ἔρημον ἀναφανήσεται. Σημεῖον δὲ τῆς ἐρημίας γενήσεται εἰκόνες τινὲς ἀπηγορευμέναι τῷ νόμῳ εἰς τοῦτον εἰσκομιζόμεναι. Τοῦτο δὲ πεποίηκε Πιλάτος νύκτωρ εἰς τὸν θεῖον νεὼν τὰς βασιλικὰς εἰσκομίσας εἰκόνας παρὰ τὸν θεῖον νόμον. M. 81 gr. 1484.

и Евсевій Кесарійскій [325] думали, что такое изображеніе кесаря внесено было въ храмъ Пилатомъ; св. Іоаннъ Златоустъ [326], равно какъ и Евсевій въ другомъ мѣстѣ [327], говорятъ объ изображеніи, поставленномъ въ храмѣ Адріаномъ; Климентъ Александрійскій [328] утверждаетъ, что «Неронъ поставилъ мерзость во святомъ городѣ Іерусалимѣ», по словамъ же Василія Селевкійскаго [329],

---

[325] Ἐπειδήπερ μεσαζούσης τῆς ἑβδομάδος ταύτης μετὰ τὸν ἥμισυ καὶ τριετῆ χρόνον τῆς διδασκαλίας αὐτοῦ [Ἰησοῦ Χριστοῦ], καθ' ὃν καιρὸν πέπονθε, τὸ καταπέτασμα τοῦ ναοῦ ἐρράγη ἀπὸ ἄνωθεν ἕως κάτω· ὡς ἐξ ἐκείνου δυνάμει ἤρθαι ἐξ αὐτῶν τὴν σπονδὴν καὶ τὴν θυσίαν, καὶ τὸ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως ἐπὶ τὸ ἱερὸν ἥρχθαι, καταλιπούσης αὐτοὺς ἐρήμους τῆς ἀνέκαθεν εἰς ἐκεῖνο καιροῦ τὸν τόπον ἐφορώσης καὶ ἐπισκοπούσης δυνάμεως.— —Храмъ оставался святымъ до страданія Христова, и Самъ Іисусъ Христосъ признавалъ его таковымъ.—Ἀλλὰ γὰρ πλησιαζούσης αὐτῶν τῆς ἐσχάτης δυσσεβείας, μετὰ ταῦτα πάντα ἀπεφήνατο εἰπών· Ἰδοὺ ἀφίεται ὑμῖν ὁ οἶκος ὑμῶν ἔρημος· ὃ καὶ αὐτὸ ἐπληροῦτο – παθόντος αὐτοῦ.— —Εἰ δὲ καὶ ἐπί τινα χρόνον παραμένειν ἔδοξε τὰ τῆς ἐν τῷ τόπῳ λειτουργίας, ἀλλ' οὐκέτι γε ταῦτα ἀρεστὰ τῷ Θεῷ ἦν, ἀκρίτως καὶ οὐ κατὰ νόμον ἐπιτελούμενα.— —Ἀρθείσης γοῦν ἐξ ἐκείνου καὶ δυνάμει καὶ ἀληθείᾳ καταλυθείσης θυσίας καὶ σπονδῆς, αἱ μετὰ ταῦτα νομιζόμεναι αὐτόθι ἐπιτελεῖσθαι θυσίαι ἄσπονδοι καὶ ἀνίεροι ἐν βεβήλῳ τόπῳ καὶ ὑπὸ βεβήλων καὶ ἀνιέρων ἐπετελοῦντο. Δέχου δὲ καὶ τὰς περὶ τούτων Ἰωσήπου μαρτυρίας· Κατὰ δὲ τὴν ἡμέραν τῆς Πεντηκοστῆς νύκτωρ οἱ ἱερεῖς παρελθόντες εἰς τὸ ἱερόν, ὥσπερ αὐτοῖς ἔθος ἦν, πρὸς τὰς λειτουργίας, πρῶτον μὲν κινήσεως ἔφασαν ἀντιλαμβάνεσθαι καὶ κτύπου· μετὰ δὲ ταῦτα φωνῆς ἀθρόας λεγούσης· Μεταβαίνωμεν ἐντεῦθεν. Ταῦτα δὲ ἱστορεῖ μετὰ τὸ πάθος τοῦ Σωτῆρος ἡμῶν γεγονέναι. Затѣмъ Евсевій приводитъ извѣстіе Іосифа Флавія и Филона о томъ, что Пилатъ ночью поставилъ въ храмѣ изображеніе кесаря; говоритъ о разрушеніи Іерусалима и продолжаетъ: ὅτε καὶ τὸ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως ἐπὶ τὸ ἱερὸν ἔστη, ὃ καὶ εἰς δεῦρο διέμεινεν, ὁσημέραι ἐπὶ τὸ χεῖρον ἐρημίας ἐλαῦνον. M. 22 gr. 628—629; cp. Ecl. pr. ibid. col. 1189, 1192.— Въ комментаріи на Евангеліе отъ Луки (Maji, Scriptorum veterum nova collectio. Tom. I, Romae, 1825) Евсевій говоритъ слѣдующее: Συνέβαινε δὲ ταῦτα [разрушеніе Іерусалима] πρότερον μὲν κατὰ Τίτον καὶ Οὐεσπασιανόν· μετὰ δὲ τούτους κατὰ Ἀδριανόν— —καὶ τὸ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως τὸ ῥηθὲν διὰ Δανιὴλ τοῦ προφήτου ἔστη ἐν τῷ ἁγιάσματι, τὸ χάλκεον φημὶ ἀπεικόνισμα τοῦ πολιορκητοῦ ἐν αὐτῷ μέσῳ τῷ ἱερῷ ἱδρυμένον (p. 236).

[326] Ἐπὶ τὸ ἱερὸν βδ. τῆς ἐρ: ἱερὸν τὸν ναὸν καλῶν, βδέλυγμα δὲ ἐρημώσεως τὸν ἀνδριάντα, ὃν ἔστησεν ὁ τὴν πόλιν καθελὼν ἔνδον ἐν τῷ ναῷ.— —Μετὰ γὰρ τὴν Οὐεσπασιανοῦ καὶ Τίτου γενομένην ἐρήμωσιν ἐπὶ Ἀδριανοῦ συστάντες οὗτοι οἱ Ἰουδαῖοι ἐσπούδαζον ἐπὶ τὴν προτέραν πολιτείαν ἐπανελθεῖν.— —Καθελὼν γὰρ αὐτοὺς ἐκεῖνος— —τὸν ἀνδριάντα ἔστησε τὸν ἑαυτοῦ. M. 47 gr. 899—900; cp. Ἑρμηνεῖα, M. 56 gr. 249.

[327] См. прим. 325.

[328] Ἑβδομάδος τὸ ἥμισυ κατέσχε Νέρων βασιλεύων, καὶ ἐν τῇ ἁγίᾳ πόλει Ἱερουσαλὴμ ἔστησε τὸ βδέλυγμα. M. 8 gr. 857. Неизвѣстно, что разумѣетъ Климентъ подъ «мерзостью», поставленною Нерономъ.

[329] Τὸ δὲ λέγειν· ἡμίσει ἑβδομάδος, ἐν ᾧ κατέπαυσε τὰ θυσιαστήρια καὶ τὰς θυσίας ἐγένετο οὕτως. Τῷ γὰρ τετάρτῳ ἔτει μετὰ τὴν ἀνάληψιν τοῦ Σωτῆρος, τελευτήσαντος

изображеніе императора было поставлено въ Іерусалимѣ Гаіемъ. Но изъ исторіи рѣшительно ничего неизвѣстно о томъ, что подобное изображеніе было когда-либо поставлено въ храмѣ; невѣроятно, чтобы евреи допустили это. Изъ исторіи извѣстно, что Пилатъ приказалъ поставить въ Іерусалимскомъ Иродовомъ дворцѣ священные щиты съ именемъ императора; но когда депутація знатныхъ евреевъ, вмѣстѣ съ четырьмя сыновьями Ирода, обратилась съ жалобою на это къ Тиверію, послѣдній приказалъ снять эти щиты. Въ царствованіе Калигулы храму Іерусалимскому дѣйствительно грозило оскверненіе: безумный кесарь приказалъ правителю Іудеи Петронію поставить въ храмѣ статую императора; но послѣдній подъ разными предлогами не исполнилъ этого приказанія. Даже римскія знамена съ изображеніемъ кесаря не вносились въ Іерусалимъ, и попытка Пилата внести ихъ вызвала возстаніе народа, почему онъ долженъ былъ оставить свое намѣреніе [330]. Въ виду этого нельзя принять и толкованіе Ефрема Сирина [331], который объяснялъ текстъ Пешито («и на крылья мерзости опустошеніе») въ томъ смыслѣ, что римляне послѣ покоренія Іудеи поставили въ храмѣ орла и изображеніе своего императора. Правильнѣе толкованіе Оригена [332], который, основываясь на словахъ Господа

Τιβερίου, διαδεξάμενος, εἰκόνα Αὐγούστου ἐν τῇ Ἱερουσαλὴμ ἀνέθηκε, καὶ πολλῶν πολέμων περὶ τούτου γενομένων παρὰ τῶν Ἰουδαίων, ἡττήσας αὐτοὺς ὁ Γάϊος τὰ θυσιαστήρια αὐτῶν κατέσκαψε καὶ τὰς θυσίας τὰς κατὰ τὸν νόμον σὺν τῷ πτερυγίῳ περιεῖλε. Τὸ δὲ πτερύγιον λέγει τὴν τοῦ ἀρχιερέως στολὴν ἤτοι διπλοΐδα. Τῶν γὰρ πρὸ Τίτου ἐπὶ φόρον αὐτὴν ποιησάντων, καὶ ἐπὶ ἰδίαν σφραγῖδα φρουρούντων, καὶ τῶν βουλομένων αὐτὴν μισθούντων, ὁ Τίτος ἐλθὼν καὶ ταύτην ἐξηθάνισε, αὐτὸν μόνον προσκυνεῖσθαι βουλόμενος. M. 85 gr. 412—413.

[330] E. Schürer, Geschichte des judischen Volkes im Zeitalter Jesu Christi, Th. I. Leipzig 1890. S. 409. 411. 421—425.

[331] «И на крыльяхъ мерзости запустѣніе»,—потому что римляне внесутъ во храмъ орла и поставятъ тамъ вмѣстѣ съ изображеніемъ своего царя. Это согласно съ сказаннымъ—Мѳ. 24, 17. Opera omnia t. II p. 222.

[332] In dimidio autem septimanae, id est in tribus et semis decadis annorum, sublatum est sacrificium altaris, id est in triginta quinque annis impletum est quod fuerat scriptum: In dimidio septimanae tolletur sacrificium et libatio. Tunc autem super templum quod fuit in Jerosolymis facta est abominatio desolationis templi et civitatis, in eo videlicet tempore, quando viderunt circumdatam Jerusalem ab exercitu, ut secundum quod prophetaverat Salvator de ea, cognoscant

Матѳ. 24, 15. 16. Марк. 13, 14. Лук. 21, 20., «мерзостью запустѣнія» считалъ римское войско, осадившее Іерусалимъ; но, сообразно съ рѣчью Господа, въ которой говорится какъ о разрушеніи Іерусалима, такъ и о второмъ пришествіи Христовѣ, и изреченіе о мерзости запустѣнія исполнится дважды, по мнѣнію Оригена: буквально—въ разрушеніи Іерусалима и образно—во владычествѣ антихриста [333]. Наконецъ, обращаетъ на себя вниманіе то мнѣніе нѣкоторыхъ отцовъ и учителей Церкви, по которому «мерзостью запустѣнія» названъ самый храмъ Іерусалимскій послѣ крестной смерти Христа Спасителя. Св. Іоаннъ Златоустъ въ одномъ изъ своихъ твореній говоритъ о пророкѣ Даніилѣ, что онъ, «не видя еще іудеевъ избавленными отъ перваго рабства, долженъ былъ предвидѣть новое ихъ плѣненіе, и не видя еще города построеннымъ, созерцалъ его уже захватываемымъ (непріятелями), храмъ—*оскверняемымъ жертвами* (ταῖς θυσίαις μολυνόμενον τὸν ναὸν) и опустошаемымъ, и всю святыню ниспровергаемою. Поэтому онъ скорбѣлъ и плакалъ, говоря: у насъ стыдъ на лицѣ, и у царей нашихъ, и у отцовъ нашихъ, потому что мы согрѣшили предъ Тобою, Господи!» [334] Несомнѣнно, св. Отецъ имѣетъ здѣсь въ виду именно откровеніе о седьминахъ и предреченную тамъ «мерзость запустѣнія». Но болѣе подробно развиваетъ эту мысль Евсевій Кесарійскій. По его словамъ, съ тѣхъ поръ, какъ умеръ Христосъ и разорвалась завѣса храма, у іудеевъ отнята была жертва и возліяніе и началась въ храмѣ мерзость запустѣнія. На это указалъ и Христосъ словами: *се оставляется вамъ домъ вашъ пустъ* (Матѳ. 23, 38). Если же и послѣ смерти Христовой въ Іерусалимскомъ храмѣ совершалось богослуженіе, то «оно уже не было угодно Богу, такъ какъ со-

---

quod appropiavit desolatio ejus. Et hanc desolationis abominationem, factam super templum ab exercitu Jerusalem circumdante, dicit propheta usque ad tempus consummationis manere. M. 13 gr. 1656.

[333] Ὅπερ δὲ παρὰ τῷ Παύλῳ λέλεκται ἐν ᾗ ἐξεθέμην αὐτοῦ λέξει φασκούσῃ· ὥστε αὐτὸν εἰς τὸν ναὸν τοῦ Θεοῦ καθίσαι, ἀποδεικνύντα ἑαυτὸν, ὅτι ἐστὶ Θεός· τοῦτο καὶ ἐν τῷ Δανιὴλ τοῦτον εἴρηται τὸν τρόπον· καὶ ἐπὶ τὸ ἱερὸν—κτλ. Contra Celsum, l. VI, 46, vid. Fraidl 53.

[334] «Πρὸς Σταγείριον ἀσκητὴν δαιμονῶντα λόγος γ'». Ed. Montfaucon t. I, 1 p. 269.

вершалось безъ разрѣшенія (ἀκρίτως) и не по закону». Ибо когда богослуженіе потеряло свою силу и перестало быть истиннымъ, то и жертвы, которыя по прежнему приносились въ храмѣ, не были уже священны, приносились въ нечистомъ мѣстѣ, нечистыми и несвященными лицами [335]. И блаж. Ѳеодоритъ считаетъ «мерзостью запустѣнія» самый храмъ Іерусалимскій, но только вслѣдствіе осквернения его язычниками [336].

Изъ еврейскихъ ученыхъ Раши и Ибн-Езра подъ мерзостью запустѣнія разумѣютъ строенія, возникшія на мѣстѣ разореннаго храма, или, вообще, всю христіанскую религію, утвердившуюся надъ его развалинами. Къ нимъ примыкаетъ и Абарбанель, хотя онъ даетъ и еще два толкованія, изъ которыхъ по одному здѣсь разумѣется статуя Адріана, а по другому, особенно интересному, здѣсь говорится о мерзости, сдѣланной самими евреями и повлекшей за собою разрушеніе города и храма, какъ наказаніе. Другія еврейскія толкованія не заслуживали бы собственно и упоминанія; такъ, Саадіа Гаонъ толкуетъ: «на руку *(кэнаф)* ѣдящихъ свиное мясо и мерзость *(шиккуцим)* приходитъ опустошитель—Израиль»; другіе понимаютъ здѣсь голову свиньи, брошенную въ храмъ римлянами [337] и т. п.

Не пускаясь въ дебри новыхъ толкованій даннаго предложенія, оторванныхъ отъ преданія и потому представляющихъ собою большею частію плоды собственныхъ догадокъ ихъ авторовъ, возьмемъ въ основаніе приведенныя древнѣйшія толкованія и постараемся объяснить еврейскій текстъ подъ ихъ руководствомъ. Почти всѣ они мѣстомъ, къ которому относится разсматриваемая часть откровенія, считаютъ храмъ Іерусалимскій, а временемъ—періодъ отъ крестной смерти Іисуса Христа до разрушенія храма; такъ понимаютъ откровеніе, какъ мы видѣли, даже евреи. Такимъ согласнымъ преданіемъ вопросъ уже болѣе или менѣе предрѣшается: преданіе говоритъ намъ, что въ разбираемомъ предложеніи говорится о храмѣ въ періодъ его разрушенія. Остается

---

[335] См. прим. 325.

[336] См. прим. 324.

[337] Мнѣніе евреевъ, приведенное у Амвросія,—см. прим. 323.

только опредѣлить значеніе каждаго слова въ этомъ предложеніи, найти ихъ отношеніе между собою и указать, какъ именно выражена здѣсь мысль о разрушеніи храма.

Было указано, что масореты считали слово *шиккуцим* опредѣленіемъ предшествующаго *кэнаф;* въ этой пунктуаціи евр. текстъ буквально значитъ: «и на крыло мерзостей — опустошитель», подразумѣвается сказуемое: будетъ или придетъ. Такое расположеніе словъ подтверждается переводами Пешито, Акилы и Симмаха. За него говоритъ и то, что въ мас. текстѣ читается שִׁקּוּצִים, а не שִׁקּוּצֵי; конечная буква ם заставляетъ считать это слово стоящимъ in statu absoluto, а не constructo, и не позволяетъ слѣдующе слово מְשֹׁמֵם признавать опредѣленіемъ къ предшествующему. Правда, бываютъ случаи соединенія двухъ словъ in statu absoluto; но это бываетъ тогда, когда соединяются собственныя имена, или когда оба имени тѣсно связаны между собою, составляя какъ бы одно понятіе, чего здѣсь вовсе нѣтъ: «мерзость» и «опустошитель» или «опустошеніе» связываются совершенно случайно. Можно думать, что буква *мем* въ словѣ *шиккуцим* явилась ошибочно, такъ какъ слѣдующее слово начинается тою же буквой; но это только предположеніе, не подтверждаемое существующими евр. кодексами [338]. Итакъ, если масоретская пунктуація правильна, то остается только опредѣлить: подъ какимъ же изъ этихъ трехъ словъ: «и на крылѣ мерзостей опустошитель» разумѣется Іерусалимскій храмъ? Выше приведены мнѣнія св. Іоанна Златоуста, Евсевія Кесарійскаго и блаж. Ѳеодорита Кирскаго относительно того, что подъ «мерзостью запустѣнія» разумѣется храмъ Іерусалимскій. Опираясь на ихъ авторитетъ, возможно полагать, что подъ «мерзостями», на крылѣ которыхъ будетъ опустошитель, въ откровеніи о седьминахъ разумѣется «городъ и святилище», названные въ 26 стихѣ. Раньше уже замѣчено, что два послѣдніе стиха откровенія о седьминахъ параллельны между собою: они говорятъ объ однихъ и тѣхъ же

[338] Только одинъ кодексъ читаетъ שקוץ, но не שקוצי, и одинъ שומם вмѣсто משומם, v. Lennep 74.

событіяхъ, только въ 27 стихѣ съ одной стороны дается точная хронологія нѣкоторыхъ изъ этихъ событій, а съ другой—здѣсь пополняется и отчасти поясняется сказанное раньше. 26 стихъ начинается извѣстіемъ объ убіеніи Мессіи «послѣ» 69 седьминъ; въ 27-мъ же стихѣ время дѣятельности Мессіи опредѣляется первою половиною послѣдней седьмины, такъ какъ въ срединѣ ея прекратится ветхозавѣтное богослуженіе,—что совпадаетъ со смертію Мессіи. Въ 26 стихѣ далѣе говорится объ отверженіи еврейскаго народа Богомъ, въ 27-мъ указывается прямое слѣдствіе этого: прекращеніе жертвы и приношенія. Вслѣдъ за этимъ въ 26 стихѣ содержится извѣстіе о разрушеніи города и святилища, въ 27-мъ же этому извѣстію соотвѣтствуютъ слова: «и на крыло мерзостей опустошитель»; наконецъ, послѣднія слова обоихъ стиховъ сходны между собой даже въ отдѣльныхъ выраженіяхъ.

Но спрашивается, почему городъ и храмъ, названные выше «святыми» (ст. 24 и 26), теперь прямо называются «мерзостями»? Для рѣшенія этого вопроса нѣтъ нужды прибѣгать къ догадкамъ о языческой статуѣ, будто бы поставленной въ храмѣ, и т. п. Это рѣшеніе само собою вытекаетъ изъ предшествующаго. Раньше говорилось объ отверженіи народомъ Мессіи и, какъ слѣдствіи этого,—объ отверженіи Богомъ народа, о прекращеніи завѣта съ нимъ, о прекращеніи богослуженія. Понятно, что и храмъ, какъ мѣсто особеннаго присутствія Божія, и городъ, какъ освящаемый храмомъ, уже теряютъ послѣ этого всякое значеніе предъ Богомъ, всякую «святость». Если же и послѣ этого евреи, не признавая ни Мессіи, ни состоявшагося объ нихъ Божія опредѣленія, продолжаютъ приносить въ храмѣ жертвы и совершать всѣ обряды своего богослуженія, если городъ и отчасти и самый храмъ они дѣлаютъ мѣстами особенно жестокаго преслѣдованія истинныхъ богопочитателей, христіанъ (ср. Дѣян. 21, 30 и др.), то эти мѣста становятся уже мерзостью въ очахъ Господа. Причиною разрушенія перваго храма и Іерусалима было осквернепіе ихъ «мерзостями», которыя дѣлали іудеи. *Понеже сотвориша сынове Іудины лукавое во очію моею, рече Господь, поставиша мерзости своя въ дому, въ немже призвано*

есть имя мое, да осквернятъ его,——сего ради се дніе грядутъ, глаголетъ Господь,—дни разрушенія Іерусалима (Іер. 7, 30 дал.); *живу азъ, глаголетъ Адонаи Господь: воистину понеже святая моя осквернилъ еси всѣми мерзостми твоими, и азъ отрину тя* (Іез. 5, 11); *и отвращу лице мое отъ нихъ, и осквернятъ стражбу мою* (сокровенное мое), *и внидутъ въ ня неопасно, и осквернятъ я* (Іез. 7, 22); *се азъ оскверню святая моя, величанія крѣпости вашея, желанія очесъ вашихъ, и ихже щадятъ души ваша* (Іез. 24, 21). Жертвы, приносившіяся въ храмѣ Соломоновомъ и не сопровождавшіяся соотвѣтствующими чувствами приносящихъ, часто называются у пророковъ «мерзостью» въ очахъ Господа, напр.: *аще принесете ми семидалъ—всуе, кадило—мерзость ми есть* (Ис. 1, 13); *беззаконникъ жряй ми телца—яко убиваяй пса, и приносяй семидалъ—яко кровь свиную, даяй ливанъ въ память—аки хулникъ: и тіи избрашя пути своя и мерзости ихъ, яже душа ихъ изволи* (Ис. 66, 3). Правда, слово *шиккуцим* никогда не употребляется въ приложеніи къ храму и его жертвамъ; изъ двухъ приведенныхъ случаевъ оно стоитъ только въ послѣднемъ: израильтяне *избрашя мерзости ихъ*, т. е. служеніе идоламъ, а не Богу. Въ первомъ же случаѣ употреблено слово תּוֹעֵבָה, часто означающее мерзость нравственную, тогда какъ *шиккуцим* исключительно означаетъ извращеніе религіознаго чувства, идолослуженіе [339]. Но это выраженіе, дѣйствительно, было бы слишкомъ сильно и несправедливо въ приложеніи къ первому храму и ветхозавѣтному богослуженію, пока Ветхій Завѣтъ оставался въ полной силѣ. Когда же онъ прекратился, когда богослуженіе лишилось благодати Божіей,—послѣ убіенія евреями, во главѣ съ первосвященниками, своего Мессіи,—тогда городъ и даже храмъ перестали быть святыми и могли уже быть названы *шиккуцим*. Сами евреи, которые не могли, конечно, считать Ветхій Завѣтъ прекратившимся, понимали подъ «мерзостями» свой городъ и храмъ и сознавались, что сами они были причиною того, что городъ и храмъ сдѣлались «мерзостями». Выше уже указано подобное

[339] Ср. А. Д. Бѣляевъ, Бог. В. 1894 іюль, 37.

толкованіе Абарбанеля. Но есть свидѣтельство объ этомъ, исходящее отъ современника разрушенія второго храма, именно отъ Іосифа Флавія. Онъ дважды говоритъ о томъ, что разрушеніе города и храма имѣло своею причиною мерзости, производившіяся самими евреями, особенно злотами, и основывается на словахъ «древнихъ пророковъ»; подъ этими же словами, по всему ходу рѣчи и по многимъ частнымъ признакамъ, слѣдуетъ разумѣть именно откровеніе Даніилу о седьминахъ.

Если подъ словомъ *шиккуцим* разумѣется городъ Іерусалимъ и его храмъ, то остальныя слова разбираемаго предложенія становятся вполнѣ понятны: *кэнаф* значитъ тогда «край, граница» города, а *мэшомем*—опустошитель; на границы города и храма придетъ опустошитель. Такъ какъ это будетъ послѣ убіенія евреями своего Мессіи и послѣ утвержденія завѣта для многихъ, то эти слова должно относить ко времени разрушенія Іерусалима римлянами: на границахъ оскверненнаго города и храма появится опустошительное войско, т. е. римскіе легіоны осадятъ Іерусалимъ. Что эта осада повлечетъ за собою взятіе и разрушеніе города и храма, это отчасти уже извѣстно изъ 26-го стиха, отчасти будетъ видно изъ послѣднихъ словъ стиха 27-го.

Приведенное толкованіе трудныхъ для объясненія словъ пророчества кажется намъ болѣе вѣроятнымъ, чѣмъ другія толкованія этихъ словъ. Но противъ него могутъ выступить весьма серьезныя возраженія, которыя можно устранить только отчасти. Прежде всего говорятъ, что храмъ Іерусалимскій не можетъ быть прямо названъ «мерзостью». Возражая противъ указаннаго уже мнѣнія Евсевія Кесарійскаго, проф. Бѣляевъ говоритъ [340]: «Что жертвы, которыя іудеи продолжали приносить по ветхозавѣтному обряду и послѣ смерти Іисуса Христа, были ненужны и бездѣйственны послѣ принесенія голгоѳской жертвы, это справедливо; но все-таки въ Іерусалимскомъ храмѣ послѣ смерти Іисуса Христа еще не было мерзости запустѣнія, не было служенія діаволу. Не говоря

[340] Бог. В. 1894, февраль, 204—205.

объ Іудеяхъ, даже и для христіанъ онъ былъ по крайней мѣрѣ домомъ молитвы. Книга Дѣяній Апостоловъ повѣствуетъ о ежедневномъ пребываніи вѣрующихъ въ храмѣ (2, 46) и о посѣщеніи его самими Апостолами въ часы молитвы (3, 1). Мало того: Апостолъ Павелъ однажды принесъ даже жертву въ храмѣ Іерусалимскомъ (Дѣян. 21, 21—26). Пусть онъ сдѣлалъ это изъ снисхожденія къ немощной совѣсти Іудеевъ, исполняя свое правило: для Іудеевъ я былъ какъ Іудей, чтобы пріобрѣсть Іудеевъ (1 Кор. 9, 20), все-таки онъ не принесъ бы жертвы, если бы она была дѣломъ прямо беззаконнымъ, была служеніемъ діаволу, какъ выражается Евсевій. Для него она была дѣйствіемъ безразличнымъ, какъ безразлично стало для христіанъ исполненіе всего вообще обрядоваго закона Моисеева». На это возраженіе можно отвѣтить, что если въ откровеніи о седьмиглавъ городъ и храмъ названы мерзостями, то они не сами по себѣ были таковыми, а по дѣйствіямъ, убѣжденіямъ и стремленіямъ тѣхъ лицъ, которыя тамъ обитали и священнодѣйствовали. Сами по себѣ и городъ и храмъ не заключали ничего мерзостнаго, и для апостоловъ, не раздѣлявшихъ іудейскихъ заблужденій, были безразличны; для нихъ были безразличны и языческіе храмы и даже идолы. Ап. Павелъ такъ говоритъ объ этомъ: *что убо глаголю: яко идолъ что́ есть или идоложертвенное что́ есть? Но занѣ яже жрутъ языцы, бѣсо́мъ жрутъ, а не Богови* (1 Кор. 10, 19—20). Съ этой точки зрѣнія для вѣрующихъ былъ безразличенъ и храмъ Іерусалимскій; но поскольку сами іудеи, не вѣровавшіе во Христа, сдѣлались орудіями діавола, преслѣдовали и убивали истинныхъ богопочитателей, постольку и ихъ храмъ и городъ могли быть названы *шикуцим*.

Есть другое возраженіе противъ указаннаго толкованія разбираемаго предложенія. Это толкованіе не подтверждается переводомъ LXX-ти, а послѣднимъ пользуется Самъ Господь нашъ Іисусъ Христосъ. Въ Своей рѣчи о разрушеніи Іерусалима и послѣднихъ временахъ міра Онъ говоритъ Своимъ ученикамъ: *Егда убо узрите мерзость запустѣнія, реченную Даніиломъ пророкомъ, стоящу на мѣстѣ святѣ: иже чтетъ, да разумѣетъ:*

тогда сущіи во Іудеи да бѣжатъ на горы, Мѳ. 24, 15. 16. (τὸ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως— —ἑστὸς ἐν τόπῳ ἁγίῳ· ὁ ἀναγινώσκων νοείτω); подобно и у Ев. Марка 13, 14: *Егда же узрите мерзость запустѣнія, реченную Даніиломъ пророкомъ, стоящу идѣже не подобаетъ* (ἑστηκὸς ὅπου οὐ δεῖ: *чтый да разумѣетъ*. Если въ Своей рѣчи Господь ссылается именно на откровеніе Даніилу о седьминахъ, то ясно, что Онъ приводитъ слова этого откровенія не по масоретскому тексту, а по переводу LXX-ти, и тогда приведенное толкованіе этихъ словъ падаетъ, какъ несогласное съ словами Господа. Но изреченіе о мерзости запустѣнія имѣется въ книгѣ Даніила въ трехъ мѣстахъ: кромѣ 9, 27 еще въ 11, 31 и 12, 11., и неизвѣстно, какое изъ этихъ трехъ мѣстъ имѣлъ въ виду Господь въ Своей рѣчи. Если разсмотрѣть всѣ эти мѣста по переводу LXX-ти, то найдемъ даже, что слова Христовы по буквѣ болѣе сходны съ Дан. 11, 31 и 12, 11., чѣмъ съ 9, 27. Прежде всего, Христосъ говоритъ о «мерзости запустѣнія» τὸ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως, и то же самое греческое изреченіе, съ тѣми же членами читается въ Дан. 12, 11.; въ 11, 31 оба слова употреблены безъ члена: βδέλυγμα ἐρημώσεως, но и здѣсь 2-е слово поставлено въ единственномъ числѣ; въ 9, 27 же говорится по переводу LXX-ти и Ѳеодотіона о «мерзости запустѣній» βδέλυγμα τῶν ἐρημώσεων. Далѣе, въ Евангеліи мерзость представляется «стоящею», ἑστός, ἑστηκός; и въ 11, 31. 12, 11 говорится, что она «дастся» δοθήσεται или ее «дадутъ» δώσουσι, а въ 9, 27 говорится только, что она «будетъ», ἔσται; въ Евангеліи и въ 11, 31. 12, 11 книги пророка Даніила мерзость является какимъ-то предметомъ, чѣмъ-то матеріальнымъ, тогда какъ изъ словъ 9, 27 это не вытекаетъ съ необходимостью: «мерзость запустѣній» здѣсь можетъ означать, напр., «омерзительное запустѣніе». Слова Спасителя у Ев. Матѳея: ἐν τόπῳ ἁγίῳ болѣе напоминаютъ слова Даніила въ 11, 31: καὶ μιανοῦσι τὸ ἅγιον τοῦ φόβου, чѣмъ 9, 27: ἐπὶ τὸ ἱερόν. Такимъ образомъ, слова Христовы, можетъ быть, вовсе не имѣютъ въ виду откровенія о седьминахъ; въ нихъ говорится о той «мерзости запустѣнія», которая будетъ поставлена антихристомъ во время его владычества на землѣ передъ вторымъ пришествіемъ

Христовымъ; объ этой мерзости прямо говорится въ 12-й главѣ кн. Даніила, а прообразомъ ея служитъ «мерзость запустѣнія», поставленная въ храмѣ Іерусалимскомъ Антіохомъ Епифаномъ и предсказанная Даніиломъ въ 11, 31. Указываютъ на слова Христа, переданныя Евангелистомъ Лукою: *Егда же узрите обстоимъ Іерусалимъ вои, тогда разумѣйте, яко приближися запустѣніе ему: тогда сущіи во Іудеи да бѣгаютъ въ горы*, Лук. 21, 20 (ὅταν δὲ ἴδητε κυκλουμένην ὑπὸ στρατοπέδων τὴν Ἰερουσαλήμ, τότε γνῶτε, ὅτι ἤγγικεν ἡ ἐρήμωσις αὐτῆς). Говорятъ, что эти слова соотвѣтствуютъ приведенному выше изреченію о мерзости запустѣнія въ Евангеліяхъ Матѳея и Марка, а такъ какъ въ первыхъ ясно указывается на разрушеніе Іерусалима римлянами, то и послѣднее изреченіе относится къ этому же времени, а не ко времени антихриста. А въ такомъ случаѣ и то пророчество Даніила, которое приводитъ здѣсь Христосъ, должно говорить не о времени антихриста, но о разрушеніи Іерусалима, и такимъ пророчествомъ можетъ быть только откровеніе о седьминахъ, а не 11, 31 и 12, 11 [341]. Но и на это слѣдуетъ замѣтить, что экзегеты далеко еще не пришли къ соглашенію относительно того, о какомъ именно времени говорятъ приведенныя слова Христовы. Съ другой стороны, если эти слова относятся даже ко времени разрушенія Іерусалима, а не ко временамъ антихриста, то и въ этомъ случаѣ Христосъ могъ имѣть въ виду не 9-ю, а 11-ю главу Дан., гдѣ много говорится о войнахъ Антіоха Епифана; тѣсно соединяя въ своей рѣчи признаки, опредѣляющіе разрушеніе Іерусалима и конецъ міра, Христосъ могъ имѣть при этомъ въ виду время Антіоха Епифана, какъ прообраза антихриста.

Остается еще недоумѣніе: если примкнуть къ чтенію даннаго предложенія по масоретскому тексту, согласному въ общемъ съ переводами сирскимъ, Акилы и Симмаха, то какъ объяснить происхожденіе того чтенія, какое дано у LXX-ти, Ѳеодотіона и въ Вульгатѣ? Но извѣстно, что переводъ LXX-ти въ книгѣ Даніила

[341] Knabenbauer 264, ср. Fraidl 26.

испорченъ, откровеніе же о седьминахъ, повидимому, намѣренно искажено въ немъ съ цѣлію показать, что тамъ говорится объ Антіохѣ Епифанѣ. Могло случиться, что и выраженіе βδέλυγμα τῶν ἐρημώσεων взято въ переводѣ LXX-ти изъ 11-й главы, чтобы показать, что и въ откровеніи о седьминахъ говорится о времени Антіоха Епифана. А изъ перевода LXX-ти это выраженіе могло быть заимствовано и въ переводы Ѳеодотіона и блаж. Іеронима: извѣстно, что Ѳеодотіонъ стремился дать въ своемъ переводѣ нѣчто среднее между еврейскимъ текстомъ и переводомъ LXX-ти, и блаж. Іеронимъ принужденъ былъ иногда принять свой переводъ къ тексту LXX-ти.

Вполнѣ однако сознавая слабыя стороны приведеннаго толкованія, предлагаемъ рядомъ съ нимъ другое, весьма близкое къ нему. Въ этомъ отношеніи примѣромъ могутъ служить нѣкоторые древніе отцы и учители Церкви, которые часто не ограничивались однимъ какимъ-нибудь объясненіемъ откровенія о седьминахъ, но давали ихъ по два и даже по три, предоставляя самому читателю остановиться на томъ изъ нихъ, которое покажется ему болѣе близкимъ къ истинѣ. Такъ поступаютъ, напр., Африканъ, Евсевій Кесарійскій, блаж. Іеронимъ и др. Предлагаемое далѣе толкованіе, будучи вполнѣ согласно съ древними переводами и основанными на нихъ святоотеческими толкованіями, принято и нѣкоторыми новыми экзегетами [342].

Переводы LXX-ти, Ѳеодотіонова и Вульгата согласно передаютъ разбираемое предложеніе такъ: «и въ храмѣ (или: на храмъ) будетъ мерзость запустѣній (или: опустѣнія)». Такой переводъ имѣетъ въ своей основѣ нынѣшній еврейскій текстъ, за исключеніемъ слова *шиккуцим*, которое переводчики читали, вѣроятно, въ единственномъ числѣ: שִׁקּוּץ; слово שֹׁמֵם они читали in statu absoluto, а *мэшомем* считали опредѣленіемъ къ слову *шиккуц*, согласованнымъ съ нимъ, и вмѣсто «мерзость опустошающая» свободно переводили: «мерзость опустошеній». Изъ такой передачи разбираемыхъ словъ видно, что подъ сло-

[342] Напр. Hengstenberg 494 f., Zöckler 184—185, Knabenbauer 261 и др.; къ нимъ примыкаетъ отчасти и проф. А. Д. Бѣляевъ, Бог. Вѣст. 1894, іюль, 28.

вомъ *канаф* LXX, Θеодотіонъ и блаж. Іеронимъ разумѣли храмъ; но какъ они выводили это значеніе изъ слова *канаф*? Такъ какъ такого значенія невозможно вывести изъ еврейскаго слова, то обращаются къ греческому πτερύγιον и находятъ рѣшеніе поставленнаго вопроса въ новозавѣтномъ употребленіи этого слова. Именно, въ Мѳ. 4, 5 и Лук. 4, 9 встрѣчается выраженіе πτερύγιον τοῦ ἱεροῦ: искушая Господа, діаволъ поставилъ Его на *крилѣ церковнѣмъ*. Большею частію подъ «крыломъ храма» разумѣютъ его крышу, вершину. Но противъ такого значенія говоритъ и еврейское, и греческое словоупотребленіе: слово πτερύγιον, такъ же какъ и *канаф*, дѣйствительно означаетъ край, оконечность предмета, но по направленію въ ширину, а не вверхъ [343]. Поэтому вѣрнѣе разумѣть подъ «крыломъ храма» боковыя пристройки его, флигеля (ср. ala, aile, Flügel, wing и т. под.). Но какъ бы мы ни толковали слова πτερύγιον τοῦ ἱεροῦ, несомнѣнно то, что здѣсь разумѣется какая-то часть храма Іерусалимскаго. Этого достаточно для того, чтобы признать возможность такого значенія и для еврейскаго слова *канаф*. Правда, оно не употребляется въ такомъ значеніи въ Св. книгахъ Ветхаго Завѣта; но это могло быть случайностью: и многія другія еврейскія слова встрѣчаются только по одному разу. Итакъ, основываясь на употребленіи въ Евангеліи слова πτερύγιον, можно думать, что и слово *канаф* употреблено въ откровеніи о седьминахъ въ томъ же значеніи. Трудно объяснить, почему здѣсь опущено опредѣленіе: вмѣсто «на крылѣ храма» сказано просто «на крылѣ»; можно только предположить, что слово *канаф* очень часто употреблялось въ примѣненіи къ храму, и такъ какъ въ послѣдней части откровенія уже упоминалось о разрушеніи святилища, о прекращеніи богослуженія, то и не было нужды точнѣе опредѣлять слово *канаф*: для іудея было понятно, что здѣсь говорится именно о крылѣ храма. Но такъ какъ здѣсь часть взята вмѣсто цѣлаго, то вмѣсто «на крылѣ храма» древніе переводы и говорятъ прямо «на храмѣ».

---

[343] Bleek, vid. v. Lenner 86.

Обращаетъ на себя вниманіе чтеніе одного еврейскаго кодекса, обозначеннаго у Кенникотта числомъ 313. Разбираемое предложеніе въ немъ читается такъ: ובהיכל יהיה שקוץ משמם «и въ храмѣ будетъ мерзость запустѣнія»; это чтеніе совершенно совпадаетъ съ переводами LXX, Θеодотіона и блаж. Іеронима. Но, къ сожалѣнію, невозможно положиться на свидѣтельство этого кодекса: Кенникоттъ высказываетъ подозрѣніе, что текстъ этого кодекса поправленъ по латинскому переводу блаж. Іеронима [344], и это подозрѣніе тѣмъ вѣроятнѣе, что приведенное чтеніе слово въ слово сходно съ текстомъ Вульгаты: et erit in templo abominatio desolationis; даже предлогъ על, стоящій въ масоретскомъ текстѣ (греч. ἐπὶ съ вин.), измѣненъ въ угоду Вульгатѣ (ב—in съ твор.).

Наша славянская библія, подобно Вульгатѣ, говоритъ здѣсь о *пребываніи* мерзости запустѣнія *во святилищи*, употребляя предлогъ «въ» съ предложнымъ падежомъ; еврейскій же предлогъ *ал* и греческій ἐπὶ съ винит. падежомъ означаетъ движеніе сверху внизъ: «на храмъ» (подобно древне-славянскому: *на святый храмъ*) будетъ мерзость запустѣнія. Такой переводъ болѣе соотвѣтствуетъ и остальному содержанію откровенія, и исторіи. Уже говорилось о разрушеніи города и святилища; значитъ, мерзость не можетъ быть «въ храмѣ», такъ какъ его уже нѣтъ, она можетъ прійти «на храмъ», стать на его мѣсто. Если же предполагать, что она была въ храмѣ раньше его разрушенія, то это, какъ уже сказано, не подтверждается исторіей. Въ выраженіи «мерзость запустѣнія» главнымъ понятіемъ можно считать не мерзость, а запустѣніе [345]: опустошеніе и разрушеніе, притомъ—отъ языческаго римскаго войска, и есть та мерзость, которая придетъ на храмъ Іерусалимскій. Такимъ образомъ, выраженіе: «и на храмъ будетъ мерзость опустошенія» значитъ то же, что и выраженіе, добытое въ первомъ толкованіи изъ масоретскаго текста: «и на крыло мерзостей (придетъ) опустошитель»:

---

[344] B. Kennicott, Vetus Testamentum hebraicum, t. II. Dissertatio generalis p. 95. a; ср. de-Rossi у v. Lennep'a, 87. Кодексъ этотъ написанъ отъ лѣвой руки къ правой, и рядомъ съ еврейскимъ текстомъ въ немъ идетъ текстъ Вульгаты.

[345] Подобно Meyer'у, см. у А. Д. Бѣляева, Б. В. 1894, іюль, 33.

и тамъ, и здѣсь одинаково говорится о нападеніи на Іерусалимъ опустошающаго римскаго войска, о разрушеніи города и храма. Не вдаваясь въ частности, которыя трудно поддаются объясненію, общій смыслъ изреченія о мерзости запустѣнія можно выразить такъ: «храмъ постигнетъ опустошеніе». Такой смыслъ дается почти всѣми толкованіями разобраннаго предложенія, поистинѣ составляющаго crucem interpretum, по выраженію Цёкклера [346].

Слѣдующее предложеніе уже не представляетъ столько трудностей для объясненія, какъ предшествующее. *И даже до скончанія времене скончаніе дастся на опустѣніе;* это соотвѣтствуетъ евр. выраженію: וְעַד־כָּלָה וְנֶחֱרָצָה תֻּתַּךְ עַל־שֹׁמֵם. Слово *кала* есть отглагольное существительное отъ глагола כָּלָה «быть конченнымъ, совершённымъ», и значитъ: совершеніе, окончаніе, конецъ (2 Пар. 12, 12. Іер. 5, 10. ср. Быт. 18, 21. Исх. 11, 1.), а также «истребленіе» (о людяхъ употребляется въ Іер. 4, 27. 5, 18. 30, 11. 46, 28. Іез. 11, 13. 20, 17. Наум. 1, 8. 9. Неем. 9, 31.). Со словомъ *нехэраца* мы уже встрѣчались, оно значитъ «приговоръ, опредѣ-

[346] Zöckler, S. 184. Изъ множества толкованій разобраннаго предложенія обращаетъ на себя вниманіе попытка van Lennep'а исправить существующее чтеніе масоретскаго текста при помощи древнихъ переводовъ, и особенно перевода Ѳеодотіонова. Въ нѣкоторыхъ кодексахъ послѣдняго данное мѣсто читается такъ: καὶ ἐπὶ τούτοις ἐπὶ τὸ ἱερὸν βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως. Предполагая, что ἐπὶ τούτοις есть варіантъ тѣхъ же словъ: ἐπὶ τὸ ἱερόν, существовавшій когда-то въ Ѳеодотіоновомъ переводѣ, van Lennep старается найти основаніе для него въ еврейскомъ текстѣ. Въ Іов. 23, 15. онъ находитъ выраженіе עַל־כֵּן, переданное у LXX, Ѳеодотіона и Акилы: ἐπὶ τούτῳ; то же еврейское выраженіе съ мѣстоименной приставкой: עַל־כֵּנוֹ «на мѣстѣ его» трижды встрѣчается въ 11 главѣ книги Даніила, ст. 20, 21 и 38. Въ виду этого van Lennep предполагаетъ, что и въ 9, 27. вмѣсто כַּנָּף слѣдуетъ читать כֵּנוֹ и переводитъ данное мѣсто такъ: средина седьмины прекратитъ жертву и приношеніе, «и на мѣсто ихъ (придутъ) мерзости опустошителя»; мѣстоименіе въ словѣ *канно* стоитъ въ единственномъ числѣ, но можетъ относиться и къ «жертвѣ и приношенію», взятымъ, какъ одно понятіе. Свою поправку v. L. подтверждаетъ и переводомъ Акилы и Симмаха: ἐπὶ τῆς ἀρχῆς, по его мнѣнію, есть также переводъ выраженія *ал-канно*, такъ какъ подобное выраженіе עַל כֵּנוֹ въ Быт. 41, 13 переведено LXX-ю: ἐπὶ τὴν ἀρχήν μου (v. Lennep, Bl. 77, 89—91). Эта поправка принята многими новѣйшими учеными, напр. Kuenen, Einleitung II, 454, Bevan 160, Behrmann 64. Если бы догадка van Lennep'а оказалась справедливою, то было бы понятнѣе и происхожденіе переводовъ LXX, Ѳеодотіонова и Вульгаты: мѣстоименная приставка въ *канно* могла быть отнесена переводчиками не къ «жертвѣ и приношенію», а къ святилищу, о разрушеніи котораго говорится въ 26 ст.

леніе». *Титтак* есть 2 аористъ 1 формы глагола נָתַךְ «изливаться». Въ такомъ значеніи этотъ глаголъ употребляется о дождѣ (Исх. 9, 33. 2 Цар. 21, 10.), о молокѣ (Іов. 10, 10.), о расплавленномъ металлѣ (Іезек. 22, 20—22. 24, 11.); а затѣмъ, по аналогіи съ разсказомъ о гибели Содома и Гоморры, гдѣ Божіе наказаніе дождемъ пролилось на нечестивые города (*и Господь одожди на Содомъ и Гомморръ жупелъ и огнь отъ Господа съ небесе* Быт. 19, 24), *натак* получаетъ образное значеніе и употребляется объ изліяніи Божія наказанія, гнѣва и проклятія (Пс. 10, 6. Іезек. 38, 22. ср. 2 Пар. 12, 7. 34, 21. 25. Ис. 42, 25. Іер. 7, 20. 42, 18. 44, 6. Пл. Іер. 2, 4. Наум. 1, 6.) [347]. Послѣднее слово разбираемаго предложенія и вмѣстѣ съ тѣмъ всего откровенія о седьминахъ говоритъ объ опустошеніи: *шомем* есть причастіе 1-й формы отъ глагола *шамем* и значитъ «опустошенный»; множественное число этого причастія *шомемот* встрѣчалось уже въ 26 стихѣ съ значеніемъ «опустошенія, развалины». Нѣкоторые думаютъ, что глаголъ *шамем* въ 1 формѣ и причастіе *шомем* имѣютъ и дѣйствительное значеніе: «опустошать, опустошитель», при этомъ указываютъ на Іез. 36, 3. и Дан. 8, 13. 9, 27. 12, 11. [348]. Но въ Іез. 36, 3. стоитъ неопредѣленное наклоненіе שַׁמּוֹת, которое можетъ быть переведено и «опустошать» и «быть опустошаемымъ», *быти вамъ погублéнымъ*, какъ въ слав. переводѣ; тѣмъ болѣе, что въ слѣдующемъ стихѣ стоитъ то же причастіе во множественномъ числѣ рядомъ съ הָרֻבוֹת *опустошéнымъ и разорéнымъ*. Точно также и הַפֹּשֵׁעַ שֹׁמֵם въ Дан. 8, 13. можно переводить не только «грѣхъ опустошающій», но и *грѣхъ опустѣнія*, какъ у LXX, Ѳеодотіона и въ слав.; послѣднее же изъ указанныхъ мѣстъ, Дан. 12, 11., гдѣ говорится о «мерзости запустѣнія», не можетъ служить для опредѣленія значенія слова *шамем* по неопредѣленности своего смысла. Такимъ образомъ нельзя указать ни одного случая въ Св. Писаніи, гдѣ бы глаголъ *шамем* употреблялся въ переходящемъ значеніи, между тѣмъ какъ въ значеніи непереходящемъ онъ употребляется довольно часто; поэтому и причастіе *шомем*

[347] Gesenius 560—561; ср. Hengstenberg 516—517.

[348] Gesenius, 11 Aufl. S. 869; Siegfried u. Stade 812.

не можетъ имѣть переходящаго значенія. Это сознаютъ даже тѣ, которые думаютъ, что въ концѣ 27 стиха говорится о гибели не города или народа еврейскаго, а «опустошителя», «князя пришедшаго», хотя для ихъ толкованія гораздо удобнѣе было бы причастіе *шомем* переводить переходящимъ значеніемъ: «опустошитель». По словамъ Кэйля, переходящее значеніе принадлежитъ только причастію *мэшомем*, а *шомем* имѣетъ страдательное или непереходящее значеніе; но оба эти причастія относятся къ одному и тому же лицу, къ «князю пришедшему»: «этотъ богоненавистный князь, нападающій на городъ и святилище какъ истребитель, *мэшомем*, чрезъ это самъ становится истребляемымъ, *шомем*, такъ какъ неизмѣнно опредѣленная Богомъ гибель какъ потопъ изольется на него» [349]. Подобнымъ образомъ разсуждаетъ и англійская Толковая Библія Кука: «тотъ, кто былъ опустошителемъ, сталъ опустошеннымъ» [350]. Это обстоятельство,—то, что нѣкоторые экзегеты предпочитаютъ прибѣгать къ такимъ натянутымъ толкованіямъ, вмѣсто того, чтобы прямо перевести *шомем* словомъ «опустошитель»,—ясно доказываетъ невозможность послѣдняго перевода. Правда, весьма многіе ученые настаиваютъ на возможности и правильности такого перевода; такъ дѣлаютъ почти всѣ, относящіе откровеніе о седьминахъ ко временамъ Антіоха Епифана или антихриста. Но такой переводъ для нихъ необходимъ: ни при Антіохѣ Епифанѣ, ни при антихристѣ не было и не будетъ окончательной гибели «опустошеннаго», т. е. въ первомъ случаѣ храма Іерусалимскаго, а во второмъ—Церкви Божіей; въ томъ и другомъ случаѣ гибель постигаетъ самого «опустошителя», Антіоха или антихриста. Вотъ почему и Г. П. Павскій переводитъ разбираемое предложеніе такъ: «и наконецъ окончательная гибель прольется и на самого опустошителя». Таковы же и переводы синодальный и Кіевскій: «и окончательная предопредѣленная гибель постигнетъ опустошителя»; послѣдніе переводы имѣютъ въ виду, по всей вѣроятности, время второго пришествія Христова.

[349] Keil, 310.

[350] The Holy Bible VI, p. 360.

Древніе переводы этого предложенія почти не отступаютъ отъ еврейскаго текста. LXX тѣсно связываютъ это предложеніе съ предыдущимъ: «будетъ мерзость запустѣнія» ἕως συντελείας καὶ συντέλεια δοθήσεται ἐπὶ τὴν ἐρήμωσιν; второе συντέλεια, подлежащее, есть свободный переводъ слова *нехэраца*, а δοθήσεται произошло, вѣроятно, изъ чтенія וְנִתָּן «будетъ дано», вмѣсто וְתַמָּה [351]. Но Ѳеодотіонъ отдѣляетъ данное предложеніе отъ предыдущаго: καὶ ἕως τῆς συντελείας καιροῦ συντέλεια δοθήσεται ἐπὶ τὴν ἐρήμωσιν; такъ и древне-лат.: et usque ad finem temporis consummatio dabitur ad interitum, и старо-славянскій: *и до скончанія году скончаніе дастся на опустьніе*. Акила и Симмахъ: καὶ ἕως συντελείας καὶ τομῆς καὶ στάξει ἐπὶ ἠρημωμένον; здѣсь читается уже *вэтиттах* «и прольется», и, какъ подлежащее, подразумѣваются, вѣроятно, тѣ же συντέλεια καὶ τομή, причемъ τομή, «разрѣзъ, раздѣленіе», есть буквальный переводъ слова *нехэраца*. Близокъ къ послѣднему и переводъ, помѣщенной у Ѳеодотіона во вставочныхъ словахъ: καὶ ἕως συντελείας καὶ σπουδῆς τάξει ἐπὶ ἀφανισμοῦ, въ старославянскомъ: *и до скончанія и потщанія вчинитъ на погибель*; вмѣсто τάξει и здѣсь, вѣроятно, читалось στάξει, но σ слилось съ конечною σ предшествующаго слова. Вульгата передаетъ данное предложеніе болѣе свободно: et usque ad consummationem et finem perseverabit desolatio; *ал шомем* переводится здѣсь именительнымъ падежемъ, а *титтак*—perseverabit, «останется»: вѣроятно, וְתַמָּה смѣшивали съ וְתָמָּה или переводили это же слово свободно. Подобнымъ же образомъ передаетъ послѣднее слово и Пешито: «до совершенія опредѣленій останется въ запустѣніи»; какъ подлежащее, здѣсь разумѣется Іерусалимъ (ср. толкованіе преп. Ефрема Сирина [352]), *нехэраца* ставится въ зависимость отъ предыдущаго и переводится родительнымъ падежемъ.

Изъ всѣхъ этихъ переводовъ самый стройный по смыслу есть переводъ Ѳеодотіоновъ: *и даже до скончанія времене скончаніе*

---

[351] Van Lennep, 91.

[352] «До совершенія опредѣленій останется въ запустѣніи», т. е. Іерусалимъ до исполненія опредѣленія Божія будетъ преданъ забвенію и запустѣнію. Op. omnia t. II, p. 223.

дастся на опустѣніе. Если отбросить пояснительное слово καιρός и перевести еврейскія слова ближе къ ихъ собственному значенію, то, руководствуясь порядкомъ словъ Ѳеодотіонова перевода, мы можемъ перевести разбираемое еврейское предложеніе такимъ образомъ: «и до конца приговоръ (Божій), изольется на опустошенное». Послѣднія слова понятны безъ всякаго объясненія: приговоръ разумѣется здѣсь именно Божій, такъ какъ Богъ, сообщившій Данінлу откровеніе, несомнѣнно является совершителемъ всего, что опредѣлено въ этомъ откровеніи; Божій приговоръ изольется на опустошенное, т. е. на городъ и храмъ, о разрушеніи которыхъ говорилось раньше, особенно въ 26-мъ стихѣ. Но что значитъ выраженіе: «и до конца»? Какое опредѣленіе слѣдуетъ подразумѣвать при этомъ словѣ? Думается, что и здѣсь, какъ въ выраженіи 26-го стиха: «и до конца война», говорится о концѣ народа еврейскаго, о прекращеніи его самостоятельнаго политическаго и церковнаго существованія. Это подтверждается тѣмъ, что указанное выраженіе 26-го стиха параллельно разбираемому предложенію, съ которымъ послѣднія слова 26-го стиха сходны и по содержанію, и по буквѣ; и народъ еврейскій, какъ было уже неоднократно замѣчено, является логическимъ подлежащимъ всего откровенія о седьминахъ: въ этомъ откровеніи сообщается Данінлу печальное будущее его народа, который отвергнетъ своего Мессію и даже убьетъ Его, и за это будетъ отверженъ Богомъ, городъ и храмъ его будутъ разорены врагами, и его политически-церковная жизнь кончится среди войнъ и опустошеній.

Приведенный переводъ еврейскаго текста, сдѣланный подъ руководствомъ Ѳеодотіонова перевода, не совсѣмъ совпадаетъ съ масоретскимъ текстомъ: въ послѣднемъ передъ словомъ «приговоръ» *нехэраца* стоитъ союзъ *вэ* «и», заставляющій соединять это слово съ предшествующимъ *кала:* «окончаніе и приговоръ». Но этотъ союзъ здѣсь представляется неумѣстнымъ и можетъ быть признанъ ошибкою, вкравшеюся въ масоретскій текстъ. По крайней мѣрѣ, всѣ объясненія даннаго предложенія, опирающіяся исключительно на масоретскій текстъ въ настоящемъ его видѣ, далеко неудовлетворительны. Если предлогъ *ад,* стоящій въ на-

чалѣ предложенія, относить къ обонмъ словамъ: *калѝ вэнехэраца*, «и до конца и приговора», то слѣдующій глаголъ *миттак* «изольется» лишается подлежащаго и это подлежащее невозможно найти. Подразумѣвать здѣсь «гнѣвъ Божій» [353] или «проклятіе», о которомъ говорилось въ 9, 11 [354], нѣтъ основаній, такъ какъ о гнѣвѣ Божіемъ нигдѣ не говорится прямо, а о проклятіи упомянуто слишкомъ далеко. Нѣкоторые [355] считаютъ *миттак* безличнымъ глаголомъ; но онъ никогда безлично не употребляется. Думаютъ, что этимъ глаголомъ начинается новое, опредѣлительное предложеніе: «и до уничтоженія и приговора, которые изольются на опустошенное» [356]; но такой переводъ невозможенъ потому, что передъ глаголомъ *миттак* нѣтъ относительнаго мѣстоименія אֲשֶׁר «который». Наконецъ, многіе [357] переводятъ *ад* не предлогомъ «до», а союзомъ «пока», и подлежащимъ при *миттак* считаютъ оба слова: *калѝ вэнехэраца*, мерзость запустѣнія или опустошитель будетъ дѣйствовать, «и (именно) до тѣхъ поръ, пока истребленіе и приговоръ изольется на опустошенное». Но этому препятствуетъ единственное число глагола *миттак*, который не можетъ относиться къ двумъ словамъ. Все это говоритъ за то, что союзъ *вэ* не долженъ стоять предъ *нэхераца*, и что разбираемое предложеніе слѣдуетъ переводить, подобно θеодотіону, такимъ образомъ: «и до конца (еврейскаго народа) приговоръ (Божій) изольется на опустошенное».

Послѣ подробнаго разсмотрѣнія откровенія о седьминахъ въ его отдѣльныхъ словахъ и выраженіяхъ, постараемся теперь передать содержаніе этого откровенія въ видѣ послѣдовательнаго и

---

[353] Bertholdt, vid. Keil 310, Meinhold 319; таковъ же и переводъ Макарія: «и до исполненія предназначенной мѣры *гнѣвъ* будетъ литься на опустошенное».

[354] Ср. Оберленъ 167—168.

[355] Rosenmüller 312, Hävernick 386, Ebrard—vid. Keil 310; Behrmann 64; ср. Оберленъ 167.

[356] Hoffmann W. u. E. 309—310, Keil 310.

[357] Hengstenberg 515, Ewald 437, Maurer—vid. Keil 310; cf. Zöckler 185, Wolf 54.

яснаго разсказа о будущихъ событіяхъ, въ томъ видѣ, какъ оно представляется послѣ истолкованія его текста.

Семьдесятъ седьминъ опредѣлилъ Господь для родного Даніилу народа еврейскаго и святого города Іерусалима, чтобы въ продолженіе этого періода наступило царство Мессіи: былъ уничтоженъ первородный грѣхъ, обуздана власть грѣховныхъ влеченій надъ человѣкомъ и, вообще, была искуплена виновность людей передъ Богомъ; чтобы принесено было на землю вѣчное оправданіе, исполнились ветхозавѣтныя пророчества и помазано было Духомъ Святымъ новое Святое Святыхъ, Церковь Христова со своимъ Главою. Этотъ семидесяти-седьминный періодъ времени начинается отъ выхода повелѣнія Божія о возстановленіи и построеніи Іерусалима. Первая часть періода состоитъ изъ семи седьминъ, въ продолженіе которыхъ будетъ возстановленъ и построенъ Іерусалимъ, съ его улицами и укрѣпленіями,—хотя и среди неблагопріятныхъ для постройки обстоятельствъ. Вторая часть, состоящая изъ шестидесяти двухъ седьминъ, протечетъ до явленія въ міръ Мессіи, Посланника Божія. Въ продолженіе же одной седьмины, послѣдней части періода седьминъ, будетъ утвержденъ Богомъ новый завѣтъ со многими изъ сыновъ Израиля. А въ срединѣ этой седьмины Мессія будетъ убитъ еврейскимъ народомъ, и за это самъ народъ будетъ отверженъ Мессіей. Послѣдствіемъ такого великаго преступленія народа еврейскаго и его отверженія Богомъ будетъ то, что ветхій завѣтъ и, какъ его внѣшнее выраженіе, ветхозавѣтное богослуженіе потеряютъ свое внутреннее значеніе, храмъ и городъ Іерусалимъ, какъ центръ этого богослуженія, подвергнутся нападенію непріятельскаго войска съ иноземнымъ предводителемъ и будутъ разрушены; народъ еврейскій прекратитъ свое церковно-политическое существованіе среди опустошительной войны, которая будетъ свирѣпствовать надъ опустошенной землей израильской до тѣхъ поръ, пока окончательно не придетъ въ исполненіе Божіе рѣшеніе объ уничтоженіи еврейскаго царства.

III. Счисленіе седьминъ.

Здѣсь слѣдуетъ, во-первыхъ, опредѣлить хронологическое значеніе единицы счисленія, употребляемой пророкомъ Даніиломъ, перевести ее на обычныя единицы времени; во-вторыхъ,—указать пункты времени, на которые падаютъ возвѣщенныя въ откровеніи событія, т. е. опредѣлить по общепринятой Діонисіевой эрѣ тѣ годы, которые слѣдуетъ считать начальными и конечными какъ всего періода, такъ и отдѣльныхъ его частей.

«Седьмина», *шабуа*, какъ уже сказано, есть собственно «седьмеричное время», время, состоящее изъ семи равныхъ частей, безотносительно къ тому, какъ велики эти части. Вопросъ въ томъ: какія части времени должно разумѣть въ седьминѣ въ данномъ откровеніи?

Такъ какъ ближе всего считать такими частями дни, и семидневный періодъ имѣлъ великое значеніе въ ветхозавѣтной религіи, то здѣсь подъ седьминой, на первый взглядъ, естественнѣе всего было бы разумѣть «седьмицу», недѣлю. *Шабуа* и употребляется именно въ значеніи недѣли въ тѣхъ немногихъ мѣстахъ Св. Писанія, гдѣ это слово встрѣчается (Быт. 29, 27. 28. Исх. 34, 22. Лев. 12, 5. Числ. 28, 26. Втор. 16, 9. 10. 16. 2 Пар. 8, 13. Іер. 5, 24 евр. Іез. 45, 21), между прочимъ, и у самого пророка Даніила въ слѣдующей главѣ (10, 2. 3). Но въ данномъ мѣстѣ (9, 24. 25 дважды, 26) *шабуа* не можетъ имѣть такого значенія. Это видно изъ того, во-первыхъ, что событія, относимыя къ періоду семидесяти седьминъ и къ его частямъ въ послѣднихъ стихахъ откровенія, никоимъ образомъ не могли совершиться въ 490 дней; во-вторыхъ, изъ того, что, говоря въ

слѣдующей главѣ о седьминахъ въ смыслѣ недѣль, Даніилъ называетъ ихъ не просто «седьминами», а «седьминами дней», שָׁבֻעִים יָמִים (10, 2. 3), и это дѣлаетъ какъ бы намѣренно для того, чтобы отличить эти седьмины отъ упоминаемыхъ въ предшествующей главѣ. Говорятъ [358], что *ямим* прибавлено въ 10-й главѣ для того, «чтобы обозначить недѣли, какъ полныя», т. е. что «седьмина дней» значитъ только: «цѣлая недѣля». Но это говорило бы, что предыдущія семьдесятъ седьминъ можно считать неполными, между тѣмъ самое подраздѣленіе ихъ на мелкіе періоды, неумѣстное въ приблизительномъ счисленіи, говоритъ за полноту и точность этого числа.

Нельзя подъ седьминами разумѣть и седьминъ мѣсяцевъ, такъ какъ, съ одной стороны, мѣсяцы представляли бы на Востокѣ весьма неустойчивую единицу счисленія: у евреевъ нѣкоторые мѣсяцы были длиннѣе, другіе короче, годъ состоялъ то изъ 12-ти, то изъ 13-ти мѣсяцевъ; съ другой стороны, періодъ около сорока одного года, которому равняются 490 мѣсяцевъ, также слишкомъ коротокъ для событій, возвѣщенныхъ въ послѣднихъ стихахъ: построенія города, разрушенія его и храма и т. д. Невозможно разумѣть подъ седьминами ни десятилѣтій, ни юбилеевъ и столѣтій (подобно, напр., Оригену [359] и нѣкоторымъ раввинамъ [360]): это, во-первыхъ, не «седьмины», не представляютъ періодовъ времени, состоящихъ изъ семи частей; вѣдь и юбилей, по наиболѣе вѣроятному мнѣнію многихъ ученыхъ [361], состоялъ не изъ 49-ти, а изъ 50-ти лѣтъ. Во-вторыхъ, если считать седьмины юбилеями или столѣтіями, то на строеніе города назначается въ откровеніи (25-й ст.) или 350—700 лѣтъ (если построеніе города относить къ семи седьминамъ), или даже 3100—6200 лѣтъ (если построеніе относить къ 62 седьминамъ), а это несогласно съ исторіей.

---

[358] Keil, 282; ср. Hengstenberg 409, и др.

[359] Arbitror autem septuaginta septimanas concisas super populum et super civitatem sanctam, ut consummetur peccatum, quatuor millia nongentos esse annos ab Adam usque ad septuaginta annos, qui fuerunt post dispensationem Christi. M. 13 gr. 1658.

[360] См. Макарій, Введеніе, 221, Rohling, 257.

[361] Vid. Gesenius, 327.

Такимъ образомъ, остается единственно возможное пониманіе седьминъ,—именно, какъ семилѣтій. За такое пониманіе говоритъ почти единогласное преданіе древности. Древніе христіанскіе толкователи: Климентъ Александрійскій [362], св. Ипполитъ Римскій [363], Тертулліанъ [364], Юлій Африканъ [365], Евсевій Кесарійскій [366], св. Кириллъ Іерусалимскій [367], св. Іоаннъ Златоустъ [368] и мн. др.; еврейскіе ученые, напр., авторы Седеръ-Олямъ, также Саадіа Гаонъ, Раши, Ибн-Езра; средневѣковые экзегеты и большинство новѣйшихъ,—всѣ разумѣютъ подъ седьминами именно седьмины лѣтъ. А если принять во вниманіе, что откровеніе Даніилу должно было въ его представленіи примыкать къ пророчеству Іереміи о семидесяти годахъ плѣна, что первое является какъ бы продолженіемъ послѣдняго, то не останется никакого сомнѣнія, что подъ седьминами здѣсь разумѣются семилѣтія. Господь какъ бы такъ говоритъ пророку: ты ждешь, что чрезъ семьдесятъ лѣтъ, предсказанныхъ Іереміей, вмѣстѣ съ освобожденіемъ изъ плѣна явится и Мессія; нѣтъ, послѣ окончательнаго возвращенія изъ плѣна, послѣ возстановленія Іерусалима, пройдетъ еще седьмижды семьдесятъ лѣтъ до Мессіи.

Такія седьмины лѣтъ не были неизвѣстны у евреевъ. Періодъ субботняго года представляетъ именно такую седьмину (Лев. 25, 2. 4. 26, 34. 35. 43. 2 Пар. 36, 21); періодъ этотъ прямо называется

---

[362] — —Καὶ οὕτω γίνεται ἔτη τρία καὶ μῆνες ς'· ὅ ἐστι τὸ ἥμισυ τῆς ἑβδομάδος. M. 8 gr. 888.

[363] См. прим. 166.

[364] Unde adimplentur LXII hebdomadae et dimidia, quae efficiunt annos CCCCXXXVII menses VI, in diem nativitatis Christi. M. 2 lat. 614.

[365] Ἄρξασθαι δὲ τῶν ἀριθμῶν, τουτέστι τῶν ἑβδομήκοντα ἑβδομάδων, ἃ ἐστιν ἔτη τετρακόσια ἐννενήκοντα, ὁ ἄγγελος ὑποτίθεται ἀπὸ ἐξόδου λόγου τοῦ ἀποκριθῆναι καὶ τοῦ οἰκοδομῆσαι Ἱερουσαλήμ. Συνέβη δὲ ταῦτα ἐπὶ Ἀρταξέρξου τοῦ Περσῶν βασιλεύοντος εἰκοστῷ ἔτει. Изъ 5-й книги Хронографіи. M. 10 gr. 81.

[366] Ὅτι τῶν ἑβδομήκοντα ἑβδομάδων ὁ χρόνος, ἐν ἔτεσιν ἀναλυόμενος, ἐννενήκοντα πρὸς τοῖς τετρακοσίοις ἀριθμὸν συνάγει, παντί που δῆλον. M. 22 gr. 600.

[367] См. прим. 224.

[368] Ἑβδομάδες ἑπτὰ καὶ ἑβδομάδες ἑξήκοντα δύο τετρακόσια ὀγδοήκοντα τρία ἔτη· ἑβδομάδας γὰρ ἐνταῦθα οὐχ ἡμερῶν φησιν, οὐδὲ μηνῶν, ἀλλ' ἑβδομάδας ἐνιαυτῶν. M. 47 gr. 898.

«субботой лѣтъ» и повелѣвается отсчитывать семь такихъ субботъ для опредѣленія юбилейнаго года (Лев. 25, 8) [369].

Но если, какъ сказано, откровеніе пользуется уже извѣстною въ ветхозавѣтной религіи единицей счисленія, именно, седьминой лѣтъ, а эта седьмина начиналась не съ какого угодно года, а именно со слѣдующаго за субботнимъ, то не должно ли и счетъ семидесяти седьминъ начинать съ какого-либо изъ субботнихъ лѣтъ? [370] Такое предположеніе не можетъ быть принято, во-первыхъ, потому, что субботніе годы, какъ религіозное учрежденіе, назывались собственно не седьминами, *шабуим*, а «субботами лѣтъ», שַׁבְּתוֹת שָׁנִים (Лев. 25, 8). Во-вторыхъ, нельзя сказать опредѣленно, соблюдалось ли это учрежденіе во времена послѣ-плѣнныя; самый плѣнъ считался наказаніемъ за несоблюденіе субботъ (2 Пар. 36, 21., ср. Іер. гл. 17, Іез. гл. 20). Въ-третьихъ, наконецъ, если принять это предположеніе, то необходимо согласиться съ Зостманномъ [371], что семьдесятъ седьминъ составляютъ десять юбилейныхъ періодовъ, каждый по пятидесяти лѣтъ, и, слѣдовательно, равны пятистамъ лѣтъ. Къ такому выводу необходимо долженъ прійти всякій, тѣсно связывающій откровеніе о седьминахъ съ субботними годами. Если вѣрно почти общепринятое и наиболѣе согласное съ Библіей (ср. Лев. 25 гл.) мнѣніе, что юбилейный годъ былъ 50-мъ годомъ, первымъ послѣ седьмого субботняго года, а не субботнимъ, и что слѣдующій періодъ субботнихъ годовъ начинался съ перваго года послѣ юбилея, то необходимо признать, что и седьмины, соотвѣтствующія первымъ послѣ юбилея субботнимъ періодамъ, начинаются спустя годъ послѣ предшествующихъ имъ. Тогда весь періодъ семидесяти седьминъ будетъ равняться 7×70 го-

[369] Возражая противъ послѣдняго основанія въ пользу седьмины лѣтъ, Keil говоритъ, что «законъ знаетъ не только субботніе годы, но и періоды 7×7-лѣтніе, по прошествіи которыхъ всякій разъ должно было праздновать юбилейный годъ. Они съ такимъ же правомъ, какъ и субботніе годы, могутъ называться *шабуим*» (S. 283). Но Keil не напрасно такъ осторожно выражается о 7×7-лѣтнихъ періодахъ: «по прошествіи которыхъ»...; мы уже упоминали, что періодъ юбилейный не можетъ быть въ собственномъ смыслѣ названъ «седьминой».

[370] Мнѣніе Neteler'a, ср. Rohling, 258—259.

[371] Sostmann 53, 57 sqq.

дамъ +10 промежуточныхъ, юбилейныхъ лѣтъ, т. е. 500-мъ годамъ. Но этого принять невозможно, такъ какъ 500 лѣтъ никакъ нельзя назвать семидесятью седьминами: они равны семидесяти одной седьминѣ слишкомъ; ихъ можно бы назвать только десятью юбилеями. Притомъ и дѣленіе седьминъ на такіе періоды, какъ шестьдесятъ двѣ, полъ-седьмины, было бы невозможно: было бы трудно высчитать, сколько промежуточныхъ лѣтъ слѣдуетъ приложить къ 62-мъ седьминамъ, и считать ли полъ-седьмины равными $3^1/_2$ или 4-мъ годамъ. Едва ли правильно поступаетъ поэтому самъ Зостманнъ, присчитывая къ послѣдней седьминѣ юбилейный годъ и все-таки считая половину ея равною $3^1/_2$ годамъ. Если же седьмины нельзя считать по юбилейнымъ годамъ, то нельзя представлять ихъ совпадающими и съ субботними годами.

Въ періодъ святоотеческій и отчасти въ средніе вѣка было распространено совершенно оставленное теперь мнѣніе, что годы седьминъ Даніиловыхъ суть не солнечные, а лунные или, по другимъ, халдейскіе годы. По примѣру Африкана, считавшаго 490 лунныхъ лѣтъ равными 475 солнечнымъ годамъ [372], такъ же поступаетъ и блаж. Ѳеодоритъ [373], затѣмъ—Бэда Достопочтенный со своими многочисленными послѣдователями, Альбертъ Magnus, Діонисій Картузіанскій и др. [374], а изъ болѣе новыхъ—Hassenkamp и I. D. Michaelis [375]. Другіе думаютъ, что Даніилъ, какъ жившій въ центрѣ халдейской образованности, употреблялъ и халдейское счисленіе, по которому будто бы годъ равенъ 360

---

[372] Ἀπὸ γὰρ Νεεμίου, ὃς ὑπὸ Ἀρταξέρξου τὴν Ἱερουσαλὴμ ἀνοικοδομήσων ἐπέμφθη— —ἐπὶ τοῦτον τὸν χρόνον, ὃς ἦν Ὀλυμπιάδος διακοσιοστῆς δευτέρας ἔτος δεύτερον, Τιβερίου δὲ Καίσαρος ἡγεμονίας ἔτος ἑκκαιδέκατον, ἔτη συνάγεται τετρακόσια ἑβδομήκοντα πέντε, ἅπερ ἑβραϊκὰ τετρακόσια ἐννενήκοντα γίνεται, κατὰ τὸν σεληνιαῖον δρόμον τοὺς ἐνιαυτοὺς ἐκείνων ἐξαριθμουμένων. M. 10 gr. 84, cf. 89, 92.

[373] —Ταῦτα ὁμοῦ συναγόμενα ποιεῖ ἐτῶν ἀριθμὸν τετρακοσίων ἑξήκοντα καὶ ἐννέα. ταῦτα δὲ ἑβραϊκὰ ἔτη ποιεῖ τετρακόσια ὀγδοήκοντα τρία· τοσαῦτα δὲ ποιοῦσιν αἱ ἑπτὰ καὶ ἑξήκοντα δύο ἑβδομάδες. Εἰδέναι γὰρ χρὴ, ὡς Ἑβραῖοι, κατὰ τὸν τῆς σελήνης δρόμον ἀριθμοῦντες τὸν ἐνιαυτὸν, ἕνδεκα ἡμέρας περιττὰς ἀποφαίνουσιν, ἃς καὶ ἡμεῖς ἐμβολίμους καλοῦμεν. M. 81 gr. 1477.

[374] Vid. Fraidl.

[375] Vid. Zöckler 189.

днямъ; слѣдовательно, періодъ семидесяти седьминъ составляетъ около 483 солнечныхъ лѣтъ [376]. Но оба эти мнѣнія справедливо не находятъ себѣ послѣдователей въ новое время. Что у евреевъ и халдеевъ хронологическій годъ былъ короче нашего, это не значитъ, что онъ не соотвѣтствовалъ астрономическому: тогда бы праздники и другія времена, прикрѣпленныя къ извѣстнымъ числамъ мѣсяцевъ, могли приходиться съ теченіемъ времени во всякое время года, чего никогда не бывало. У евреевъ существовалъ въ предупрежденіе этого особый, тринадцатый мѣсяцъ (אדר שני), вставлявшійся каждый второй или третій годъ [377]. Что-либо подобное было и у халдеевъ, которые, какъ извѣстно, отличались своими астрономическими познаніями и не могли не знать точной продолжительности астрономическаго года [378]. Мистическія счисленія, представляющія семьдесятъ седьминъ равными то 460-ти [379], то $555^5/_9$ лѣтъ [380] и т. п., не нуждаются въ опроверженіи: несостоятельность ихъ очевидна.

Въ настоящее время имѣетъ больше защитниковъ то мнѣніе, что 70 седьминъ должно понимать символически; что въ откровеніи не дается хронологическаго опредѣленія будущихъ событій, а только указывается, что они будутъ происходить въ опредѣленномъ порядкѣ, чрезъ извѣстные Богу, но неизвѣстные человѣку промежутки времени [381]. Такое мнѣніе на первый взглядъ представляется очень вѣроятнымъ. Число семь имѣло весьма важное значеніе въ ветхозавѣтной жизни. Составляя сумму чиселъ: трехъ—символа Бога и четырехъ—числа міра, семь является символомъ союза Бога съ міромъ, или съ его представителемъ—человѣкомъ [382]. Поэтому въ ветхозавѣтной религіи число семь

---

[376] Такъ думаетъ, напр., P. Brinch, vid. Zöckler 189; ср. Sostmann, 9.

[377] Ideler, Handbuch der mathematischen und technischen Chronologie, B. I, Berlin, 1825, S. 511; cf. Fraidl 47.

[378] Ср. Sostmann, 9—10. Ideler думаетъ, что халдеи пользовались при своихъ астрономическихъ наблюденіяхъ египетскимъ годомъ, равнымъ 365 днямъ. Chronologie, B. I, 219—220.

[379] Hainlin, vid. Zöckler 190.

[380] Bengel, Thube, ibid.

[381] Leyer, Kliefoth, Keil—vid. Keil 331—332.

[382] Bähr, Symbolik des Mosaischen Kultus. B. I, Heidelberg, 1837. S. 187.

выступаетъ вездѣ, гдѣ говорится объ отношеніи человѣка къ Богу; въ частности, каждый праздникъ закона Моисеева такъ или иначе заключаетъ въ себѣ число семь; «каждый изъ извѣстныхъ у евреевъ періодовъ, являясь по счету седьмымъ въ ряду себѣ подобныхъ, eo ipso становится праздникомъ» [383], посвящается спеціально особымъ отношеніямъ человѣка къ Богу. Таковы суббота, пятидесятница, день очищенія, субботній и юбилейный годы. И не только въ общественно-религіозной жизни евреевъ число семь имѣло важное значеніе,—то же и въ частной жизни, въ тѣхъ случаяхъ, когда человѣку необходимо было возстановить прерванный временно союзъ его съ Богомъ. Такъ, семидневный срокъ назначается для очищенія отъ осквернения (Лев. 12, 2. 15, 13. 19. 24. 28), для опредѣленія проказы и паршивости (Лев. 13 гл.) и т. п. «Семьдесятъ» есть произведеніе семи на десять; послѣднее число есть символъ полноты [384]. Такимъ образомъ, семьдесятъ седьминъ лѣтъ представляютъ собою число совершеннѣйшее, съ одной стороны, и съ другой, выражающее идею полнаго союза Бога съ человѣкомъ; это періодъ, по прошествіи котораго союзъ этотъ долженъ вполнѣ возстановиться. Важное символическое значеніе періода семидесяти седьминъ открывается и тогда, если мы сравнимъ съ нимъ періоды субботній и юбилейный. Въ субботній годъ земля должна была покоиться (Лев. 25, 4. 5), освободившись какъ бы на время отъ того «рабства», которому и она была подвержена за вину человѣка (Рим. 8, 20. 21. ср. Быт. 3, 17). Въ юбилейный годъ объявляется «свобода на землѣ всѣмъ жителямъ ея» (Лев. 25, 10), рабы получаютъ свободу (Лев. 25, 40), запроданные и заложенные земельные участки возвращаются ихъ собственникамъ (Лев. 25, 28). Такимъ образомъ, область свободы расширяется въ юбилейный годъ: свободна не только земля, но и ея обитатели. Далѣе, область эта еще болѣе расширяется въ періодъ семидесяти лѣтъ пророка Іереміи: по прошествіи ихъ наступаетъ освобожденіе евреевъ изъ плѣна, которому они подверглись за свои грѣхи. Наконецъ, пе-

[383] Ibid., B. II, S. 537.
[384] Ibid. B. I, S. 175.

ріодъ семидесяти седьминъ назначается уже для полнаго освобожденія всего человѣчества отъ самаго тяжелаго для него рабства, рабства грѣху, а съ этимъ освобожденіемъ человѣчества связано освобожденіе и всей твари (Рим. 8, 21), какъ его послѣдствіе.

Но, говоря о глубокомъ символическомъ значеніи періода семидесяти седьминъ, не слѣдуетъ думать, что онъ имѣетъ *только* такое значеніе, безъ всякаго соотвѣтствія дѣйствительности его чиселъ. Есть данныя утверждать, что онъ имѣетъ вполнѣ опредѣленное хронологическое значеніе и долженъ вполнѣ совпадать съ дѣйствительностью своими начальнымъ и конечнымъ пунктами, равно какъ и своими частями. Это необходимо слѣдуетъ именно изъ подраздѣленія этого періода на отдѣльныя части: 7 седьминъ+62 седьмины+$^1/_2$+$^1/_2$ седьмины; нѣкоторыя изъ нихъ, какъ видимъ, очень мелки, а нѣкоторыя (62, $^1/_2$ седьмины) не могутъ имѣть никакого символическаго значенія [385]. Говорить о символическомъ значеніи седьминъ можно только для того, чтобы показать, какъ премудрость Божія даже въ хронологическихъ опредѣленіяхъ указываетъ человѣку глубокій смыслъ; какъ благость Божія даетъ человѣку всевозможныя средства для спасенія, дѣлая удобопонятнымъ для него смыслъ пророчествъ: ветхозавѣтному человѣку символическій смыслъ чиселъ былъ гораздо понятнѣе, чѣмъ новозавѣтному; весь ветхій завѣтъ, будучи самъ символомъ завѣта новаго, былъ переполненъ символами. И символическое значеніе семидесяти седьминъ, кажущееся для насъ неяснымъ и, пожалуй, нѣсколько натянутымъ, было вполнѣ естественно и понятно для человѣка ветхозавѣтнаго.

Защитники чисто символическаго значенія семидесяти седьминъ приводятъ слѣдующія основанія [386]: во-первыхъ, безуспѣшность

---

[385] Wolf (S. 60—61) находитъ возможныхъ указать символическое значеніе и послѣднихъ періодовъ седьминъ: періодъ въ 62 седьмины означаетъ, по его мнѣнію, просто весьма продолжительное время, а періодъ въ $^1/_2$ седьмины—очень короткій промежутокъ времени. Но такое значеніе весьма неопредѣленно и натянуто; самъ Вольфъ не довольствуется только символическимъ значеніемъ седьминъ и считаетъ необходимымъ признавать и хронологическій ихъ смыслъ.

[386] Keil S. 331 ff.

попытокъ объяснить текстъ и опредѣлить хронологію даннаго откровенія, если принять точно-хронологическое значеніе седьминъ. Но это неправда: общій смыслъ откровенія о седьминахъ и главные пункты времени, указанные въ немъ, довольно твердо намѣчены еще въ періодѣ святоотеческій; что же касается частностей, дѣйствительно трудныхъ для объясненія, то онѣ зависятъ отъ несовершенства хронологической и филологической наукъ и не устраняются и при символическомъ толкованіи. Во-вторыхъ, указываютъ на неопредѣленность самаго выраженія «седьмина», подобно выраженію «время» въ Дан. 7, 25. и 12, 7., тогда какъ въ другихъ мѣстахъ у Даніила же, напр., въ 8, 14. и 12, 11. дана опредѣленная единица счисленія: «вечеръ-утро», «день». Но и «вечеръ-утро» не есть опредѣленная единица счисленія; это можно сказать только о «днѣ». Остальныя же три названія вполнѣ объясняются свойствомъ пророческой рѣчи вообще и, въ частности, образнаго слога пророка Даніила, и говорить, на основаніи этихъ названій, о неопредѣленности періодовъ, обозначаемыхъ ими, нѣтъ основанія. Въ-третьихъ, указываютъ на то, что откровеніе о седьминахъ и безъ указанія точныхъ чиселъ представляло собою утѣшеніе для евреевъ и укрѣпляло ихъ надежду на исполненіе судебъ Божіихъ. Но если числа не имѣютъ никакого значенія въ откровеніи, то зачѣмъ же они даны? Не имѣя соотвѣтствія въ дѣйствительности, хронологическія указанія были бы совершенно безцѣльны. Есть много пророчествъ, гдѣ нѣтъ никакихъ датъ времени; понятно, отъ этого пророчества ничего не теряютъ; ихъ нравственное воздѣйствіе на народъ Божій—главная цѣль ихъ—было не менѣе сильно, чѣмъ остальныхъ пророчествъ. Но нѣтъ такого пророчества, въ которомъ бы числа имѣли только символическое значеніе. Пророчества съ указаніемъ времени всѣ исполнялись буквально. Таковы, напр., предсказаніе пророка Ахаву о войнѣ его съ царемъ Сирійскимъ по прошествіи года (3 Цар. 20, 22.), предсказаніе Елисея о рожденіи черезъ годъ сына у Сунамитянки (4 Цар. 4, 16. 17.) и о семилѣтнемъ голодѣ (4 Цар. 8, 1.), Исаіи—о продленіи жизни Езекіи на 15 лѣтъ (4 Цар. 20, 6.), пророчество Іереміи о семидесяти годахъ плѣна (2 Пар. 36, 21.) и мн. др.

Уже одно это обстоятельство можетъ говорить за то, что и въ откровеніи о седьминахъ мы имѣемъ дѣло съ такими хронологическими указаніями, которыя соотвѣтствуютъ дѣйствительности. Въ-четвертыхъ, ссылаются на отвѣтъ Господа ученикамъ, спрашивавшимъ Его о времени «возстановленія царства Израилева»: «не ваше дѣло знать времена или сроки, которые Отецъ положилъ въ Своей власти» (Дѣян. 1, 7.), и на Его слова о Своемъ второмъ пришествіи: «о днѣ же томъ или часѣ никто не знаетъ, ни ангелы небесные, ни Сынъ, но только Отецъ» (Марк. 13, 32. ср. Матѳ. 24, 36.). Слова эти относятъ и ко всему домостроительству Божію: «время и часъ наступленія царства Божія намъ не подобаетъ знать» [387]. Но Спаситель, отказываясь дать апостоламъ хронологическія указанія относительно времени Своего славнаго пришествія, и дѣйствительно не даетъ ихъ; между тѣмъ, въ откровеніи о седьминахъ такія указанія даны,—неужели ихъ слѣдуетъ оставить безъ вниманія? Невозможно было бы понять, зачѣмъ даны эти указанія, если бы человѣкъ не былъ въ состояніи понять ихъ и видѣть исполненіе ихъ въ дѣйствительности. Вообще исключительно-символическое пониманіе седьминъ наталкивается на слѣдующую дилемму: или оно должно отвергать какое бы то ни было соотвѣтствіе седьминъ дѣйствительности,—тогда необъяснимо дѣленіе періода на части, предполагающія извѣстное соотношеніе промежутковъ времени между отдѣльными событіями; или оно должно признавать хоть пропорціональное отношеніе времени между этими событіями (напр. періодъ построенія Іерусалима относится ко времени до явленія Христа, какъ 7: 62 и т. п.),—и тогда, по извѣстному уже времени между начальнымъ пунктомъ седьминъ и явленіемъ Христа, можно будетъ опредѣлить и другія части періода седьминъ. Нѣкоторые защитники исключительно символическаго пониманія седьминъ говорятъ еще, что онѣ даны для показанія пропорціи, существующей между правосудіемъ Божіимъ и благостью Его: вмѣсто семидесяти *лѣтъ* плѣна обѣщается семьдесятъ *семилѣтій* сво-

[387] Keil 333.

боды, причемъ послѣднее число взято круглымъ счетомъ, приблизительно. Но по справедливому замѣчанію Зостманна [388], Господь могъ выдержать эту пропорцію не только на словахъ, но и на дѣлѣ.

Итакъ, седьмины, о которыхъ говоритъ Даніилово откровеніе, суть седьмины лѣтъ, семилѣтія, такъ что весь періодъ семидесяти седьминъ равняется четыремстамъ девятидесяти годамъ.

На какіе же именно годы падаютъ начало и конецъ этихъ 490 лѣтъ, а равно и остальные пункты и періоды времени, указанные въ откровеніи, т. е. 49 лѣтъ, составляющіе первыя семь седьминъ, 483-й годъ отъ начала седьминъ, или конецъ шестидесяти девяти седьминъ и начало послѣдней седьмины, и затѣмъ—средина послѣдней седьмины? Дѣйствительно ли событія, случившіяся въ эти годы и въ эти періоды, соотвѣтствуютъ смыслу откровенія, суть тѣ именно, которыя въ немъ предуказаны?

Оказывается, что при настоящемъ состояніи науки рѣшительно невозможно со всею точностью опредѣлить не только всѣ эти пункты и періоды времени, но даже начало и конецъ всего періода седьминъ. Оказывается, что хронологія не только персидскихъ царей, но даже римскихъ императоровъ построена на довольно шаткихъ основаніяхъ. А между тѣмъ только эта хронологія и могла бы быть надежной помощницей въ опредѣленіи времени историческихъ событій: ни Св. Писаніе, ни историки греческіе и римскіе не указываютъ точно, на какіе годы падаютъ даже важнѣйшія міровыя событія, не опредѣляютъ времени, протекшаго между ними.

Остается указать только приблизительное соотвѣтствіе событій всемірной исторіи тѣмъ событіямъ, какія предуказаны въ откровеніи о семидесяти седьминахъ,—соотвѣтствіе какъ содержанія этихъ событій, такъ и времени ихъ совершенія. Достаточно будетъ, если окажется, что разница между приговоромъ современной хронологіи относительно того или другого событія и указаніемъ откровенія не достигаетъ и пяти—десяти лѣтъ; только бы

[388] Sostmann p. 29.

ясно было, что событіе это по своимъ внутреннимъ и внѣшнимъ признакамъ тожественно съ тѣмъ, какое указано въ откровеніи.

Но нельзя ли въ счисленіи седьминъ опереться на свидѣтельство древности, на преданіе? Можетъ быть, только современная наука, во всемъ сомнѣвающаяся и подчасъ все отрицающая, не можетъ дать намъ твердыхъ устоевъ для хронологіи седьминъ; между тѣмъ, святые отцы и учители Церкви христіанской и древніе еврейскіе ученые, можетъ быть, единогласно и ясно отвѣчаютъ на всѣ хронологическіе вопросы, возбуждаемые откровеніемъ о седьминахъ? Вѣдь общій смыслъ этого откровенія и нѣкоторыя отдѣльныя мѣста его совершенно согласно понимаются всею христіанскою древностью. Если бы то же оказалось и относительно хронологіи седьминъ, то для православнаго читателя и толкователя этого откровенія былъ бы прямой путь: слѣдовать за отцами и учителями Церкви, повиноваться голосу преданія.

Къ сожалѣнію, древность не можетъ служить руководительницей въ дѣлѣ счисленія седьминъ Даніиловыхъ. Оказывается, что между древними писателями, какъ христіанскими, такъ и еврейскими, существуетъ большое разногласіе въ опредѣленіи пунктовъ времени, указанныхъ въ откровеніи, и что многіе изъ нихъ или совсѣмъ отказываются дать какое бы то ни было счисленіе седьминъ, или даютъ совершенно несогласное съ текстомъ откровенія, или, наконецъ, даютъ нѣсколько счисленій, не рѣшаясь отдать предпочтеніе одному изъ нихъ [389].

Въ переводѣ LXX можно видѣть, какъ уже сказано, попытку толкованія откровенія о седьминахъ, съ цѣлію примѣнить это откровеніе ко времени Антіоха Епифана. Подъ семьюдесятью седьминами 24-го стиха здѣсь разумѣется, вѣроятно, 70 простыхъ недѣль, 490 дней, по прошествіи которыхъ народъ еврейскій

[389] Блаж. Іеронимъ говоритъ при толкованіи откровенія о седьминахъ: Scio de hac quaestione ab eruditissimis viris varie disputatum, et unumquemque pro captu ingenii sui dixisse quod senserat. Quia igitur periculosum est de magistrorum Ecclesiae judicare sententiis, et alterum praeferri alteri, dicam quid unusquisque senserit, lectoris arbitrio derelinquens, cujus expositionem sequi debeat. M. 25 lat. 542.

возвратится изъ плѣна, будетъ выстроенъ городъ и храмъ и, такимъ образомъ, исполнится пророчество Іереміи. Дальнѣйшія хронологическія даты откровенія измѣняются такъ, чтобы онѣ указывали на время гоненій Антіоха. Сумма чиселъ, данныхъ въ переводѣ LXX-ти: 7+70+62=139, явилась, повидимому, подъ вліяніемъ 1 Мак. 1, 10, гдѣ начало царствованія Антіоха опредѣляется 137-мъ годомъ эры Селевкидовъ. На это именно время и хотѣлъ указать переводчикъ, произвольно измѣняя числа, данныя въ еврейскомъ текстѣ [390]. Примѣру LXX-ти въ отнесеніи откровенія о седьминахъ ко времени Антіоха Епифана изъ древнихъ толкователей слѣдуетъ только одинъ Юлій Иларіанъ [391], хотя онъ старается достигнуть этого не искаженіемъ текста, а своеобразнымъ счисленіемъ седьминъ, основаннымъ на неправильной хронологіи вавилонскихъ и персидскихъ царей.

Всѣ остальные, какъ древніе христіанскіе, такъ и старинные еврейскіе толкователи откровенія относятъ его ко времени Христа и разрушенія Іерусалима или ко времени второго пришествія Христова. Но при этомъ они совершенно разногласятъ между собою въ подробностяхъ счисленія седьминъ.

Такъ, одни изъ нихъ начальнымъ пунктомъ седьминъ считаютъ 1-й годъ царствованія Кира, т. е. годъ возвращенія евреевъ изъ плѣна (псевдо-Епіфаній; ср. Евсевій Кесарійскій въ первомъ своемъ счисленіи [392]); другіе—1-й годъ Дарія Мидянина (св. Ипполитъ [393], Полихроній [394], Ибн-Езра и др., а также и Юлій Иларіанъ [395]), т. е. годъ полученія Даніиломъ откровенія

[390] Havernick, 387—388, Wieseler, 198 ff., Fraidl, 4 ff., van Lennep 31, 101, Bludau, De Alexandrinae interpretationis..., 9 etc.

[391] Quae hebdomadae LXII sunt anni CCCCXXXIV, qui anni completi sunt temporibus Machabaeorum anno CXLI regni Graecorum. Isto namque tempore Antiochus Graecis superba mente regnabat. M. 13 lat. 1103.

[392] Οἶμαι γοῦν— —τῶν ἐτῶν τὰς ἑβδομάδας [69] συναγομένας εἰς ἔτη τετρακόσια ἑβδήκοντα τρία. ἀπὸ τῆς Κύρου βασιλείας ἐπὶ τὴν Ῥωμαίων παρεκτείνεσθαι ἀρχήν, καθ' ἣν Πομπήϊος Ῥωμαίων στρατηγὸς ἐπιστὰς τοῖς Ἱεροσολύμοις, εἶλε πολιορκίᾳ τὴν πόλιν— —. M. 22 gr. 612, cf. Ecl. pr. ibid. col. 1180 sq.

[393] Vid. M. 10 gr. 652.

[394] См. прим. 168.

[395] См. прим. 139.

о седьминахъ, или 1-й годъ Дарія Ноѳа (Тертулліанъ [396]), смѣшивая послѣдняго съ Даріемъ Мидяниномъ. Третьи началомъ седьминъ признаютъ 2-й годъ Дарія Истаспа, какъ годъ, въ которомъ кончилось опустошеніе Іерусалима по Зах. 1, 7. ср. 12. (Евсевій во второмъ своемъ счисленіи [397]), или 2-й годъ Дарія Ноѳа или Оха (Сульпицій Северъ [398]), вмѣсто 2-го года Дарія Истаспа. Четвертые начинаютъ счетъ седьминъ съ 20-го года Артаксеркса Долгорукаго, какъ года, въ которомъ изданъ послѣдній и опредѣленный указъ о возобновленіи Іерусалима (Африканъ [399], св. Іоаннъ Златоустъ [400], преп. Исидоръ Пелусіотъ [401], блаж. Ѳеодоритъ [402] и др.). Наконецъ, нѣкоторые считаютъ седьмины отъ 28-го года Ксеркса (Василій Селевкійскій [403]), отожествляя его съ Артаксерксомъ, по примѣру Іосифа Флавія, и

---

396 Unde a primo anno Darii debemus computare, quando hanc visionem vidit Daniel.— —Darius enim regnavit annis XIX; Artaxerxes regnavit annis XL: deinde rex Ochus, qui et Cyrus, regnavit annis XXIV; Argus anno uno; alius Darius, qui et Melas nominatus est, annis XXII; Alexander Macedo annis duodecim. M. 2 lat. 614.

397 — —Ὥστε ἐξ ἅπαντος ἄρχεσθαι δεῖν ἡμᾶς τῶν ἑβδομήκοντα ἑβδομάδων ἀπὸ τῆς ἑξηκοστῆς καὶ ἕκτης Ὀλυμπιάδος, καὶ ἀπὸ δευτέρου ἔτους Δαρείου, ἐν ᾧ τὰ τῆς οἰκοδομῆς περαιοῦται. M. 22 gr. 620, cf. col. 617.

398 Vid. Fraidl.

399 См. прим. 365.

400 Καὶ τούτου βασιλεύοντος [Ἀρταξέρξου τοῦ Μακρόχειρος], εἰκοστοῦ ἔτους τῆς βασιλείας αὐτοῦ, Νεεμίας ἀνελθὼν τὴν πόλιν ἀνέστησεν.— —Ἂν τοίνυν ἐντεῦθεν τετρακόσια καὶ ογδοήκοντα τρία ἔτη ἀριθμήσωμεν, πάντως ἥξομεν ἐπὶ τὴν κατασκαφὴν ταύτην. M. 47 gr. 899.

401 Ἐπειδὴ— —ἠθέλησας μαθεῖν πῶς ἐπληρώθησαν αἱ παρὰ τῷ Δανιὴλ ἀναγεγραμμέναι ἑξήκοντα καὶ ἐννέα ἑβδομάδες τῶν ἐτῶν, αἱ ἀπὸ τῆς οἰκοδομῆς τῆς Ἱερουσαλὴμ ἀριθμούμεναι, καὶ εἰς τὴν ἅλωσιν αὐτῆς τελευτῶσαι· ἴσθι, ὅτι οὐκ ἐπὶ Κύρου ᾠκοδομήθη, ἀλλὰ τῷ κ′ ἔτει τῆς βασιλείας τοῦ Μακρόχειρος. Βιβλ. γ′, ἐπιστ. πϑ′, Ἰσιδώρῳ διακόνῳ. M. 78 gr. 793.

402 Εἰ γὰρ ἀπὸ τῆς ἐπιφανείας τῆς παρὰ τὸν Ἰορδάνην γεγενημένης, ὁπηνίκα τοῦ κηρύττειν τε καὶ διδάσκειν καὶ θαυματουργεῖν ὁ Σωτὴρ καὶ Κύριος ἡμῶν ἤρξατο, ἀρξάμενοι τοῦ ἀριθμεῖν ἐπὶ τὰ ἄνω χωρήσαιμεν, οὐ μόνον οὐ μέχρι Κύρου, ἀλλ' οὐδὲ ἕως Δαρείου τοῦτον εὑρήσομεν φθάνοντα τὸν ἀριθμόν, ἀλλὰ τῷ εἰκοστῷ ἔτει τῆς Ἀρταξέρξου τοῦ Ξέρξου βασιλείας συμπληρούμενον, καθ' ὃν καιρὸν ὁ Νεεμίας— —ἱκετεύει μὲν τὸν βασιλέα—κτλ. M. 81 gr. 1476.

403 Νεεμίας δὲ— —ἐδεήθη τοῦ βασιλέως Ξέρξου ἐν τῷ κε′ ἔτει τῆς βασιλείας αὐτοῦ εἰσελθεῖν καὶ οἰκοδομῆσαι τὰ λείψανα τοῦ τείχους τῆς Ἱερουσαλήμ. Καὶ λαβὼν ἐξουσίαν, περιστὰς τοῖς τόποις, συνετέλεσε τὸ τεῖχος μετὰ σπουδῆς πολλῆς τῷ κη′ ἔτει Ξέρξου τοῦ βασιλέως μηνὶ ἐννάτῳ.— —Τὰ δὲ ἀπὸ τῆς οἰκοδομῆς Ἱερουσαλὴμ ἕως τῆς ἀναλήψεως τοῦ Σωτῆρος ἔτη υπγ′. M. 85 gr. 420.

относя къ 28-му году его царствованія окончаніе Нееміей постройки стѣнъ Іерусалимскихъ;—отъ перваго разрушенія Іерусалима (Седеръ-Олямъ, Абарбанель, Раши) и т. п.

Конецъ первыхъ семи седьминъ одни вовсе не опредѣляютъ, другіе указываютъ на 2-й годъ Дарія Истаспа, какъ годъ возобновленія постройки храма, ср. 1 Ездр. 4, 24. (Климентъ Александрійскій [404]), или 6-й, 9-й годъ его (псевдо-Кипріанъ, Евсевій Кесарійскій въ первомъ счисленіи [405]), или же 1-й годъ Кира, какъ конецъ плѣна вавилонскаго (Юлій Иларіанъ [406], ср. св. Ипполитъ [407], Седеръ-Олямъ, Абарбанель, Раши). Слѣдующія 62 седьмины большинство начинаетъ непосредственно послѣ окончанія первыхъ семи; но нѣкоторые (Полихроній [408]) допускаютъ здѣсь большой промежутокъ времени (отъ 9-го года Дарія Истаспа до 32-го Артаксеркса Долгорукаго).

Конецъ этихъ 62-хъ седьминъ относятъ то къ году рождества Христова (Полихроній [409]; ср. псевдо-Кипріанъ) или къ какому-нибудь изъ болѣе или менѣе близкихъ къ этому году событій

---

[404] Vid. M. 8 gr. 856.

[405] Ἑπτὰ γοῦν ἀπὸ Κύρου καὶ ἐπὶ τὴν συμπλήρωσιν τῆς τοῦ ἱεροῦ οἰκοδομῆς ἑβδομάδες ἐτῶν εὑρίσκονται. Слова іудеевъ ко Христу о томъ, что храмъ строился 46 лѣтъ (Іоанн. 2, 8.), Евсевій относитъ къ постройкѣ храма при Ездрѣ и продолжаетъ: τοσαῦτα γὰρ ἀπὸ πρώτου Κύρου βασιλείας— —ἐπὶ τὸ ἕκτον ἔτος Δαρείου βασιλείας συνάγεται, καθ' ὃν τὸ πᾶν ἔργον τῆς οἰκοδομῆς τέλος εἴληφεν· ὅ γε μὴν ἐξ Ἑβραίων Ἰώσηπος καὶ ἄλλον τριετῆ χρόνον εἰς τὴν τῶν ἔξωθεν τῶν ἀμφὶ τὸν ναὸν κατασκευασμάτων συμπλήρωσιν ἔφησεν. M. 22 gr. 613, cf. Ecl. pr. ibid. col. 1180—1181.

[406] См. прим. 139.

[407] См. прим. 178; ср.: Μετὰ γὰρ τὸ ἐπιστρέψαι τὸν λαὸν Βαβυλῶνος ἡγουμένου αὐτῶν Ἰησοῦ τοῦ Ἰωσεδὲκ, καὶ Ἔσδρα τοῦ γραμματέως, καὶ Ζοροβάβελ— —τετρακόσια τριάκοντα τέσσαρα ἔτη γεγένηται ἕως παρουσίας Χριστοῦ, ἵνα ὁ ἱερεὺς τῶν ἱερέων ἐν κόσμῳ φανῇ, καὶ ὁ αἴρων τὰς ἁμαρτίας τοῦ κόσμου φανερῶς ἐπιδειχθῇ, ὡς Ἰωάννης περὶ αὐτοῦ λέγει· Ἰδὲ ὁ ἀμνὸς τοῦ Θεοῦ. M. 10 gr. 652.

[408] —Τοῦ ναοῦ οἰκοδομὴ γεγένηται, ἀρξαμένη μὲν τῷ δευτέρῳ ἔτει [Δαρείου]— —πληρωθεῖσα δὲ κατὰ τὸ ἔννατον ἔτος τοῦ αὐτοῦ Δαρείου κατὰ τὸν Ἰώσηπον. συλλογίζεται τοίνυν οὕτως τὰ μθ' ἔτη.— —Ἀρταξέρξου δὲ τοῦ μακρόχειρος ἐπικληθέντος χρόνοις ὕστερον γενομένου, ἀφ' οὗ Νεεμίας ᾔτησε κατὰ τὸ εἰκοστὸν ἔτος τῆς αὐτοῦ βασιλείας οἰκοδομῆσαι τὰ τείχη τῆς πόλεως, καὶ ἐπιτραπεὶς ἐπεραίωσεν αὐτὰ κατὰ τὸ β' καὶ λ' ἔτος τῆς αὐτοῦ βασιλείας.— —τοῦτο δὲ οὕτως ἔχον καὶ ἀπὸ τῶν χρόνων εὑρήσει τις ἄν, ἐὰν ἀκριβῶς σκοπούμενος ἐντεῦθέν τις ψηφίζων ἀπὸ τῶν χρονικῶν εὑρήσει υλδ' ἔτη παραιούμενα κατὰ τὸ λβ' ἔτος τῆς βασιλείας Ἡρώδου. Maji t. I, p. 17.

[409] Καὶ ἑβδομάδες ξβ'. Τουτέστι υλδ' ἔτη ἀριθμεῖται μέχρι τῆς τοῦ Χριστοῦ παρουσίας—. Maji t. I, p. 18; ср. прим. 408.

(смерть Александра Маккавея, или начало владычества Ирода, во второмъ счисленіи Евсевія [410]), то—къ году вступленія Іисуса Христа на общественное служеніе (св. Ипполитъ [411], Африканъ по пасхальной хроникѣ [412], блаж. Θеодоритъ [413]), то къ году Его вознесенія (Василій Селевкійскій [414], ср. Оригенъ [415]), или, наконецъ, къ началу іудейской войны (Седеръ-Олямъ, Ибн-Езра, Абарбанель).

Что касается послѣдней седьмины, то здѣсь еще больше бросается въ глаза разногласіе древнихъ толкователей. Такъ, одни изъ нихъ (и большинство) послѣднюю седьмину представляютъ примыкающею непосредственно къ 69-й седьминѣ, такъ что конецъ 69-й есть и начало 70-й седьмины. Таковы Африканъ [416], Оригенъ [417], блаж. Θеодоритъ [418], Василій Селевкійскій [419], Седеръ-Олямъ, Ибн-Езра, Абарбанель и мн. др. Но другіе произвольно отдѣляютъ послѣднюю седьмину отъ предыдущихъ на болѣе или менѣе продолжительное время. Таковы особенно тѣ, которые послѣднюю седьмину относятъ ко времени явленія антихриста, къ послѣднимъ временамъ міра, какъ Ипполитъ [420],

---

[410] Ср. прим. 218.

[411] См. прим. 407.

[412] Vid. Fraidl.

[413] См. прим. 402.

[414] См. прим. 403.

[415] Haec enim septimana quae propter septem decadas annorum dicitur septimana, confirmat testamentum multis, quando et apostoli Christi post ascensionem ipsius oratione et verbo instantes a Deo illuminabantur in omnem scientiam voluntatis divinarum scripturarum et a Spiritu sancto. M. 13 gr. 1656.

[416] Ср. его счисленіе, прим. 372.

[417] Ср. прим. 415.

[418] —Ὡς περὶ τὰ τρία ἔτη καὶ ἥμισυ κηρύξας ὁ Κύριος, καὶ τοὺς ἁγίους αὐτοῦ μαθητὰς τῇ διδασκαλίᾳ καὶ τοῖς θαύμασι βεβαιώσας, τότε τὸ πάθος ὑπέμεινε· μετὰ δὲ τὸν σταυρὸν καὶ τὸν θάνατον καὶ τὴν ἀνάστασιν, καὶ τὴν εἰς οὐρανοὺς ἀνάβασιν, καὶ τὴν τοῦ ἁγίου Πνεύματος ἐπιφοίτησιν, τὸν λοιπὸν τῆς ἑβδομάδος χρόνον οἱ ἅγιοι ἀπόστολοι ἐν Ἱεροσολύμοις κυρήττοντές τε καὶ θαυματουργοῦντες, πολλάς τε ἀνθρώπων χιλιάδας εἰς τὴν εὐαγγελικὴν ποδηγήσαντες διδασκαλίαν, τῆς νέας διαθήκης ἠξίωσαν καὶ τῆς τοῦ παναγίου βαπτίσματος χάριτος τυχεῖν παρεσκεύασαν. Εἶτα τῶν κατὰ τὸν ἅγιον Στέφανον ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων τολμηθέντων, διεσπάρησαν μὲν οἱ ἄλλοι κατὰ τὰς πόλεις τῆς Ἰουδαίας, οἱ δὲ θεῖοι ἀπόστολοι σμικρὸν ἐν Ἱεροσολύμοις διατρίψαντες χρόνον, εἰς τὴν Σαμάρειαν, καὶ Καισάρειαν, Λύδδαν τε καὶ Ἰώππην περιόντες, ἅπασιν ἀνθρώποις τὰ σωτήρια δόγματα προσφέρειν ἠπείγοντο. M. 81 gr. 1484, ср. прим. 402.

[419] Ср. прим. 403, 303, 329.

[420] Ср. прим. 319.

псевдо-Кипріанъ, отчасти св. Ириней Ліонскій [421] и нѣкоторые др. Таковы же и Климентъ Александрійскій [422], Евсевій Кесарійскій [423] и Полихроній [424]; первый концомъ 69-ти седьминъ считаетъ, повидимому, явленіе Христа, а началомъ послѣдней седьмины—время за $3^1/_2$ года предъ смертью Нерона; второй допускаетъ (во второмъ своемъ счисленіи) промежутокъ между смертью Александра Маккавея, или вступленіемъ на престолъ Ирода, и явленіемъ Христа; третій же, считая концомъ 69-ти седьминъ рождество Христово (32-й годъ Ирода), началомъ послѣдней признаетъ вступленіе Христа на общественное служеніе.

Такое разногласіе отражается, конечно, и на опредѣленіи древними средины и конца послѣдней седьмины. Одни на средину послѣдней седьмины полагаютъ крестную смерть Іисуса Христа, а оканчиваютъ весь періодъ седьминъ черезъ $3^1/_2$ года послѣ нея (Евсевій, блаж. Θеодоритъ, ср. Полихроній [425]). Другіе началомъ этой седьмины считаютъ послѣдніе годы царствованія Нерона (Климентъ Александрійскій [426]) или прекращеніе жертвъ въ храмѣ Іерусалимскомъ (Ибн-Езра, Абарбанель, ср. Седеръ-Олямъ), а концомъ ея—разрушеніе Іерусалима (ср. Тертулліанъ [427]).

---

[421] «Deinde et tempus tyrannidis ejus [antichristi] significat, in quo tempore fugabuntur sancti, qui purum sacrificium offerunt Domino: Et in dimidio hebdomadis, ait, tolletur sacrificium et libatio, et in templum [al: templo] abominatio desolationis, et usque ad consummationem temporis consummatio dabitur super desolationem; dimidium autem hebdomadis tres sunt anni et menses sex». Contra haereses lib. V, cap. XXV. M. 7 gr. 1191.

[422] Ἐν ταύταις ταῖς ἑξηκονταδύο ἑβδομάσι, καθὼς εἶπεν ὁ προφήτης, καὶ ἐν τῇ μιᾷ ἑβδομάδι, ὁ Κύριος· ἑβδομάδος τὸ ἥμισυ κατέσχε Νέρων βασιλεύων.—M. 8 gr. 856—857; ср. прим. издателя 57; Fraidl 33.

[423] Cf. M. 22 gr. 620—621.

[424] Ср. прим. 408 и 409. Ἐν τῷ ἡμίσει τῆς ἑβδομάδος· Τὸν χρόνον λέγει ἐν ᾧπερ ὁ Χριστὸς διδάσκων διατελέσει· τοσοῦτον κατ' αὐτὸν φήσας, ὅσον ἐνεδέχετο προφητεύοντα εἰπεῖν.— —Εὔδηλον ὡς τοῦ Χριστοῦ λέγει τὴν μετὰ ἀνθρώπων διαγωγήν, ἐν ᾗ τοὺς ἀποστόλους ἐξελέξατο, καὶ διδάσκων Ἰουδαίους τὲ καὶ δι' ἐκείνων ἅπαντας τοὺς λοιποὺς τὴν τελειοτάτην εὐσέβειαν. Maji t. I, p. 18.

[425] См. прим. 325, 418, 424.

[426] Ср. прим. 328.

[427] Vespasianus anno primo imperii sui debellavit Judaeos— —atque ita in diem expugnationis suae Iudaei impleverunt hebdomadas LXX praedictas a Daniele. M. 2 lat. 616.

Третьи относятъ эту седьмину къ послѣднимъ временамъ міра и началомъ ея считаютъ пришествіе антихриста, а концомъ—прекращеніе его господства (св. Ириней Ліонскій [428], св. Ипполитъ [429], псевдо-Кипріанъ) и т. п.

Нѣкоторые изъ древнихъ толкователей откровенія о седьминахъ прибѣгаютъ, далѣе, къ разнаго рода перестановкамъ и видоизмѣненіямъ отдѣльныхъ частей періода седьминъ, чтобы достигнуть желаемой цѣли—возможности отнесенія ихъ къ событіямъ еврейской исторіи. Такъ, евреи, толкованіе которыхъ приведено у блаж. Іеронима, ставили 62 седьмины раньше семи [430]. Подобнымъ же образомъ поступалъ и Тертулліанъ, причемъ онъ, кромѣ того, дѣлилъ періодъ семидесяти седьминъ не на три части: 7+62+1 седьмина, а на двѣ: $62^1/_2+7^1/_2$, своеобразно толкуя 27-й стихъ; послѣднія $1^1/_2$ седьмины (по его счисленію) совпадаютъ съ концомъ второго періода [431]. Такъ же считаетъ и Раши, дѣля семьдесятъ седьминъ на двѣ части: $7^3/_7+62^4/_7$ седьмины [432].

При этомъ слѣдуетъ имѣть въ виду, что самая продолжительность періода седьминъ неодинаково опредѣляется древними толкователями, смотря по тому, считаютъ ли они солнечными или лунными годами, или халдейскими, или цѣлыми десятилѣтіями; что они, сверхъ того, весьма различно опредѣляютъ продолжительность царствованія вавилонскихъ, персидскихъ и греческихъ царей, современныхъ періоду седьминъ. Такъ напр.,

---

[428] Ср. прим. 421.

[429] Τῶν μὲν δύο μαρτύρων [=Илія и Энохъ] τρία ἥμισυ ἔτη κηρυσσόντων, τοῦ δὲ ἀντιχρίστου τὸ ἐπίλοιπον τῆς ἑβδομάδος τοὺς ἁγίους πολεμοῦντος καὶ τὸν κόσμον ἐρημοῦντος— —. M. 10 gr. 665.

[430] Vid. M. 25 lat. 551 sqq.

[431] Переводъ Тертулліана:——A profectione sermonis——usque ad Christum ducem hebdomadas septem et dimidiam, et septuaginta (sic!) duas et dimidiam.—— Hebdomada una et dimidia hebdomadis auferetur meum sacrificium et libatio.— Толкованіе: In sexaginta duabus hebdomadibus [подразумѣвается: et dimidia] nasci illum et ungi sanctum sanctorum; hebdomades autem VII et dimidia cum implerentur, pati habere, et civitatem exterminari post unam et dimidiam hebdomadam, quo scilicet tempore septem et dimidia hebdomadae completae sunt. M. 2 lat. 613.

[432] Vid. Fraidl.

продолжительность персидскаго владычества одни полагали въ 230 лѣтъ (Африканъ [433] со своими послѣдователями), другіе—въ 235 лѣтъ (Климентъ Александрійскій [434]), въ 245 (св. Ипполитъ [435]), даже въ 263 года (Юлій Иларіанъ [436]); періодъ македонскаго владычества въ $277^1/_2$ лѣтъ (Тертулліанъ [437]), въ 282 (блаж. Θеодоритъ [438]), 287 (Василій Селевкійскій [439]), 294 (преп. Исидоръ Пелусіотъ [440]), 300 (св. Ипполитъ [441]), въ 320 лѣтъ 18 дней (Климентъ Александрійскій [442]), наконецъ—въ 370 лѣтъ (Африканъ [443]). То же самое находимъ и въ отношеніи хронологіи отдѣльныхъ царей. Такъ, большинство древнихъ толкователей, опредѣляя продолжительность персидскаго владычества надъ евреями, считали 30 или 31 годъ царствованія Кира, между тѣмъ какъ Киръ царствовалъ надъ Вавилономъ и, слѣдовательно, надъ евреями только 8—9 лѣтъ, остальные же годы его царствованія протекли до покоренія имъ Вавилона и потому должны покрываться (въ еврейской хронологіи) годами послѣднихъ вави-

---

[433] Εὑρίσκομεν γὰρ τὴν Περσῶν βασιλείαν ἔτεσι διακοσίοις τριάκοντα περιγραφομένην, τήν τε Μακεδόνων εἰς ἔτη τριακόσια ἑβδομήκοντα παρατείνουσαν. M. 10 gr. 81.

[434] Συνάγεται ἐπὶ τὸ αὐτὸ τῶν Περσικῶν ἔτη διακόσια τριακονταπέντε. M. 8 gr. 860.

[435] Ἐπεὶ μετ' αὐτοὺς [Βαβυλωνίους] ἐκράτησαν Πέρσαι ἐπὶ ἔτη σμε'—. Vid. Scholia in Danielem. 2, 31, M. 10 gr. 673; cf. Hippolyti Romani quae feruntur omnia graece. E recognitione P. A. de Lagarde. Lipsiae et Londini, 1863, p. 172. Но въ Ἐπιδείξεις, p. 648 (VII), ср. de-Lagarde p. 154, дается уже другое число: Ἐπειδὴ γὰρ οἱ Πέρσαι ἐκράτησαν βασιλεύοντες ἔτη τριακόσια τριάκοντα [legendum: διακόσια—, прим. 66 у Миня].

[436] Fit igitur summa annorum regum Persarum omnis CCLXIII. M. 13 lat. 1104.

[437] Такова сумма лѣтъ правленія македонскихъ царей по изданію Migne'я 2 lat. 614 sqq.; у Fraidl'я—$275^1/_2$ лѣтъ.

[438] Ἀπὸ δὲ ἕκτου ἔτους Ἀλεξάνδρου, ἐν ᾧ Δαρεῖος ἀνῃρέθη, ἕως Γαΐου Ἰουλίου Καίσαρος, αὐτοκράτορος πρώτου Ῥωμαίων, ἔτη τὰ πάντα τῆς Μακεδόνων βασιλείας διακόσια ὀγδοήκοντα δύο. M. 81 gr. 1477.

[439] Γίνονται ὁμοῦ τὰ τῶν Πτολεμαίων μετὰ Ἀλεξάνδρου, ἀφ' οὗ καθεῖλε Δαρεῖον, ἔτη σπ̄ζ̄ [σπη'? см. примѣч. издателя 43]. M. 85 gr. 421.

[440] — —Ἡ Μακεδονικὴ [βασιλεία] διήρκεσεν ἕως ἐτῶν διακοσίων ἐνενήκοντα τεσσάρων. Βιβλ. γ', ἐπ. πϑ', M. 78 gr. 793.

[441] Καὶ μετὰ τούτους οἱ Ἕλληνες αὐτοὶ ἐνδοξότεροι ὑπάρχοντες ἐπὶ ἔτη τριακόσια. M. 10 gr. 648, cf. Scholia, p. 673.

[442] Γίνονται τοίνυν ἐπὶ ταὐτὸ καὶ οἱ τῶν Μακεδόνων βασιλέων χρόνοι, ἔτη τριακόσια δώδεκα, ἡμέραι ὀκτωκαίδεκα. M. 8 gr. 861.

[443] См. прим. 433.

лонскихъ царей и Дарія Мидянина. Затѣмъ, одни приписываютъ Камбизу 8—9 лѣтъ царствованія и Дарію Истаспу—36 (напр., послѣдователи Африкана [444], Сульпицій Северъ [445], ср. Евсевій Кесарійскій [446]), другіе (напр., Климентъ Александрійскій [447])— 19 и 46 лѣтъ; Дарію Кодоману одни 6 лѣтъ (послѣдователи Африкана), другіе 22 года (напр., Тертулліанъ [448]). Особенною произвольностью отличается хронологія персидскихъ царей у Юлія Иларіана: у него произвольны не только числа лѣтъ ихъ царствованія (Артаксеркъ, напр., по его мнѣнію, царствовалъ 72 года!), но и наименованіе и порядокъ царей [449]. Нѣкоторые древніе толкователи стараются перевести годы персидскихъ царей на Олимпіады, чтобы при ихъ помощи легче опредѣлить и хронологію седьминъ; но и при этомъ вычисленія ихъ часто страдаютъ неточностью. Для примѣра укажемъ на Полихронія, который считаетъ 32-й годъ Артаксеркса Долгорукаго вторымъ годомъ 86-й Олимпіады, ссылаясь на Евсевія Кесарійскаго [450]; между тѣмъ изъ вычисленія Евсевія слѣдуетъ, что этотъ годъ равняется четвертому году 86-й Олимпіады [451].

Итакъ, ясно, что опереться на преданіе въ исчисленіи седьминъ рѣшительно невозможно. Попытаемся опредѣлить хронологію седьминъ на основаніи смысла откровенія и данныхъ всеобщей исторіи и хронологіи.

Прежде всего: какое событіе слѣдуетъ считать начальнымъ пунктомъ періода семидесяти седьминъ?

Какъ уже сказано при разборѣ 25-го стиха, начало этого періода опредѣляется въ откровеніи «исходомъ слова о возстановленіи и построеніи Іерусалима»; подъ такимъ «словомъ» должно

---

[444] Vid. Fraidl 47, Anm. 4.

[445] Ibid. S. 79, Anm. 1.

[446] Cp. Eclogae propheticae, M. 22 gr. 1180—1181.

[447] Καμβύσης δεκαεννέα· Δαρεῖος ἓξ καὶ τεσσαράκοντα. M. 8 gr. 860.

[448] См. прим. 396.

[449] Vid. M. 13 lat. 1103; cf. Fraidl 76, Anm. 3.

[450] Μνησθεὶς γὰρ τῆς προκειμένης ἱστορίας ἐν τοῖς χρονικοῖς Εὐσέβιος, τίθησι κατὰ τὴν πς' Ὀλυμπιάδα, δευτέρου ἔτους τῆς αὐτῆς Ὀλυμπιάδος, τὸ λβ' ἔτος τῆς Ἀρταξέρξου βασιλείας. Maji t. I, p. 17.

[451] Vid. Fraidl 89.

разумѣть Божіе повелѣніе о возстановленіи Іерусалима, и такъ какъ въ Св. Писаніи нигдѣ не говорится прямо о такомъ повелѣніи, то время выхода его слѣдуетъ опредѣлять по его исполненію, *яко не изнеможетъ у Бога всякъ глаголъ* (Лук. 1, 37.). Если въ откровеніи о седьминахъ выходъ повелѣнія о построеніи Іерусалима считается началомъ седьминъ, то несомнѣнно, что такое повелѣніе было дано Богомъ, хотя оно и не записано въ св. книгахъ; несомнѣнно, что такое важное для евреевъ событіе, какъ построеніе Іерусалима, совершилось не безъ прямого Божія повелѣнія. Но кому было дано это повелѣніе? Здѣсь возможны два предположенія: Божіе повелѣніе дано было одному изъ персидскихъ царей, подъ властію которыхъ находились тогда евреи, и выразилось въ указѣ, дозволявшемъ построить Іерусалимъ; такъ думаютъ нѣкоторые древніе (Африканъ [452], Евсевій [453], Исидоръ Пелусіотъ [454] и др.) и многіе изъ новыхъ экзегетовъ [455]. Но можно предполагать, что повелѣніе Божіе о построеніи Іерусалима было дано одному изъ вождей возвратившагося изъ плѣна еврейскаго народа, Ездрѣ, Зоровавелю или Іисусу, и что это повелѣніе было непосредственнымъ побужденіемъ къ началу постройки. Въ послѣднемъ случаѣ исходнымъ пунктомъ седьминъ слѣдуетъ признать именно то время, когда началось построеніе города, такъ какъ это время должно въ точности совпадать съ Божіимъ повелѣніемъ. Поэтому и нѣкоторые отцы и учители Церкви начальнымъ пунктомъ седьминъ считаютъ не царскій указъ, а самое начало возстановленія Іерусалима; такъ думаютъ

---

[452] Νεεμίας γὰρ, ὁ τούτου (Ἀρταξέρξου) οἰνοχόος, δεηθεὶς ἀποκρίσεως ἔτυχεν οἰκοδομηθῆναι Ἱερουσαλὴμ, καὶ λόγος ἐξῆλθε κελεύων ταῦτα· μέχρι μὲν γὰρ ἐκείνου τοῦ χρόνου ἡ πόλις ἠρήμωτο. Κύρου γὰρ μετὰ τὴν ἑβδομηκονταετίαν τῆς αἰχμαλωσίας τῶν βουλομένων ἕκαστον ἐκουσιαστὶ καταπέμψαντος, οἱ μετὰ Ἰησοῦ τοῦ μεγάλου ἱερέως καὶ Ζοροβάβελ κατελθόντες, καὶ οἱ ἐπὶ τούτοις ἅμα Ἔσδρα, τὸν νεὼν οἰκοδομεῖν ἐκωλύοντο τὰ πρῶτα, καί τεῖχος τῇ πόλει περιβάλλειν, ὡς οὐ κεκελευσμένου τούτου. M. 10 gr. 81.

[453] Въ первомъ своемъ счисленіи Евсевій начинаетъ седьмины отъ 1-го года Кира: οὗτος γὰρ οὖν πρῶτος τὴν περὶ τοῦ ἀνεγεῖραι τὴν Ἱερουσαλὴμ ἀπόκρισιν ἐξενήνοχε κατὰ τὴν ἐν τῷ Ἔζρᾳ γραφήν. M. 22 gr. 613.

[454] Vid. M. 78 gr. 793.

[455] Häverniсk 366—7, Auberlen 111 ff., Keil 293, Knabenbauer 248—9 и мн. др.

преп. Ефремъ Сиринъ [456], Сульпицій Северъ [457], св. Іоаннъ Златоустъ [458], а также псевдо-Кипріанъ [459] и Евсевій во 2-мъ своемъ счисленіи [460], хотя послѣдніе говорятъ собственно о постройкѣ не города, а храма. Изъ новыхъ экзегетовъ особенно Генгстенбергъ [461], настаиваетъ на той мысли, что «выходъ слова» о построеніи Іерусалима слѣдуетъ искать не въ царскихъ указахъ, а въ самомъ исполненіи этого Божія опредѣленія.

На основаніи содержанія откровенія трудно рѣшить, какое изъ этихъ двухъ мнѣній заслуживаетъ предпочтенія. Какъ уже сказано, изъ содержанія откровенія и изъ употребленія слова *дабар* можно только вывести, что здѣсь говорится именно о Божіемъ, а не человѣческомъ повелѣніи; но выразилось ли это повелѣніе въ указѣ персидскаго царя или въ самомъ событіи постройки Іерусалима, для рѣшенія этого вопроса въ откровеніи нѣтъ никакихъ данныхъ. Въ виду этого слѣдуетъ обратиться къ исторіи и найти такой царскій указъ, въ которомъ содержится дозволеніе построить Іерусалимъ, а затѣмъ, если возможно, опредѣлить и время, когда началась самая постройка; то или другое событіе съ одинаковымъ правомъ можетъ быть признано началомъ періода седьминъ, а выборъ между ними можетъ быть сдѣланъ уже послѣ того, какъ опредѣлятся другіе пункты этого періода.

Прежде всего посмотримъ, въ какомъ изъ благопріятныхъ евреямъ указовъ персидскихъ царей было дано позволеніе построить Іерусалимъ. Изъ Св. Писанія извѣстно, что подобныхъ указовъ было нѣсколько, ихъ давали различные персидскіе цари и въ разное время. Такъ, во 2 Пар. 36, 22—23. 1 Ездр. 1, 1—4. 6, 3—5 говорится объ указѣ Кира въ пользу евреевъ и приводится самый текстъ этого указа. Въ 1 Ездр. 6, 1—12. говорится объ указѣ Дарія Истаспа. Въ 1 Ездр. 7, 11—26. приводится указъ Арта-

[456] Ср. прим. 189.
[457] Vid. Fraidl 79.
[458] См. прим. 400.
[459] Vid. Fraidl 56.
[460] См. прим. 397.
[461] Hengstenberg 453.

ксеркса Долгорукаго, данный въ 7-й годъ его царствованія; наконецъ, въ Неем. 2, 8. упоминается объ указѣ того же Артаксеркса въ 20-й годъ его царствованія. Въ какомъ же изъ этихъ четырехъ указовъ дается евреямъ позволеніе возстановить и построить Іерусалимъ? Для этого слѣдуетъ разсмотрѣть прежде всего самый текстъ этихъ указовъ.

Во 2 Пар. 36, 23 кратко изложено содержаніе указа Кира. *Сія глаголетъ Киръ, царь Перссκій: вся царства земли даде ми Господь Богъ небесный, и той заповѣда мнѣ создати себѣ домъ во Іерусалимѣ, иже есть во Іудеи: кто въ васъ отъ всѣхъ людей его, да будетъ Богъ его съ нимъ, и да взыдетъ* (т. е. пусть онъ идетъ въ Іерусалимъ). Очевидно, здѣсь говорится только о построеніи храма, о построеніи же города Іерусалима нѣтъ ни слова. То же слѣдуетъ сказать и о болѣе пространномъ изложеніи этого указа въ 1 Ездр. 1, 2—4. Здѣсь сначала буквально повторяется текстъ 2 Пар. 36, 23 и затѣмъ добавляется: (ст. 3—4)———*и да взыдетъ во Іерусалимъ, иже во Іудеи, и да созиждетъ домъ Богу Израилеву, той есть Богъ, иже во Іерусалимѣ. И всякъ оставшійся отъ всѣхъ мѣстъ, идѣже той обитаетъ, и да помогутъ ему мужи отъ мѣста его сребромъ, и златомъ, и сосуды, и скоты, съ добровольными обѣщаніи въ церковь Божію, яже во Іерусалимѣ.* Наконецъ, и въ 1 Ездр. 6, 3—5 говорится о построеніи только храма, а не города: *Въ лѣто первое Кира царя, Киръ царь повелѣ о домѣ Божіи, иже во Іерусалимѣ: домъ да созиждется, и мѣсто идѣже жрутъ жертвы,*—далѣе говорится о размѣрахъ и способѣ постройки храма (ст. 3—4) и о возвращеніи туда сосудовъ, взятыхъ Навуходоносоромъ (ст. 5). Такимъ образомъ, въ этомъ указѣ Кира не содержится позволенія строить городъ. Это видно и изъ исполненія этого указа: Іисусъ и Зоровавель, предводившіе переселенцами еврейскими, во второй годъ послѣ своего прихода на родину положили основаніе храма (1 Ездр. 3, 8. ср. Агг. 1, 14); о построеніи же города не было и рѣчи. Если враждебные евреямъ сосѣди въ своемъ доносѣ царю персидскому пишутъ, что евреи *градъ———созидаютъ, и стѣны его состроены суть, и основаніе его возвысиша*

(1 Ездр. 4, 12), то это была только клевета, съ цѣлью добиться запрещенія постройки храма, что̀ и было на время достигнуто (1 Ездр. 4, 23—24). Что это была только клевета, видно изъ разсказа о причинахъ, ее вызвавшихъ (1 Ездр. 4, 2—3): сосѣди евреевъ предлагали имъ свою помощь въ постройкѣ храма, съ тѣмъ, конечно, чтобы потомъ участвовать и въ богослуженіи въ немъ; но евреи отвергли ихъ услуги, такъ какъ они на половину были язычники (1 Ездр. 4, 9—10. ср. 4 Цар. 17, 24—41). Лживость доноса сосѣдей евреевъ видна и изъ донесенія областеначальника царю Дарію: здѣсь говорится только о построеніи храма (1 Ездр. 5, 8—17).

Указъ Дарія Истаспа, послѣдовавшій по поводу этого донесенія сатрапа, точно также не заключаетъ въ себѣ даже намека на позволеніе построить городъ, а говоритъ только о построеніи храма. Послѣ изложенія содержанія указа Кира, найденнаго въ Экбатанахъ (1 Ездр. 6, 2—5), здѣсь говорится: (ст. 6—7) «Итакъ, Θаθнай, зарѣчный областеначальникъ, и Шеθаръ-Бознай, съ товарищами вашими Афарсахеями, которые за рѣкою,—удалитесь оттуда. Не останавливайте работы при семъ домѣ Божіемъ: пусть іудейскій областеначальникъ и іудейскіе старѣйшины строятъ сей домъ Божій на мѣстѣ его». И далѣе дается повелѣніе о выдачѣ пособія изъ царской казны на постройку храма и на жертвоприношенія въ немъ (ст. 8—10) и излагаются угрозы и проклятія на всякаго, кто измѣнитъ это постановленіе (ст. 11—12).

Третій благопріятный для евреевъ указъ данъ былъ священнику Ездрѣ, предводительствовавшему переселенцами въ 7-мъ году царствованія Артаксеркса Долгорукаго. Указъ этотъ даетъ Ездрѣ полномочіе, во-первыхъ, вести съ собою всѣхъ евреевъ, желающихъ переселиться въ Іудею (1 Ездр. 7, 13); во-вторыхъ, «обозрѣть Іудею» (ст. 14), поставить тамъ правителей и судей (ст. 25 и 26); въ-третьихъ, на пожертвованныя царемъ и другими благотворителями деньги приносить жертвы въ іерусалимскомъ храмѣ (ст. 15—17. 19—20. 23),—*и аще что тебѣ и братіи твоей благо возмнится, отъ оставшагося сребра и злата*

сотворити, прибавляетъ указъ: *якоже угодно Богу вашему, сотворите* (ст. 18). При этомъ Ездрѣ разрѣшается брать изъ царской казны опредѣленное количество денегъ и припасовъ (ст. 21—22), а священники, левиты и прочіе служащіе при храмѣ освобождаются отъ всякой пошлины (ст. 24). Очевидно, и въ этомъ указѣ нѣтъ прямого повелѣнія или разрѣшенія строить городъ. Но зато мы находимъ здѣсь разрѣшеніе Ездрѣ дѣлать все, что заблагоразсудится ему сдѣлать на имѣющіяся у него деньги; это разрѣшеніе Ездра могъ понимать очень широко и легко могъ воспользоваться имъ для постройки города, такъ какъ необходимость такой постройки, несомнѣнно, живо чувствовалась всѣми переселенцами, въ виду враждебности сосѣдей. Такимъ образомъ въ текстѣ даннаго указа нѣтъ прямого дозволенія построить Іерусалимъ; но въ немъ даются Ездрѣ широкія полномочія, которыми онъ могъ воспользоваться между прочимъ и для этой цѣли. На такое пониманіе Ездрою своихъ полномочій могутъ отчасти указывать слова его молитвы, слѣдовавшей вскорѣ за этимъ указомъ (1 Ездр. 9, 9): *и преклони* (Господь) *на насъ милосердіе предъ цари персскими, дати намъ животъ, еже воздвигнути имъ домъ Богу нашему и возставити запустѣвшая его, и дати намъ огражденіе* (גדר) *во Іудеи и Іерусалимѣ*. Если слово *гадер* понимать буквально, въ значеніи «стѣна», то можно думать, что здѣсь говорится о стѣнѣ вокругъ Іерусалима, которую уже успѣлъ построить Ездра, хотя она, можетъ быть, была и очень далека отъ совершенства. Но эти указанія текста довольно неопредѣленны, и для болѣе твердаго рѣшенія вопроса слѣдуетъ обратиться къ книгѣ Нееміи.

Здѣсь въ 1-й главѣ разсказывается, какъ Неемія, служившій виночерпіемъ при дворѣ царя Артаксеркса, въ 20-й годъ царствованія его узнаетъ о бѣдственномъ положеніи евреевъ на родинѣ и о томъ, что «стѣна Іерусалима разрушена, и ворота его сожжены огнемъ» (Неем. 1, 1—3). Извѣстіе это сильно опечалило Неемію и побудило его обратиться къ Богу съ горячею молитвою о своемъ народѣ (ст. 4—11). И вотъ слѣдствіемъ этой молитвы является то, что Артаксерксъ разрѣшаетъ Нееміи отправиться на

родину, построить и укрѣпить Іерусалимъ (2, 1—8). Здѣсь уже прямо говорится о разрѣшеніи построить и укрѣпить городъ, разрѣшеніи, которое было внушено Артаксеркcу Господомъ по молитвѣ Неемін. Поэтому многіе изъ древнихъ и новѣйшихъ толкователей 20-й годъ Артаксеркса считаютъ началомъ періода семидесяти седьминъ.

Но, судя по смыслу разсказа Неемін, можно думать, что постройка Іерусалима начата была уже раньше, и отчасти недостатокъ средствъ, отчасти происки враждебныхъ сосѣдей помѣшали евреямъ докончить ее. Почему извѣстіе о разрушеніи стѣнъ и воротъ Іерусалимскихъ такъ опечалило Неемію? Очевидно, Неемія не ожидалъ такого извѣстія, онъ надѣялся на лучшее. Но не можетъ быть, чтобы онъ не зналъ о разрушеніи Іерусалима въ началѣ вавилонскаго плѣна: столь любящій свою родину, какъ это видно изъ дальнѣйшаго разсказа его книги, столь привязанный къ своему народу, онъ не могъ, конечно, не знать его главнаго несчастія, память о которомъ для еврея была живѣе и мучительнѣе всѣхъ воспоминаній (ср., напр., Пс. 136). Итакъ, это разрушеніе стѣнъ и воротъ Іерусалимскихъ было какое-то новое, недавнее несчастіе еврейскаго народа; очевидно, стѣны и ворота были снова построены и снова разрушены врагами Израиля. Кѣмъ же и когда онѣ были построены? Не можетъ быть другого отвѣта кромѣ того, что Ездра, возвратившійся въ Іудею въ 7-мъ году царствованія Артаксеркса, воспользовался широкими полномочіями, данными ему, и сталъ строить стѣны вокругъ города, но враждебные сосѣди помѣшали окончанію этой постройки и разрушили уже воздвигнутыя стѣны, а ворота сожгли. Потому-то Неемія такъ и огорчился извѣстіемъ объ этомъ: онъ надѣялся, что Ездра доведетъ дѣло до конца, построитъ и укрѣпитъ городъ,—и вдругъ узнаётъ, что дѣло снова остановилось, и что требуется сильная поддержка, какую онъ и рѣшился взять на себя [462]. Да и самая быстрота, съ какою удалось Неемін построить стѣны Іерусалима (—въ 52 дня, Неем. 6, 15), не мо-

[462] Ср. Schultz, Die Bücher Esra etc., S. 100—101; S. Oettli, Die Bücher der Chronik, Esra und Nehemia,—въ Kurzgefasstes Kommentar Strack'a u. Zöckler'a, A. T. 8 Abth., S. 176—177.

жетъ быть объяснена только распорядительностью Нееміи и усердіемъ рабочихъ: для одной только очистки мусора и уравненія мѣста послѣ столь давняго разрушенія, для заготовки матеріаловъ и т. п. потребовалось бы почти все это количество времени; необходимо предположить, что развалины были еще свѣжія, не заросшія отъ времени, и что разрушеніе не было повсемѣстнымъ и полнымъ [463].

Но почему же въ книгѣ Ездры ни слова не говорится о постройкѣ имъ стѣнъ вокругъ Іерусалима, хотя бы эта постройка и не удалась? Это объясняется въ достаточной степени строго-теократическимъ характеромъ этой книги. Она имѣетъ цѣлью не описаніе трудовъ самого Ездры,—подобно тому, какъ книга Нееміи описываетъ дѣятельность Нееміи,—и не повѣствованіе о всѣхъ событіяхъ, какъ религіозныхъ, такъ и политическихъ, случившихся въ описываемое ею время; нѣтъ, она имѣетъ въ виду одно только теократическое состояніе еврейскаго народа по возвращеніи его изъ плѣна. Потому-то она подробно говоритъ о царскихъ указахъ, содержавшихъ позволеніе строить храмъ Іерусалимскій (гл. 1, 6, 7), о трудахъ Зоровавеля и Іисуса при постройкѣ храма (главы 3, 5, 6), о трудахъ самого Ездры для нравственно-теократическаго очищенія переселившихся на родину евреевъ (главы 9 и 10), о препятствіяхъ со стороны враговъ (гл. 4). Поименное перечисленіе родовъ еврейскихъ, неоднократно повторяющееся въ книгѣ Ездры (главы 2, 8, ср. 10), строгое разграниченіе родовъ священническихъ и левитскихъ отъ прочихъ евреевъ (2, 36 и дал., 61—63. 8, 15—20. 10, 18—24), подробная родословная самого Ездры (7, 1—5),—все это ясные признаки строго-теократическаго характера книги. Съ другой стороны, хотя Ездра и началъ постройку городскихъ стѣнъ, но враги помѣшали докончить ее. Вотъ почему въ книгѣ Ездры не говорится объ этой постройкѣ.

Итакъ, въ высшей степени вѣроятно, что разрѣшеніе укрѣпить Іерусалимъ, данное Нееміи, было только подтвержденіемъ

[463] Ср. Rohling, 269—270.

и, можетъ быть, болѣе яснымъ выраженіемъ даннаго уже раньше разрѣшенія. Слѣдовательно, начальнымъ пунктомъ періода седьминъ съ большою вѣроятностію можетъ быть принятъ седьмой годъ царствованія Артаксеркса Долгорукаго, какъ годъ, въ которомъ дано первое разрѣшеніе строить Іерусалимъ,—а не 20-й годъ его, въ которомъ было только подтверждено это разрѣшеніе. Если же началомъ періода седьминъ считать не самый указъ Артаксеркса, а то время, когда Ездра началъ постройку городскихъ укрѣпленій, то съ точностью опредѣлить это время рѣшительно невозможно. Но постройка Іерусалима не могла начаться раньше 7-го года Артаксеркса; къ 20-му же году его она временно прекратилась, то, что было сдѣлано, было разрушено врагами, и объ этомъ дошли извѣстія до Сузъ, столицы Персидскаго царства,—отсюда слѣдуетъ, что постройка эта не могла начаться и близко къ 20-му году Артаксеркса. Вѣрнѣе предполагать, что она началась вскорѣ по прибытіи Ездры въ Іерусалимъ: храмъ былъ построенъ задолго до его прибытія (1 Езд. 6, 15), и тѣ богатыя средства, съ которыми Ездра пришелъ въ Іерусалимъ (1 Езд. 7, 15. 16. 20—22. 8, 26. 27), не могли найти лучшаго употребленія, чѣмъ постройка и укрѣпленіе города.

Здѣсь является недоумѣніе: храмъ въ Іерусалимѣ начатъ постройкою со 2-го года Кира (1 Ездр. 3, 8). Постройка эта, конечно, требовала большого скопленія рабочихъ въ Іерусалимѣ; здѣсь же приносились ежедневныя жертвы на жертвенникѣ, сооруженномъ еще прежде, чѣмъ было положено основаніе храма; здѣсь, значитъ, жило много священниковъ и левитовъ. Какъ же такое множество народу жило въ Іерусалимѣ? Вѣдь были же дома, въ которыхъ жилъ этотъ народъ, а слѣдовательно—былъ и городъ. Можно ли заводить рѣчь о «возстановленіи и построеніи Іерусалима» спустя почти восемьдесятъ лѣтъ послѣ возвращенія Зоровавеля и Іисуса? Что въ Іерусалимѣ были постройки раньше Ездры, объ этомъ говоритъ и пророкъ Аггей (1, 4. 9), когда упрекаетъ евреевъ, что они не строятъ домъ Господень, а сами живутъ въ своихъ домахъ. Значитъ, Іерусалимъ давно уже былъ построенъ, и на это не требовалось никакого особаго разрѣшенія. На это обстоятельство и

указываютъ всѣ тѣ, которые началомъ седьминъ считаютъ 1-й годъ Кира. Но они, повидимому, забываютъ, что здѣсь дѣло идетъ не о нашемъ сѣверномъ климатѣ и не о нашемъ времени. Жилищами рабочихъ могли быть простыя палатки или кое-какъ сложенныя изъ дерева и камней хижины, расположенныя притомъ безъ всякаго порядка, гдѣ кому показалось удобнѣе, въ чертѣ ли или внѣ черты прежняго Іерусалима. Могло ли такое скопленіе жилищъ назваться городомъ, съ правильными (болѣе или менѣе) улицами, со рвами и стѣнами? А 25-й стихъ откровенія о седьминахъ говоритъ именно о «возстановленіи и построеніи улицы и рва». Въ тѣ далекія времена, когда грабежи и нападенія сосѣдей не были рѣдкостью и выходящею изъ ряда неожиданностью, никакое поселеніе не могло считатся «городомъ», т. е. болѣе или менѣе постояннымъ и многолюднымъ селеніемъ, пока оно не было «ограждено» крѣпкими стѣнами отъ возможныхъ нападеній. Такъ и Іерусалимъ до начала царствованія Артаксеркса (1 Ездр. 4, 7—23.) постоянно подвергался нападеніямъ сосѣдей. Даже когда Ездра, сознавая необходимость положить конецъ этимъ нападеніямъ и пользуясь широкими полномочіями отъ царя, рѣшился построить стѣны вокругъ Іерусалима, враги разрушили эти стѣны и ворота сожгли огнемъ. Доканчивать начатое Ездрой пришлось уже Неемію. Онъ окончательно «возстановилъ и построилъ Іерусалимъ», привелъ въ порядокъ его строенія, чтобы образовать изъ него правильный городъ съ «улицами» и площадями, и окружилъ его «рвами» и стѣнами.

Въ которомъ же году до Рождества Христова вступилъ на престолъ Артаксеркъ Долгорукій и на какой годъ падаетъ седьмой годъ его царствованія? Единственнымъ источникомъ для опредѣленія начала царствованія Артаксеркса служитъ пока «Канонъ царей» или «царствъ» Птоломея, греческаго географа и астронома, жившаго во 2-мъ вѣкѣ по Р. Х. Въ этомъ канонѣ даны таблицы ассирійскихъ и мидійскихъ, персидскихъ, греческихъ и римскихъ царей, начиная съ Набонассара. При имени каждаго царя указано число лѣтъ его царствованія и сумма всѣхъ лѣтъ, протекшихъ до послѣдняго года его царствованія

включительно отъ перваго года Набонассара [464]. Всѣ хронологи согласны, что «Набонассарова эра», принятая въ этомъ канонѣ Птоломея, начинается съ 26-го февраля 3967 года юліанскаго періода, или 747 года до Р. Х.; на это именно число падаетъ 1-е число тота—перваго мѣсяца 1-го года Набонассара [465]. Затѣмъ извѣстно, что египетскій годъ, лежащій въ основѣ хронологіи Птоломея, имѣетъ 365 дней [466]. Зная это, легко опредѣлить и время царствованія Артаксеркса. Въ числѣ другихъ персидскихъ царей въ канонѣ значится:

Дарій I . . . 36—262.
Ксеркъ . . . 21—283.
Артаксеркъ I . 41—324 [467].

Если перевести эти годы на нашу эру [468], то получимъ, что Ксеркъ вступилъ на престолъ между 23-мъ декабря 486-го и

---

[464] Ideler. Handbuch der math. und techn. Chronologie, B. I, S. 109 ff.
[465] Ibid., S. 98.
[466] Ibid., S. 94 ff.
[467] Ibid., S. 112.
[468] Чтобы перевести годы Птоломеева канона на нашу эру, нужно: помножить число протекшихъ лѣтъ на 365 и приложить сюда дни текущаго года,—узнаемъ, сколько дней прошло съ 1-го числа мѣсяца тотъ перваго Набонассарова года. Къ этому числу приложить 1448638, сумму дней юліанскаго періода, протекшихъ до начала Набонассаровой эры (до 26 февраля 3967 года). Полученную сумму раздѣлить на 1461 = число дней юліанскаго високоснаго періода (т. е. число дней въ четырехъ юліанскихъ годахъ, слѣдующихъ одинъ за другимъ) и частное умножить на 4: получимъ число лѣтъ юліанскаго періода, протекшихъ до даннаго числа Набонассаровой эры. Остатокъ отъ дѣленія на 1461, если онъ меньше 366, составитъ число дней слѣдующаго (високоснаго) года. Если же онъ больше 366, то изъ него нужно вычесть сначала 366 (такъ какъ первый юліанскій годъ—високосный), а затѣмъ послѣдовательно 365, пока не останется число меньше 365-ти. Полученные полные годы добавить къ годамъ, добытымъ раньше. Превративъ дни въ мѣсяцы, легко узнаемъ, какому числу юліанскаго періода соотвѣтствуетъ данное число Набонассаровой эры. А чтобы юліанскіе годы перевести на годы нашей общепринятой эры, нужно вычесть число лѣтъ юліанскаго періода изъ 4714 или, если оно больше этого числа, отнять отъ него 4713 (Ideler, I, S. 102—104, 77). Руководствуясь этими правилами мы получимъ:

$[(365 \times 262) + 1448638] : 1461 = 1056$ и остатокъ 1452;
$1452 - 366 - 365 - 365 = 356$;
$(1056 \times 4) + 3 = 4227$ лѣтъ;

23-мъ декабря 485-го года до Р. Х., а Артаксеркъ между 18-мъ декабря 465-го и 18-мъ декабря 464-го года до Р. Х. [469]. Птоломеевъ канонъ не указываетъ дня и мѣсяца вступленія на престолъ или смерти царей; онъ даетъ только годы. При этомъ нужно имѣть въ виду, что хотя бы вступленіе на престолъ того или другого царя было и не въ началѣ года, даже въ самомъ концѣ его,—годъ этотъ заносится въ сумму лѣтъ его царствованія. Канонъ вовсе не упоминаетъ тѣхъ царей, которые царствовали меньше года: время ихъ царствованія заносится въ сумму лѣтъ отчасти предшествующаго, отчасти слѣдующаго царя [470]. Это обстоятельство имѣетъ значеніе и при опредѣленіи начала царствованія Артаксеркса I Долгорукаго: онъ вступилъ на престолъ не тотчасъ послѣ Ксеркса. Когда Ксеркъ былъ убитъ Артабаномъ, начальникомъ тѣлохранителей, то на престолъ слѣдовало вступить старшему сыну Ксеркса Дарію. Но Артаксеркъ, младшій сынъ Ксеркса, согласившись съ Артабаномъ, убилъ Дарія, затѣмъ постарался отдѣлаться и отъ своего сообщника Артабана и самъ вступилъ на престолъ [471]. Нѣтъ ничего невѣроятнаго въ томъ предположеніи, что вступленіе на престолъ Артаксеркса случилось уже въ концѣ года: если Ксеркъ умеръ даже въ началѣ года, то обстоятельства, случившіяся между его смертью и воцареніемъ Артаксеркса, могли занять нѣсколько мѣсяцевъ (Артабанъ, по позднѣйшимъ извѣстіямъ, самъ царствовалъ семь

---

356 — 334 (число дней года до ноября включительно)=22 дня декабря. Значитъ, 1-е тотъ 263-го года Набонассаровой эры приходилось на 23-е декабря 4228-го юліанскаго года, или на 23-е декабря 486-го (=4714—4228) года до Р. Х.

[(365 × 283) + 1448638] : 1461 = 1062 и остатокъ 351.

1062 × 4 = 4248 лѣтъ;

351 — 335 (число дней високоснаго года до ноября включительно)=16 дней декабря. Итакъ, 1-е тотъ 284-го Набонассарова года = 17-му декабря 4249 юліанскаго года, или 17-му декабря 465-го (=4714—4249) года до Р. Х.

[469] Ср. Th. Nöldeke. Aufsätze zur persischen Geschichte. Leipzig, 1887, S. 49; H. Peter, Lexikon der Geschichte des Altertums, Leipzig 1882, S. 57; Justi, Geschichte des alten Persiens,—въ Allgemeine Geschichte in Einzeldarstellungen, hrsgg. v. W. Oncken. 1 Hauptabth. 4 Theil. Berlin, 1879, S. 113 u. 126.

[470] Ideler, B. I, S. 117 ff.

[471] Nöldeke, Aufsätze.. S. 49.

мѣсяцевъ [472]). Значитъ, не будетъ большой ошибки, если предположить, что вступленіе на престолъ Артаксеркса случилось незадолго до 1 тотъ 285-го года эры Набонассара, т. е. около 18-го декабря 464 года до Р. Х.

Седьмой годъ царствованія Артаксеркса есть 290-й годъ Набонассаровой эры. 1-е тотъ этого года было 16-го декабря 459-го года до Р. Х. [473], и, слѣдовательно, седьмой годъ Артаксеркса продолжался отъ 16-го декабря 459-го до 16-го декабря 458 года до Р. Х. Выступленіе евреевъ изъ Вавилона подъ предводительствомъ Ездры, съ указомъ царя, разрѣшавшимъ постройку Іерусалима, произошло въ первый мѣсяцъ седьмого года Артаксеркса. Неизвѣстно, считалъ ли Ездра царствованіе Артаксеркса такъ же, какъ Птоломеевъ канонъ, т. е. съ 1-го тотъ 290-го года Набонассара, или онъ считалъ годы Артаксеркса со времени его дѣйствительнаго вступленія на престолъ. Если принять послѣднее предположеніе, и если вступленіе на престолъ Артаксеркса случилось уже въ концѣ года, то начало періода седьминъ можно полагать незадолго передъ 16-мъ декабря 458 года до Р. Х. Во всякомъ случаѣ, разстояніе между этимъ числомъ и дѣйствительнымъ временемъ выступленія Ездры изъ Вавилона не можетъ быть больше года [474]. Такимъ образомъ, указъ Артаксеркса, дававшій Ездрѣ позволеніе строить Іерусалимъ, былъ данъ, вѣроятно, въ концѣ 458-го года до Р. Х.; самая же постройка могла быть начата

[472] Ibid.; извѣстіе Африкана см. у Fraidl'я, 47, Anm. 4.

[473] $[(365 \times 289) + 1448638] : 1461 = 1063$ и остатокъ 1080;
$1080 - 366 - 365 = 349$;
$(1063 \times 4) + 2 = 4254$ года;
$349 - 334$ (число дней года до ноября включительно)$= 15$ дней декабря: 1-е тотъ 290-го года Наб.$=$16-му декабря 4255-го юліанскаго года, или 16-му декабря 459-го $(= 4714 - 4255)$ года до Р. Х.

[474] Можно было бы точнѣе опредѣлить это время, если бы предположить, что Ездра подъ «первымъ мѣсяцемъ», въ которомъ совершилось выступленіе евреевъ изъ Вавилона, разумѣетъ нисанъ, первый мѣсяцъ еврейскаго церковнаго календаря. Но противъ этого говоритъ то обстоятельство, что путешествіе евреевъ началось какъ разъ въ 12-й день перваго мѣсяца, т. е. чуть не наканунѣ пасхи, если бы это былъ нисанъ (1 Ездр. 8, 31. ср. 6, 19.), а это едва ли вѣроятно. Возможно, что здѣсь ведется счетъ отъ начала царствованія Артаксеркса, и разумѣется первый мѣсяцъ именно отъ начала 7-го года его (ср. 1 Ездр. 7, 8—9.).

Ездрой не ранѣе 457-го года; точнѣе опредѣлить начало періода седьминъ невозможно.

Выше указано почти общепринятое въ настоящее время опредѣленіе начала царствованія Артаксеркса. Но есть ученые, которые на цѣлыхъ десять лѣтъ отодвигаютъ назадъ вступленіе на престолъ Артаксеркса, полагая, что Ксеркъ царствовалъ не 21 годъ, какъ указано въ Птоломеевомъ канонѣ, а 11, и Артаксеркъ не 41, а 51 годъ. Это мнѣніе нельзя обойти молчаніемъ потому, что защитниками его являются довольно авторитетные ученые, и что оно проникло и въ русскую литературу. Къ числу защитниковъ этого взгляда нужно прежде всего отнести Витрингу, который, впрочемъ, въ свое время остался почти безъ послѣдователей [475], особенно же—Генгстенберга, потратившаго много труда на защиту этого взгляда и опроверженіе противоположнаго [476]. Несмотря на то, что сряду же послѣ выхода въ свѣтъ (въ 1832 году) «Христологіи» Генгстенберга появилась основательная статья Юрьевскаго профессора Клэйнерта, разрушавшая всѣ доводы Генгстенберга и обстоятельно доказывавшая правильность общепринятаго взгляда [477], Генгстенбергъ нашелъ себѣ послѣдователей. Къ числу ихъ принадлежитъ и нашъ русскій богословъ, Преосвященный Макарій [478], и новѣйшій французскій ученый Fabre d' Envieu [479].

Вопросъ о томъ, на чьей сторонѣ правда, можетъ быть рѣшенъ достаточно твердо только однимъ путемъ: разсмотрѣніемъ древнихъ авторитетныхъ свидѣтельствъ о продолжительности царствованія Ксеркса и Артаксеркса. Другой путь, которымъ стараются добиться этого рѣшенія Генгстенбергъ и отчасти Клэйнертъ, путь сравненія разсказовъ древнихъ писателей о событіяхъ греко-персидской исторіи, не можетъ привести къ опредѣленному

---

[475] Vid. Hengstenberg, S. 542—543.

[476] Ibid. S. 541—560.

[477] Kleinert, «Ueber der Regierungsantritt des Artaxerxes Longimanus», Beiträge zu den theologischen Wissenschaften von den Prophessoren der Theologie zu Dorpat. 2-ter Band. Hamburg. 1833.

[478] Введеніе въ Прав. Богословіе, стр. 223.

[479] Le livre du pr. Daniel, t. I, p. 304, въ таблицѣ.

выводу. Свидѣтельства эти весьма скудны (особенно по отношенію къ персидскимъ событіямъ), не содержатъ опредѣленныхъ хронологическихъ указаній и часто взаимно противорѣчивы. Вотъ почему названные ученые на основаніи однихъ и тѣхъ же данныхъ—свидѣтельствъ Ѳукидида, Діодора, Плутарха, Ктезія и нѣкоторыхъ др.—приходятъ къ совершенно различнымъ выводамъ. Поэтому, оставивъ въ сторонѣ лабиринтъ этихъ историческихъ свидѣтельствъ, лучше всего обратиться къ прямо-хронологическимъ свидѣтельствамъ древнихъ, опредѣляющимъ продолжительность правленія обоихъ царей. Сюда принадлежитъ прежде всего уже разсмотрѣнное нами свидѣтельство такого хронологическаго памятника, какъ Птоломеевъ канонъ. Основаніемъ для него послужили астрономическія наблюденія халдейскихъ ученыхъ, что прямо говоритъ за его точность [480]. Самъ Генгстенбергъ признаетъ всю важность свидѣтельства этого памятника, говоря, что «caeteris paribus это основаніе (въ пользу опровергаемаго имъ взгляда) было бы, конечно, рѣшающимъ». Но, чтобы ослабить силу этого свидѣтельства, онъ заподозриваетъ его неповрежденность, находя возможнымъ, что переписчикъ «смѣшалъ стоящее въ древнемъ источникѣ ια′ съ κα′. Ибо, разъ чрезъ это смѣшеніе Ксерксу приписано 21-лѣтнее царствованіе, то сокращеніе царствованія Артаксеркса въ 41 годъ было необходимымъ слѣдствіемъ» [481]. Но, какъ справедливо возражаетъ Клэйнертъ, если бы такое смѣшеніе чиселъ ια′ съ κα′ дѣйствительно произошло, то рѣшительно невозможно допустить, чтобы оно не было тотчасъ замѣчено и повлекло бы за собой сознательное измѣненіе еще двухъ чиселъ. Если допустить, вмѣстѣ съ Генгстенбергомъ, что въ первоначальной рукописи стояли цифры:

Λαρείου ἔτη . . . . . λς′—σξβ′.
Ξέρξου ἔτη . . . . . ια′—σογ′.
Ἀρταξέρξου α′ ἔτη . . . να′—τκδ′.

---

[480] Ср. Ideler, B. I, S. 109 ff. Röckerath, Biblische Chronologie. Münster, 1865, S. 107 и др.

[481] Hengstenberg 544—545.

то измѣненіе ια′ въ κά повлекло бы за собою не только измѣненіе να′ въ μα′, но и σογ′ въ σπγ′, между тѣмъ послѣднія числа стоятъ во всѣхъ извѣстныхъ теперь экземплярахъ канона. Тѣ же числа, что̀ въ Птоломеевомъ канонѣ, находимъ въ отрывкахъ историко-хронологическаго труда египетскаго жреца Мането, сохранившихся у Африкана; затѣмъ—въ хроникахъ Евсевія и Сульпиція Севера [482]. Многіе другіе древніе писатели, хотя нѣсколько уклоняются отъ вышеназванныхъ въ опредѣленіи продолжительности царствованія Ксеркса и Артаксеркса, но уклоняются настолько незначительно, что ихъ также должно считать свидѣтелями въ пользу общепринятаго взгляда. Такъ, Ктезій считаетъ 42 года царствованія Артаксеркса, не упоминая о годахъ Ксеркса; Діодоръ даетъ Ксерксу 21, а Артаксерксу 40 лѣтъ [483]. Африканъ, Синкеллъ и мн. другіе, наоборотъ, убавляютъ одинъ годъ у Ксеркса: онъ, по ихъ словамъ, царствовалъ 20 лѣтъ, Артаксерксъ же—41 [484]. Эти уклоненія незначительны и зависятъ большею частію отъ того, считаетъ ли писатель нѣсколько мѣсяцевъ правленія Артавана и слѣдующихъ за Артаксерксомъ Ксеркса II и Согдіана отдѣльно, или, считая эти мѣсяцы за годъ (или за два года), присоединяетъ ихъ къ суммѣ правленія предшествующихъ царей. Другіе древніе писатели болѣе или менѣе уклоняются отъ вышеприведенныхъ въ опредѣленіи времени царствованія Ксеркса и Артаксеркса. Но и ихъ показанія говорятъ скорѣе въ пользу чиселъ 21+41, чѣмъ 11+51. Дѣло въ томъ, что всѣ они даютъ Ксерксу большее число лѣтъ, а Артаксерксу меньшее, чѣмъ обычный взглядъ, тогда какъ въ пользу чиселъ 11+51 говорило бы то, если бы они, наоборотъ, уменьшали число лѣтъ правленія Ксеркса и увеличивали—Артаксеркса. Такъ, Іосифъ Флавій [485], не говоря о лѣтахъ царствованія Артаксеркса, даетъ Ксерксу 28 или 29 лѣтъ. За нимъ слѣдуютъ: Василій Селевкійскій (29+41) [486],

---

[482] Vid. Kleinert, S. 22, Anm. ad 2, S. 16—18, cf. Fraidl 79 Anm. 1.
[483] Kleinert, таблица, ср. S. 19—22 Anm. ad l; cf. Hengstenberg, S. 544.
[484] См. таблицу у Kleinert'a.
[485] Ibid., cf. S. 23—24 Anm. ad 4; cf. Fraidl 92, Anm. 3.
[486] Vid. M. 85 gr. 420, 421.

пасхальная хроника (28 лѣтъ 7 мѣсяцевъ+41) и Никифоръ Константинопольскій [487]. Климентъ Александрійскій [488] и Анонимъ III вѣка [489] даютъ Ксеркcу 26 лѣтъ, а Артаксерксу первый 41, а второй 36 лѣтъ; послѣдній видимо старался сохранить хотя сумму лѣтъ этихъ царей (21+41=26+36). Только два свидѣтельства уклоняются отъ общаго теченія: Юлія Иларіана (20+72) [490] и Александрійской хроники (11+33) [491]. Но первое явно несообразно и представляетъ собою, очевидно, грубую ошибку самого ли автора или переписчика. Второе же можетъ говорить за воззрѣніе Генгстенберга только наполовину: приписывая Ксерксу 11 лѣтъ царствованія, Александрійская хроника не увеличиваетъ соотвѣтственно сумму лѣтъ Артаксеркса изъ 41 въ 51, а уменьшаетъ въ 33 года, что̀ противорѣчитъ общепринятой суммѣ этихъ двухъ царствованій въ 62 года. Кромѣ того, источникъ этотъ сохранился до насъ на поразительно плохомъ латинскомъ языкѣ и представляетъ, очевидно, неумѣлый переводъ съ греческаго подлинника, что̀ также уменьшаетъ его авторитетъ; наконецъ, вторая половина этой хроники содержитъ вѣрныя даты для времени царствованія Ксеркса и Артаксеркса: 20 лѣтъ+7 мѣсяцевъ Артавана+40 лѣтъ.

Итакъ, можно считать несомнѣннымъ, что Ксеркcъ царствовалъ 21 годъ, а Артаксеркcъ—41, и что добытое раньше опредѣленіе 7-го года царствованія Артаксеркса, а вмѣстѣ съ тѣмъ и начальнаго пункта седьминъ есть наиболѣе вѣроятное.

Конецъ всѣхъ семидесяти седьминъ въ откровеніи не обозначенъ какимъ-нибудь событіемъ, которое можно было бы пріурочить къ одному году или дню. Въ 24-мъ стихѣ этотъ конецъ не опредѣляется, а говорится только о тѣхъ благахъ, которыя принесены будутъ періодомъ седьминъ. Въ 25-мъ стихѣ опредѣляется начало и конецъ только шестидесяти девяти первыхъ седьминъ.

---

[487] См. таблицу Kleinert'a; cf. S. 35 Anm. ad 10, S. 67 ad 21.

[488] Ξέρξης ἓξ καὶ εἴκοσι· Ἀρταξέρξης ἓν καὶ τεσσαράκοντα. M. 8 gr. 860.

[489] См. табл. Kleinert'a, cf. S. 31—33 Anm. ad 8.

[490] Vid. M. 13 lat. 1103; cf. Fraidl 77 Anm. 3.

[491] Конца V и начала VI вѣка; см. Kleinert, S. 53—57 Anm. ad 11.

Въ 26-мъ стихѣ говорится неопредѣленно: «послѣ шестидесяти двухъ седьминъ» (т. е. послѣ 69-ти седьминъ отъ начала періода) будетъ то-то и то-то. О послѣдней седьминѣ говорится только въ 27-мъ стихѣ, но и здѣсь конецъ ея точно не опредѣляется, не обозначается какимъ-либо отдѣльнымъ событіемъ: «прекращеніе жертвы и приношенія» относится къ срединѣ этой седьмины, «утвержденіе завѣта для многихъ»—ко всей седьминѣ, появленіе же «на крылѣ мерзостей опустошителя» и изліяніе «опредѣленнаго истребленія на опустошенное»—совсѣмъ не опредѣляются по времени, и только изъ послѣдовательности предложеній можно заключить, что это будетъ уже послѣ средины послѣдней седьмины, а можетъ быть, и послѣ всего періода седьминъ.

Но если точно не опредѣляется въ откровеніи конецъ всѣхъ семидесяти седьминъ, зато конецъ первыхъ шестидесяти девяти указывается ясно: «до Помазанника-Князя», т. е. до явленія Іисуса Христа. Дѣйствительно ли отъ 7-го года царствованія Артаксеркса I до явленія Христа протекло 69 седминъ, или 483 года?

Въ Евангеліи отъ Луки (3, 1—3) говорится: *Въ пятое же надесять лѣто владычества Тиверіа кесаря, обладающу* (ἡγεμονεύοντος) *Понтійскому Пилату Іудеею, и четвертовластвующу Галилеею Ироду, Филиппу же брату его четвертовластвующу Итуреею и Трахонитскою страною, и Лисанію Авилиніею четвертовластвующу, при архіереи Аннѣ и Каіафѣ, бысть глаголъ Божій ко Іоанну, Захаріину сыну въ пустыни.* Далѣе (ст. 4—6) приводится пророчество Исаіи (40, 3—5) о *гласѣ вопіющаго въ пустыни*, исполнившееся на Іоаннѣ, представляется нѣсколько примѣровъ его проповѣди (ст. 7—14), свидѣтельство его о себѣ и о Христѣ въ отвѣтъ на догадки народа, не Іоаннъ ли и есть Христосъ (ст. 15—18), коротко упоминается о взятіи Іоанна въ темницу по приказанію Ирода (ст. 19—20) и затѣмъ говорится: *бысть же егда крестишася вси людіе, и Іисусу крещшуся и молящуся, отверзеся небо— —. И той бѣ Іисусъ яко лѣтъ тридесять начинаяй* (ἀρχόμενος ὡσεὶ ἐτῶν τριάκοντα) *сый, яко мнимь, сынъ Іосифовъ*— (ст. 21—23) и т. д., приводится родословіе Іисуса Христа

(ст. 23—38) и начинается разсказъ о пребываніи Его въ пустынѣ, объ искушеніи Его діаволомъ и о выступленіи Его на Свое общественное служеніе. Содержащееся въ 1—2 стихахъ подробнѣйшее хронологическое указаніе сдѣлано Евангелистомъ, конечно, не даромъ; Евангелистъ опредѣляетъ здѣсь время важнѣйшаго событія въ исторіи спасенія Господомъ рода человѣческаго. Судя по связи рѣчи, 15-й годъ Тиверія былъ годомъ начала проповѣди Іоанна Предтечи, а вмѣстѣ съ тѣмъ—и *начала Евангелія Іисуса Христа, Сына Божія* (Марк. 1, 1). Время крещенія отъ Іоанна Самого Іисуса Христа и Его выступленія на проповѣдь Евангелистомъ не опредѣляется, но, по связи рѣчи, и эти событія не должны отстоять слишкомъ далеко отъ начала проповѣди Іоанна (ср. Лук. гл. 3, ст. 1 и 23; 3. 7 и 21; 16. 17. и Іоан. 1, 28. 29. 35 и др.). Значитъ, если опредѣлить годъ выступленія на проповѣдь Іоанна Предтечи, то тѣмъ самымъ опредѣлится приблизительно и время выступленія Іисуса Христа на общественное служеніе, «явленія» Его міру.

Божіе повелѣніе Іоанну о выступленіи на проповѣдь послѣдовало «въ пятнадцатый годъ правленія Тиверія Кесаря». Тиверій вступилъ на престолъ по смерти Октавіана Августа, послѣдовавшей 19-го августа 14-го года по Р. Х. Такимъ образомъ, если первый годъ правленія Тиверія продолжался отъ 19-го августа 14-го по 19-е августа 15-го года по Р. Х., то пятнадцатый его годъ падаетъ на время отъ 19 августа 28-го по 19-е августа 29-го года по Р. Х. Но, можетъ быть, Ев. Лука считалъ годы правленія Тиверія не съ августа по августъ, а съ января по декабрь включительно: не только въ обычномъ разсказѣ, но и у историковъ и хронологовъ (напр., въ Птоломеевомъ каноне [492], у Іосифа Флавія [493]) годы царствованія того или другого царя считаются часто не со времени дѣйствительнаго его вступленія

---

[492] Ideler, I, S. 117 ff.; cf. Lücke, Kurzgefasstes Handbuch der Chronologie. Regensburg, 1862, S. 42.

[493] E. Schürer, Geschichte des jüdischen Volkes im Zeitalter Jesu Christi. 1 Th. S. 344 Anm. 165. P. Schegg. Das Todesjahr des Königs Herodes und das Todesjahr Jesu Christi. München, 1882. S. 53—54.

на престолъ, а съ начала гражданскаго года, въ срединѣ или даже въ концѣ котораго это вступленіе совершилось. Такое счисленіе общеупотребительно и въ наше время. Итакъ Ев. Лука, можетъ быть, считалъ первымъ годомъ Тиверія весь гражданскій 14-й годъ по Р. Х.; тогда 15-мъ годомъ Тиверія будетъ, конечно, весь 28-й годъ по Р. Х., съ 1-го января по 31 декабря включительно. Наконецъ, нѣкоторые стараются отодвинуть еще болѣе назадъ 15-й годъ Тиверія. Шеггъ [494], основываясь на словахъ Тацита, Светонія, Анкирскаго памятника и др., утверждаетъ, что Тиверій еще при жизни Августа былъ его соправителемъ, collega imperii, и что царствованіе его считалось—по крайней мѣрѣ въ Сиріи—именно со времени его назначенія соправителемъ Августа, т. е. съ 13-го года по Р. Х. А въ такомъ случаѣ и 15-мъ годомъ Тиверія будетъ 27-й годъ по Р. Х.

Такимъ образомъ, если положить самымъ раннимъ предѣломъ, на который можетъ падать начало 15-го года Тиверія, январь 27-го года, а самымъ позднимъ—августъ 28-го по Р. Х., то разстояніе между первымъ пунктомъ времени и указаннымъ ранѣе началомъ седьминъ (декабрь 458-го года до Р. Х.) будетъ ровно 483 года, а между послѣднимъ пунктомъ и тѣмъ же началомъ седьминъ—484 слишкомъ (+ $7^1/_2$ мѣсяцевъ) года. 483 года и есть какъ разъ 69 седьминъ, протекшихъ «отъ исхода слова о возстановленіи и построеніи Іерусалима» до явленія въ міръ «Помазанника-Князя», Іисуса Христа. Если принять даже самый поздній срокъ начала 15-го года Тиверія (августъ 28-го года по Р. Х.); если предположить, далѣе, что выступленіе Іисуса Христа на общественное служеніе совершилось въ самомъ концѣ 15-го года Тиверія, то и тогда разстояніе между этимъ событіемъ и началомъ седьминъ только на два слишкомъ года (съ $7^1/_2$ мѣсяцами) будетъ больше шестидесяти девяти седьминъ. Эта разница не можетъ повредить дѣлу: ее скорѣе можно приписать неточности нашей хронологіи,—особенно когда дѣло идетъ объ отдаленной и темной эпохѣ персидскаго владычества,—чѣмъ неточ-

[494] Schegg l. c. S. 62 ff.

ности откровенія о седьминахъ. Но такъ какъ начало седьминъ можно полагать и позже 457-го года до Р. Х.,—со времени дѣйсвительнаго начала постройки Іерусалима,—то и эта неточность совершенно сглаживается.

Если выступленіе Іисуса Христа на общественное служеніе роду человѣческому есть конецъ первыхъ 69-ти седьминъ, то это же событіе есть и начало послѣдней седьмины, такъ какъ откровеніе не даетъ права предполагать никакого промежутка между отдѣльными періодами седьминъ. «Средина же (послѣдней) седьмины прекратитъ жертву и приношеніе» (ст. 27). Народъ еврейскій не узналъ своего Мессіи, убилъ Его, распявши на крестѣ, и за это былъ отвергнутъ Богомъ. Смерть Христова прекратила завѣтъ Бога съ Израилемъ; съ момента смерти Христовой ветхозавѣтное богослуженіе, «жертва и приношеніе», потеряло свое значеніе, «прекратилось», если не внѣшнимъ образомъ, то внутреннимъ. Слѣдовательно, сообразно съ откровеніемъ о седьминахъ, смерть Христова должна была случиться въ «срединѣ» послѣдней седьмины, т. е. приблизительно черезъ три съ половиною года послѣ Его выступленія на проповѣдь. Нѣкоторые древніе отцы и учители Церкви, основываясь на Евангеліяхъ, такъ и думали, что Христосъ училъ именно $3^1/_2$ года. Такъ думалъ Евсевій [495], а за нимъ св. Іоаннъ Златоустъ [496], Полихроній, [497], блаж. Θеодоритъ [498] и Василій Селевкійскій [499]. Но это было не единственное мнѣніе въ древности. Нѣкоторые учители Церкви считали только одинъ годъ общественной дѣятельности Спасителя, одно *лѣто Господне пріятно* (Лук. 4, 19. ср. Ис. 61, 2.). Таковы

---

[495] Ἱστορεῖται ὁ πᾶς τῆς διδασκαλίας καὶ παραδοξοποιίας ὁμοῦ τοῦ Σωτῆρος ἡμῶν χρόνος τριῶν ἥμισυ γεγονὼς ἐτῶν, ὅπερ ἐστὶν ἑβδομάδος ἥμισυ. Τοῦτό πως Ἰωάννης ὁ εὐαγγελιστὴς ἀκριβῶς ἐφιστᾶσιν αὐτοῦ τῷ Εὐαγγελίῳ παραστήσει. M. 22 gr. 625. Въ своей Церковной Исторіи Евсевій говоритъ: οὐδ' ὅλως ὁ μεταξὺ τετραέτης παρίσταται χρόνος. 1, 10. cf. Hengstenberg, S. 561.

[496] Vid. Fraidl 81.

[497] Ср. прим. 424.

[498] См. прим. 418.

[499] Τῷ δὲ ιη' ἔτει τῆς βασιλείας αὐτοῦ [Τιβερίου], πληρώσας τὴν οἰκονομίαν ὁ Σωτὴρ, σταυρωθεὶς καὶ ἀναστὰς ἐκ νεκρῶν, ἀνελήφθη μετὰ υπγ' ἔτη τοῦ οἰκοδομηθῆναι τὴν Ἱερουσαλήμ. M. 85 gr. 424.

св. Ипполитъ Римскій [500], Климентъ Алекс. [501], Тертулліанъ [502], Африканъ [503], Лактанцій [504]. Нѣкоторые же, какъ Оригенъ [505], Аполлинарій Лаодикійскій [506], считали два или около трехъ лѣтъ общественнаго служенія Христа. Наконецъ, св. Ириней Ліонскій, основываясь на апостольскомъ преданіи, утверждаетъ даже, что Христосъ пострадалъ уже въ старческомъ возрастѣ, имѣя отъ 40 до 50 лѣтъ [507]. Необходимо, слѣдовательно, признать, что

[500] В. В. Болотовъ, «День и годъ мученической кончины св. Ев. Марка», Хр. Чтеніе 1893, IV, 155 прим. 40; см. также его хронологическую замѣтку въ приложеніи II.

[501] Καὶ ὅτι ἐνιαυτὸν μόνον ἔδει αὐτὸν κηρῦξαι, καὶ τοῦτο γέγραπται οὕτως· Ἐνιαυτὸν δεκτὸν Κυρίου κηρῦξαι ἀπέστειλέν με. M. 8 gr. 885.

[502] Hujus [Tiberii] quintodecimo anno imperii passus est Christus, annos habens quasi XXX cum pateretur. M. 2 lat. 615—616; cf. Fraidl 48 Anm. 5, cf. S. 84 Anm. 2.

[503] Разсуждая о времени страданія и крестной смерти Іисуса Христа, Африканъ говоритъ: καὶ λόγος αἱρεῖ ὅτι ἑβδομήκοντα ἑβδομάδες εἰς τοῦτον συναιροῦνται τὸν χρόνον ἐν τῷ Δανιήλ. А конецъ седьминъ онъ полагаетъ на 16-й годъ Тиверія. M. 10 gr. 89, ср. прим. 372; ср. Fraidl 48 Anm. 5.

[504] Vid. Fraidl l. c.

[505] Deduc ergo [изъ сорока лѣтъ, протекшихъ по хроникѣ Флегонта отъ 15-го года Тиверія до разрушенія Іерусалима] praedicationis Domini fere annos tres, et tempus resurrectionis ipsius, quando per dies quadraginta apparens illis docebat eos de regno Dei, et invenies forsitan plus minus— —. M. 13 gr. 1657.

[506] Tricesimo enim juxta evangelistam Lucam anno aetatis suae coepit in carne Dominus Evangelium praedicare, et juxta Joannem evangelistam per tria paschata duos postea implevit annos. M. 25 lat. 548.

[507] Опровергая гностиковъ, державшихся того мнѣнія, что Христосъ проповѣдовалъ только одно «лѣто Господне пріятно» (Ис. 61, 2.), св. Ириней разъясняетъ сначала это пророчество, доказываетъ изъ Евангелія, что тамъ упоминаются три пасхи во время общественнаго служенія Христа, что если Христа называли «Учителемъ», то Онъ имѣлъ больше 30 лѣтъ: Omnes enim venit per semetipsum salvare: omnes, inquam, qui per eum renascuntur in Deum, infantes, et parvulos, et pueros, et juvenes, et seniores. Ideo per omnem venit aetatem, et infantibus infans factus, sanctificans infantes; in parvulis parvulus, sanctificans hanc ipsam habentes aetatem——; in juvenibus juvenis, exemplum juvenibus fiens, et sanctificans Domino. Sic et senior in senioribus, ut sit perfectus magister in omnibus, non solum secundum expositionem veritatis, sed et secundum aetatem, sanctificans simul et seniores, exemplum ipsis quoque fiens: deinde et usque ad mortem pervenit, ut sit primogenitus ex mortuis, ipse primatum tenens in omnibus, princeps vitae, prior omnium, et praecedens omnes. Св. Ириней указываетъ на то, что если бы Христосъ проповѣдовалъ только одинъ годъ, то былъ бы только юношею, такъ какъ при крещеніи Ему не было еще тридцати лѣтъ (Лук. 3, 23.). Quia autem triginta annorum aetas prima indolis est juvenis, et extenditur usque ad quadragesimum annum, omnis quilibet confitebitur; a quadragesimo autem et quinqua-

твердаго преданія о томъ, сколько лѣтъ продолжалась земная жизнь Іисуса Христа и, въ частности, Его общественное служеніе, въ древней Церкви не существовало. И только позже, подъ вліяніемъ, можетъ быть, и откровенія о седьминахъ, стало преобладающимъ мнѣніе, что Христосъ проповѣдовалъ $3^1/_2$ года. Значитъ, это откровеніе только отчасти можетъ находить себѣ опору въ этомъ пунктѣ въ древне-церковномъ преданіи.

Обратимся къ новѣйшимъ попыткамъ опредѣлить время крестной смерти Христовой. Въ настоящее время годомъ смерти Іисуса Христа обычно считается 30-й годъ нашей эры [508]. Основаніемъ для такого взгляда служитъ вычисленіе времени празднованія еврейской пасхи въ годы, слѣдовавшіе за 28-мъ по Р. Х. (т. е. за 15-мъ годомъ Тиверія, какъ годомъ, раньше котораго не могла быть смерть Христова). Іудеи во времена Іисуса Христа, какъ и теперь, имѣли лунный годъ, и мѣсяцы ихъ продолжались одни 30 дней, другіе 29. Не имѣя опредѣленнаго, разъ навсегда составленнаго календаря [509], евреи начало каждаго мѣсяца (или, по крайней мѣрѣ, тѣхъ изъ нихъ, на которые приходились великіе праздники [510]) опредѣляли по наблюденію надъ теченіемъ луны. Въ концѣ мѣсяца, если кому-нибудь удавалось увидѣть новую луну, онъ обязанъ былъ прійти въ синедріонъ, гдѣ особая коммиссія, סוד העיבור, выслушивала всѣхъ явившихся свидѣтелей и, если убѣждалась въ правдивости ихъ показаній, «освящала» новый мѣсяцъ, т. е. объявляла этотъ день первымъ днемъ новаго мѣсяца. Если же въ 30-й день мѣсяца «свидѣтели

---

gesimo anno declinat jam in aetatem seniorem: quam habens Dominus noster docebat, sicut Evangelium et omnes seniores testantur, qui in Asia apud Joannem discipulum Domini convenerunt, id ipsum tradidisse eis Joannem. Permansit autem cum eis usque ad Trajani tempora. Quidam autem eorum non solum Joannem, sed et alios apostolos viderunt, et haec eadem ab ipsis audierunt, et testantur de hujusmodi relatione. То же самое Ириней доказываетъ далѣе и на основаніи возраженія іудеевъ: *пятидесять лѣтъ не у имаши, и Авраама ли еси видѣлъ?* Іоан. 8, 57. Contra haereses, lib. II cap. XXII. M. 7 gr. 781—786.

[508] Schegg. Das Todesjahr.. S. 60; Schürer, Geschichte des jud. Volkes, I, S. 369.

[509] Тотъ календарь, который употребляется у евреевъ теперь, введенъ, вѣроятно, уже въ IV вѣкѣ по Р. Х. Schürer, I, 630, В. В. Болотовъ, l. c. стр. 156.

[510] Schürer, I, 626.

новой луны», צְרֵי הַחֹדֶשׁ, не являлись, то протекшій мѣсяцъ признавался полнымъ, имѣющимъ 30 дней, и новый мѣсяцъ начинался со слѣдующаго дня. Затѣмъ, нужно имѣть въ виду, что истинное, астрономическое новолуніе не можетъ быть тотчасъ же наблюдаемо: тонкій серпъ луны становится видимымъ уже спустя нѣсколько времени послѣ астрономическаго новолунія. Какъ же великъ промежутокъ времени между астрономическимъ и видимымъ новолуніемъ? Этотъ промежутокъ опредѣляютъ весьма различно: отъ двухъ—трехъ дней до 18—19 часовъ. Разница эта зависитъ отъ географической широты мѣста, съ котораго наблюдаютъ луну: чѣмъ ближе къ экватору, тѣмъ меньше разстояніе между астрономическимъ и видимымъ новолуніемъ.

На основаніи всего этого, зная время астрономическихъ новолуній, и пытаются опредѣлить годъ, въ которомъ 1-е и 15-е нисана приходилось въ пятницу и слѣдовательно и пасха праздновалась у евреевъ въ пятницу, когда былъ распятъ Христосъ (Марк. 15, 42. Лук. 23, 54. 56. Іоанн. 18, 28. 19, 14. 31. ср. Матѳ. 27, 62. 28, 1. [511]). Такимъ годомъ и былъ, повидимому, 30-й годъ по Р. Х. Астрономическое новолуніе въ этомъ году падало на среду 22 марта 8 часовъ 2 минуты вечера. Принимая промежутокъ между астрономическимъ и видимымъ новолуніемъ въ 19—20 часовъ (что вполнѣ возможно для широты Палестины [512]), увидимъ, что новую луну можно было наблюдать утромъ въ пятницу 24 марта. Если эта пятница была зачтена 1-мъ числомъ мѣсяца нисана, то и 15-е нисана было въ пятницу же 7-го апрѣля. Слѣдовательно, крестная смерть Господа совершилась 7-го апрѣля 30-го года по Р. Х. [513].

По другому мнѣнію, смерть Христова могла случиться и въ 33-мъ году нашей эры [514]. Въ этомъ году астрономическое новолуніе было въ четвергъ 19-го марта, въ 1 часъ 16 минутъ по

[511] См. D. Chwolson. «Das letzte Passamahl Christi und der Tag Seines Todes». Mémoires de l'Académie Impériale des Sciences de St.-Pétersbourg, VII serie, t. XLI, № 1. St.-Pétersbourg, 1892.

[512] См. В. В. Болотовъ, l. c. стр. 164.

[513] Vid. Schegg, S. 60—61.

[514] Riess, vid. Schegg, S. 49—50.

полудни. Принимая ту же разность (въ 19—20 часовъ) между астрономическимъ и видимымъ новолуніемъ, можно предположить, что новая луна, при благопріятныхъ обстоятельствахъ, была замѣчена уже въ 10-мъ часу утра пятницы 20 марта, и что этотъ же день былъ объявленъ 1-мъ нисана; тогда смерть Христова послѣдовала въ пятницу 3-го апрѣля 33-го года по Р. Х.

Но всѣ эти предположенія и должны остаться только предположеніями, не болѣе. Настаивать на безошибочности въ опредѣленіи года смерти Іисуса Христа рѣшительно невозможно. Никогда нельзя быть увѣреннымъ въ томъ, что пасха еврейская праздновалась въ томъ или другомъ году именно въ то число, на которое она падаетъ по современному вычисленію: опредѣленіе мѣсяцевъ по наблюденію вносило много неопредѣленности въ древне-еврейскій календарь. Признаніе извѣстнаго мѣсяца полнымъ или неполнымъ зависѣло отъ многихъ случайностей: отъ зоркости наблюдателей луны, отъ мѣста, съ котораго ее наблюдали, отъ чистоты небосклона, отъ настроенія синедріона, которому иногда почему-либо неудобно было назначать новый мѣсяцъ тогда, когда онъ приходился въ дѣйствительности. Необходимо также помнить и то, что иногда, время отъ времени, предъ нисаномъ вставлялся еще новый мѣсяцъ, «второй адаръ». Это случалось тогда, когда послѣ конца перваго адара оставалось больше 14—15 дней до весенняго равноденствія, такъ что, если бы нисанъ слѣдовалъ непосредственно за первымъ адаромъ, то пасха (14-е нисана) пришлась бы раньше равноденствія. Кромѣ того, второй адаръ вставлялся и въ томъ случаѣ, если нельзя было ожидать, что къ 15-му нисана поспѣетъ жатва, такъ какъ въ этотъ день должно было приносить первый снопъ жатвы въ возношеніе Господу (Лев. 23, 10, 11.); если, далѣе, «сильные ливни въ адарѣ испортили дороги, снесли мосты, повредили печи, такъ что путешествіе въ Іерусалимъ и печеніе здѣсь пасхальныхъ агнцевъ стало затруднительно» [515].

---

[515] В. В. Болотовъ, l. c. стр. 165 прим. 21. Обо всемъ предшествующемъ см. ibid. стр. 156—166; Schürer, I, S. 625—630.

Опредѣляя разстояніе между выступленіемъ Господа на общественное служеніе, составляющимъ конецъ шестидесяти девяти седьминъ, и годомъ Его смерти, какъ «срединой» послѣдней седьмины, добудемъ мало утѣшительнаго, если предположимъ, что «средина» равна какъ разъ «половинѣ». Если Іоаннъ Предтеча вышелъ на проповѣдь въ началѣ 27-го года по Р. Х., крещеніе отъ него Господа и затѣмъ выступленіе Его на общественное служеніе произошло въ концѣ того же года (что̀ всего вѣроятнѣе), то отъ послѣдняго пункта до 7-го апрѣля 30-го года по Р. Х. протекло всего два года слишкомъ (+3 мѣсяца), а до 3-го апрѣля 33-го года—5 лѣтъ (и 3 мѣсяца). Первый періодъ времени меньше, а второй больше «половины седьмины», т. е. 3 лѣтъ и 6 мѣсяцевъ. Если же начало проповѣди Іоанна и начало общественнаго служенія Христа отнести къ концу 28-го и началу 29-го года по Р. Х., то отсюда до 7 апрѣля 30 года будетъ немного болѣе года, а до 3 апрѣля 33 года—около 4-хъ лѣтъ. Эти разстоянія также не составляютъ ровно полу-седьмины. Но нужно имѣть въ виду, что откровеніе говоритъ только о «срединѣ» послѣдней седьмины, а это еще не значитъ непремѣнно, что смерть Христова раздѣлитъ седьмину какъ разъ пополамъ. «Средина»—выраженіе само по себѣ неточное; можно допустить что слова: «средина седьмины прекратитъ жертву и приношеніе» значатъ только, что это событіе случится не въ самомъ началѣ и не въ концѣ послѣдней седьмины, не слишкомъ близко отъ начала или отъ конца. А тогда «срединой седьмины» вполнѣ можно будетъ назвать 7-е апрѣля 30 года, если начало проповѣди Христовой положить на 27-й годъ по Р. Х.,—и 3-е апрѣля 33 года, если отнести это начало къ 29-му году: съ октября 29-го года по апрѣль 33-го будетъ даже какъ разъ «полъ-седьмины», т. е. $3^1/_2$ года. Но такъ какъ и конецъ 69-ти седьминъ съ бо̀льшимъ удобствомъ можетъ быть пріуроченъ къ 27-му году по Р. Х., и смерть Христова, по мнѣнію большинства, совершилась въ 30-мъ году, то можно остановиться именно на этихъ годахъ, какъ на вѣроятнѣйшихъ пунктахъ начала и средины послѣдней седьмины.

Остается опредѣлить конецъ первыхъ семи седьминъ и конецъ всѣхъ семидесяти седьминъ. Первыя семь седьминъ въ откровеніи обозначены какъ время, въ продолженіе котораго «возстановится и построится улица и ровъ, но въ стѣсненіи временъ». Обращаясь къ Св. Писанію за свѣдѣніями, когда именно окончилась постройка Іерусалима, начатая Ездрой, мы не найдемъ тамъ никакого прямого указанія относительно этого. Это обстоятельство никого не должно удивлять: въ прямыя цѣли Св. Писателей вовсе не входитъ указаніе исполненія пророчествъ о томъ времени, которое они описываютъ. Что то или другое пророчество исполнилось, это бываетъ видно изъ простого повѣствованія о событіяхъ, безъ указанія на это со стороны повѣствующихъ. Если иногда и имѣются такія указанія, то это далеко не всегда и не обо всѣхъ пророчествахъ. Напр., при повѣствованіи о рождествѣ Господа нашего Іисуса Христа у Евангелистовъ указаны слѣдующія пророчества: Мих. 5, 2. у Матѳ. 2, 4—6. Іоан. 7, 42.; Ис. 7, 14. у Матѳ. 1, 22. 23.; Ос. 11, 1. у Матѳ. 2, 14. 15.; Іер. 31, 15. у Матѳ. 2, 16—18.; а такія пророчества, какъ, напр., Пс. 71, 10. 11., Ис. 11, 1—3., 60, 6., нигдѣ не упомянуты. То же видимъ и въ повѣствованіи о страданіяхъ Господа: тамъ указаны Зах. 13, 7. у Матѳ. 26, 31.; Ис. 53, 12. у Марк. 15, 27. 28. Лук. 22, 37.; Пс. 21, 19. у Іоан. 19, 24.; Зах. 12, 10. у Іоан. 19, 33—37.; а исполненіе пророчествъ: Пс. 21, 7—9., Ис. 50, 6. и др. можно видѣть уже безъ прямого указанія на это Евангелистовъ. Не указано въ Св. Писаніи и исполненіе пророчества о построеніи Іерусалима въ продолженіе 49 лѣтъ. Что Іерусалимъ былъ построенъ, что постройка его сопровождалась многими трудностями и задержками,—это ясно видно изъ повѣствованія книги Нееміи (напр., 1, 3. 2, 11. 13.). Но сколько времени продолжалась эта постройка? Дѣйствительно ли отъ «исхода слова» объ этой постройкѣ, т. е. отъ ея начала или отъ перваго мѣсяца 7-го года Артаксеркса, и до окончанія постройки Нееміей прошло именно 49 лѣтъ? Вопросъ этотъ не можетъ быть рѣшенъ окончательно. Есть только попытки рѣшить этотъ вопросъ въ утвердительномъ смыслѣ. Одна изъ такихъ попытокъ приводится далѣе.

Она основывается на предположеніи, что постройка Іерусалима, его «возстановленіе», продолжалась все время, пока жилъ въ Іерусалимѣ Ездра и затѣмъ—время отъ времени, съ отлучками въ Вавилонъ—Неемія. Считаютъ такъ: Ездра одинъ трудился надъ постройкой Іерусалима 13 лѣтъ (съ 7-го по 20-й годъ царя Артаксеркса, Неем. 2, 1.). Въ 20-мъ году Артаксеркса пришелъ къ нему на помощь царедворецъ Неемія, услышавшій, что «стѣна Іерусалима», уже построенная было Ездрой, «разрушена, и ворота его сожжены огнемъ». Неемія построилъ эту стѣну, принявъ всѣ предосторожности противъ враждебныхъ сосѣдей, пытавшихся опять помѣшать этой постройкѣ (Неем. гл. 4). Стѣна была построена въ 52 дня (Неем. 6, 15.). Послѣ этого Неемія пробылъ въ Іерусалимѣ вмѣстѣ съ Ездрой 12 лѣтъ (до 32-го года Артаксеркса, Неем. 13, 6.), все время стараясь возстановить среди возвратившихся изъ плѣна евреевъ законный порядокъ и богослуженіе. Затѣмъ, черезъ болѣе или менѣе долгій промежутокъ времени (לְקֵץ יָמִים «къ концу дней», *по скончаніи дней*) Неемія снова прибылъ въ Іерусалимъ (Неем. 13, 6.). Время этого второго прибытія Нееміи стараются опредѣлить по тому обстоятельству, что въ книгѣ Нееміи въ это время упоминается уже «Іоіада, сынъ великаго священника Еліашива» (Неем. 13, 28.),—значитъ, самъ первосвященникъ Еліашивъ представляется уже умершимъ. А такъ какъ, по Александрійской хроникѣ, Еліашивъ умеръ въ 12-мъ году Дарія Ноѳа, т. е. въ 413-мъ году до Р. Х., и ничто не мѣшаетъ предположить, что Неемія возвратился въ Іерусалимъ не тотчасъ послѣ смерти Еліашива, а лѣтъ черезъ пять,—тогда до его возвращенія протечетъ ровно 49 лѣтъ съ 7-го года Артаксеркса (457—408 до Р. Х.) [516]. Можно даже допустить, что Неемія вторично выпросился у царя въ Іерусалимъ тотчасъ же послѣ смерти Еліашива, и именно, можетъ быть, узнавъ о его смерти и опасаясь, чтобы она не повлекла за собою какихъ-либо неустройствъ: одинъ изъ сыновей Іоіады былъ зятемъ Санаваллата Хоронита, врага евреевъ (Неем. 13, 28. ср. 2, 10.). Тѣмъ болѣе

[516] Vid. Rohling, S. 273—274.

это можно допустить, что Неемія по возвращеніи въ Іерусалимъ продолжалъ здѣсь то же, что онъ дѣлалъ и раньше, т. е. «построеніе и возстановленіе Іерусалима», и, слѣдовательно, періодъ семи седьминъ еще не кончился. Можетъ быть, черезъ пять лѣтъ по своемъ возвращеніи въ Іерусалимъ Неемія или умеръ, или навсегда возвратился въ Вавилонъ, и тѣмъ закончились его труды по постройкѣ и возстановленію Іерусалима, а вмѣстѣ съ тѣмъ и періодъ семи седьминъ.

Однимъ словомъ, если невозможно со всею точностію опредѣлить время событій, относящихся къ концу 69-ти и срединѣ послѣдней седьмины, то тѣмъ болѣе это невозможно по отношенію къ событіямъ, совершившимся въ первыя семь седьминъ. Попытка, приведенная нами, показываетъ только, какъ можно себѣ представлять исполненіе словъ откровенія въ дѣйствительности.

Конецъ послѣдней седьмины, или—всѣхъ семидесяти седьминъ, обозначенъ въ пророчествѣ такими событіями, въ исполненіи которыхъ именно въ концѣ періода седьминъ не можетъ быть никакихъ сомнѣній. Прежде всего, въ 24-мъ стихѣ откровенія говорится, что періодъ семидесяти седьминъ назначенъ для «окончанія преступленія, запечатанія грѣховъ, искупленія вины, приведенія правды вѣчной, запечатанія видѣнія и пророка и помазанія Святого святыхъ». Все это, конечно, исполнилось съ пришествіемъ Мессіи. Воплотившійся Сынъ Божій искупилъ родъ человѣческій отъ первороднаго грѣха (Рим. 5, 8—12. 15.), обуздалъ власть грѣховныхъ влеченій надъ людьми (1 Іоан. 3, 9. Рим. 6, 5—6. 11—14. и др.), принеся Самого Себя въ искупительную жертву Отцу (Евр. 9, 14.). Вмѣсто царства грѣха, настало царство «правды вѣчной», царство благодати (Рим. 5, 21.); на Христѣ исполнились всѣ пророчества (Лук. 18, 31.); Онъ основалъ на землѣ Свою Церковь, которая помазана Духомъ Святымъ (Еф. 4, 11—16. 30).

Въ 27-мъ стихѣ говорится: «и утвердитъ завѣтъ многимъ одна седьмина», т. е. въ продолженіе послѣдней седьмины будетъ заключенъ Богомъ новый завѣтъ вмѣсто ветхаго, бывшаго только «тѣнью грядущихъ благъ» (Евр. 10, 1.), и участниками его сдѣлаются «многіе» изъ евреевъ, хотя остальной народъ, не увѣро-

вавшій въ своего Мессію, будетъ отверженъ Богомъ. Дѣйствительно, Іисусъ Христосъ и Его апостолы, какъ во время Его земной жизни, такъ и на первыхъ порахъ послѣ нея, проповѣдовали Евангеліе только евреямъ, и «многіе» изъ нихъ увѣровали во Христа. Посылая на проповѣдь Своихъ учениковъ, Христосъ заповѣдалъ имъ: «на путь къ язычникамъ не ходите и въ городъ самарянскій не входите, а идите наипаче къ погибшимъ овцамъ дома Израилева» (Матѳ. 10, 5—6.); то же Онъ говорилъ и о Своей проповѣди (Матѳ. 15, 24.). По сошествіи Св. Духа на апостоловъ они проповѣдовали іудеямъ, пришедшимъ изъ разсѣянія, и изъ нихъ обратилось ко Христу около 3000 человѣкъ (Дѣян. 2, 5. 41); затѣмъ, послѣ чуда апостола Петра и его проповѣди въ притворѣ храма, обратилось около 5000 іудеевъ (Дѣян. 4, 4.); и далѣе въ книгѣ Дѣяній Апостольскихъ повѣствуется объ обращеніи только евреевъ (Дѣян. 5, 14. 16. 6, 7.). Только послѣ побіенія камнями св. Стефана и разсѣянія увѣровавшихъ во Христа по Іудеѣ и Самаріи (Дѣян. 7, 58. 59. 8, 1.), послѣдніе пронесли проповѣдь Евангелія не только по Іудеѣ, но и по Самаріи (Дѣян. 8, 4. 5. 25.) и даже между язычниками (Дѣян. 8, 26. 27. 38.). Вотъ это-то перенесеніе проповѣди Евангелія отъ іудеевъ къ язычникамъ и можно считать событіемъ, знаменующимъ конецъ періода семидесяти седьминъ: въ продолженіе цѣлой послѣдней седьмины утверждался новый завѣтъ со многими изъ народа еврейскаго, сначала Самимъ Іисусомъ Христомъ, а потомъ Его апостолами; по окончаніи же этой седьмины, а вмѣстѣ съ нею—и всего періода седьминъ, въ новый завѣтъ призываются не только евреи, но и всѣ народы. Когда совершилось это перенесеніе Евангелія отъ евреевъ къ язычникамъ, въ какомъ году и мѣсяцѣ, опредѣленно сказать объ этомъ нѣтъ никакой возможности. Но ничто не мѣшаетъ предположить, что это было именно чрезъ семь лѣтъ послѣ выступленія Іисуса Христа на проповѣдь и приблизительно черезъ полъ-седьмины послѣ Его смерти: на этотъ послѣдній промежутокъ времени падаетъ столько важныхъ событій (сошествіе Св. Духа на апостоловъ, ихъ проповѣдь о Христѣ, внутреннее устройство церковной общины, неоднократныя гоненія), что для всѣхъ ихъ періодъ

въ $3^1/_2$ года не представляется ни слишкомъ длиннымъ, ни слишкомъ короткимъ.

Въ 26-мъ и 27-мъ стихахъ къ концу періода седьминъ относятся и другія событія: «городъ и святилище разрушитъ народъ князя пришедшаго, и конецъ его (народа израильскаго) въ потопѣ, и до конца война, опредѣленіе опустошеній»; «и на храмъ (или: на крыло мерзостей) придетъ мерзость опустошенія (или: опустошитель), и до конца (еврейскаго народа) приговоръ Божій изольется на опустошенное». Эти событія выходятъ уже за предѣлы семидесяти седьминъ; они являются *слѣдствіемъ* событій, совершившихся въ этомъ періодѣ,—именно, слѣдствіемъ убіенія Мессіи народомъ еврейскимъ и отверженія этого народа Богомъ. Въ приведенныхъ словахъ откровенія говорится объ опустошеніи Іерусалима и храма языческими войсками. И дѣйствительно, уже вскорѣ послѣ смерти Христовой на границахъ Іудеи стали чаще и чаще появляться римскія войска. Въ 37-мъ году по Р. Х. близъ Іудеи проходили легіоны Вителлія, правителя Сиріи, — правда, безъ враждебныхъ намѣреній противъ Іудеи: Вителлій шелъ противъ арабскаго царя Ареты и думалъ только провести свои войска сквозь Іудею. Но евреи упросили его не вводить ихъ въ Іудею, чтобы не осквернить священную землю языческими изображеніями на римскихъ знаменахъ [517]. Въ царствованіе Калигулы Іудею едва не постигло большое несчастіе. Этотъ императоръ, разсерженный извѣстіемъ о разрушеніи іудеями въ Ямніи жертвенника, посвященнаго ему, приказалъ правителю Сиріи Петронію поставить въ Іерусалимскомъ храмѣ свое (императора) изображеніе. А такъ какъ предвидѣлось сопротивленіе, то Петронію приказано было итти въ Іерусалимъ съ двумя легіонами (зимою 39—40 года по Р. Х.). Петроній не торопился исполненіемъ этого приказанія. Онъ заказалъ статую императора въ Сидонѣ, а между тѣмъ призвалъ къ себѣ знатнѣйшихъ іудеевъ, чтобы убѣдить ихъ повиноваться волѣ императора. Конечно, его попытка была напрасна. Къ нему стеклось множество евреевъ, съ женщинами и дѣтьми;

[517] Schürer, I, 370. 405. 413.

ихъ плачъ и просьбы убѣдили Петронія еще болѣе затянуть это дѣло. Онъ написалъ императору, прося его объ отсрочкѣ, такъ какъ статуя еще не готова, и вскорѣ предстоитъ жатва, которой можетъ помѣшать поставленіе статуи, отвлекая народъ отъ полей. Императоръ согласился съ доводами Петронія, но все-таки повелѣвалъ ему спѣшить окончаніемъ этого дѣла. Позднею осенью снова собрались къ Петронію въ Тиверіаду іудеи, умоляя его не осквернять ихъ храма. О томъ же просилъ и Аристовулъ, братъ царя Агриппы, и другіе знатные іудеи. Тогда Петроній рѣшился просить императора объ отмѣнѣ его повелѣнія. Въ это время былъ въ Римѣ царь Агриппа, и его просьбы и письмо Петронія убѣдили Калигулу отмѣнить свое приказаніе. Но онъ рѣшился самъ выполнить свое намѣреніе и лично поставить въ Іерусалимѣ свою статую, такъ какъ онъ вскорѣ думалъ отправиться на востокъ. Только смерть помѣшала ему исполнить свое намѣреніе [518]. Такъ на этотъ разъ Іудея была спасена отъ грозившей ей «мерзости» и неизбѣжной войны. Затѣмъ, послѣ благополучнаго царствованія Агриппы I, все чаще и чаще стали повторяться въ Іудеѣ возстанія, при подавленіи которыхъ римскими прокураторами проливалось много крови. При прокураторѣ Вестидіи Куманѣ въ самомъ Іерусалимѣ во время пасхи погибло множество іудеевъ (20000 по Іосифу Флавію), требовавшихъ у прокуратора удовлетворенія за оскорбленіе святости праздника солдатами. При Антоніи Феликсѣ возстанія продолжались. Одно изъ такихъ возстаній, во главѣ съ какимъ-то египетскимъ евреемъ, было подавлено Феликсомъ у самыхъ стѣнъ Іерусалима, причемъ погибло нѣсколько тысячъ іудеевъ. Наконецъ, дѣло дошло уже до всеобщаго возстанія, кончившагося разрушеніемъ Іерусалима [519]. Поводомъ къ этому возстанію послужило то, что прокураторъ Гессій Флоръ взялъ изъ казны храма 17 талантовъ. Это повело къ бунту и оскорбленію прокуратора, за которое онъ жестоко отмстилъ: напалъ съ войскомъ на Іерусалимъ, отдалъ его на разграбленіе солдатамъ, наказалъ бичами и повѣсилъ на крестахъ

[518] Schürer, I, 421—424.

[519] Обо всемъ этомъ см. у Schürer'a, I, 475—532.

множество евреевъ, между которыми были и римскіе граждане (май 66 г. по Р. Х.). На второй день Флоръ потребовалъ, чтобы іерусалимляне съ честью встрѣтили римскія войска, вступавшія въ городъ; но и при этой встрѣчѣ взаимное озлобленіе евреевъ и римлянъ прорвалось наружу, и день закончился настоящей битвой на улицахъ Іерусалима, послѣ которой возставшіе укрѣпились на горѣ храма. Флоръ долженъ былъ отступить въ Кесарію, оставивъ часть войска въ Іерусалимѣ. Между тѣмъ о возстаніи узналъ Агриппа II и поспѣшилъ въ Іерусалимъ, чтобы попытаться убѣдить евреевъ подчиниться римлянамъ. Но попытка его не увѣнчалась успѣхомъ, и онъ принужденъ былъ удалиться. Между тѣмъ возставшіе, по предложенію Елеазара, сына первосвященника Ананіи, прекратили жертвоприношенія за римскаго императора; этимъ было открыто объявлено отпаденіе евреевъ отъ подчиненія Риму. Іудеи раздѣлились на двѣ партіи: одна стояла за войну съ римлянами, другая желала мира. Послѣдняя получила подкрѣпленія отъ Агриппы. Но скоро первая партія одержала верхъ и овладѣла всѣмъ городомъ, изгнавъ или перебивъ сторонниковъ мира и римскихъ солдатъ. Возстаніе теперь распространилось по всѣмъ городамъ іудейскимъ. Цестій Галлъ, правитель Сиріи, предпринялъ походъ противъ возставшихъ, дошелъ до самаго Іерусалима, но потомъ отступилъ и чуть не потерпѣлъ полнаго пораженія отъ евреевъ, превосходившихъ количествомъ его войско. Узнавъ объ этомъ пораженіи римлянъ, Неронъ поручилъ подавить возстаніе въ Іудеѣ Веспасіану. Послѣдній тотчасъ собралъ войско, дождался въ Птолемандѣ своего сына Тита, шедшаго съ войскомъ изъ Александріи, и напалъ на Галилею. Къ концу 67-го года Галилея была покорена, а затѣмъ, въ 68-мъ и 69-мъ годахъ, была очищена отъ возставшихъ іудеевъ и вся Палестина. Оставался только Іерусалимъ. Въ это время Веспасіанъ былъ провозглашенъ римскимъ императоромъ и отправился въ Римъ, поручивъ дальнѣйшее веденіе войны Титу, который и осадилъ Іерусалимъ передъ пасхой 70-го года по Р. Х. Между тѣмъ въ Іерусалимѣ все время продолжалась междоусобная война, сопровождавшаяся убійствами и уничтоженіемъ запасовъ, столь необходимыхъ для осa-

жденныхъ: видимо, Богъ оставилъ Свой городъ и народъ, они сами собою шли къ погибели. Пять мѣсяцевъ продолжалась осада; каждый клочекъ земли, достававшійся римлянамъ, стоилъ имъ многихъ трудовъ и большихъ потерь; осажденные только послѣ кровопролитныхъ, отчаянныхъ схватокъ уступали римлянамъ, шагъ за шагомъ, сначала предмѣстья Іерусалима, затѣмъ нижній городъ, храмъ и, наконецъ, верхній городъ. Титъ хотѣлъ пощадить храмъ, давалъ нѣсколько приказаній объ этомъ своимъ солдатамъ; но тѣ, обычно столь послушные, на этотъ разъ ослушались своего любимаго вождя и сожгли храмъ. Не видна ли и въ этомъ рука Божія, тяготѣвшая надъ еврейскимъ народомъ и ихъ священнымъ городомъ? Іерусалимъ былъ разрушенъ; отъ него не осталось и камня на камнѣ. Политическое существованіе еврейскаго народа кончилось среди опустошительной войны.

Такъ исполнились слова откровенія о седьминахъ, указывающія послѣдствія отверженія Богомъ народа еврейскаго. Во время осады Іерусалима прекратились и ежедневныя жертвоприношенія, непрерывно совершавшіяся до тѣхъ поръ. Такъ прекратилъ свое существованіе и видимый знакъ общенія Бога съ народомъ еврейскимъ, потерявшій уже и раньше свое внутреннее значеніе.

Мы представили посильное толкованіе текста откровенія Даніилу о семидесяти седьминахъ, показали, какъ можно представлять себѣ исполненіе этого откровенія въ дѣйствительности. Согласно съ древне-церковнымъ преданіемъ, согласно со смысломъ самого откровенія и его контекста, оно говоритъ о времени пришествія въ міръ Мессіи, о благахъ, принесенныхъ Имъ всему роду человѣческому, и о наказаніи еврейскаго народа за непринятіе имъ своего Мессіи. Но, какъ уже сказано, не всѣ относятъ откровеніе о седьминахъ ко времени пришествія въ міръ Іисуса Христа. Одни относятъ его ко времени второго пришествія Христова, другіе же думаютъ, что оно говоритъ о времени Антіоха Епифана и Маккавеевъ. Познакомимся ближе съ этими толкованіями.

IV. Краткій обзоръ другихъ толкованій откровенія о седьминахъ.

А. Эсхатологическое толкованіе.

Основаніемъ для этого толкованія, относящаго исполненіе даннаго откровенія къ послѣднимъ временамъ міра, служитъ главнымъ образомъ эсхатологическая рѣчь Господа (Матѳ. 24 гл., Марк. 13 гл., ср. Лук. 21 гл.), въ которой Онъ упоминаетъ и о пророчествѣ Даніила. Содержаніе этой рѣчи таково. Ученики восхищались великолѣпіемъ храма (Матѳ. 24, 1. Марк. 13, 1. ср. Лук. 21, 5.). Господь сказалъ, что все, что они видятъ, будетъ разрушено, и не останется камня на камнѣ (Матѳ. 24, 2. Марк. 13, 2. Лук. 21 6.). Ученики спросили Его: «Скажи намъ, когда это будетъ? и какой признакъ Твоего пришествія и кончины вѣка?» (Матѳ. 24, 3. ср. Марк. 13, 4. Лук. 21, 7.). Въ этомъ вопросѣ учениковъ Христовыхъ отразились ожиданія всѣхъ современныхъ имъ іудеевъ относительно царства Мессіи. Евреи ждали Мессію-царя, который покоритъ всѣ народы и сдѣлаетъ евреевъ господами вселенной. Но эти чаянія еврейскія уже существенно измѣнились у учениковъ Христовыхъ подъ вліяніемъ рѣчей Господа, Котораго они признавали истиннымъ Мессіей. Они знали изъ Его словъ, что Ему надлежало пострадать, что Іерусалимъ будетъ разрушенъ. Здѣсь, весьма вѣроятно, припомнилось имъ откровеніе Даніила о седьминахъ, гдѣ также говорится о смерти Мессіи, о разрушеніи Іерусалима и «концѣ» міра. Поэтому-то въ своемъ вопросѣ они

и сопоставляютъ три событія: вторичное славное пришествіе Мессіи, разрушеніе Іерусалима и конецъ міра [520].

Отвѣтомъ на этотъ вопросъ учениковъ и служитъ указанная рѣчь Господа. Господь сначала предостерегаетъ учениковъ отъ соблазновъ въ виду того, что должно появиться много обманщиковъ, называющихъ себя христами (Матѳ. 24, 4—5. Марк. 13, 5—6. Лук. 21, 8.). Затѣмъ Господь излагаетъ дальнѣйшія событія, имѣющія случиться предъ разрушеніемъ Іерусалима. Настанутъ кровопролитныя войны, сопровождаемыя голодомъ, моромъ и землетрясеніями (Матѳ. ст. 6, 7. Марк. 7, 8. Лук. 9—11.). «Но это еще не конецъ». Апостоловъ будутъ предавать, мучить и убивать; многіе изъ вѣрующихъ соблазнятся и отпадутъ; многихъ соблазнятъ лже-пророки, у многихъ охладѣетъ любовь (Матѳ. ст. 9—13. Марк. 9. 11—13. Лук. 12—19.). Но апостолы разнесутъ проповѣдь Евангелія по всей вселенной, во всѣхъ народахъ. «И тогда придетъ конецъ» (Матѳ. ст. 14. ср. Марк. 10.). Затѣмъ слѣдуютъ приведенныя ранѣе слова Господа, въ которыхъ Онъ ссылается на пророчество Даніила (Матѳ. ст. 15, 16, Марк. ст. 14, ср. Лук. ст. 20), а далѣе Господь повидимому говоритъ уже о признакахъ второго своего пришествія.

На эту-то рѣчь Господа и опираются главнымъ образомъ толкователи, относящіе исполненіе откровенія о седьминахъ къ послѣднимъ временамъ міра. Такъ, уже св. Иней Лионскій, а за нимъ и св. Ипполитъ Римскій видѣли въ рѣчи Господа подтвержденіе своего эсхатологическаго толкованія откровенія о седьминахъ. Такъ же толковали эту рѣчь и Иларій Пуатьесскій, Кириллъ Іерусалимскій, Аполлинарій Лаодикійскій, Амвросій, Исихій и др. [521]. Всѣ они находили, что Самъ Господь относитъ слова пророчества ко временамъ антихриста. Такъ думаютъ и новые толкователи-эсхатологисты [522].

---

[520] Ср. Fraidl 15 f.

[521] Vid. Fraidl.

[522] Kliefoth, Leyrer, Keil, отчасти Wolf, А. Д. Бѣляевъ и др.; къ этому же мнѣнію склоняется и The Holy Bible with Commentary, F. C. Cook'a, p. 365.

Но было уже указано, во-первыхъ, на то, что слова Іисуса Христа о пророчествѣ Даніила могутъ относиться не къ откровенію о седьминахъ, а къ Дан. 11, 31. и 12, 11., тѣмъ болѣе, что по буквѣ эти слова Господа болѣе напоминаютъ послѣднія мѣста, чѣмъ откровеніе о седьминахъ. Во-вторыхъ, далеко еще не опредѣлено окончательно, къ какому событію относитъ Господь слова пр. Даніила о мерзости запустѣнія: ко времени ли второго своего пришествія или къ разрушенію Іерусалима? Ссылка на пророчество Даніила приведена Господомъ именно въ томъ мѣстѣ рѣчи, гдѣ Онъ переходитъ отъ повѣствованія о признакахъ разрушенія Іерусалима къ указанію признаковъ конца міра; поэтому весьма трудно опредѣлить, къ какому изъ этихъ двухъ событій относится данное мѣсто рѣчи Господа. Такимъ образомъ, рѣчь Господа не даетъ права толковать откровеніе о седьминахъ эсхатологически. Другое дѣло, если относить его не прямо къ послѣднимъ временамъ міра, а косвенно, типически: откровеніе говоритъ между прочимъ о событіяхъ, случившихся послѣ смерти Господа, о разрушеніи Іерусалима; а событія эти, по словамъ Самого Господа, служили прообразомъ тѣхъ событій, которыя будутъ сопровождать явленіе антихриста и второе славное Христово пришествіе,—значитъ, и откровеніе о седьминахъ косвенно говоритъ объ этихъ послѣднихъ событіяхъ. Въ такомъ смыслѣ эсхатологическое толкованіе откровенія имѣетъ нѣкоторую долю истины.

Укажемъ теперь частности этого толкованія. Нѣкоторыя выраженія откровенія о седьминахъ довольно удачно примѣняются къ послѣднимъ временамъ міра, зато другія совершенно не могутъ быть объяснены въ этомъ смыслѣ.

Первыя три предложенія 24-го стиха, содержащія обѣтованіе о прекращеніи царства грѣха, понимаются толкователями эсхатологическаго направленія, какъ указаніе на совершенно безгрѣшное состояніе людей въ царствѣ небесномъ [523]. Но такое пониманіе возможно только тогда, если не придавать никакого значенія

[523] Keil, 291.

всѣмъ тѣмъ мѣстамъ Новаго Завѣта, гдѣ говорится, что первородный грѣхъ уже искупленъ Христомъ, гдѣ Его послѣдователи называются святыми, состояніе человѣка искупленнаго и состояніе не искупленнаго представляются, какъ свобода отъ грѣха и рабство грѣху,—а такія мѣста встрѣчаются чуть не на каждой страницѣ Новаго Завѣта, особенно посланій апостольскихъ (ср. напр. Рим. 6 гл.). Странно поэтому было бы утверждать, что пророчество объ искупленіи грѣховъ еще и теперь не исполнилось. «Приведеніе правды вѣчной» объясняется также въ смыслѣ эсхатологическомъ: здѣсь говорится о правдѣ «новаго неба и новой земли, 2 Петр. 3,13» [524]. Апостолъ Петръ говоритъ здѣсь о наступленіи славнаго царства Христова, царства однихъ праведниковъ, исключительнаго господства правды; но и въ царствѣ благодати обитаетъ правда, принесенная Христомъ, хотя въ немъ еще и «дѣйствуется тайна беззаконія» (2 Θесс. 2, 7.), пребываютъ какъ праведники, такъ и грѣшники. «Запечатаніе» пророчествъ понимается въ смыслѣ ихъ прекращенія, которое произойдетъ уже въ концѣ міра. Но было указано, что образъ «запечатанія» въ приложеніи къ пророчествамъ удобнѣе понимать въ смыслѣ ихъ подтвержденія, исполненія. *Кодеш кодашим* есть, по мнѣнію эсхатологистовъ, «скинія Бога съ человѣками», о которой говорится въ Апокалипсисѣ (21, 1—3.) [525]. Но и Церковь Христова есть въ нѣкоторомъ смыслѣ такая скинія, такъ какъ имѣетъ своимъ Главою Христа, и вѣрующіе пріобщаются въ ней Духа Божія. Указаніе на новозавѣтную Церковь видятъ эсхатологисты въ словахъ 25 и 26 стиховъ, гдѣ говорится о построеніи Іерусалима и о разрушеніи его народомъ князя пришедшаго: въ продолженіе 62-хъ седьминъ распространится на землѣ Церковь Христова, но предъ вторымъ пришествіемъ Христовымъ она подвергнется бѣдствіямъ и гоненію отъ «князя пришедшаго», т. е. антихриста. Эти бѣдствія и описаны въ 26 и 27 стихахъ: антихристъ заключитъ союзъ со многими отступниками отъ Христа, прекратитъ

[524] Keil 286.
[525] Ibid. 291.

«жертву и приношеніе», т. е. истинное богослуженіе. Онъ, какъ опустошитель, появится «на крылѣ мерзостей», т. е. тогда, когда распространится нечестіе. Но и самъ онъ погибнетъ какъ въ потопѣ, по непреложному опредѣленію Божію, и до его конца будетъ продолжаться война. Такимъ образомъ, толкователи-эсхатологисты довольно удачно объясняютъ въ желательномъ для нихъ смыслѣ послѣдніе стихи откровенія. Правда, трудно допустить, чтобы Даніилъ понялъ слова 27-го стиха о заключеніи завѣта не въ смыслѣ заключенія Богомъ новаго завѣта съ людьми, а въ смыслѣ союза противника Божія съ отступниками отъ вѣры; трудно, если не невозможно объяснить слово *яшхит* «разрушитъ» въ приложеніи къ Церкви во времена антихриста: глаголъ этотъ имѣетъ значеніе окончательнаго истребленія, а Церковь не уничтожится во времена антихриста. Но всѣ эти трудности ничто въ сравненіи съ тою, какую представляютъ для эсхатологическаго толкованія слова: «будетъ убитъ Мессія и не будетъ ему»: ничего подобнаго невозможно себѣ и представить во время второго славнаго пришествія Христова! Что *машіах* 26-го стиха есть *машіах нагид* 25-го, этого не могутъ не признать и толкователи этого направленія. Поэтому они стараются ослабить значеніе слова *йиккарет* «будетъ убитъ», и говорятъ, что оно указываетъ только на «устраненіе» Мессіи, на прекращеніе Его положенія въ качествѣ Мессіи. Такъ Кэйль, сказавъ о томъ, что глаголъ *карат* означаетъ различные виды насильственной смерти, тотчасъ же заключаетъ, что «изъ *йиккарет* невозможно твердо доказать, что наше мѣсто возвѣщаетъ убійство Помазанника, или умерщвленіе Мессіи». На слѣдующей страницѣ онъ выражается сильнѣе: «*йиккарет*, какъ уже выше замѣчено, не необходимо обозначаетъ насильственную смерть», а затѣмъ, по сравненію со слѣдующими словами *вэен ло*, онъ уже заключаетъ, что *йиккарет* означаетъ здѣсь «прекращеніе Его (Мессіи) положенія среди Своего народа и царства въ качествѣ Мессіи» [526]. Но выводить такое заключеніе только изъ того, что

[526] Keil 299—301.

глаголъ *карат* означаетъ различные роды насильственной смерти, невозможно: глаголъ этотъ все-таки значитъ «умерщвлять», какимъ бы то ни было образомъ, и это значеніе нисколько не ослабляется словами *вэен ло*.

Послѣднія слова 26-го и 27-го стиховъ толкователи, о которыхъ идетъ рѣчь, относятъ къ антихристу и думаютъ, что здѣсь говорится о его погибели. Объясняютъ именно, что «князь пришедшій», нападающій на городъ и святилище какъ истребитель, послѣ этого самъ становится истребляемымъ вслѣдствіе того, что на него прольется, какъ потопъ, непреложно опредѣленная Богомъ гибель [527]. Несостоятельность такого толкованія очевидна: кто бы могъ понять пророчество, въ которомъ одно и то же лицо называется сначала «истребителемъ», а потомъ «истребляемымъ», безъ всякаго указанія на то, что произведенныя имъ опустошенія будутъ гибельны и для него самого? А такого указанія въ откровеніи о седьминахъ вовсе нѣтъ.

Самыя седьмины толкователи-эсхатологисты понимаютъ символически. Въ своемъ мѣстѣ уже указано, что противъ такого пониманія говоритъ дѣленіе періода семидесяти седьминъ на части, не могущія имѣть никакого символическаго значенія.

Таковы недостатки эсхатологическаго толкованія откровенія о седьминахъ. Толкованіе это имѣетъ, какъ уже сказано, только нѣкоторую долю истины постольку, поскольку второе пришествіе Христово будетъ сопровождаться обстоятельствами, подобными обстоятельствамъ перваго пришествія Христова на землю.

Б. Толкованіе раціоналистическое.

Толкованіе это, относящее исполненіе, а иногда даже и самое составленіе откровенія о седьминахъ ко временамъ маккавейскимъ, было почти неизвѣстно въ древнее время. Оно встрѣчается только у Юлія Иларіана, жившаго въ концѣ IV вѣка; въ новое же вре-

[527] Keil 310; cf. Wolf 54.

мя оно очень распространено. Такъ какъ главною точкой опоры для этого толкованія служатъ параллельныя мѣста къ откровенію о седьминахъ въ другихъ главахъ книги пророка Даніила, то мы сначала и разсмотримъ эти мѣста.

Видѣнія Даніила, описанныя въ 7-й, 8-й и 10—12 главахъ его книги, тѣсно связаны между собой и представляютъ только частнѣйшее раскрытіе того, что содержится во 2-й главѣ,— именно, откровенія о четырехъ царствахъ. Въ 7-й главѣ царства эти представляются подъ образами четырехъ звѣрей, причемъ вносится уже больше подробностей въ описаніе ихъ, особенно— четвертаго царства. Въ 8-й главѣ говорится только о второмъ и третьемъ (по мнѣнію другихъ—о третьемъ и четвертомъ) царствахъ, и особенно подробно описываются дѣйствія безбожнаго царя, Антіоха Епифана. Наконецъ, въ 10—12 главахъ еще подробнѣе описываются эти царства, особенно послѣднее, и особенно—время Антіоха Епифана. Въ тѣхъ словахъ этихъ видѣній Даніила, которыя относятся къ Антіоху, и видятъ параллельныя мѣста къ откровенію о седьминахъ.

Въ 8-й главѣ говорится, что небольшой рогъ, вышедшій отъ одного изъ четырехъ роговъ козла, «чрезвычайно разросся къ югу, и къ востоку, и къ прекрасной странѣ (Палестинѣ). И возненесся до воинства небеснаго, и низринулъ на землю часть сего воинства и звѣздъ, и попралъ ихъ. И даже возненесся на Вождя (שַׂר) воинства сего, и отнята была у Него ежедневная жертва (הַתָּמִיד) и поругано было мѣсто святыни Его. И воинство предано вмѣстѣ съ ежедневною жертвою за нечестіе (בְּפָשַׁע), и онъ, повергая истину на землю, дѣйствовалъ и успѣвалъ» (8, 9—12). На вопросъ: «на сколько времени простирается это видѣніе о ежедневной жертвѣ и объ опустошительномъ нечестіи (חֲזוֹן הַתָּמִיד וְהַפֶּשַׁע שֹׁמֵם), когда святыня и воинство будутъ попираемы?» (ст. 13), Даніилъ получаетъ отвѣтъ: «на двѣ тысячи триста вечеровъ и утръ, и тогда святилище очистится» (ст. 14). Далѣе ангелъ Гавріилъ толкуетъ Даніилу это видѣніе: «Подъ конецъ же царства ихъ, когда отступники исполнятъ мѣру беззаконій своихъ (בְּהֹתָם הַפֹּשְׁעִים), возстанетъ царь наглый и ис-

кусный въ коварствѣ. И укрѣпится сила его, хотя и не его силою, и онъ будетъ производить удивительныя опустошенія (*яшхит*), и успѣвать и дѣйствовать, и губить сильныхъ и народъ святыхъ. И при умѣ его и коварство будетъ имѣть успѣхъ въ рукѣ его, и сердцемъ своимъ онъ превознесется, и среди мира погубитъ многихъ (*яшхит раббим*); и противъ Владыки владыкъ (*сар сарим*) возстанетъ, но будетъ сокрушенъ, — не рукою» (ст. 23—25).

Въ 11-й главѣ съ 21-го стиха начинается снова предсказаніе о царствованіи Антіоха Епифана, съ большими подробностями. «И возстанетъ на мѣсто его (предшествующаго царя) презрѣнный, и не воздадутъ ему царскихъ почестей; но онъ придетъ безъ шума, и лестію овладѣетъ царствомъ. И всепотопляющія полчища будутъ потоплены и сокрушены имъ, даже и самъ вождь завѣта (*нэгид бэрит*). Ибо послѣ того, какъ онъ вступитъ въ союзъ съ нимъ, онъ будетъ дѣйствовать обманомъ, и взойдетъ, и одержитъ верхъ съ малымъ народомъ. Онъ войдетъ въ мирныя и плодоносныя страны, и совершитъ то, чего не дѣлали отцы его и отцы отцовъ его; добычу, награбленное имущество и богатство будетъ расточать своимъ, и на крѣпости будетъ имѣть замыслы свои, но только до времени» (11, 21—24). Далѣе продолжается о походѣ Антіоха на Египетъ (ст. 25—27). «И отправится онъ въ землю свою съ великимъ богатствомъ и враждебнымъ намѣреніемъ противъ святого завѣта (*ал-бэрит кодеш*), и онъ исполнитъ его и возвратится въ свою землю» (11, 28). Затѣмъ говорится о новомъ походѣ Антіоха на Египетъ, не столь счастливомъ, какъ предшествующій (ст. 29—30). «И онъ упадетъ духомъ, и возвратится, и озлобится на святой завѣтъ и исполнитъ свое намѣреніе; и опять войдетъ въ соглашеніе съ отступниками отъ святого завѣта. И поставлена будетъ имъ часть войска, которая осквернитъ святилище могущества, и прекратитъ ежедневную жертву, и поставитъ мерзость запустѣнія (וְנָתְנוּ שִׁקּוּץ מְשֹׁמֵם). Поступающихъ нечестиво противъ завѣта онъ привлечетъ къ себѣ лестію; но люди, чтущіе своего Бога, усилятся и будутъ дѣйствовать. И разумные изъ народа вразумятъ

многихъ, хотя будутъ нѣсколько времени страдать отъ меча и огня, отъ плѣна и грабежа. И во время страданія своего будутъ имѣть нѣкоторую помощь, и многіе присоединятся къ нимъ, но притворно. Пострадаютъ нѣкоторые и изъ разумныхъ для испытанія ихъ, очищенія и для убѣленія къ послѣднему времени (עַד־עֵת קֵץ); ибо есть еще время до срока (כִּי־עוֹד לַמּוֹעֵד). И будетъ поступать царь тотъ по своему произволу, и вознесется, и возвеличится выше всякаго божества, и о Богѣ боговъ станетъ говорить хульное (נִפְלָאוֹת), и будетъ имѣть успѣхъ, доколѣ не совершится гнѣвъ (עַד־כָּלָה זַעַם): ибо что предопредѣлено, то исполнится (כִּי־נֶחֱרָצָה נֶעֱשָׂתָה). И о богахъ отцовъ своихъ онъ не помыслитъ, и ни желанія женъ, ни даже божества никакого не уважитъ; ибо возвеличитъ себя выше всѣхъ. Но богу крѣпостей на мѣстѣ его будетъ онъ воздавать честь, и этого бога, котораго не знали отцы его, онъ будетъ чествовать золотомъ, и серебромъ, и дорогими камнями, и разными драгоцѣнностями. И устроитъ твердую крѣпость съ чужимъ богомъ: которые признаютъ его, тѣмъ увеличитъ почести, и дастъ власть надъ многими, и землю раздастъ въ награду. Подъ конецъ же времени сразится съ нимъ царь южный, и царь сѣверный устремится какъ буря на него съ колесницами и всадниками и многочисленными кораблями, и нападетъ на области, наводнитъ ихъ *(вэшатаф)*, и пройдетъ черезъ нихъ. И войдетъ онъ въ прекраснѣйшую изъ земель, и многія области пострадаютъ, и спасутся отъ руки его только Эдомъ, Моавъ и большая часть сыновъ Аммоновыхъ. И простретъ руку свою на разныя страны; не спасется и земля Египетская. И завладѣетъ онъ сокровищами золота и серебра и разными драгоцѣнностями Египта; ливійцы и эѳіопляне послѣдуютъ за нимъ. Но слухи съ востока и сѣвера встревожатъ его, и выйдетъ онъ въ величайшей ярости, чтобъ истреблять и губить многихъ. И раскинетъ онъ царскіе шатры свои между моремъ и горою преславнаго святилища; но придетъ къ своему концу *(уба ад-кицо)*, и никто не поможетъ ему (וְאֵין עוֹזֵר לוֹ) (11, 30—45). Въ слѣдующей главѣ ясными чертами описывается уже наступленіе конца міра и блаженство праведниковъ (12, 1—3).

На вопросъ: «когда будетъ (עַד־מָתַי) конецъ этихъ чудныхъ происшествій?» (12, 6), мужъ въ льняной одеждѣ отвѣчалъ съ клятвою, «что къ концу времени *(лэмоед)*, (двухъ) временъ и полу-времени, и по совершенномъ низложеніи (כְּכַלּוֹת נַפֵּץ) силы народа святого,—все это совершится» (תִּכְלֶינָה, ст. 7). На вопросъ самого Даніила о концѣ всего этого, тотъ же мужъ отвѣтилъ ему: «Иди, Даніилъ, ибо сокрыты и запечатаны *(вахатумим)* слова сіи до послѣдняго времени. Многіе очистятся, убѣлятся и переплавлены будутъ (въ искушеніи); нечестивые же будутъ поступать нечестиво, и не уразумѣетъ сего никто изъ нечестивыхъ, а мудрые уразумѣютъ. Со времени прекращенія ежедневной жертвы и поставленія мерзости запустѣнія *(вэлатет шиккуц шомем)* пройдетъ тысяча двѣсти девяносто дней. Блаженъ, кто ожидаетъ и достигнетъ тысячи трехсотъ тридцати пяти дней! А ты иди къ твоему концу; и упокоишься, и возстанешь для полученія твоего жребія въ концѣ дней» (12, 8—13).

Мы нарочно привели здѣсь тѣ мѣста изъ 8 и 11 главъ, гдѣ говорится объ Антіохѣ, и отмѣтили выраженія, напоминающія выраженія откровенія о седьминахъ: наглядное сличеніе этихъ мѣстъ съ даннымъ откровеніемъ показываетъ, что здѣсь говорится о разныхъ лицахъ и событіяхъ. Между тѣмъ, по мнѣнію толкователей-раціоналистовъ, откровеніе о седьминахъ говоритъ о томъ же самомъ, о чемъ говорятъ приведенныя мѣста книги Даніила. Въ 9-й главѣ говорится объ убіеніи «помазанника» (ст. 26), о томъ же говорится въ 11, 22: «и даже вождь завѣта» будетъ погубленъ; тамъ и здѣсь разсказывается о «князѣ пришедшемъ», враждебномъ народу еврейскому (9, 26, ср. 8, 23. 11, 21), производящемъ опустошенія въ святой землѣ (9, 26. 27. ср. 8, 24. 25. 11, 22. 40. 41). «Народъ князя пришедшаго» разрушитъ городъ и святилище, будетъ прекращена «жертва и приношеніе», будетъ въ храмѣ мерзость запустѣнія (9, 26. 27),—то же говорится и въ 8, 10—12 главахъ: «святилище и воинство будутъ попираемы» (8, 13. ср. 24), оскверняемы (11, 31), у Вождя воинства небеснаго будетъ «отнята постоянная жертва и низвергнуто святое мѣсто Его» (8, 11. ср. 12. 13. 25. 11, 28),

войска поставятъ «мерзость опустошительную» (11, 31. ср. 12, 11). «И утвердитъ завѣтъ для многихъ одна седьмина» (9, 27);— параллельное этимъ словамъ мѣсто видятъ въ 11, 30. 32, гдѣ говорится объ отступникахъ изъ евреевъ, заключившихъ миръ съ нечестивымъ царемъ. Наконецъ, и послѣднія слова 26-го и 27-го стиховъ 9-й главы, гдѣ говорится о погибели самого «князя пришедшаго» (такъ толкуютъ соотвѣтствующія слова раціоналисты), имѣютъ параллельныя имъ слова въ 8-й (ст. 25) и 11-й главахъ (ст. 45); о войнѣ же говорится чуть не въ каждомъ стихѣ приведенныхъ мѣстъ книги Даніила. Даже отдѣльныя выраженія этихъ мѣстъ сходны со словами откровенія о седьминахъ. Таковы: *шомем* (9, 26. 27. ср. 8, 13), *шиккуцим мэшомем* 9, 27, ср. *гашшиккуц мэшомем* 11, 31. и *шиккуц шомем* 12, 11; *яшхит* (9, 26. ср. 8, 24. 25); *нагид* 9, 25. 26. ср. *нэгид бэрит* 11, 24; *нехэраца* (9, 26. 27. ср. 11, 36), часто встрѣчающееся неопредѣленное выраженіе *раббим* (ср. 9, 27) и др. Въ 8-й и 10—12-й главахъ говорится о владычествѣ надъ евреями Антіоха Епифана: это подтверждается изъ книгъ Маккавейскихъ, гдѣ подробно разсказывается о гоненіи Антіоха Епифана, объ осквернепіи при немъ святилища и прекращеніи жертвъ (1 Макк. 1, 37. и дал. 3, 45. ср. 2 Макк. 6, 4 и др.), о поставленіи на жертвенникѣ мерзости запустѣнія (1 Макк. 1, 54) и проч.; значитъ, и въ 9-й главѣ говорится о томъ же. Такое мнѣніе имѣетъ въ настоящее время весьма многихъ послѣдователей, особенно изъ среды протестантскихъ экзегетовъ [528].

Но если внимательнѣе разсмотрѣть отношеніе между собою видѣній пророка Даніила, изложенныхъ въ 9-й главѣ, съ одной стороны, и въ 8-й и 10—12-й съ другой, то увидимъ между ними гораздо больше различія, чѣмъ сходства. Сходство между ними заключается почти въ однихъ только выраженіяхъ, въ

---

[528] Для примѣра укажемъ: Rosenmüller, 322 sq., v. Lengerke 470 ff., Wieseler 108 f., Ewald 421 ff., Hitzig 168 ff.; J. Meinhold, Das Buch Daniel, Nördlingen 1889, S. 315 ff.; Cornill, Die 70 Jahrwochen Dan.; A. Kuenen, Hist.-kr. Einleitung, 2 Th. S. 452—458; A. Kamphausen, Das Buch Dan. u. die neuere Geschichtsforschung. 32 f., Bevan 145 sqq., и мн. др.

отдѣльныхъ словахъ, а не въ смыслѣ этихъ видѣній. А сходство выраженій совсѣмъ неудивительно, такъ какъ они принадлежатъ одному писателю; притомъ, не разъ уже замѣчено, что пророкъ Даніилъ любитъ повторять одни и тѣ же выраженія. Что же касается смысла видѣній, то, при правильномъ толкованіи откровенія о седьминахъ, различіе между этимъ откровеніемъ и видѣніями 8-й и 10—12-й главъ очевидно. Разберемъ частнѣе, какъ понимаютъ откровеніе толкователи-раціоналисты, чтобы видѣть всю несостоятельность ихъ толкованія.

Камнемъ преткновенія для этихъ толкователей служатъ шесть предложеній 24-го стиха 9-й главы. Совокупность чертъ, какими изображается здѣсь конецъ періода седьминъ, столь разительно говоритъ за мессіанскій характеръ откровенія, что считать его vaticinium ex eventu рѣшительно невозможно: если бы это откровеніе составлялъ человѣкъ, жившій послѣ или одновременно съ владычествомъ Антіоха, то онъ ни въ какомъ случаѣ не могъ бы характеризовать свою эпоху такими чертами. Нѣкоторые толкователи [529] поэтому и не пытаются отрицать мессіанскій характеръ шести предложеній 24-го стиха, но утверждаютъ, что здѣсь выражены только ожиданія, какія возлагались евреями на маккавейское время. Другіе же толкователи этого лагеря стараются и указанныя предложенія объяснить въ желательномъ для себя смыслѣ. Первымъ тремъ предложеніямъ они придаютъ смыслъ «окончанія или отнятія грѣховъ, т. е. невмѣненія ихъ, освобожденія отъ наказанія за нихъ», и относятъ эти предложенія къ окончанію вавилонскаго плѣна, «которымъ Богъ наказалъ упорство евреевъ». [530] Но такое толкованіе несостоятельно во всѣхъ отношеніяхъ. Во-первыхъ, какъ указано при объясненіи текста, невозможно всѣ три предложенія толковать въ смыслѣ «окончанія, устраненія грѣховъ». Во-вторыхъ, въ смыслѣ «вины за грѣхъ»

---

[529] Напр. v. Lengerke 435 ff.

[530] Rosenmüller 300, cf. Wieseler 17, Gesenius, въ соотвѣтствующихъ мѣстахъ словаря.

можно понимать только *авон*, тогда какъ *хаттат* и *пеша* въ такомъ смыслѣ не употребляются. Въ-третьихъ, наконецъ, ни откуда изъ Св. Писанія не видно, чтобы грѣхи Израиля были искуплены плѣномъ вавилонскимъ; напротивъ, и послѣ этого плѣна пророки говорятъ объ искупленіи грѣховъ Израиля только еще какъ о будущемъ, а не какъ уже о совершившемся (ср. Зах. 3, 9. и др.).

Подъ «вѣчной правдой» нѣкоторые ученые отрицательнаго направленія понимаютъ прежнее счастье, прежнюю невинность Израиля, «древнюю праведность» [531]. Но отъ такого толкованія отказывается большинство экзегетовъ даже одного съ ними направленія [532]. Противъ этого толкованія яснѣе всего говоритъ названіе правды вѣчною, *оламим*, названіе, которое у самого Даніила употребляется о царствѣ Мессіи (2, 44. 7, 18. 27.) и которое не можетъ имѣть здѣсь никакого другого значенія, кромѣ дѣйствительно вѣчнаго пребыванія: текстъ не даетъ права понимать вѣчность какъ-либо иначе [533]. А это значеніе говоритъ за то, что и весь 24-й стихъ невозможно относить къ какому-либо другому времени, кромѣ мессіанскаго. «Запечатаніе видѣнія и пророка» толкователи-раціоналисты понимаютъ въ смыслѣ прямого указанія на пророчество Іереміи, о которомъ упоминается во 2-мъ стихѣ 9-й главы Дан. [534]; при этомъ они сильно разногласятъ относительно того, какое именно мѣсто книги Іер. здѣсь разумѣется. Но отсутствіе члена при словахъ *хазон вэнаби* достаточно говоритъ противъ возможности такого пониманія: если бы здѣсь разумѣлось пророчество Іереміи, выше уже упомянутое, то оно названо было бы только однимъ словомъ: *гехазон* или *ганнаби*, соединеніе же этихъ словъ, притомъ безъ члена, ясно указываетъ, что здѣсь разумѣется не одно, а всѣ пророчества.

---

[531] J. D. Michaelis, Jahn, Bertholdt, Rösch,—vid. Hengstenberg 435 и Keil 286.

[532] Напр., Rosenmüller 301, Wieseler 18, v. Lengerke 438.

[533] Ср. Hengstenberg, 427—435.

[534] Bertholdt, Bleek,—vid. Keil 287; Rosenmüller 301, Wieseler 17, Ewald 434, Hitzig 156, Cornill 4—5.

Г. П. Павскій переводитъ разбираемое предложеніе такъ: «и положится печать на пророково видѣніе» [535]. Но такой переводъ невѣренъ даже грамматически: слово *вэнаби* ни въ какомъ случаѣ нельзя разбирать, какъ опредѣленіе къ *хазон*. Чтобы получить возможность переводить такимъ образомъ, нѣкоторые [536] измѣняютъ даже текстъ и читаютъ: חִזּוֹן הַנָּבִיא «видѣніе пророка». Но на такое измѣненіе текста не уполномочиваютъ ни извѣстныя въ настоящее время рукописи масоретскаго текста, изъ которыхъ ни одна не имѣетъ такого чтенія, ни древніе переводы.

Подъ «помазаніемъ святого святыхъ» разумѣютъ освященіе второго храма послѣ его построенія, при Зоровавелѣ и Іисусѣ [537], или послѣ его осквернения Антіохомъ Епифаномъ. [538] Противъ такого пониманія, прежде всего, говорятъ остальныя предложенія 24-го стиха, съ которыми разбираемое стоитъ въ тѣснѣйшей связи. Затѣмъ здѣсь говорится не о *кодеш гаккодашим* (съ членомъ), а о *кодеш кодашим;* между тѣмъ «святое святыхъ» земного храма никогда такъ не называется. Особенно ясно различіе этихъ названій у пр. Іезекіиля, гдѣ въ 41, 4. говорится о святомъ святыхъ храма, а въ 43, 12. 45, 3. «святымъ святыхъ» называется вся площадь храма и гора; въ первомъ мѣстѣ стоитъ *кодеш гаккодашим,* а во второмъ *кодеш кодашим.* А главное,—далѣе, въ 27-мъ стихѣ, говорится о разрушеніи храма и именно въ концѣ періода седьмицъ, къ которому относится и «помазаніе святого святыхъ»; значитъ, подъ послѣднимъ нельзя разумѣть земной храмъ. Наконецъ, нигдѣ не упоминается о помазаніи второго храма, даже при его построеніи, а тѣмъ болѣе—послѣ осквернения его Антіохомъ.

Подъ «помазанникомъ», объ убіеніи котораго говорится въ

---

[535] Хр. Чтеніе 1872, II, стр. 130.

[536] J. D. Michaelis vid. Wolf 40.

[537] J. D. Michaelis, Jahn, Steudel, vid. Keil 287.

[538] Rosenmüller 302, Ewald 434, Hitzig 157, v. Lengerke 441, Cornill 4, Bevan 154—155, Behrmann 63.

откровеніи о седьминахъ, разумѣютъ [539] первосвященника Онію III, убитаго Андроникомъ, намѣстникомъ Антіоха Епифана (2 Макк. 4, 34.), и ссылаются при этомъ на параллельное мѣсто Дан. 11, 22. Другіе видятъ здѣсь Селевка IV Филопатора [540], третьи—Александра Македонскаго [541]. Но все это является лишь результатомъ предвзятой мысли, что откровеніе о седьминахъ относится не ко Христу, а ко времени маккавейскому. Человѣку же безъ этой предвзятой мысли невозможно видѣть «помазанника» въ царяхъ, не имѣвшихъ почти никакого отношенія къ евреямъ, или въ Оніи III, ничѣмъ не выдѣлившемся изъ остальныхъ первосвященниковъ настолько, чтобы о немъ говорилось въ особомъ откровеніи.

«А городъ и святилище разрушитъ народъ князя пришедшаго». Ссылаясь на Дан. 8, 24., толкователи-раціоналисты [542] утверждаютъ, что въ этихъ словахъ говорится объ Антіохѣ Епифанѣ, который «будетъ губить *(ишхит)* сильныхъ и народъ святыхъ». Но откровеніе о седьминахъ прямо и рѣшительно говоритъ о «разрушеніи города и храма», чего вовсе не было при Антіохѣ. Хотя въ 8, 24. употребляется тотъ же глаголъ *шахат*, но въ приложеніи къ людямъ, а не къ городу: это имѣетъ совсѣмъ другой смыслъ.

Слова откровенія объ «укрѣпленіи завѣта» также относятъ ко времени Антіоха Епифана, когда многіе еврейскіе отступники вошли въ тѣсное общеніе съ язычниками и приняли ихъ обычаи (1 Макк. 1, 11. и дал., ср. Дан. 11, 30. 32.) [543]. Но такое толкованіе противорѣчитъ обычному у пр. Даніила употребленію слова

---

[539] Wieseler 107, Hitzig 162, Zöckler 181, Cornill 10, Behrmann 66, и многіе др.,—см. Zöckler 181, 1—2., ср. таблицу у Rohling'a, 285.

[540] Напр., Ewald 435, v. Lengerke 452; другіе указаны у Zöckler'a и Rohling'a ll. cc. Г. П. Павскій такъ же понимаетъ это мѣсто и совершенно произвольно переводитъ: «будетъ низложенъ» вмѣсто «будетъ убитъ». Хр. Чтеніе, 1872, II, 131.

[541] См. у Zöckler'a и Rohling'a ll. cc.

[542] Напр., Rosenmüller 308, v. Lengerke 455—456, Wieseler, 108, и мн. др.

[543] Ср. Ewald 436, v. Lengerke 461, Wieseler 34, Zöckler 183, Г. П. Павскій въ своемъ переводѣ и мн. др.

бэрит о «завѣтѣ» Бога съ людьми и не соотвѣтствуетъ остальному содержанію откровенія, особенно — благамъ 24-го стиха. Слова о прекращеніи жертвъ и о «мерзости» также относятся раціоналистами ко времени гоненія Антіоха. Въ словахъ *шиккуцим мэшомем*, или *шиккуц шомем* (ср. 12, 11.), видятъ прямое указаніе на Зевса, который въ финикійскихъ надписяхъ называется בַּעַל שָׁמַיִם «господинъ неба»: вмѣсто *баал* въ кн. Дан. поставлено *шиккуц*, и *шамаим* принято за *шомем* [544]. Но трудно допустить, чтобы такая простая догадка, если бы она была вѣрна, не пришла въ голову древнѣйшимъ читателямъ и переводчикамъ книги Дан.: и у LXX. и въ 1 Макк. 1, 54 еврейское выраженіе передано: βδέλυγμα ἐρημώσεως.

Трудно объяснить въ отношеніи ко времени Антіоха Епифана и послѣднія слова 26-го и 27-го стиховъ. Здѣсь говорится о «концѣ его», народа еврейскаго, «въ потопѣ», объ опустошительной войнѣ, которая будетъ продолжаться до конца. Между тѣмъ говорить о «концѣ» народа еврейскаго въ маккавейскія времена нѣтъ смысла. Поэтому говорятъ, что откровеніе разумѣетъ здѣсь не конецъ народа еврейскаго, а конецъ его гонителя, «вождя пришедшаго», который будто бы и разумѣется въ 27-мъ стихѣ подъ словомъ *шомем*, т. е. «опустошитель», по переводу толкователей-раціоналистовъ. Но такой переводъ этого слова не можетъ быть принятъ: оно значитъ не «опустошитель», а «опустошенный». И слова о постоянной войнѣ, продолжающейся до конца опустошителя, не находятъ себѣ подтвержденія въ исторіи гоненій Антіоха: городъ Іерусалимъ и святилище очищены іудеями и освящены раньше смерти Антіоха (ср. 1 Мак. 4, 36.), послѣдовавшей тогда, когда война уже прекратилась (1 Макк. 6, 16).

Наконецъ, и хронологія откровенія о седьминахъ не можетъ быть сколько-нибудь удовлетворительно объяснена, если относить

---

[544] E. Nestle, «Zeitschrift für die alttest. Wissenschaft» 1884, 4, 248; ср. Meinhold 319, Bevan 192—193, Behrmann 78, Driver, An Introduction to the Old T. 5-th. ed. 1894, p. 539.

это откровеніе ко временамъ Антіоха. Если отъ времени Антіоха Епифана (175—164 г. до Р. Х.) отсчитать назадъ 69 седьминъ, или 483 года, то придемъ къ 658—647 годамъ до Р. Х., когда не случилось никакого событія, которое бы можно было принять за «исходъ слова о возстановленіи и построеніи Іерусалима». Только нѣкоторые изъ толкователей раціоналистическаго направленія полагаютъ начало седьминъ на это время, считая такимъ началомъ возвращеніе Манассіи изъ плѣна въ 654 году [545]. Конечно, такое начало седьминъ не выдерживаетъ критики: что значило бы тогда «слово о возстановленіи и построеніи Іерусалима»?

Большинство толкователей этого направленія, считая началомъ періода седьминъ болѣе позднее событіе, напр., время пророческой дѣятельности Іереміи, 1-й годъ Кира и т. под., прибѣгаютъ къ искусственнымъ методамъ счисленія седьминъ, чтобы, измѣнивъ смыслъ откровенія, найти въ немъ оправданіе своимъ предположеніямъ. Къ такимъ искусственнымъ методамъ счисленія седьминъ прибѣгали, какъ было замѣчено, и нѣкоторые древніе толкователи; ими пользуются иногда и новые экзегеты, не принадлежащіе къ раціоналистическому лагерю. Укажемъ главнѣйшіе изъ этихъ методовъ [546].

1) Очень многіе считаютъ и первыя семь седьминъ и слѣдующія 62 седьмины отъ одного и того же пункта времени, параллельно (такъ считалъ еще Тертулліанъ [547], а изъ новыхъ экзегетовъ Harduin, Jungmann, Collins, Marsham, Rösch, v. Lengerke, Behrmann). Нѣкоторые, кромѣ того, одинъ изъ этихъ періодовъ считаютъ впередъ отъ начальнаго пункта, а другой—назадъ (Hitzig, Eichhorn). Къ этому методу прибѣгаетъ и проф. Некрасовъ. Онъ считаетъ отъ 20-го года Артаксеркса до смерти Іисуса Христа 69 седьминъ, послѣднюю седьмину, о которой говорится въ 27-мъ стихѣ, считаетъ не семидесятою, а 69-тою, т. е.

---

[545] Böhmer vid. Rohling, 285.
[546] По Zöckler'y, S. 189—190.
[547] См. прим. 431.

параллельною концу 62-седьминнаго періода; первую же седьмину онъ считаетъ назадъ отъ 20-го года Артаксеркса до 13-го года его, когда, по мнѣнію г. Некрасова, произошли событія, разсказанныя въ книгѣ Есѳирь [548].

2) Нѣкоторые при счисленіи седьминъ допускаютъ бо́льшіе или меньшіе промежутки между отдѣльными періодами, не входящіе въ счетъ седьминъ. Этотъ методъ счисленія былъ особенно употребителенъ въ древности (имъ пользовались св. Ипполитъ, псевдо-Кипріанъ, Климентъ Александрійскій, Евсевій, Полихроній [549]; изъ новыхъ L'Empereur, Newton, Koch, Beer, Uri, cf. v. Lengerke).

3) Два первыхъ періода седьминъ считаютъ въ обратномъ порядкѣ: сначала 62 седьмины, а затѣмъ уже—7 седьминъ (Тертулліанъ, [550] блаж. Ѳеодоритъ, [551] изъ новыхъ Hofmann, Delitzsch, Wieseler, Corrodi; послѣдній ставитъ періоды седьминъ въ такомъ порядкѣ: $62 + 1 + 7$ седьминъ).

4) Неодинаково считаютъ седьмины въ разныхъ періодахъ; напр. 70 седьминъ въ 24-мъ стихѣ считаютъ простыми недѣлями, состоящими изъ семи дней, а $7 + 62 + {}^{2}/_{2}$ седьмины въ остальныхъ стихахъ признаютъ годовыми седьминами, и т. п. (Wieseler, Newton, Franch, ср. Calmet, A. Kluit и др.).

Всѣ эти способы счисленія и имъ подобные, о которыхъ нѣтъ нужды и упоминать, не имѣютъ для себя никакихъ основаній въ откровеніи и потому должны быть рѣшительно отвергнуты. Пониманіе подъ седьминою семилѣтія и поставленіе періодовъ седьминъ въ томъ порядкѣ, какъ они даны въ откровеніи,—вотъ единственный способъ счисленія, при которомъ можно прійти къ болѣе или менѣе удовлетворительнымъ результатамъ.

---

[548] «Годъ крестныхъ страданій...», стр. 32—33, ср. 25—26.

[549] См. прим. 319, 422, 423, 424; cf. Fraidl.

[550] См. прим. 431.

[551] Ἀπὸ γὰρ τῆς οἰκοδομίας τῆς Ἱερουσαλὴμ, ἡ ἐγένετο ἐπὶ Νεεμίου καὶ Ἐσδρου. μέχρις Ὑρκανοῦ τοῦ τελευταίου ἐκ τῶν Ἀσαμοναίων ἀρχιερέως, ὃν ἀνεῖλεν Ἡρώδης· ὁ τῶν δύο καὶ ἑξήκοντα ἑβδομάδων ἀριθμὸς συμπληροῦται· ἀπὸ δὲ τῆς ἐκείνου σφαγῆς μέχρι τῆς τοῦ Σωτῆρος ἡμῶν ἐπιφανείας καὶ τῆς εἰς [al: παρὰ] τὸν Ἰορδάνην ἀφίξεως, αἱ λοιπαὶ ἑπτὰ ἑβδομάδες τὸ τέλος λαμβάνουσιν. M. 81 gr. 1477.

Новѣйшіе раціоналисты большею частію не прибѣгаютъ уже къ этимъ искусственнымъ методамъ счисленія седьминъ. Они значительно упрощаютъ свою задачу: они утверждаютъ, что писатель книги Дан., жившій при Антіохѣ Епифанѣ, не могъ знать точной хронологіи всего времени, какое обнимаетъ періодъ седьминъ, и что онъ довольствовался только приблизительными хронологическими указаніями или прямо ошибался. Корнилль, держась перваго изъ этихъ мнѣній, указываетъ и основанія для приблизительной хронологіи писателя кн. Дан.: отъ разрушенія Іерусалима до Оніи III онъ считалъ 12 первосвященническихъ родовъ, принимая среднюю продолжительность жизни каждаго рода въ 40 лѣтъ. Другіе даже не даютъ себѣ труда такъ или иначе объяснить хронологію седьминъ: «было бы удивительно», говоритъ Kuenen [552], «если бы израильтянинъ, жившій около 165 года до Р. Х. (т. е. предполагаемый авторъ кн. Дан.) точно зналъ, сколько лѣтъ протекло со времени Кира и пророчества Іереміи». Schürer такую неточность хронологіи считаетъ общимъ свойствомъ древне-еврейскихъ писателей [553]. Но если бы даже допустить, что книга Дан. написана во времена Антіоха, и тогда едва ли возможно было бы подозрѣвать ея автора въ томъ, что онъ не имѣлъ точныхъ хронологическихъ свѣдѣній о времени, о которомъ онъ писалъ: извѣстно, что евреи вели точныя родословныя записи, въ которыхъ не могло не быть хронологическихъ отмѣтокъ; такая родословная іудейскихъ первосвященниковъ приведена, напр., у Іосифа Флавія [554]. Если же откровеніе о седьминахъ есть не исторія, а пророчество, то о неточности хронологическихъ датъ его не можетъ быть и рѣчи.

Итакъ, говоритъ о томъ, что откровеніе о седьминахъ имѣетъ въ виду время Антіоха Епифана и Маккавеевъ, невозможно. Невозможно поэтому согласиться и съ тѣми толкователями, которые

---

[552] Kuenen, Einleitung II, 456.
[553] Ср. Bevan 148, Meinhold 321 и др.
[554] См. Behrmann 66.

относятъ исполненіе даннаго откровенія ко временамъ Антіоха Епифана и Маккавеевъ, но въ этихъ временахъ видятъ прообразъ мессіанскаго времени, и потому косвенно, какъ къ первообразу, относятъ откровеніе о седьминахъ и къ послѣднему времени [555]. Съ ними невозможно согласиться потому, что событія маккавейскаго времени вовсе не соотвѣтствуютъ смыслу откровенія.

Но какъ же объяснить значительное все-таки сходство откровеній 8-й и 10—12-й главъ книги пророка Даніила съ откровеніемъ 9-й главы? При разборѣ эсхатологическаго толкованія откровенія было замѣчено, что многія событія, сопровождавшія первое пришествіе Христово на землю, повторятся и при Его второмъ пришествіи, и что въ этомъ смыслѣ въ откровеніи о седьминахъ можно видѣть указанія на событія конца міра. Но извѣстно, что Антіохъ Епифанъ, гонитель народа Божія и противникъ истинной вѣры, есть прообразъ антихриста. Поэтому въ книгѣ Даніила пророчество о гоненіяхъ Антіоха сопровождается откровеніемъ о всеобщемъ судѣ и торжествѣ праведниковъ, ср. 12, 1—3. Поэтому же видѣнія Даніила, описанныя въ 8 и 10—12 главахъ и говорящія объ Антіохѣ Епифанѣ, имѣютъ большое сходство съ видѣніемъ 7-й главы, гдѣ о рогѣ четвертаго звѣря говорится, что у него были уста, «говорившія высокомѣрно» (7, 8. 11. 20. 25.); что онъ «велъ брань со святыми и превозмогалъ ихъ» (7, 21.); что онъ «возмечтаетъ отмѣнить у нихъ (праздничныя) времена и законъ, и они преданы будутъ въ руку его до времени и (двухъ) временъ и полу-времени» (7, 25.). Между тѣмъ здѣсь тотчасъ же говорится о судѣ «Ветхаго днями» и о явленіи «Сына Человѣческаго» (7, 13—14. 22. 26—27.), т. е. о послѣднихъ временахъ міра, и, слѣдовательно, подъ рогомъ четвертаго звѣря здѣсь слѣдуетъ разумѣть прямо антихриста. Значитъ, Антіохъ Епифанъ представлялся пророческому созерцанію Даніила, какъ прообразъ антихриста; конецъ міра и судъ Божій надъ людьми пророкъ разсматривалъ какъ бы въ одной картинѣ съ гоненіемъ Антіоха, подобно тому,

---

[555] Каковы Hofmann, Fr. Delitzsch, Füller, Ebrard, Kranichfeld, Zöckler, Г. П. Павскій и др.

какъ Господь нашъ Іисусъ Христосъ соединялъ въ Своей рѣчи разрушеніе Іерусалима и конецъ міра. Если, такимъ образомъ, откровеніе 9-й главы книги пр. Даніила, говоря о мессіанскомъ времени, указываетъ тѣмъ самымъ и событія конца міра, а откровенія 8-й и 10—12-й главъ указываютъ тѣ же событія, говоря непосредственно о царствованіи Антіоха Епифана, то между этими откровеніями возможно и даже необходимо должно быть сходство.

ЗАКЛЮЧЕНІЕ.

Всѣ трудности толкованія, представляемыя откровеніемъ о седьминахъ, могутъ быть съ достаточною убѣдительностью рѣшены только въ томъ случаѣ, если относить исполненіе этого откровенія ко времени пришествія на землю Христа Спасителя. На это время прямо указываютъ блага, обѣщанныя въ 24-мъ стихѣ; событія этого времени подтверждаютъ откровеніе; большинство толкователей какъ святоотеческаго вѣка, такъ и нашего времени понимаютъ откровеніе такимъ именно образомъ. Наконецъ, за такое же пониманіе говоритъ и всеобщее ожиданіе Мессіи въ то именно время, когда и явился на землю Іисусъ Христосъ.

Въ послѣднемъ смыслѣ особенно важны свидѣтельства Іосифа Флавія. Этотъ почти современный Христу іудей въ своихъ словахъ часто имѣетъ въ виду прямо откровеніе о седьминахъ. Разсказавъ содержаніе 8-й главы книги пророка Даніила,—видѣніе его объ овнѣ и козлѣ,—Іосифъ Флавій продолжаетъ: «и это дѣйствительно пришлось потерпѣть нашему народу при Антіохѣ Епифанѣ, какъ видѣлъ Даніилъ и за много лѣтъ раньше описалъ будущее. Такимъ же образомъ Даніилъ написалъ и о владычествѣ римлянъ, и о томъ, что (городъ) будетъ опустошенъ ими» [556]. Такъ какъ 8-ю главу Даніила Іосифъ относитъ къ Антіоху, къ нему же относитъ и 10—12-ю главы, то въ приведенныхъ словахъ его можно видѣть указаніе только на откровеніе о седьми-

[556] Καὶ δὴ ταῦτα ἡμῶν συνέβη τῷ ἔθνει παθεῖν ὑπ' Ἀντιόχου τοῦ Ἐπιφανοῦς, καθὼς εἶδεν ὁ Δανιῆλος, καὶ πολλοῖς ἔτεσιν ἔμπροσθεν ἀνέγραψε τὰ γενησόμενα. τὸν αὐτὸν δὲ τρόπον Δανιῆλος καὶ περὶ τῆς τῶν Ῥωμαίων ἡγεμονίας ἀνέγραψε, καὶ ὅτι ὑπ' αὐτῶν ἐρημωθήσεται. Antiquitat. Jud., l. X, cap. XI, 7. Vid. Fraidl 19.

нахъ, въ которомъ ясно говорится о разрушеніи Іерусалима и храма. Разсказавъ о преступныхъ дѣяніяхъ зилотовъ предъ разрушеніемъ Іерусалима римлянами, Іосифъ продолжаетъ: «ибо дѣйствительно было нѣкое древнее преданіе, что городъ будетъ взятъ и святыня сожжена по закону войны именно тогда, когда настанетъ распря и собственныя руки осквернятъ Божіе святилище» [557]. Здѣсь Іосифъ прямо говоритъ, что разрушеніе Іерусалима было слѣдствіемъ тѣхъ мерзостей, какія дѣлали сами евреи. Онъ повторяетъ то же и въ другихъ мѣстахъ [558]. Но ни въ одномъ пророчествѣ нѣтъ мѣста, болѣе соотвѣтствующаго этимъ словамъ Іосифа, чѣмъ Дан. 9, 27: «и на храмъ будетъ мерзость опустошенія». И въ разсказѣ Іосифа о прекращеніи жертвоприношеній въ Іерусалимскомъ храмѣ можно видѣть намеки на откровеніе о седьминахъ [559]. Наконецъ, отраженіе его видно и въ повѣствованіи Іосифа о смерти Анана: «я не погрѣшилъ бы, сказавъ, что смерть Анана была началомъ взятія города, и что съ того именно дня обрушилась стѣна и разстроились дѣла іудеевъ, когда они увидѣли архіерея и вождя своего собственнаго спасенія убитымъ посреди города» [560]. Послѣднія слова Іосифа видимо указываютъ на слова откровенія: «будетъ убитъ Помазанникъ»; разрушеніе Іерусалима Іосифъ представляетъ слѣдствіемъ этого убійства. Такимъ образомъ, очевидно, Іосифъ Флавій считалъ откровеніе о седьминахъ исполнившимся во время разрушенія Іерусалима. Но онъ, какъ и многіе его современники, не узналъ истиннаго «Помазанника-Князя», Господа нашего Іисуса Христа.

Слѣды мессіанскаго пониманія откровенія о седьминахъ можно видѣть и въ древнѣйшихъ христіанскихъ памятникахъ: въ По-

---

557 Ἦν γὰρ δή τις παλαιὸς λόγος ἀνδρῶν, ἔνθα τότε τὴν πόλιν ἁλώσεσθαι, καὶ καταφλεγήσεσθαι τὰ ἅγια νόμῳ πολέμου, στάσις ἐὰν κατασκήψῃ, καὶ χεῖρες οἰκεῖαι προμιάνωσι τὸ τοῦ Θεοῦ τέμενος. De bello Judaico, l. IV cap. VI, 3. Vid. Fraidl 21.

558 Ibid. lib. VI, cap. II, 1 etc. Vid. Fraidl l. c.

559 Vid. Fraidl l. c.

560 Οὐκ ἂν ἁμάρτοιμι δὲ εἰπών, ἁλώσεως ἄρξαι τῇ πόλει τὸν Ἀνάνου θάνατον, καὶ ἀπ' ἐκείνης τῆς ἡμέρας ἀνατραπῆναι τὸ τεῖχος, καὶ διαφθαρῆναι τὰ πράγματα Ἰουδαίοις, ἐν ᾗ τὸν ἀρχιερέα καὶ ἡγεμόνα τῆς ἰδίας σωτηρίας αὐτῶν ἐπὶ μέσης τῆς πόλεως εἶδον ἀπεσφάγμενον. De bello Jud. l. IV cap. V, 2. Vid. Fraidl 22.

сланіи Варнавы и въ Завѣтахъ Двѣнадцати Патріарховъ. Въ первомъ памятникѣ доказывается, что іудейскій храмъ не былъ истиннымъ храмомъ, такъ какъ онъ былъ разрушенъ, а истинный храмъ есть духовный, основанный на землѣ Христомъ. «Посмотримъ же, дѣйствительно ли онъ есть храмъ Божій. Да,—потому что въ немъ Онъ дѣйствуетъ и исправляетъ, какъ Самъ говоритъ. Ибо написано: и будетъ, по исполненіи седьмины, славно построится храмъ Божій во имя Господне. — — Какимъ образомъ? Узнайте же: принявъ отпущеніе грѣховъ и возложивъ надежду на имя Господне, мы сдѣлались новыми» [561]. Въ словахъ: «по исполненіи седьмины», можно видѣть указаніе на откровеніе о седьминахъ; то же и въ словахъ объ отпущеніи грѣховъ (ср. Дан. 9, 24). Гораздо яснѣе говорятъ объ этомъ откровеніи Завѣты Патріарховъ, апокрифическій памятникъ конца I или начала II вѣка. Тамъ мы находимъ весьма ясное толкованіе откровенія. Патріархъ Левій говоритъ своимъ дѣтямъ: «И нынѣ, дѣти, я узналъ изъ писанія Еноха, что въ концѣ вы поступите нечестиво, въ крайней злобѣ возложивъ руки на Господа.— —Но отецъ нашъ Израиль будетъ чистъ отъ нечестія архіереевъ, которые возложатъ руки свои на Спасителя міра» [562]. Разсказавъ затѣмъ о мерзостяхъ, которыя сдѣлаютъ іудеи, Левій продолжаетъ: «поэтому храмъ— —пустъ будетъ въ осквернении, и вы будете плѣнниками среди всѣхъ народовъ, и будете мерзостью между ними» [563]. И далѣе еще яснѣе указывается именно на откровеніе о седьминахъ: «И нынѣ я узналъ въ книгѣ Еноха, что вы будете блуждать семьдесятъ седьминъ, и осквернite святыню, и обезчестите жертвы, и исказите законъ, и уничижите слова проро-

---

[561] Ζητήσομεν οὖν, εἰ ἔστιν ναὸς θεοῦ. ἔστιν· ὅπου αὐτὸς λέγει ποιεῖν καὶ κατασκευάζειν. γέγραπται γάρ· Καὶ ἔσται, τῆς ἑβδομάδος συντελουμένης, οἰκοδομηθήσεται ναὸς θεοῦ ἐνδόξως ἐπὶ τῷ ὀνόματι κυρίου— —πῶς; μάθετε· λαβόντες τὴν ἄφεσιν τῶν ἁμαρτιῶν καὶ ἐλπίσαντες ἐπὶ τῷ ὀνόματι τοῦ κυρίου ἐγενόμεθα καινοί. Vid. Fraidl 27.

[562] Καὶ νῦν, τέκνα, ἔγνων ἀπὸ γραφῆς Ἐνώχ, ὅτι ἐπὶ τέλει ἀσεβήσετε, ἐπὶ Κύριον χεῖρας ἐπιβάλλοντες ἐν πάσῃ κακίᾳ— —. Καὶ γὰρ ὁ πατὴρ ἡμῶν Ἰσραὴλ καθαρὸς ἔσται ἀπὸ τῆς ἀσεβείας τῶν ἀρχιερέων, οἵτινες ἐπιβαλοῦσι τὰς χεῖρας αὐτῶν ἐπὶ τὸν Σωτῆρα τοῦ κόσμου (Cap. XIV). Vid. Fraidl 27—28.

[563] Διὰ ταῦτα ὁ ναὸς— —ἔρημος ἔσται ἐν ἀκαθαρσίᾳ, καὶ ὑμεῖς αἰχμάλωτοι ἔσεσθε εἰς πάντα τὰ ἔθνη, καὶ ἔσεσθε βδέλυγμα ἐν αὐτοῖς (cap. XV). Ibid.

ковъ,— —и назовете обманщикомъ Человѣка, обновляющаго законъ силою Вышняго, и наконецъ убьете его, какъ вы будете думать.— — И чрезъ Него святыни ваши будутъ пустынными, осквернеными до основанія» [564]. Хотя авторъ апокрифа ссылается здѣсь на книгу Еноха, но не подлежитъ сомнѣнію, что онъ говоритъ о пророчествѣ Даніила: если въ книгѣ Еноха и находятъ попытку толкованія, или, вѣрнѣе, — подражанія этому пророчеству, то послѣднее получаетъ тамъ объясненіе, очень далекое отъ смысла текста; невозможно допустить, чтобы авторъ Завѣтовъ Двѣнадцати Патріарховъ при толкованіи откровенія о седьминахъ руководствовался дѣйствительно книгою Еноха, а не текстомъ самого откровенія [565].

Такимъ образомъ, и евреи и христіане, современные разрушенію Іерусалима, видѣли въ этомъ событіи исполненіе откровенія Даніилу о седьминахъ и, слѣдовательно, относили это откровеніе къ мессіанскому времени. Отсюда слѣдуетъ, что наиболѣе правильнымъ должно признать такое толкованіе откровенія о седьминахъ, по которому оно говоритъ о явленіи въ міръ Христа, о благахъ, принесенныхъ Имъ, о Его смерти и о судьбѣ отверженнаго Богомъ, преступнаго народа еврейскаго.

---

[564] Καὶ νὺν ἔγνων ἐν βιβλίῳ Ἐνὼχ, ὅτι ἑβδομήκοντα ἑβδομάδας πλανηθήσεσθε, καὶ τὴν ἱερωσύνην βεβηλώσετε, καὶ τὰς θυσίας μιανεῖτε, καὶ τὸν νόμον ἀφανίσετε, καὶ λόγους προφητῶν ἐξουδενώσετε— —καὶ ἄνδρα ἀνακαινοποιοῦντα τὸν νόμον ἐν δυνάμει Ὑψίστου πλάνον προσαγορεύσετε, καὶ τέλος, ὡς νομίζετε, ἀποκτενεῖτε αὐτὸν— —. Καὶ δι' αὐτὸν ἔσται τὰ ἅγια ὑμῶν ἔρημα, ἕως ἐδάφους μεμιαμμένα (Cap. XVI). Ibid.

[565] Vid. Fraidl 11 ff.

Приложеніе I.

Откровеніе пророку Даніилу о семидесяти седьминахъ, какъ мы видѣли, нашло себѣ многихъ толкователей среди древнѣйшихъ отцовъ и учителей Церкви. Выше, въ подстрочныхъ примѣчаніяхъ, приведены буквальныя выдержки изъ ихъ толкованій. Здѣсь дается русскій переводъ этихъ выдержекъ, причемъ имѣется въ виду представить свято-отеческія толкованія, по возможности, въ цѣльной картинѣ, для чего по мѣстамъ вводятся и посредствующія мысли, ранѣе опущенныя. Цифры надъ строкою указываютъ примѣчанія, въ которыхъ приведенъ подлинный текстъ словъ, стоящихъ вслѣдъ за этими цифрами до знака*.

Св. Ириней Ліонскій «Противъ ересей» кн. 5, гл. 25, 4. [M. 7 gr. 1191, ср. «Сочиненія св. Иринея еп. Ліонскаго», изд. въ русскомъ пер. свящ. П. Преображенскимъ, Москва 1871, стр. 650].

Говоря объ антихристѣ, св. Иринеи ссылается между прочимъ и на откровеніе Даніилу о седьминахъ: [421] «Затѣмъ (ангелъ Гавріилъ) обозначаетъ и время владычества его (антихриста), въ каковое время будутъ гонимы святые, приносящіе Богу чистую жертву: *и въ половинѣ седьмины*, говоритъ онъ, *возьметъ жертва и возліяніе, и на храмъ* [иные кодексы: *въ храмъ*] *мерзость запустѣнія (будетъ), и даже до скончанія времени скончаніе дастся на запустѣніе;* половина же седьмины есть три года и шесть мѣсяцевъ».

Климентъ Александрійскій «Строматы» кн. I гл. 21 [M. 8 gr. 853 sqq.]

Давая сравнительный очеркъ еврейской и всемірной исторіи и дойдя до освобожденія евреевъ изъ вавилонскаго плѣна, Климентъ указываетъ на исполненіе Даніилова пророчества, приводитъ текстъ откровенія о седьминахъ и продолжаетъ: [185] «Что въ продолженіе семи седьминъ строился храмъ, это очевидно, такъ какъ (объ этомъ) написано и въ (книгѣ) Ездры. И такимъ образомъ царь Христосъ сталъ вождемъ іудеевъ въ Іерусалимѣ, когда исполнилось 7 седь-

минъ. И въ теченіе 62 седьминъ оставалась въ покоѣ вся Іудея, и не было въ ней войнъ. [119] И Господь нашъ Христосъ, *Святый святыхъ*, пришедши и *исполнившій видѣніе и пророка, былъ помазанъ* по плоти Духомъ Своего Отца. [422] Въ этихъ 62 седьминахъ, какъ сказалъ пророкъ, и въ одной седьминѣ—Господь; [328] половину седьмины владѣлъ царствомъ Неронъ и въ святомъ городѣ Іерусалимѣ поставилъ мерзость*, а въ (другую) половину той же седьмины былъ убитъ и онъ, и Гальба, и Отонъ, и Вителлій, и воцарился Веспасіанъ, взялъ Іерусалимъ и опустошилъ святилище». Далѣе приводится счисленіе лѣтъ отъ плѣненія Іоакима до разрушенія Іерусалима, какъ конечнаго пункта седьминъ.

Тертулліанъ «Книга противъ іудеевъ» главы 8 и 13 [M. 2 lat. 612 sqq., 633—634, ср. «Творенія Тертулліана» въ переводѣ Е. Карнеева, С.-Петербургъ 1850. Часть 3, стр. 188—193].

[165] «Мы должны начать счисленіе отъ перваго года Дарія, когда Даніилъ созерцаетъ это видѣніе» *; отсюда до рождества Христова Тертулліанъ считаетъ $62^1/_2$ седьмины, т. е. $437^1/_2$ лѣтъ. Остальныя $7^1/_2$ седьминъ, или $52^1/_2$ года, онъ считаетъ отъ рождества Христова до разрушенія Іерусалима. Съ пришествіемъ Христа «объявлена вѣчная правда, и помазанъ Святый святыхъ, т. е. Христосъ, и запечатано видѣніе и пророчество, и отпущены грѣхи, которые оставляются всѣмъ вѣрующимъ во Христа по вѣрѣ во Имя Его. Но что значатъ слова: *запечатается видѣніе и пророчество?* Всѣ пророки предсказывали о Немъ, что Онъ имѣетъ прійти и пострадать, [120] и такъ какъ чрезъ пришествіе Его пророчества исполнились, то (Даніилъ) и сказалъ, что запечатается видѣніе и пророчество. Онъ самъ есть печать всѣхъ пророковъ, какъ исполняющій все, заранѣе предсказанное о Немъ пророками; послѣ пришествія Христа и Его страданія нѣтъ болѣе ни видѣнія, ни пророка, которые бы возвѣщали о Христѣ грядущемъ*.» Когда время седьминъ исполнилось и Іерусалимъ былъ разрушенъ, то «тамъ прекратились приношенія и жертвы, которыя съ тѣхъ поръ уже не могли быть тамъ приносимы, [217] потому что тамъ прекратилось и помазаніе послѣ страданія Христова». Возвращаясь въ 13-й главѣ къ тому же предмету, Т. доказываетъ іудеямъ, что Мессія уже пришелъ: «Если Онъ еще не пришелъ, по словамъ іудеевъ, то откуда Онъ получитъ помазаніе, когда придетъ?— —Если же у нихъ нѣтъ помазанія, какъ предсказалъ Даніилъ, говоря: *потребится помазаніе*, то тамъ уже нѣтъ помазанія, такъ какъ нѣтъ и храма, гдѣ

былъ рогъ, изъ котораго помазывались цари*; итакъ если нѣтъ помазанія, то откуда получитъ помазаніе вождь, который родится въ Виѳлеемѣ? — —Мы читаемъ у Даніила, что городъ будетъ разрушенъ послѣ Его (Христова) пришествія, и видимъ, что такъ и случилось. Писаніе говоритъ: *такъ и городъ и святилище потребятся вмѣстѣ съ вождемъ*,—безъ сомнѣнія, съ Тѣмъ, который произойдетъ изъ Виѳлеема и изъ колѣна Іудина. Отсюда ясно, что городъ долженъ былъ подвергнуться разрушенію въ то именно время, когда имѣлъ пострадать въ немъ его Вождь».

Св. Ипполитъ Римскій «О видѣніи пророка Даніила» слово 4-е [M. 10 gr. 652 sqq.; cf. E. Bratke. Das neu entdeckte vierte Buch des Daniel-Kommentars von Hippolytus. Bonn 1891].

«Назвавши 70 седьминъ, онъ (Гавріилъ) раздѣлилъ ихъ на двѣ части, чтобы было понятнѣе то, что онъ говоритъ пророку. А говоритъ онъ такъ: [166] *до Помазанника вождя седьминъ семь*, т. е 49 лѣтъ. Даніилъ созерцаетъ это въ Вавилонѣ на 21-мъ году (плѣна); если къ 21 году приложить 49 лѣтъ, получится 70 лѣтъ, о которыхъ говорилъ блаженный Іеремія.— — [178] О какомъ же Помазанникѣ говоритъ онъ (ангелъ), если не объ Іисусѣ сынѣ Іоседека, который возвратился тогда вмѣстѣ съ народомъ и въ 70-мъ году, когда святилище было построено, принесъ жертву по закону? Ибо всѣ цари и священники назывались помазанниками, такъ какъ они помазывались святымъ елеемъ, который нѣкогда приготовилъ Моисей. Они носили на себѣ собственное имя Господа, предзнаменуя Его и нося на себѣ Его образъ*. — — Послѣ же возвращенія народа изъ Вавилона— — будетъ еще 434 года [т. е. 62 седьмины] до пришествія Христа, дабы явился въ мірѣ священникъ священниковъ, дабы явно былъ показанъ вземлющій грѣхи міра, какъ говоритъ о немъ Іоаннъ: Се агнецъ Божій, вземляй грѣхи міра. Подобнымъ образомъ говоритъ и Гавріилъ: *и чтобы изгладить неправды и очистить грѣхи*. А кто изгладилъ наши неправды, это показываетъ тебѣ Павелъ [Еф. 2, 14. 15. Кол. 2, 14.]; и кто тѣ, чьи неправды очищаются, если не вѣрующіе во имя Его и умилостивляющіе лице Его добрыми дѣлами?— —Святый же святыхъ никто иной, какъ только Сынъ Человѣческій, который, пришедши и являя себя помазаннымъ Духомъ и посланнымъ въ міръ, говоритъ: Духъ Господень на мнѣ— — [Лук. 4, 18—19]. И всѣ, кто повѣрили небесному Іерею, были очищены Имъ, и грѣхи ихъ были заглажены; а кто не повѣрили Ему, презирая Его, какъ простого

человѣка, грѣхи тѣхъ были запечатаны. Поэтому ангелъ, предвидя, что не всѣ повѣрятъ Ему, сказалъ: *чтобы окончить грѣхи и запечатать грѣхи.* [85] Ибо кто до конца не увѣровалъ въ Него, грѣхи тѣхъ не окончены, но запечатаны, соблюдаемые на судъ; а кто имѣютъ увѣровать въ Него, какъ могущаго отпускать грѣхи, у тѣхъ (грѣхи) сглажены*. Послѣ этого ангелъ говоритъ: *и чтобы запечатать видѣніе и пророка*,—ибо когда явилось Само Исполненіе закона и пророковъ (потому что законъ и пророки до Іоанна), то надлежало, чтобы сказанное ими запечаталось и исполнилось, чтобы съ пришествіемъ Христа все открытое освѣтилось, все связанное древле теперь было разрѣшено Имъ. — — Онъ говоритъ: *возвратится и построится улица и стѣна*,—такъ и случилось: возвратившись, народъ построилъ городъ, и храмъ, и стѣну кругомъ (города). Затѣмъ онъ говоритъ: *послѣ 62 седьминъ истощатся времена, и завѣщаетъ завѣтъ многимъ одна седьмина, и въ срединѣ седьмины отнимется жертва и возліяніе, и на святилище (будетъ) мерзостъ запустѣній.* [319] Ибо когда исполнилось 62 седьмины, и пришелъ Христосъ, и Евангеліе проповѣдано на всякомъ мѣстѣ, по истощеніи временъ останется одна послѣдняя седьмина, въ которой придутъ Илія и Енохъ, и въ срединѣ ея явится мерзость запустѣнія, (т. е.) антихристъ, возвѣщающій міру опустошеніе*. При его явленіи отнимется жертва и возліяніе, приносимыя нынѣ Богу народами на всякомъ мѣстѣ. — — — Даніилу сказано: *и завѣщаетъ завѣтъ многимъ одна седьмина, и будетъ въ срединѣ седьмины, отнимется у Меня жертва и возліяніе*, чтобы одна седьмина оказалась раздѣленною надвое, такъ какъ два свидѣтеля (Илія и Енохъ) проповѣдуютъ $3^1/_2$ года, а въ остальное время седьмины антихристъ воюетъ противъ святыхъ и опустошаетъ міръ.— —Даніилъ говоритъ о двухъ мерзостяхъ: одна—мерзость истребленія (ἀφανισμοῦ) другая—мерзость опустошенія (ἐρημώσεως). Что это за мерзость истребленія, какъ не та, которую поставилъ тамъ на время Антіохъ, и что за мерзость опустошенія, какъ не эта всецѣлая мерзость—присутствіе антихриста?»

Юлій Африканъ, отрывки изъ 5-й книги «Хронографіи» приведены у Евсевія, «Евангельское доказательство» кн. VIII, 2 [M. 10 gr. 80 sqq; ср. переводъ блаж. Іеронима M. 25 lat. 542—543].

«Что здѣсь (въ откровеніи о седьминахъ) говорится о пришествіи Христа, имѣющаго явиться послѣ 70 седьминъ,—это ясно. Ибо при Спасителѣ или послѣ Него ветшаютъ прегрѣшенія и

кончаются грѣхи; а чрезъ отпущеніе беззаконій вмѣстѣ съ неправдами, они заглаждаются искупленіемъ, возвѣщается правда вѣчная вмѣсто правды по закону, видѣнія и пророчества—до Іоанна, помазуется Святый святыхъ. Ранѣе пришествія Христова всего этого не было, а только ожидалось. [365] Начинать же счисленіе 70 седьминъ, т. е. 490 лѣтъ, ангелъ предлагаетъ *отъ исхода слова, чтобы отвѣчать и чтобы построить Іерусалимъ*, а это случилось въ 20-й годъ Артаксеркса, царя персидскаго. [452] Ибо Неемія, виночерпій его, попросивъ, получилъ отвѣтъ, чтобы былъ построенъ Іерусалимъ. И вышло слово, повелѣвавшее это. А до того времени городъ оставался пустымъ; потому что когда Киръ, послѣ семидесятилѣтняго плѣна, отпустилъ на волю каждаго изъ желающихъ, то пришедшіе вмѣстѣ съ Іисусомъ, великимъ іереемъ, и Зоровавелемъ, а потомъ—вмѣстѣ съ Ездрой, сначала встрѣчали препятствія въ построеніи храма и въ возведеніи стѣны вокругъ города, такъ какъ это не было приказано.— — — [372] А отъ Нееміи, который былъ отпущенъ Артаксерксомъ строить Іерусалимъ въ 115-мъ году владычества персовъ, въ 20-мъ году царствованія самого Артаксеркса и въ 4-мъ году 83-й олимпіады, до того времени, когда былъ 2-й годъ 202-й олимпіады и 16-й годъ владычества кесаря Тиверія, составляется 475 лѣтъ, что равняется 490-ти еврейскимъ годамъ, такъ какъ они считаютъ годы по лунному теченію».

Оригенъ, отрывки изъ Комментарія на Евангеліе отъ Матѳея въ лат. переводѣ [M. 13 gr. 1656 sq].

При объясненіи Матѳ. 24, 15 Оригенъ приводитъ 27-й стихъ откровенія и утверждаетъ, что здѣсь указывается «на 70 лѣтъ, которые будутъ послѣ пришествія нашего Спасителя. [415] Эта седьмина, называемая такъ по той причинѣ, что состоитъ изъ семи десятилѣтій, *укрѣпляетъ завѣтъ многимъ*, такъ какъ тогда и апостолы Христовы, пребывая послѣ Его вознесенія въ молитвѣ и словѣ, просвѣщались отъ Бога и отъ Св. Духа во всякомъ знаніи слысла божественныхъ Писаній. [332] Въ половинѣ же седьмины, т. е. въ $3^1/_2$ десятилѣтія, уничтожено жертвоприношеніе на жертвенникѣ, т. е. въ теченіе 35 лѣтъ исполнилось то, что было написано: *въ половинѣ седьмины возъмется жертва и возліяніе*. И тогда надъ храмомъ, который былъ въ Іерусалимѣ, сдѣлана мерзость запустѣнія храма и города,—въ то именно время, когда увидѣли Іерусалимъ окруженнымъ войсками, чтобы узнать, по пророчеству о немъ Спасителя, что приблизилось запустѣніе его. И эта мерзость запустѣнія, сдѣланная надъ храмомъ войсками, окружающи-

ми Іерусалимъ, останется, по словамъ пророка, *до времени конца**, такъ что конецъ міра произойдетъ надъ развалинами Іерусалима и храма, находящагося въ немъ.——Если же нужно сказать что-нибудь и о временахъ, то сошлемся на свидѣтельство Хроникъ нѣкоего Флегонта,— —что разрушеніе Іерусалима и храма, бывшаго въ немъ, произошло спустя около 40 лѣтъ послѣ 15-го года Тиверія кесаря. [505] Вычти отсюда почти 3 года проповѣди Господа и время по Его воскресеніи, когда Онъ, въ продолженіе 40 дней являясь апостоламъ, училъ ихъ о Царствіи Божіемъ, и найдешь, можетъ быть, (только немногимъ) болѣе или менѣе*: ибо около средины седьмины, если считать по десятилѣтіямъ, совершилось сказанное: *возьметься жертва моя и возліяніе*». Приводя далѣе текстъ всего откровенія о седьминахъ, Оригенъ говоритъ: [359] «Я думаю, что 70 седьминъ, опредѣленныя для народа и для святого города, чтобы завершился грѣхъ, суть 4900 лѣтъ отъ Адама до 70-ти лѣтъ, которые прошли послѣ домостроительства Христова. [80] Ибо завершенъ грѣхъ народа, за что онъ и оставленъ Богомъ. Ихъ грѣхъ запечатанъ, а неправда вѣрующихъ заглажена, и послѣ заглажденія ея приведена во Христѣ жизнь вѣчная*. А такъ какъ законъ и пророки до Іоанна, который указываетъ на Христа, то поэтому, я думаю, и сказано, что *запечается видѣніе и пророчество;* послѣ Іоанна совсѣмъ не бываетъ видѣній у пророковъ,—значитъ, запечатано видѣніе и пророчество. Когда же запечатано видѣніе и пророчество,—помазанъ единородный Святый Святыхъ Христосъ. Этого помазаннаго Христа узнали пророки и Даніилъ, и уразумѣли (Его) нѣкоторымъ образомъ *отъ исхода слова*, когда *словомъ Господнимъ небеса утвердились* (Пс. 32, 6)». Послѣ 7 и 62 седьминъ «возвратился Христосъ, и построилъ улицу, въ которой Премудрость *дерзновеніе водитъ*, и стѣну, на вершинѣ которой она *проповѣдуется* (Прит. 1, 20). [223] Но истощились времена народа, почему ——отнято у народа помазаніе, которое было въ храмѣ, чтобы не было уже у нихъ суда. [253] А городъ и святое разрушены вмѣстѣ съ пришедшимъ впослѣдствіи вождемъ этого народа, Иродомъ или Агриппою, ибо на него указываетъ іудейская исторія. Но смотри не подумай, что сказанное: *разорится съ вождемъ грядущимъ* относится ко Христу; ибо гдѣ Даніилъ хотѣлъ, чтобы разумѣли самого Христа, тамъ онъ пользовался обоими именами, говоря: *до Христа вождя**. А когда онъ не употребляетъ имени Христа, тогда вводитъ вождя, имѣющаго погибнуть, такъ какъ уже не было вождя послѣ Христа и *вождя отъ чресль его*, ибо пришли *отло-*

женная ему (Быт. 49, 10). Послѣ этого народъ разоренъ въ потопѣ до конца войны, опредѣленной для нихъ. Но когда это случилось съ ними, укрѣпилъ Господь завѣтъ многимъ въ продолженіе одной седьмины, а въ срединѣ этой седьмины онъ прекратилъ куреніе и жертвы; и храмъ, который, думается, названъ здѣсь по своимъ зубцамъ (quod, arbitror, a pinna nominavit), погибнетъ до конца въ поспѣшности, когда и оставленъ имъ, согрѣшающимъ, домъ ихъ (Мато. 23, 38)».

Въ сочиненіи «Противъ Цельса» кн. VI, 46 Оригенъ даетъ эсхатологическое объясненіе послѣдней седьмины: [333] «Что сказано у Павла въ томъ выраженіи, которое я привелъ, гласящемъ: *такъ что онъ въ храмѣ Божіемъ сядетъ, выдавая себя за бога* (2 Θесс. 2, 4.),— то же сказано и у Даніила такимъ образомъ: *и на святилище (будетъ) мерзость запустѣній, и до скончанія времени скончаніе дастся на опустѣніе*».

Евсевій Кесарійскій, «Евангельское доказательство» кн. VIII, 2; «Избранныя мѣста изъ пророковъ,» кн. III, 45 и 46 [M. 22 gr. 596 sqq., 1176 sqq.]

[366] «Что время 70 седьминъ, переведенное на годы, составляетъ 490 лѣтъ,—это ясно всякому*. Столько именно времени *опредѣлено на народъ твой*, чтобы указать срокъ полнаго скончанія народа іудейскаго. [69] При этомъ онъ (ангелъ) уже не называетъ его народомъ Божіимъ, но приписываетъ его самому Даніилу: *народъ твой*. Какъ нѣкогда народъ, предавшійся нечестію и идолопоклонству въ пустынѣ, Богъ уже не называетъ Своимъ народомъ, а Моисеевымъ, говоря: иди, сойди, такъ какъ народъ твой сдѣлалъ беззаконіе, точно такъ же и здѣсь Онъ указываетъ причину, по которой для нихъ положенъ срокъ на указанное время: причина этого въ томъ, что они уже недостойны именоваться народомъ Божіимъ. Затѣмъ онъ прибавляетъ: *и на святой городъ*, причемъ мы опять слышимъ обычное: *твой*, такъ что эти слова: *на народъ твой и на городъ святой твой*, значатъ то же, что: (на городъ,) считаемый тобою святымъ. Еврейскій (текстъ) и остальные переводчики согласно ставятъ слово *твой* не только при словѣ *народъ*, но и *городъ;* Акила говоритъ: *на народъ твой и на городъ освященный твой;* Симмахъ: *о народѣ твоемъ и о городѣ святомъ твоемъ*. Поэтому и въ точныхъ спискахъ LXX-ти имѣется слово *твой* съ прибавкой астериска. Даніилъ, молясь, въ словахъ своей молитвы часто называлъ народъ Божіимъ народомъ, а мѣсто города—святымъ мѣстомъ Божіимъ;— —но Гавріилъ уже не называетъ ихъ

такъ, подобно ему; напротивъ, онъ говоритъ: *на народъ твой и на городъ святой твой*, показывая, что и городъ, и народъ, и святилище какъ бы недостойны уже называться Божіими*. — — Вмѣсто: *чтобы свершился грѣхъ и чтобы запечатать грѣхъ*, Акила перевелъ: *чтобы свершить преступленіе и закончить грѣхъ*. [81] Мнѣ кажется, эти слова совпадаютъ со словами, сказанными Спасителемъ нашимъ къ сущимъ отъ обрѣзанія: *исполните мѣру отцовъ вашихъ*. Ибо замысломъ противъ Него, на который дерзнулъ іудейскій народъ, завершился ихъ грѣхъ и былъ положенъ конецъ ихъ преступленію противъ Бога, по переводу Акилы. — —Пока грѣхи ихъ не исполнились, снисхожденіе и долготерпѣніе Божіе переносило ихъ, постоянно призывая ихъ черезъ пророковъ къ обращенію. Когда же они, по слову Спасителя, исполнили мѣру отцовъ своихъ, то все это, какъ бы собранное вмѣстѣ, уготовало имъ крайнюю погибель*. — — Но такъ какъ Онъ пришелъ не только на паденіе, но и на возстаніе многихъ во Израилѣ (Лук. 2, 34.), то Даніилъ справедливо къ сказанному тотчасъ прибавляетъ: *и чтобы заладить грѣхи и очистить неправды*— —[ср. Іоан. 1, 29. 1 Іоан. 2, 2. 1 Кор. 1, 30.]; онъ справедливо указываетъ, что пришествіе Христово будетъ вмѣстѣ и завершеніемъ, скончаніемъ грѣха нечествовавшихъ противъ Него, и заглажденіемъ, очищеніемъ грѣховъ и искупленіемъ неправдъ увѣровавшихъ въ Него. — —Тотчасъ послѣ этого сказано: *чтобы привести правду вѣчную*. [107] Вѣчная правда есть само Слово Божіе, Которое, по апостолу, (1 Кор. 1, 30.) было для насъ премудростью отъ Бога, правдою, освященіемъ и искупленіемъ. Кромѣ того, вмѣстѣ со Своимъ пришествіемъ Онъ всѣмъ даровалъ оправданіе [Рим. 3, 29. 30. Дѣян. 10, 34. 35. Рим. 1, 16. 17. Пс. 71, 17.]. *— — Вмѣсто: *и чтобы запечатать видѣніе и пророка*, правильнѣе перевелъ, мнѣ кажется, Акила: и чтобы совершить даръ видѣнія и пророка. Ибо Спаситель и Господь нашъ явился не для того, чтобы заключить и какъ бы запечатать пророческія видѣнія, такъ какъ Онъ даже тѣ пророчества, которыя издревле были неясны и запечатаны, открылъ и исполнилъ, какъ бы снявъ лежавшія на нихъ печати [ср. Ап. 5, 5. Ис. 29, 11.];—[121] итакъ Христосъ Божій пришелъ не заключить видѣніе и пророка, а скорѣе — открыть и привести къ свѣту,— —что согласно и со словами самого Спасителя: *Я не пришелъ нарушить законъ или пророковъ, но исполнить* [Матѳ. 5, 17.]. Ибо конецъ закона—Христосъ, и всѣ пророчества о Немъ оставались не исполнившимися и не оконченными, пока Онъ, явившись, не положилъ конецъ всему предвозвѣщенному о Немъ.

Слова: *чтобы запечатать видѣніе и пророка*, по переводу LXX, могутъ имѣть и такой смыслъ: такъ какъ законъ и пророки простирались только до Іоанна, а послѣ него прекратились среди іудейскаго народа боговдохновленные люди,— —то и выходитъ, что изъ этого народа никогда уже не дѣйствуетъ пророкъ*, и не вѣщаетъ среди него видящій видѣніе, такъ какъ всѣхъ таковыхъ нѣтъ съ указаннаго времени и до насъ. Къ этому ангелъ прибавляетъ: *и чтобы помазать святое святыхъ*. Отсюда ясно, что до временъ Спасителя первосвященники у евреевъ помазывались во святые святыхъ по обряду посвященія, предписанному закономъ Моисеевымъ, съ того же времени прекратились и они, сообразно съ пророчествомъ.— —Если же Акила перевелъ: *чтобы помазать освященнаго освященныхъ*, то кто-либо можетъ подумать, что здѣсь разумѣется древній первосвященникъ іудейскій.— —[132] Но я, не найдя нигдѣ въ Св. Писаніи, чтобы первосвященникъ назывался святымъ святыхъ, думаю, что въ этихъ словахъ разумѣется только само единородное Слово Божіе, по справедливости и по истинѣ достойное этого наименованія [ср. Пс. 44, 8. Ис. 61, 1.].— —Такъ какъ о Спасителѣ нашемъ засвидѣтельствовано, что Онъ одинъ только, сравнительно съ бывшими прежде Него, помазанъ высшимъ, духовнымъ помазаніемъ, или лучше — помазаніемъ Божества*, то Онъ по справедливости называется, согласно съ изреченіемъ Гавріила, *святымъ святыхъ и освященнымъ освященныхъ*, или — можно бы сказать—*первосвященникомъ первосвященниковъ*.»

Далѣе приводится счисленіе седьминъ изъ Хронографіи Африкана. «Если же и намъ не должно скрывать того, что пришло на мысль, [180] то скажу, что въ другомъ смыслѣ указанный въ приведенномъ ранѣе мѣстѣ помазанный вождь — — есть не что иное, какъ рядъ первосвященниковъ, управлявшихъ народомъ послѣ пророчества (Даніила) и послѣ возвращенія изъ плѣна,—ихъ Писаніе обычно называетъ помазанниками*. Ибо мы знаемъ, что только они одни управляли народомъ, начиная отъ Іисуса, сына Іоседекова, великаго священника послѣ возвращенія изъ плѣна, и до времени пришествія Спасителя нашего Іисуса Христа. [392] Поэтому я думаю, — — что седьмины лѣтъ (69), составляющія 483 года, простираются отъ царствованія Кира до владычества римлянъ, когда римскій полководецъ Помпей, пришедши къ Іерусалиму, взялъ городъ послѣ осады* и весь народъ сдѣлалъ рабомъ римлянъ. — — Но пока дѣло (постройки храма) встрѣчало препятствія отъ сосѣдей, продолжались первыя 7 седьминъ лѣтъ, указан-

ныя пророкомъ, въ продолженіе которыхъ дѣло построенія храма оставалось не оконченнымъ. Потому-то божественное слово и отдѣляетъ первыя 7 седьминъ отъ суммы остальныхъ, говоря: *седьминъ семь*, а потомъ тотчасъ послѣ остановки прибавляя: *и седьминъ 62.* [405] 7 седьминъ лѣтъ простираются отъ Кира и до окончанія постройки храма. Поэтому іудеи, укоряя Спасителя нашего, говорили: 46 лѣтъ строился этотъ храмъ, а Ты въ три дня воздвигнешь его! Они говорили, что храмъ строился 46 лѣтъ, такъ какъ именно столько составится отъ перваго года царствованія Кира — — до 6-го года царствованія Дарія, когда все дѣло построенія закончилось. А Іосифъ, еврейскій (писатель), прибавилъ и еще три года на окончаніе наружныхъ сооруженій вокругъ храма*, такъ что на это справедливо отдѣлено, по слову пророчества, 7 первыхъ седьминъ, составляющихъ 49 лѣтъ». Далѣе перечисляются первосвященники іудейскіе отъ Іисуса, сына Іоседекова, до Александра, «до времени котораго отъ 1-го года царствованія Кира — — составляется 482 года, когда предстояли первосвященники, которые, мнѣ кажется, названы въ пророчествѣ *помазанникомъ—вождемъ*». Далѣе идетъ новое счисленіе: «и по третьему способу, считая иначе, можно найти, что время 7 и 62 седьминъ, составляющихъ 483 года, простирается до самого Августа и до Ирода, первыхъ царей изъ иноплеменнаго рода, — — если начать счетъ даннаго времени отъ Дарія и отъ окончанія храма. — — Извѣстно, что окончаніе семидесятилѣтія (Іеремін) падаетъ на 2-й годъ Дарія, [397] такъ что по всему [ср. Дан. 9, 2. 3. Зах. 1, 12.] намъ слѣдуетъ считать 70 седьминъ отъ 66-й олимпіады и отъ 2-го года Дарія, въ которомъ кончается постройка*. — — Рождается Спаситель и Господь нашъ Іисусъ Христосъ Божій, и время Его рожденія совпадаетъ съ исполненіемъ 7 и 62 седьминъ Даніиловыхъ».

Далѣе начинается толкованіе 26 и 27 стиховъ. [218] «Итакъ помазаніе первосвященства шло своимъ путемъ и порядкомъ до временъ Ирода и Августа, а преемство древнихъ первосвященниковъ простиралось до Александра, отца Гирканова; Иродъ же, какъ извѣстно, убивъ Гиркана, уже не вручалъ первосвященства законнымъ преемникамъ по рожденію, но различнымъ неизвѣстнымъ и темнымъ лицамъ*. Это предсказано и въ откровеніи слѣдующими словами: *и послѣ 7 и 62 седьминъ истребится помазаніе, и суда нѣтъ въ немъ.* [По переводу Симмаха, вмѣсто *помазаніе* стоитъ: *помазанникъ*,—это, по толкованію Евсевія, Гирканъ, убитый Иродомъ]. — — [229] Еще болѣе это можно видѣть изъ словъ:

суда нѣтъ въ немъ, если принять во вниманіе незаконность поставленія первосвященниковъ, бывшихъ послѣ Ирода и во время Спасителя. — — [256] *И городъ и святилище разрушитъ съ вождемъ грядущимъ*. И здѣсь, я полагаю, разумѣется опять самъ Иродъ и правители изъ иноплеменниковъ, бывшіе послѣ него, — — а съ ними и среди нихъ, пользуясь ими какъ помощниками, городъ и святилище разрушаетъ, по словамъ (пророчества), самъ ненавистникъ добра и губитель благихъ*. — — Согласно съ нашимъ толкованіемъ переводитъ и Акила, такимъ образомъ: *и городъ и святое разоритъ народъ вождя грядущаго;* ибо не только грядущій (вождь) — — разрушитъ городъ и святилище, но и его народъ, — — подъ которымъ, я думаю, разумѣются войска римскихъ правителей. — — Ими-то они и *истреблены какъ-бы въ потопѣ,* и достигли *до конца войны, сокращенной погибелями*, такъ что, по пророчеству, ихъ постигло совершенное опустошеніе за ихъ преступленіе противъ Спасителя нашего. — — [495] Повѣствуется, что все время ученія и чудотворенія Спасителя нашего равняется тремъ съ половиною годамъ, что составляетъ полъ-седьмины*. — — Итакъ, все время совмѣстной жизни Его съ апостолами, какъ до страданія, такъ и послѣ воскресенія изъ мертвыхъ, составитъ одну седьмину лѣтъ. Ибо написано, что до Своего страданія въ продолженіе трехъ съ половиною лѣтъ Онъ являлся передъ всѣми, какъ учениками, такъ и не бывшими таковыми; — — и послѣ воскресенія изъ мертвыхъ Онъ, повидимому, столько же времени (?) былъ вмѣстѣ со Своими учениками и апостолами, являясь имъ въ продолженіе 40 дней, пребывая съ ними и говоря имъ о царствіи Божіемъ, какъ передаютъ и Дѣянія апостоловъ. Это и есть седьмина лѣтъ, указанная въ пророчествѣ, въ продолженіе которой Онъ утвердилъ завѣтъ многимъ, именно—укрѣпляя новый завѣтъ евангельской проповѣди. [302] Для какихъ же *многихъ* онъ утвердилъ его, если не для Своихъ учениковъ и апостоловъ, и для всѣхъ, увѣровавшихъ въ Него изъ евреевъ*? Однако въ половинѣ этой одной седьмины — — взята была жертва и возліяніе, и началась мерзость запустѣнія. [325] Послѣ того, какъ прошла половина этой седьмины, черезъ три съ половиною года Его ученія, въ то время, какъ Онъ пострадалъ, завѣса храма разорвалась сверху донизу, такъ что съ того времени отнято у нихъ возліяніе и жертва, и на святилищѣ началась мерзость запустѣнія, когда сила, соблюдавшая и призиравшая ихъ издревле и до самаго этого времени, совершенно покинула ихъ. — — Если же богослуженіе на этомъ мѣстѣ продолжалось, повидимому, еще

нѣкоторое время, то оно было уже неугодно Богу, такъ какъ совершалось безъ дозволенія и не по закону. — — (При разрушеніи Іерусалима) поставлена на святилищѣ и мерзость запустѣнія, которая осталась и до сихъ поръ, ежедневно приводя развалины въ худшее состояніе *. Это по справедливости должно продолжаться до скончанія жизни, по объявленному въ пророчествѣ опредѣленію, глаголящему: *и до скончанія времени скончаніе дастся на опустошеніе*».

Въ «Избранныхъ мѣстахъ изъ пророковъ» Евсевій снова приводитъ счисленіе Африкана, затѣмъ излагаетъ свое первое счисленіе (отъ 1 года Кира до начала владычества римлянъ). Останавливаясь на послѣдней седьминѣ, онъ говоритъ, что она «утвердила завѣтъ многимъ,—т. е. новый завѣтъ спасительной проповѣди, распространившійся по всей вселенной и проповѣданный уже не для одного только народа іудейскаго, но и для множества (народовъ), почему и сказано: *утвердитъ завѣтъ многимъ одна седьмина*. Нужно замѣтить, что одна послѣдняя седьмина не непосредственно примыкаетъ къ остальнымъ седьминамъ — —, но (между ними) имѣется нѣкоторый длинный раздѣляющій промежутокъ. — — Кто же погубитъ (городъ и святилище), какъ не діаволъ, губитель душъ? Кто грядущій вождь, какъ не Иродъ, первый ихъ правитель изъ язычниковъ, и принявшіе послѣ него власть надъ іудеями? — — Я знаю и другое толкованіе, предлагаемое для этой седьмины, *утвердившей завѣтъ многимъ*. Измѣняя ее въ седьмину десятковъ, это толкованіе представляетъ ее обнимающею весь семидесятилѣтній апостольскій періодъ, въ продолженіе котораго проповѣдь новаго завѣта утвердилась на всей вселенной, будучи возвѣщена уже не одному, а многимъ народамъ. Ибо и исторія передаетъ, что Іоаннъ, ученикъ Господень, жилъ послѣ Его вознесенія 70 лѣтъ. — — При такомъ толкованіи очевидно, какъ въ срединѣ этой седьмины десятилѣтій была отнята жертва и возліяніе и указанная мерзость запустѣнія стала на святомъ мѣстѣ, — — когда храмъ, нѣкогда священный и святой, подвергся полному истребленію огнемъ и разрушенію».

Св. Аѳанасій Александрійскій, «Слово о воплощеніи Бога-Слова и о пришествіи Его къ намъ во плоти» [M. 25 gr. 164 sqq. ср. Творенія св. Аѳанасія ч. 1, Москва 1851 стр. 134 дал.].

Доказывая іудеямъ, что Мессія уже пришелъ, св. Аѳанасій приводитъ между прочимъ откровеніе о седьминахъ и говоритъ: [122] «Что они могутъ возразить или сказать на это, когда здѣсь и Христосъ указывается, и возвѣщается, что Помазуемый есть не

просто человѣкъ, а Святый святыхъ, что Іерусалимъ остается (только) до Его пришествія, и что потомъ уже прекратится пророкъ и видѣнія во Израилѣ? Помазаны были въ древности и Давидъ, и Соломонъ, и Езекія; но тогда еще стоялъ Іерусалимъ и вся страна, и пророки еще пророчествовали. — — Притомъ и сами помазанные назывались святыми людьми, а не святыми святыхъ *. Если укажутъ на (время) плѣна и скажутъ, что въ продолженіе его не было Іерусалима, то могутъ ли то же сказать и о пророкахъ? Ибо когда народъ переселился въ Вавилонъ, то тамъ были Даніилъ и Іеремія, пророчествовали также Іезекіиль, Аггей и Захарія. — — — [109] А когда пришло знаменуемое, какая нужда была въ знаменующемъ? Когда наступила дѣйствительность, какая нужда въ тѣни? Поэтому и пророчествовали, пока не пришла сама Правда, пока не пришелъ Искупляющій грѣхи всѣхъ *; поэтому и Іерусалимъ стоялъ столько времени, чтобы тамъ научались прообразованіямъ истины. Когда же явился Святый святыхъ, то по справедливости были запечатаны видѣніе и пророчество и прекратилось царство Іерусалимское».

Толкованіе преп. **Ефрема Сирина** почти полностію приведено въ примѣчаніяхъ 59, 110, 123, 189, 331, 352.

Св. **Кириллъ Іерусалимскій**, 12-е огласительное слово [M. 33 gr. 748—749, ср. Творенія св. Кирилла, Москва 1855, стр. 181—182].

Доказывая, что Мессія уже пришелъ, Кириллъ приводитъ 25-й стихъ откровенія о седьминахъ и говоритъ: [224] «69 седьминъ лѣтъ составляютъ 483 года. Итакъ ангелъ сказалъ, что по прошествіи 483 лѣтъ послѣ построенія Іерусалима и по оскудѣніи князей, придетъ нѣкій иноплеменный царь, при которомъ родится Христосъ*. Дарій Мидянинъ построилъ (Іерусалимъ) въ 8-й годъ своего царствованія, въ 1-й годъ 66-й олимпіады, по греческому счисленію. — — Иродъ же воцарился въ 186-ю олимпіаду, въ 4-й годъ ея. А отъ 66-й до 186-й олимпіады включительно—120 олимпіадъ съ небольшимъ. Такимъ образомъ, изъ 120-ти олимпіадъ составляется 480 лѣтъ, остальные же 3 года заключаются въ промежуткѣ между 1-мъ и 4-мъ (годами олимпіады); такъ ты имѣешь подтвержденіе (словъ) Св. Писанія, говорящаго: *отъ исхода слова, чтобы было отвѣчено и чтобы былъ построенъ Іерусалимъ, до Христа вождя седьминъ 7 и седьминъ 62.* Итакъ ты можешь найти доказательство этому во времени, хотя существуютъ и разныя другія толкованія предсказанныхъ въ (книгѣ) Даніила седьминъ лѣтъ».

Аполлинарій Лаодикійскій; отрывки его толкованія приведены въ комментаріи блаж. Іеронима [M. 25 lat. 548, ср. Твореніа блаж. Іеронима ч. 12, стр. 90—91].

[72] «Въ 490 лѣтъ грѣхи и всѣ пороки, происходящіе отъ грѣховъ, будутъ стѣснены (въ своей силѣ), послѣ чего придутъ блага, и міръ примирится съ Богомъ въ пришествіи Христа, Сына Его*. Отъ исхода Слова, когда Христосъ родился отъ Дѣвы Маріи, до 49-го года, т. е. до конца 7 седьминъ, было ожидаемо покаяніе Израиля. Послѣ же этого, съ 8-го года Клавдія Цезаря, противъ іудеевъ было поднято оружіе римлянами. — — [322] Когда же истекутъ послѣ этого 434 года, т. е. 62 седьмины, тогда Илія, который придетъ, по слову Господа Спасителя, — — построитъ въ послѣднюю седьмину Іерусалимъ и храмъ въ $3^1/_2$ года; придетъ и антихристъ, сядетъ, по апостолу, въ храмѣ Божіемъ и будетъ убитъ духомъ Господа Спасителя, послѣ того какъ будетъ вести войну противъ святыхъ; и случится такъ, что половина седьмины укрѣпитъ завѣтъ Божій со святыми и снова половина предвозвѣститъ прекращеніе жертвъ при антихристѣ, который поставитъ въ храмѣ мерзость запустѣнія, т. е. идола и статую собственнаго бога *; и будетъ крайнее опустѣніе и осужденіе народа іудейскаго, который, презрѣвъ истину Христову, принялъ ложь антихриста». Блаж. Іеронимъ справедливо называетъ мнѣніе Аполлинарія «опаснымъ», такъ какъ «если тѣ, которые будутъ жить послѣ насъ, увидятъ, что оно не исполнилось въ опредѣленное время, то они будутъ вынуждены искать другого рѣшенія и уличить учителя въ заблужденіи».

Юлій Иларіанъ, «Хронологія» или «О продолжительности міра» [M. 13 lat. 1102 sqq.].

[139] 7 седьминъ «суть 49 лѣтъ; эти годы принадлежатъ къ составу 70 лѣтъ плѣненія Іерусалима. Въ 1-й годъ царя Дарія — — Даніилъ видѣлъ видѣніе,—тогда былъ 21-й годъ плѣненія Іерусалима. — — Въ 1-й годъ этого Дарія Даніилу возвѣщается ангеломъ о 70 седьминахъ. По раздѣленіи этихъ седьминъ, сначала тѣмъ же ангеломъ названы 7 седьминъ, составляющія (какъ сказано) 49 лѣтъ; прибавивъ ихъ къ 21 году плѣна, когда Даніилъ видѣлъ видѣніе, получимъ 70 лѣтъ, завершившіеся въ Вавилонѣ, чтобы исполнилось видѣніе и пророчество Іереміи. Послѣ этихъ (70) лѣтъ Киръ, царь персидскій, въ 1-й годъ своего царствованія, повелѣваетъ народу итти въ Іерусалимъ, чтобы Іерусалимъ могъ быть построенъ, и чтобы было помазано святое святыхъ, которое было священнѣйшимъ въ храмѣ Божіемъ. [181] Итакъ народъ

возвращается изъ Вавилона, имѣя своимъ вождемъ Зоровавеля, о которомъ есть упоминаніе (въ рѣчи) ангела Даніилу: *до христа вождя седьминъ 7*. Ибо всякій царь народа Божія въ Божественномъ Законѣ называется христомъ*.— — Ангелъ продолжаетъ и говоритъ Даніилу: *62 седьмины Господь* [? можетъ быть, вмѣсто словъ: *послѣ 62 седьминъ будетъ убитъ Господь*], т. е. въ продолженіе этихъ седьминъ, по возстановленіи храма и города Іерусалима, они служили Господу въ своихъ жертвоприношеніяхъ. [370] Эти 62 седьмины суть 434 года, исполнившіеся во времена маккавеевъ, въ 141-мъ году царства греческаго. Въ это именно время надменно царствовалъ надъ греками Антіохъ*.— — — Итакъ послѣ 7 и 62 седьминъ остается одна седьмина, которую составляютъ 7 лѣтъ, завершающіе сумму 70 седьминъ. [317] Въ эту именно седьмину возросла злоба язычниковъ, какъ уже было сказано ангеломъ, такъ что въ срединѣ этой седьмины Антіохомъ, царемъ греческимъ, прекращается даже жертвоприношеніе на святомъ мѣстѣ, и само святилище оскверняется женскою нечистотою, и дѣлается надъ алтаремъ мерзость запустѣнія, и тамъ помѣщается статуя Юпитера, называемаго Олимпійцемъ. Этотъ Антіохъ, нося образъ антихриста, нечестиво пытался образовать подъ своею властію одинъ безбожный народъ».

Св. **Іоаннъ Златоустъ**, «Слово 5-е противъ іудеевъ» 9—10, и «Толкованіе на пророка Даніила» [M. 47 gr. 898 sqq.; 56 gr. 240; ср. Творенія св. Іоанна Златоуста т. I, Спб. 1895 стр. 698 дал. и Бесѣды на разныя мѣста Св. Писанія т. I, Спб. 1861, стр. 408—409].

«*Семьдесятъ седьминъ*, говоритъ ангелъ, *сокращены* [70] *на народъ твой;* не говоритъ уже: на народъ Мой, хотя пророкъ и говорилъ: яви лице Твое на народъ Твой,—нѣтъ, Богъ уже чуждается народа за будущій его грѣхъ*. Потомъ указываетъ и причину: *пока обветшаетъ прегрѣшеніе и скончается грѣхъ*. [82] Что значитъ: *пока скончается грѣхъ?* Много, говоритъ онъ, грѣшатъ (іудеи), но верхъ ихъ беззаконій будетъ тогда, когда они умертвятъ своего Владыку—[ср. Матѳ. 23, 32].—Что значитъ: *запечатаются (грѣхи)?* То, что уже ничего не останется (сдѣлать іудеямъ столь беззаконнаго). [111] *И приведется правда вѣчная*. Какая же это вѣчная правда, какъ не та, которая дарована Христомъ? [124] *И запечатается видѣніе и пророкъ, и помажется святый святыхъ*, т. е. прекратится наконецъ пророчество,—ибо это значитъ запечатать,—прекратится помазаніе, прекратится видѣніе. Посему-то Христосъ

сказалъ: *законъ и пророки до Іоанна.*— — [368] 7 седьминъ и 62 седьмины составляютъ 483 года, такъ какъ онъ говоритъ здѣсь о седьминахъ лѣтъ, а не дней или мѣсяцевъ*.— — *Отъ исхода слова, чтобы было отвѣчено и чтобы былъ построенъ Іерусалимъ,*— но онъ построенъ не при Кирѣ, а при Артаксерксѣ Долгорукомъ. [400] Въ его царствованіе, въ 20-й годъ его царства, Неемія, возвратившись (изъ плѣна), возстановилъ городъ.— — Итакъ, если мы отсюда отсчитаемъ 483 года, то какъ разъ дойдемъ до этого (послѣдняго) разрушенія (Іерусалима) *.— — — И опять объ этомъ же плѣненіи онъ говоритъ: *возьмется куреніе и возліяніе, и сверхъ того на святилище (будетъ) мерзость запустѣнія, и до скончанія времени скончаніе дастся на опустѣніе.* А когда слышишь ты (,іудей,) о скончаніи, то чего тебѣ еще ожидать? *И сверхъ того:* что значитъ это *сверхъ того?* Значитъ, что къ этому, о чемъ сказано, къ отнятію жертвы и возліянія, присоединится еще какое-то новое, большее зло. Какое же? [326] *На святилище (будетъ) мерзость запустѣнія.* Святилищемъ онъ называетъ храмъ, а мерзостью запустѣнія—статую, которую разрушитель города поставилъ внутри храма.— — Послѣ опустошенія, произведеннаго при Веспасіанѣ и Титѣ, іудеи, возставши при Адріанѣ, пытались возстановить у себя прежнее общественное состояніе;— — но онъ, поразивъ ихъ,— — поставилъ (въ Іерусалимѣ) свою статую».

Въ «Толкованіи на пророка Даніила» св. Іоаннъ приводитъ два послѣдніе стиха откровенія и кратко говоритъ: [301] «Посмотри, какъ онъ закончилъ рѣчь печальными событіями, а о благопріятныхъ сказалъ неясно, именно такимъ образомъ: *утвердитъ завѣтъ многимъ одна седьмина;* о печальномъ же говоритъ часто и много*. *И мерзость запустѣнія,*—т. е. Адріанова».

Блаж. **Іеронимъ**, «Комментарій на книгу Даніила» [M. 25 lat. 542 sqq., ср. Творенія блаж. Іеронима ч. 12, стр. 79 дал.].

Блаж. Іеронимъ приводитъ всѣ 4 стиха откровенія и говоритъ: «Такъ какъ пророкъ сказалъ: *Ты вывелъ народъ Твой, и имя Твое наречено надъ городомъ Твоимъ и надъ народомъ Твоимъ,* то Гавріилъ говоритъ отъ лица Божія: онъ не Божій народъ, а народъ твой, и не святой Божій городъ, а святой для тебя, какъ ты говоришь— [ср. Исх. 32, 7]. — Итакъ, поелику ты просишь за Іерусалимъ и молишься за народъ іудейскій, то выслушай слѣдующее, что въ теченіе 70-ти седьминъ лѣтъ произойдетъ съ народомъ твоимъ и городомъ твоимъ. [389] Я знаю, что объ этомъ вопросѣ различно раз-

суждали ученѣйшіе мужи, и что каждый, сообразно съ силами своего ума, высказалъ то, что думалъ. И такъ какъ опасно судить о мнѣніяхъ учителей Церкви и отдавать предпочтеніе одному передъ другимъ, то я скажу, что думалъ каждый изъ нихъ, предоставляя волѣ читателя рѣшить, чьему объясненію должно слѣдовать»*. Далѣе приводятся мнѣнія Юлія Африкана, Евсевія Памфила (три счисленія седьминъ), Ипполита, Аполлинарія Лаодикійскаго, Климента Александрійскаго, отчасти Оригена, Тертулліана и евреевъ. Своего собственнаго объясненія седьминъ блаж. Іеронимъ не даетъ.

Полихроній Апамійскій, «Толкованіе на пр. Даніила» [A. Majus, Scriptorum veterum nova collectio, t. I, Romae 1825 и 1831, p. 16 sqq].

[94] «*Чтобы завершился грѣхъ,*—т. е. Онъ долготерпитъ имъ, пока они не достигнутъ крайняго предѣла грѣха и не впадутъ въ неизлечимую болѣзнь. [100] *Стереть беззаконія:* Онъ даровалъ намъ это банею пакибытія, даруетъ намъ и оправданіе. [125] *Запечатать видѣніе,* т. е. положитъ предѣлъ видѣніямъ пророковъ: подъ говорящими онъ разумѣетъ сказанное (ими). * *Помазать святое святыхъ,* т. е. дать намъ участіе въ помазаніи. [133] А святымъ святыхъ называетъ (освященіе) потому, что оно превосходитъ посвященіе черезъ помазаніе, бывшее у іудеевъ; или потому, что этимъ обозначаетъ самого Христа, указывая на помазаніе Его Духомъ Святымъ [ср. Пс. 44, 8]. —— Не сказалъ: (помазать) *святымъ святыхъ,* но—*святое святыхъ,* указывая на самого Христа, который не нуждается въ помазаніи, но есть источникъ помазанія, какъ Богъ, и помазывается только по домостроительству. [168] *Отъ исхода слова, чтобы отвѣчать.* Онъ говоритъ, какъ и откуда слѣдуетъ считать 70 седьминъ, т. е. 490 лѣтъ, чтобы указать, что (слѣдуетъ считать) съ того времени, какъ я началъ говорить, отвѣчая на (твой) вопросъ. А это былъ 1-й годъ Дарія мидянина *. *Чтобы построить Іерусалимъ, и до помазанника вождя седьминъ 7;* предстоитъ, говоритъ онъ, указать два періода: время построенія храма и время до пришествія Христа. Если считать съ этого времени, говоритъ онъ, и до окончанія постройки храма, то окажется 49 лѣтъ. —— [408] [При Даріѣ Истаспѣ] совершилась постройка храма, начатая во второй годъ (его) —— и оконченная въ 9-й годъ того же Дарія, по (свидѣтельству) Іосифа,—такъ и составится 49 лѣтъ [отъ 1-го года Кира.] —— Когда впослѣдствіи времени воцарился Артаксеркъ, прозванный Долгорукимъ, то въ 20-й годъ его царствованія Неемія просилъ у него разрѣшенія по-

строить стѣны города и, получивъ разрѣшеніе, окончилъ ихъ въ 32-й годъ его царствованія,—объ этомъ передаетъ книга Ездры. А что это такъ, можно заключить и по времени, такъ какъ, если внимательно считать съ того времени по хроникамъ, то окажется, что 434 года оканчиваются 32-мъ годомъ царствованія Ирода. [450] Ибо Евсевій, упоминая въ хроникѣ объ указанной исторіи, ставитъ 32-й годъ Артаксеркса на 86-ю олимпіаду, на 4-й годъ ея*. — — *До помазанника вождя*,—т. е. я хочу указать тебѣ время отъ построенія храма до пришествія Христа; Его онъ и называетъ Помазанникомъ Вождемъ, — Помазанникомъ потому, что Онъ былъ помазанъ, какъ уже сказано, а Вождемъ—какъ Владыку всѣхъ.— — Годы [62-хъ седьминъ] должно считать не съ того времени, какъ былъ построенъ храмъ, а съ того, когда была построена городская стѣна; потому онъ и говоритъ: *обратится*, т. е. впослѣдствіи времени городъ получитъ окончательный видъ. [211] *Истощатся времена:* тогда, говоритъ онъ, будутъ исчерпаны указанныя выше времена, т. е. 434 года. И тотчасъ послѣ этого Христосъ начнетъ Свое пребываніе среди людей. [219] *Истребится помазаніе*, т. е. исчезнетъ все іудейское (общественное) устройство: помазаніемъ онъ называетъ помазаннаго священника*. — — Еврейскій и сирскій (тексты) ясно говорятъ: *Истребится помазанникъ*, при упоминаніи о священникѣ подразумѣвая и жертвы. Но это, говоритъ онъ, случится съ іудеями не тотчасъ по истеченіи времени, указаннаго до пришествія Христа, а черезъ много лѣтъ позже. — — [231] *Суда нѣтъ въ немъ*, т. е. нѣтъ судилищъ, постановленій и законовъ, такъ какъ все это указываетъ на царское управленіе и государственное устройство *. *Истребятся въ потопъ* — — говоритъ онъ, указывая на ихъ окончательную погибель — —; ибо слово: *до конца* указываетъ на ихъ конечную гибель, а слово: *истребленіе* указываетъ на то, что у нихъ не видно и напоминанія о прежнемъ благоденствіи. *Утвердитъ завѣтъ;* слово *утвердитъ* онъ употребилъ очень точно, такъ какъ до явленія Спасителя благо было только въ обѣтованіяхъ,—его-то Онъ и подтвердитъ при Своемъ явленіи, и будетъ у вѣрующихъ завѣтъ вѣрный, твердый, не могущій ничѣмъ быть поколебленнымъ и не подвергающійся измѣненію. [424] *Въ половинѣ седьмины:* онъ указываетъ время, въ продолженіе котораго будетъ учить Христосъ. — — Очевидно, что онъ говоритъ о пребываніи Христа среди людей, въ продолженіе котораго Онъ избралъ апостоловъ и училъ іудеевъ, а чрезъ нихъ и всѣхъ остальныхъ совершеннѣйшему благочестію».

Св. **Исидоръ Пилусіотъ,** 3-я книга «Писемъ». Письмо 89-е «діакону Исидору: какъ толковать седьмины Даніиловы?» 249-е «ему же на слова: *потребится помазаніе* и дал.» 257-е: «Павлу—на сказанное: *и городъ и святилище разоритъ съ грядущимъ вождемъ*» [M. 78 gr. 793, 928—929, 933—936; ср. Творенія св. Исидора Пел. ч. 2-я, Москва 1860, стр. 141—142, 275—276, 281—282].

401 «Какъ человѣкъ трудолюбивый и любознательный, ты пожелалъ узнать, какимъ образомъ исполнились написанныя у Даніила 69 седьминъ лѣтъ, ведущія свой счетъ отъ построенія Іерусалима и оканчивающіяся его взятіемъ; знай же, что онъ построенъ не при Кирѣ, а въ 20-й годъ царствованія Долгорукаго».

220 «Пророкъ Даніилъ, желая показать совершенное разстройство іудейскихъ (общественныхъ) дѣлъ послѣ креста (Христова, желая показать), что тогда не останется у нихъ ни малѣйшей доброй надежды и никакого ожиданія лучшаго будущаго, сказалъ: *потребится помазаніе и судъ не будетъ въ немъ;* словомъ *помазаніе* онъ означаетъ священство, а словомъ *судъ*—царскую власть и общественное состояніе»*.

«Если сказанное Даніилу ангеломъ, что *городъ и святое разоритъ съ вождемъ грядущимъ,* считаютъ сказаннымъ о комъ-либо другомъ, то пусть толкуютъ какъ хотятъ, нисколько не вредя истинѣ. Если же называемый грядущимъ есть Христосъ, по Писанію [Пс. 117, 26. Матѳ. 11, 3], то смыслъ изреченія таковъ: все чтимое и славное у іудеевъ ниспровергнетъ не Отецъ только, но и Христосъ, ожидаемый ими, какъ ихъ искупитель. —— И смотри, какая точность: 250 не сказалъ—*разорится (вмѣстѣ) съ вождемъ,* какъ думаютъ иные, но—*разоритъ* Отецъ храмъ и городъ, при содѣйствіи Вождя,—того именно, который былъ ими поруганъ въ первое Его пришествіе. Если же это неясно, то скажемъ еще яснѣе: Богъ и Вождь, т. е. Христосъ (разорятъ городъ и храмъ)*. —— Посему, хотя дѣло это приписывалось римлянамъ, но было слѣдствіемъ Божія гнѣва, и свидѣтель этому—Іосифъ».

Василій Селевкійскій, Слово 38-е: «Свидѣтельство противъ іудеевъ о пришествіи Спасителя» [M. 85 gr. 400 sqq].

«*70 седьминъ опредѣлены* ——, т. е. 490 лѣтъ назначено іудейскому народу, съ тѣмъ, что если они не покаятся съ пришествіемъ Спасителя, то погибнутъ вмѣстѣ со своимъ городомъ, нѣкогда святымъ. Тотчасъ же ангелъ указываетъ и благодать, ожидающую вѣрующихъ во Спасителя, и говоритъ такъ: *чтобы скончался грѣхъ*

и чтобы запечатать грѣхъ. [86] *Кончающимся* онъ называетъ тотъ грѣхъ, который царствовалъ надъ нами отъ Адама до Спасителя, котораго не могъ побѣдить законъ, но отъ котораго освободилъ насъ самъ Спаситель чрезъ свою святую язву за насъ [Ис. 53, 5. ср. 1 Петр. 2, 24. Рим. 8, 3]. А что Онъ восхотѣлъ очистить банею пакибытія (Кол. 2, 14) и остальные наши беззаконія и грѣхи, которые мы совершили послѣ осужденія Адама, — — объ этомъ ангелъ говоритъ такъ: *и чтобы запечатать грѣхъ, и стереть грѣхъ, и очистить неправду**. Потомъ онъ указываетъ и на пришествіе самого Господа, говоря: [113] *и чтобы привести правду вѣчную,* которая есть не иная какая-либо, а именно (правда) Спасителя — — [ср. Пс. 84, 11. 12]*. Затѣмъ ангелъ говоритъ: *и запечатать видѣніе и пророка:* [127] запечатаніемъ онъ называетъ прекращеніе видѣній и пророчествъ, говорившихъ о пришествіи Спасителя*. — — *И обратится и построится площадь и стѣна, и истощатся времена.* [198] *Обратится* онъ говоритъ вмѣсто: *призритъ.* А что слова: *обратится Богъ* въ Писаніи означаютъ: *призритъ,* это можно видѣть у пророковъ и особенно у Давида. Молясь о народѣ, онъ говоритъ: *обратися Господи, доколѣ? и умоленъ буди на раба твоего* (Пс. 89, 13). И затѣмъ, молясь о немъ, какъ о виноградникѣ, онъ говоритъ: *Господи Боже силъ, обратися убо, и призри съ небесе и виждь, и посѣти виноградъ сей* (Пс. 79, 15). Такъ и ангелъ говоритъ: *обратится* вмѣсто: *призритъ,* указывая на событія послѣ завоеванія Веспасіанова. — — Ибо тамъ, гдѣ Господь изволилъ быть распятымъ и погребеннымъ и воскреснуть, на такъ называемой Голгоѳѣ, тамъ водворилась и святая Церковь Божія. — — Слова: *построится площадь и стѣна* указываютъ на площадь храма и на стѣну такъ называемой Эліи Капитолины, которую (стѣну) построилъ Эліи Титъ (?) на томъ самомъ мѣстѣ послѣ разрушенія храма*, построеннаго послѣ плѣна, и стѣны, которую іуден построили въ продолженіе 100 (?) лѣтъ. — — [213] А слова: *и истощатся времена,* означаютъ, что іуден останутся въ этомъ состояніи до скончанія временъ. [222] Затѣмъ ангелъ, переходя къ обстоятельствамъ страданія Господа, разсказываетъ объ уничтоженіи, вслѣдствіе Его страданія, кивота и святынь, находившихся въ немъ, и рога, изъ котораго помазывались цари и пророки, судившіе народъ, и о томъ, что случится съ евреями, распявшими Господа. Онъ говоритъ такъ: *и послѣ 62 седьминъ истребится помазаніе, и суда уже не будетъ въ немъ.* Онъ говоритъ о рогѣ, изъ котораго помазывались цари и пророки,

судившіе народъ и городъ. [251] *И святилище разрушатъ съ вождемъ грядущихъ*: вождемъ грядущихъ онъ называетъ Спасителя. О распявшихъ же Его онъ говоритъ такъ: *и истребятся въ потопѣ, и до конца войны сокращенной опредѣлитъ на погибель:* [267] войну при Веспасіанѣ онъ назвалъ потопомъ погибели. А что въ Писаніи великое кровопролитіе обычно называется потопомъ войны, мы видимъ и изъ книги Даніила (11, 10. 22). [303] Далѣе, переходя къ разсказу о завѣтѣ съ любящими Бога и хранящими заповѣди Его, ангелъ говоритъ: *и укрѣпитъ завѣтъ многихъ седьмина одна.* Ибо до седьмого года по вознесеніи Спасителя, когда много бѣдствій одно за другимъ постигли іудеевъ, многіе, видя (въ этомъ) наказаніе, повѣрили во Спасителя. — — [329] Слова о половинѣ седьмины, въ которую онъ прекратилъ жертвоприношенія и жертвы, исполнились такимъ образомъ. По смерти Тиверія въ четвертый годъ послѣ вознесенія Спасителя, его преемникъ поставилъ въ Іерусалимѣ изображеніе Августа, и когда изъ-за этого возникло много войнъ у іудеевъ, то Гаій, побѣдивъ ихъ, разрушилъ ихъ жертвенники и прекратилъ жертвы, совершавшіяся по закону, вмѣстѣ съ крыломъ. А крыломъ онъ называетъ одежду первосвященника, или диплоиду. Предшественники Тита наложили на нее подать, хранили ее подъ своею печатью и отдавали за плату тѣмъ, кто ея домогался; Титъ же, пришедши, уничтожилъ ее, желая, чтобы покланялись только ему одному (?)*. А чтобы не осталось уже у іудеевъ напрасной надежды на ихъ возстановленіе въ будущемъ, ангелъ прибавилъ: *послѣ опустошенія до скончанія*; указывая на жадный [λάβρον вм. λάαρον? все это мѣсто видимо испорчено] духъ Тита, онъ прибавляетъ: *и (до) возліянія отъ опустошенія.* Для большаго подтвержденія, ангелъ повторяетъ и о седьминѣ и о половинѣ седьмины, прибавляя о статуѣ, которую (Титъ?) поставилъ въ ихъ святомъ храмѣ и заставилъ ихъ покланяться ей. Ее-то ангелъ и назвалъ мерзостью запустѣнія, ибо побѣжденные іудеи относились къ ней съ омерзѣніемъ [ср. Матѳ. 24, 15]. Указывая, до какого времени продолжится (сказанное) объ іудеяхъ, ангелъ повторяетъ и объ этомъ, говоря: *до скончанія времени скончаніе дастся на опустѣніе.*» Изъ счисленія седьминъ: [403] «Неемія — — просилъ царя Ксеркса, въ 25 годъ его царствованія, пойти и построить остатки стѣны Іерусалимской. Получивъ позволеніе, — — онъ построилъ стѣну вокругъ Іерусалима съ великою поспѣшностью, въ 28-й годъ царя Ксеркса, въ 9-й мѣсяцъ. — — А отъ построенія Іерусалима до вознесенія Спасителя 483 года*. — —

Послѣ же вознесенія Спасителя до 3-го года Гаія еще одна седьмина, такъ что составляется 70 седьминъ лѣтъ, по пророчеству ангела».

Блаж. **Θеодоритъ Кирскій**, «Толкованіе на видѣнія пророка Даніила» [M. 81 gr. 1469 sqq.; ср. Творенія блаж. Θеодорита ч. 4, Москва 1857, стр. 177 и дал.].

«Прежде всего должно замѣтить, что пророкъ въ своей молитвѣ къ Богу говорилъ о народѣ и Іерусалимѣ: *народъ Твой, городъ Твой, святилище Твое;* Богъ же, напротивъ, говоритъ Даніилу: *семьдесятъ седьминъ сокращены на народъ твой и на городъ святой твой:* Онъ какъ бы не удостоиваетъ называть Своимъ ни народъ, называвшійся прежде Его народомъ, ни городъ, также издревле именовавшійся Его городомъ [ср. Исх. 32, 7]. — — [58] *Семьдесятъ седьминъ сокращены*, т. е. опредѣлены и присуждены,—такъ перевели нѣкоторые изъ толковниковъ. — — [83] *Пока обветшаетъ преступленіе и завершится грѣхъ*, т. е. пока возрастетъ ихъ нечестивая дерзость и достигнетъ конца грѣхъ: завершающимся грѣхомъ и преступленіемъ ветшающимъ, или возрастающимъ и достигающимъ крайности, онъ называетъ дерзновенное распятіе ими Господа*. — — Но такъ какъ Владыка Христосъ имѣлъ даровать вѣрующимъ въ Него отпущеніе прегрѣшеній [ср. Іоан. 1, 29], — — то (ангелъ) справедливо прибавилъ: *и запечаются грѣхи, и изгладятся беззаконія, и очистятся неправды.* [99] Ибо Онъ изгладилъ беззаконія увѣровавшихъ въ Него, *истребивъ еже на насъ рукописаніе*, какъ говоритъ блаженный Павелъ (Кол. 2, 14). Онъ запечаталъ грѣхи, упразднивъ жизнь по закону и даровавъ благодать Духа. — — [108] А вѣчная правда есть именно самъ Владыка Христосъ [ср. 1 Кор. 1, 30. Рим. 1, 17]. — — Но такъ какъ Онъ, по Своей щедрости, даровалъ увѣровавшимъ въ Него и оправданіе, приводящее къ жизни вѣчной, — — то св. Гавріилъ по необходимости сказалъ: *и приведется правда вѣчная**. Онъ прибавилъ: [126] *и запечатается видѣніе и пророкъ*, т. е. положится конецъ всѣмъ пророчествамъ [Рим. 10, 4] и прекратится на будущее время пророческая благодать въ іудейскомъ народѣ. Ибо если бы Владыка Христосъ, явившись, не пострадалъ и не совершилъ того, что предсказали пророки, то истинность пророковъ не была бы доказана. Поэтому Онъ, страдая и совершая все, предреченное ими, исполняетъ и какъ бы запечатываетъ и подтверждаетъ предсказанное ими*. Къ этому ангелъ прибавляетъ еще: *и помазать святаго святыхъ.* [137] Кто же этотъ святой святыхъ? Пусть скажутъ

іудеи; если же они не знаютъ, то пусть узнаютъ отъ насъ, что Онъ есть самъ Владыка Христосъ [Ис. 61, 1. Пс. 44, 8. Дѣян. 10, 38]; — — Онъ, называясь Святымъ святыхъ, какъ источникъ святости, по человѣчеству помазуется Духомъ Святымъ*. — — Далѣе божественный архангелъ научаетъ, откуда слѣдуетъ начинать счетъ 70 седьминъ: *и узнаешь*, говоритъ онъ, *и уразумѣешь, отъ исхода словъ, чтобы отвѣтить и чтобы построить Іерусалимъ, до помазанника вождя седьминъ 7 и седьминъ 62.* Нѣкоторые полагаютъ, что начало построенія (храма), бывшее при Кирѣ, есть и начало седьминъ; другіе начинаютъ счисленіе съ 6-го года Дарія Истаспова, потому что тогда собственно окончилось построеніе храма. — — Но то и другое счисленіе неправильно. Прежде всего, если кто пожелаетъ считать съ этихъ временъ, то число лѣтъ окажется больше; а затѣмъ невозможно найти, чтобы при комъ иномъ совершилось заглажденіе прегрѣшеній, отпущеніе неправдъ, дарованіе вѣчной правды, исполненіе пророческихъ видѣній и помазаніе святого святыхъ, кромѣ одного Владыки Христа. А если это такъ, и съ этимъ согласны и тѣ, кто хотятъ считать седьмины съ указанныхъ временъ, то пусть отсчитаютъ 490 лѣтъ снизу вверхъ. [402] Если, начавъ считать отъ явленія Спасителя и Господа нашего на Іорданѣ, когда Онъ началъ проповѣдовать, учить и творить чудеса, мы пойдемъ назадъ, то найдемъ, что число это не достигаетъ не только до Кира, но и до Дарія, и что оно кончается 20-мъ годомъ царствованія Артаксеркса, сына Ксерксова: въ это именно время Неемія — — умоляетъ царя дозволить ему построеніе стѣнъ Іерусалимскихъ* и, достигши этого при благосклонности царя, спѣшитъ въ отечество, — — воздвигаетъ городскія стѣны, — — и городъ, не имѣвшій въ себѣ жителей, дѣлаетъ полнымъ обитателями. — — Начавъ счисленіе, говоритъ (ангелъ), отъ построенія города, когда онъ получилъ собственныя стѣны и вмѣстилъ въ себя множество обитателей, такъ что сдѣлался обширнымъ вслѣдствіе множества жителей,—найдешь *до Помазанника Вождя седьминъ 7 и седьминъ 62.* Помазанникомъ Вождемъ онъ называетъ Того же, Кого назвалъ Святымъ святыхъ. — — [373] Эти числа [отъ 20-го года Артаксеркса до 15-го Тиверія], сложенныя вмѣстѣ, даютъ 469 лѣтъ; а это составляетъ 483 еврейскихъ года: именно столько составляютъ и 7 и 62 седьмины. Надобно знать, что евреи, считая годъ по теченію луны, считаютъ излишними 11 дней, которые мы называемъ вставочными*, — — и считаютъ годъ въ 354 дня. — — И раздѣлилъ седьмины (ангелъ) не безъ

намѣренія, но предуказывая этимъ перемѣны нѣкоторыхъ обстоятельствъ. [551] Ибо отъ построенія Іерусалима, бывшаго при Ездрѣ и Нееміи, до Гиркана, послѣдняго первосвященника изъ Асмонеевъ, убитаго Иродомъ, исполняется число 62-хъ седьминъ; а отъ убіенія Гиркана до явленія нашего Спасителя и пришествія Его на Іорданъ истекаютъ остальныя 7 седьминъ*. Въ это время, т. е. послѣ убіенія Гиркана и до явленія нашего Спасителя, первосвященники поставлялись уже незаконно.—*И послѣ седьминъ 62 истребится помазаніе и суда нѣтъ въ немъ.* Отсюда ясно, что (ангелъ) поставилъ первыми 62 седьмины, и послѣ нихъ 7, въ которыхъ, какъ онъ говоритъ, [221] *истребится помазаніе*, т. е. дѣйствующая въ первосвященникахъ благодать*. Но такъ какъ и незаконно поставляемые именовались первосвященниками, то онъ справедливо прибавилъ: [230] *и суда нѣтъ въ немъ.* Хотя они и помазуются, говоритъ онъ, но помазуются не по праву, осмѣливаются дѣлать это противозаконно. — [212] *И обновятся времена*, т. е. время до построенія (города) *.—*И городъ и святилище разоритъ съ вождемъ грядущимъ*,—потому что, говоритъ онъ, и городъ будетъ разрушенъ, и святой храмъ подвергнется совершенному уничтоженію. [255] Но это потерпитъ городъ съ вождемъ грядущимъ, т. е. съ грядущими противозаконными начальниками: вождемъ грядущимъ онъ назвалъ иноплеменное царство и противозаконное первосвященство*. Затѣмъ указывая, что (евреи) потерпятъ еще болѣе тяжкія бѣдствія, (ангелъ) прибавилъ: [266] *И потребятся, какъ въ потопѣ*, т. е. подвергнутся конечной гибели, какой подверглись древніе люди, когда потопъ покрылъ всю землю*. И показывая, что для нихъ не будетъ уже никакого возстановленія или облегченія, онъ говоритъ: [283] *и до конца войны, сокращенной погибелями.* Они потерпятъ, говоритъ онъ, окончательную погибель, подвергшись войнѣ, какъ бы какому потопу, и до конца будутъ оставаться подъ гнетомъ этихъ бѣдствій, и никогда не получатъ никакого облегченія*.— Во время (послѣдней) седьмины данъ будетъ вѣрующимъ новый завѣтъ и исполнитъ ихъ всякой силы. [310] Въ срединѣ же этой седьмины *отнимется жертва и возліяніе*; прекратится, говоритъ (ангелъ), жертва по закону, когда будетъ принесена истинная жертва непорочнаго Агнца, вземлющаго грѣхъ міра, ибо какъ только принесена эта жертва, первая приходитъ къ окончанію. Поэтому, когда совершилась эта жертва и Спаситель нашъ испустилъ духъ,— завѣса храма разорвалась сверху донизу, прежде незримое дѣлая видимымъ для всѣхъ, неприкосновенное и недоступное дѣлая до-

ступнымъ*.— —Если же кто желаетъ знать и время, то изъ Евангелія отъ Іоанна онъ узнаетъ, [418] что Господь въ продолженіе трехъ съ половиною лѣтъ проповѣдовалъ и утверждалъ святыхъ своихъ учениковъ ученіемъ и чудесами, и потомъ претерпѣлъ страданіе; а по крестѣ, и смерти, и воскресеніи, и восшествіи на небеса, и по сошествіи Св. Духа, въ остальное время седьмины св. апостолы, проповѣдуя и творя чудеса въ Іерусалимѣ, наставивъ въ евангельскомъ ученіи многія тысячи людей, сподобили ихъ Новаго Завѣта и приготовили къ принятію благодати всесвятого крещенія. Потомъ, послѣ злодѣянія, совершеннаго іудеями надъ св. Стефаномъ, прочіе разсѣялись по городамъ іудейскимъ, а божественные апостолы, пробывъ недолгое время въ Іерусалимѣ, обошли Самарію и Кесарію, Лидду и Іоппію и поспѣшили всѣмъ людямъ сообщить спасительные догматы*.—Затѣмъ (ангелъ) говоритъ: *на святилище мерзость запустѣнія.* [324] Чрезъ эту жертву (крестную), говоритъ онъ, не только прекратится та (подзаконная) жертва, но и мерзость запустѣнія будетъ дана на святилище, т. е. оно, прежде чтимое и приводившее въ трепетъ, сдѣлается запустѣвшимъ. Признакомъ же запустѣнія будутъ нѣкоторыя запрещенныя закономъ изображенія, внесенныя во святилище. Это сдѣлалъ Пилатъ, внесши ночью въ храмъ Божій царскія изображенія, вопреки Божію закону * [ср. Матѳ. 24, 15—17.].— —А чтобы іудеи не подумали, что Божій храмъ снова получитъ прежнее благолѣпіе и славу, (ангелъ) справедливо прибавилъ: *и до скончанія времени скончаніе дастся на запустѣніе;* до скончанія вѣка, говоритъ онъ, скончаніе запустѣнія пребудетъ безъ всякой перемѣны».

Приложеніе II.

По вопросу о томъ, какъ думалъ св. Ипполитъ Римскій о продолжительности общественнаго служенія Господа нашего Іисуса Христа (см. прим. 500), приводимъ слѣдующее авторитетное сообщеніе проф. В. В. Болотова.

«Св. Ипполитъ римскій извѣстенъ какъ авторъ сочиненій Χρονικῶν и Ἀπόδειξις χρόνων τοῦ πάσχα [κ]αὶ τὰ ἐν τῷ πίνακι. Часть послѣдняго сочиненія, именно два πίνακες, содержащіе его 112-лѣтній пасхальный кругъ, начертана на мраморной каѳедрѣ статуи Ипполита, воздвигнутой его почитателями «по всей вѣроятности во второй

четверти III в.» [1]. На одной изъ этихъ таблицъ сдѣлано 14 хронологическихъ отмѣтъ [2], по которымъ можно возстановить основныя даты *двухъ* хронологическихъ системъ. Одна изъ этихъ системъ слагается изъ отмѣтъ: Ἔξοδος, Ἐν ἐρήμῳ, Ἰησοῦς, Ἐζεκίας, Ἰωσείας, Ἔσδρα [3], Γένεσις Χ[ριστοῦ] и Πάθος Χρ[ιστοῦ] и представляетъ хронологическое воззрѣніе, которое проводится въ такъ называемомъ Liber generationis. Очевидно, это та система, которую св. Ипполитъ изложилъ въ книгѣ Χρονικῶν и вѣроятно повторилъ въ Ἀπόδειξις. Другая система тѣ же 6 ветхозавѣтныхъ событій отмѣчаетъ съ дополни-

[1] A. Harnack въ *A. Harnack* (und *E. Preuschen*), Geschichte der altchristlichen Litteratur bis Eusebius (Leipzig 1893), S. 605 cf. 607, 609, 625, 626, 645.— Kraus, статья «Hippolytus» въ *F. X. Kraus*, Real-Encyklopädie der christlichen Alterthümer (Freiburg im Br. 1880) I, 660. 664; S. 662—пасхальная таблица.

[2] О характерѣ этихъ отмѣтъ можно судить по первой строкѣ таблицы:

ΕΣΔΡΑΚΑ
ΕΙΔΟΙΣ ΤΑΔΔΑΝΙ
ΕΜ ΑΠΡΕΙ Z S ΗΛΚΑΙΕ ΕΔΓΒΑ
ΡΗΜΩ

Замѣтка утверждаетъ, что 14-е писана, упоминаемое въ книгахъ Ездры и Чиселъ, приходилось на 13-е апрѣля, на пятницу; другими словами: оба эти года соотвѣтствовали 17 году пасхальнаго круга Ипполита. На основаніи этихъ отмѣтъ, вычитая изъ соотвѣтственныхъ лѣтъ *перваго* круга (222—333 по Р. Х.) x 112 (гдѣ x=нѣкоторому *цѣлому* числу), можно опредѣлить годы указанныхъ ветхозавѣтныхъ и новозавѣтныхъ событій. Cf. *H. Gelzer*, Sextus Julius Africanus (Leipzig 1885) II, 3 cf. 5.

[3] Разумѣются слѣдующія событія: a— Исх. 12, 1–28, b— Числ. 9, 1–5, c— I. Нав. 5, 10–12, d— 2 Пар. 30, 1. 21. 26., e— 4 Цар. 23, 21–23; 2 Пар. 35, 1. 17–19; 2 Ездр. 1, 1. 19–21. Что касается шестой отмѣты, ΕΣΔΡΑ, то,— по аналогіи съ a—e,—можно бы ожидать, что Ипполитъ разумѣетъ пасху послѣ «мѣсяца адара въ лѣто шестое царства Дарія царя», 1 Ездр. 6, 15. 19—22; 2 Ездр. 7, 5. 10–14. По точнымъ даннымъ, которыми располагаетъ историческая наука— *G. F. Unger*, Kyaxares und Astyages. Aus den Abhandlungen der k. bayer. Akad. d. Wiss., I Cl., XVI Bd., III Abth., München 1882, SS. 48—51. 58. 60. 62. 63. 65. 66. cf. *G. Hofmann*, Sämmtliche, bei griechischen und lateinischen Schriftstellern des Alterthums erwähnte Sonnen-und Mondfinsternisse въ XXXIV. Jahresbericht über das k. k. Gymnasium in Triest, 1884, SS. 13—15,—царствованіе Дарія началось около 28 сентября 522 года до Р. Х., его 6-й годъ считался приблизительно съ 17 апрѣля 516 г. и пасха, о которой рѣчь, приходится на полнолуніе 20—21 апрѣля 515 г. до Р. Х. Но самъ св. Ипполитъ былъ того мнѣнія, что Ездра прибылъ въ Іерусалимъ вмѣстѣ съ Іисусомъ и Зоровавелемъ [съ 19 г. Іосіи по 11 годъ Седекіи=35 лѣтъ 6 мѣсяцевъ + 70 лѣтъ плѣна даютъ интерваллъ въ 105 л. 6 м.] Въ виду этого подъ ΕΣΔΡΑ приходится (ср. 1 Ездр. 3, 8. 7. 6. 5. 4. 1; 1, 1.) разумѣть *не упоминаемую въ библіи* пасху во «второй годъ» Кира, т. е. полнолуніе 23 апрѣля 537 года до Р. Х.

СИСТЕМА ХРОНИКЪ.						СОБЫТІЯ.	КАТА ΔΑΝΙΗΔ.					
Годъ круга.	14-е нисана.		Отъ сотвор. міра	До Рожд. Христ.	Вруцѣ-лѣто.		Годъ круга.	14-е нисана.		Отъ сотвор. міра.	До Рожд. Христ.	Вруцѣ-лѣто.
106	А 2	Вскр.	3819	1690	ς	ΕΞΟΔΟΣ	15	А 5	Втр.	3840	1669	ε
			2							**2**		
108	А 9	Срд.	3821	1688	β	ΕΝ ΕΡΗΜΩ	17	А 13	Пят.	3842	1667	ζ
			39							***38**		
35	М 21	Пят.	3860	1649	β	ΙΗΣΟΥΣ	55	А 5	Срд.	3880	1629	ς
			864							***863**		
3	М 21	Вскр.	4724	785	δ	ΕΖΕΚΙΑΣ	22	М 18	Суб.	4743	766	ς
			113							**113**		
4	А 9	Суб.	4837	672	ε	ΙΩΣΕΙΑΣ	23	А 5	Пят.	4856	653	α
			107							***106**		
111	А 5	Срд.	4944	565	ς	ΕΣΔΡΑ	17	А 13	Пят.	4962	547	ζ
			563							***545**		
2	А 2	Срд.	5507	2	β	ΓΕΝΕΣΙΣ Χ	2	А 2	Срд.	5507	2	β
			30	.....						**30**	.....	
32	М 25	Пят.	5537	29	ε	ΠΑΘΟΣ ΧΡ	32	М 25	Пят.	5537	29	ε

тельнымъ словомъ ΚΑΤΑ ΔΑΝΙΗΛ, resp. ΚΑΤΑ ΔΑ, ΚΑ ΔΑ. Видимо, вѣрные ученики Ипполита въ этихъ 6 датахъ отмѣтили тѣ отступленія отъ системы Χρονικῶν, которыя св. Ипполитъ допустилъ въ своемъ толкованіи εἰς τὸν Δανιήλ».

«Предлагаемое возстановленіе системы κατὰ Δανιήλ не имѣетъ подъ собою такой прочной почвы, какъ реставрація первой системы, и допускаетъ одну радикальную поправку: интервалъ между «пасхою Ездры» и «пасхою рождества Христова» можетъ быть принятъ не въ 545 лѣтъ, а въ 545—112, т. е. въ 433 года. Самъ Ипполитъ въ толкованіи на Дан. 9, 26 именно это и утверждаетъ: μετὰ γὰρ τὸ ἐπιστρέψαι τὸν λαὸν ἐκ Βαβυλῶνος ἡγουμένου αὐτῶν Ἰησοῦ τοῦ Ἰωσεδὲκ καὶ Ἔσδρα τοῦ γραμματέως— —τετρακόσια τριάκοντα τέσσαρα ἔτη γεγένηται ἕως παρουσίας [ниже яснѣе: ἕως γενέσεως] Χριστοῦ. Правда, эта поправка (ΕΣΔΡΑ=435 до Р. Х.) ведетъ къ невозможному выводу, что плѣнъ вавилонскій начался въ 505 г., т. е. въ 17-й годъ Дарія I Истаспова, и рѣшительно непостижимо, какъ, пропустивъ 112 лѣтъ, Ипполитъ могъ насчитать 5500 лѣтъ отъ сотворенія міра до рождества Христова; но этотъ пропускъ упростилъ для него задачу истолкованія седьминъ Даніила».

«А выраженіе: ἔπαθε δὲ ἔτει τριακοστῷ τρίτῳ въ толкованіи на Даніила принадлежитъ позднѣйшему фальсификатору: интервалъ между ΠΑΘΟΣ ΧΡ и ΓΕΝΕΣΙΣ Χ, между 32-мъ и 2-мъ годомъ пасхальнаго круга, равенъ *только 30 годамъ*, и 29-й годъ [4] по Р. Х. (по нашему счисленію) приходится на 15-й годъ Тиверія, L. Rubellio Gemino, C. Fufio Gemino coss. Это—годъ, къ которому относили крестныя страданія Господа всѣ тѣ, которые полагали, что Его общественное служеніе продолжалось только одно *лѣто Господне пріятно* и Его земная жизнь—тридцать лѣтъ и нѣсколько мѣсяцевъ».

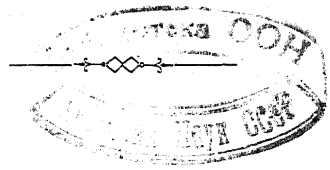

[4] 25 марта приходится на пятницу только при вруцѣлѣтѣ 5, ε,—и это одно уже устраняетъ самую возможность предполагать, что ΠΑΘΟΣ ΧΡ относится къ какому либо другому году нашей эры, а не къ 29-му.

ОГЛАВЛЕНІЕ.

Стран.

Текстъ откровенія о седьминахъ на славянскомъ, еврейскомъ, сирскомъ, греческомъ (LXX и Θеодотіона), латинскомъ и русскомъ языкахъ. . . . . III—VII.

Введеніе. Важность откровенія (1). Источники (2): еврейско-масоретскій текстъ (3), переводы: LXX (6), сирскій Пешито (12), латинскій Вульгата (13), Θеодотіоновъ (13) и его вторичные переводы: древне-латинскій (17), коптскіе (17), армянскій (19), арабскій (20), славянскій (20); новые переводы (21). Пособія (22): трудъ Fraidl'я (23), иностранныя толкованія (25), русская литература предмета (29) и второстепенныя пособія (34) . . . . . 1—34.

I. Обстоятельства, предшествовавшія откровенію о седьминахъ. Вопросъ о Даріѣ Мидянинѣ (35). Пророчество Іереміи о 70 годахъ плѣна (41). Молитва Даніила (43), явленіе ангела (44) и его обращеніе къ Даніилу (47). . 35—50.

II. Толкованіе откровенія.

Стихъ 24-й. Продолжительность періода (51), назначеннаго (53) для іудейскаго народа (56). Шесть мессіанскихъ обѣтованій (58): окончаніе преступленія (60), запечатаніе грѣховъ (63) и искупленіе вины (68); приведеніе правды вѣчной (70), запечатаніе пророчествъ (72) и помазаніе святого святыхъ (76) . . . . . 51—84.

Стихъ 25-й. Приглашеніе пророка ко вниманію (84). Указаніе начальнаго пункта седьминъ (85) и конечнаго пункта втораго періода (91). Первые два періода седьминъ и ихъ раздѣленіе (97). Возстановленіе Іерусалима (101) среди неблагопріятныхъ обстоятельствъ (106) . . . 84—108.

Стихъ 26-й. Событія, имѣющія случиться послѣ второго періода седьминъ (108): убійство Помазанника (110), отверженіе народа еврейскаго (113), разрушеніе города (119) и конецъ народа (124) въ опустошительной войнѣ (127). 108—134.

Стихъ 27-й. Утвержденіе завѣта въ продолженіе послѣдней седьмины (134), прекращеніе ветхозавѣтнаго богослуженія въ срединѣ ея (139), наступленіе мерзости запустѣнія (143) и окончательная политическая гибель еврейскаго народа (162). . . . . 134—168.

Стран.

III. Счисленіе седьминъ. Седьмина лѣтъ (169). Невозможность исключительно-символическаго пониманія седьминъ (174). Неустойчивость счисленія седьминъ, особенно въ древности (179). Начальный пунктъ седьминъ (188)—7-й годъ Артаксеркса I (195); обычное опредѣленіе года его вступленія на престолъ (197) и неудачная поправка Генгстенберга (201). Конецъ 2-го періода седьминъ—годъ выступленія Іисуса Христа на общественное служеніе (205), средина послѣдней седьмины — Его крестная смерть (208). Конецъ 1-го періода седьминъ (214). Конецъ всѣхъ 70 седьминъ (216) и событія, его сопровождавшія (218) . . . . . 169—221.

IV. Краткій обзоръ другихъ толкованій откровенія о седьминахъ. А. Эсхатологическое толкованіе (222). Б. Толкованіе раціоналистическое (227) . . . . . 222—242.

Заключеніе . . . . . 243—246.

Приложеніе I. Древнія толкованія откровенія о седьминахъ: св. Иринея Ліонскаго (247), Климента Александрійскаго (247), Тертулліана (248), св. Ипполита Римскаго (249), Юлія Африкана (250), Оригена (251), Евсевія Кесарійскаго (253), св. Аѳанасія Александрійскаго (258), преп. Ефрема Сирина, св. Кирилла Іерусалимскаго (259), Аполлинарія Лаодикійскаго (260), Юлія Иларіана (260), св. Іоанна Златоуста (261), блаж. Іеронима (262), Полихронія Апамійскаго (263), св. Исидора Пилусіота (265), Василія Селевкійскаго (265) и блаж. Ѳеодорита Кирскаго (268) . . . 247—271.

Приложеніе II. Сообщеніе проф. В. В. Болотова относительно хронологіи св. Ипполита Римскаго . . . . . 271—274.